सम्पूर्ण हल

सामाजिक विज्ञान

कक्षा 9

सी० एम० शर्मा

पाठ्यक्रम

इसमें एक लिखित प्रश्नपत्र-70 अंकों एवं 30 अंकों का प्रोजेक्ट कार्य होगा;			अंक
I	भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)		20
II	समकालीन भारत-1 (भूगोल)		20
III	लोकतांत्रिक राजनीति (नागरिक शास्त्र)		15
IV	अर्थव्यवस्था (अर्थशास्त्र)		15
		योग	70
	प्रोजेक्ट कार्य		30
		योग	100

इकाई-1 : भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास) — 20 अंक

खण्ड-I : घटनायें और प्रक्रियायें — 09 अंक

इकाई 1. फ्रांसिसी क्रान्ति

1. पुरातन शासन व्यवस्था और उसकी समस्यायें (संकट)
2. क्रान्ति के लिये उत्तरदायी सामाजिक तत्त्व।
3. तत्कालीन क्रान्तिकारी समूह और विचार
4. विरासत

इकाई 2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति

1. जारवाद (राजत्व) का संकट
2. 1905 से 1917 के मध्य सामाजिक आन्दोलनों की प्रकृति।
3. प्रथम विश्व युद्ध और सोवियत राज्य की स्थापना।
4. विरासत

इकाई 3. नाजीवाद और हिटलर का उदय

1. सामाजिक लोकतंत्र का विकास
2. जर्मनी में संकट, हिटलर के उदय का मूल कारण
3. नाजीवाद की विचारधारा
4. नाजीवाद का प्रभाव

खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज — 06 अंक

इकाई 4. वन्य समाज और उपनिवेशवाद

1. जीविकोपार्जन और जंगल के बीच सम्बन्ध
2. उपनिवेशवाद के अन्तर्गत वन्य समाज (नीतियों) में हुये परिवर्तन, केस अध्ययन-मुख्यतः दो वन्य आन्दोलनों में प्रथम औपनिवेशिक भारत में (बस्तर) और दूसरा इण्डोनेशिया का। (अध्याय-4)

इकाई 5. आधुनिक विश्व में चरवाहे

1. पशुचारण-जीवन निर्वाह के रूप में
2. पशुचारण के विभिन्न प्रकार (स्वरूप)

3. औपनिवेशिक शासन और आधुनिक राज्य में चरवाहों का जीवन
केस अध्ययन-मुख्यत: दो चरवाहा समूह-एक अफ्रीका का और दूसरा भारत का।

(6) मानचित्र कार्य— **05 अंक**

1. **फ्रांसिसी क्रांति—**
फ्रांस का रूपरेखीय मानचित्र (चिह्नित तथा पहचानने/नामांकित करने हेतु)
(क) बोरडाक्स, (ख) नान्तेस, (ग) पेरिस, (घ) मार्सेल्स

2. **यूरोप में समाजवाद तथा रूस की क्रान्ति—**
विश्व का रूपरेखीय मानचित्र (चिह्नित, पहचानने/नामांकित करने हेतु)
(क) प्रथम विश्व युद्ध के प्रमुख देश (केन्द्रीय शक्तियाँ तथा मित्र शक्तियाँ)
(ख) केन्द्रीय शक्तियाँ-जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, तुर्की (ओटोमन साम्राज्य)
(ग) मित्र शक्तियाँ-फ्रांस, इंग्लैंड, (रूस), अमेरिका

3. **नाजीवाद तथा हिटलर का उदय—**
विश्व का रूपरेखीय मानचित्र (चिह्नित, पहचानने/नामांकित करने हेतु)
(क) द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख देश-धुरी शक्तियाँ-जर्मनी, इटली, जापान। मित्र शक्तियाँ—यूनाईटेड किंगडम, फ्रांस, पूर्व यूनियन सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक, संयुक्त राज्य अमेरिका।
(ख) जर्मन विस्तार के अन्तर्गत क्षेत्र (नाजी शक्ति)-ऑस्ट्रिया, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया (मानचित्र में केवल स्लोवाकिया), डेनमार्क, लिथुआनिया, फ्रांस, बेल्जियम।

नोट-दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों हेतु मानचित्र से सम्बन्धित पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई-II : समकालीन भारत-1 (भूगोल) 20 अंक

1. **(i) भारत**—आकार एवं स्थिति **05 अंक**
(ii) भारत का भौतिक स्वरूप—भू-आकृतियाँ (relief), संरचना, प्रमुख प्राकृतिक भौगोलिक इकाईयाँ (Physiographic Unit).
2. **(i) अपवाह**—प्रमुख नदियाँ एवं उसकी सहायक नदियाँ, झीलें, अर्थव्यवस्था में नदियों की भूमिका, नदियों का प्रदूषण, नदियों के प्रदूषण को रोकने के उपाय। **05 अंक**
(ii) जलवायु—जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक, मानसून और इसकी विशेषताएँ, वर्षा का वितरण, ऋतुएँ; जलवायु तथा मानव जीवन।
3. **(i) प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी**—वनस्पति के प्रकार, धरातल एवं जलवायु के अनुसार वनस्पति के प्रकार में विविधता। उनके संरक्षण की आवश्यकता एवं विभिन्न उपाय। मुख्य प्रजातियाँ, उनका वितरण, उनके संरक्षण की आवश्यकता एवं उसके विभिन्न उपाय। **05 अंक**
(ii) जनसंख्या—आकार, वितरण, आयु-लिंग संघटन, जनसंख्या परिवर्तन, जनसंख्या परिवर्तन के एक घटक के रूप में प्रवास, साक्षरता, स्वास्थ्य, व्यावसायिक संरचना तथा राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, विशेष आवश्यकताओं वाली कुपोषित जनसंख्या के रूप में किशोर।
4. **मानचित्र कार्य—** **05 अंक**

1. भारत—आकार तथा स्थिति

1. **भारत**—राजधानियों सहित राज्य, कर्क रेखा, मकर रेखा, मानक भूमध्य, सबसे दक्षिणी, सबसे उत्तरी, सबसे पूर्वी तथा सबसे पश्चिमी बिन्दु (चिह्नित तथा नामांकित करना)

2. भारत की प्राकृतिक विशेषताएँ—

पर्वत श्रेणियाँ—काराकोरम, शिवालिक, अरावली, विन्ध्य, सतपुड़ा, पश्चिमी तथा पूर्वी घाट, जांस्कर। पर्वत चोटियाँ-के-2, कंचनजंघा, अनाईमुडी।

पठार—दक्खन का पठार, छोटा नागपुर का पठार, मालवा पठार। तटीय मैदान—कोंकण, मालाबार, कोरोमंडल तथा Northern Circars (चिह्नित तथा नामांकित करना)

3. अपवाह तंत्र—

नदियाँ (केवल चिह्नित करने हेतु)

(क) हिमालयी नदी तंत्र-सिंधु, गंगा तथा सतलज

(ख) प्रायद्वीपीय नदियाँ—नर्मदा, ताप्ती, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी, महानदी। झीलें—वुलर, पुलीकट, साम्भर, चिल्का, वेम्बनाद, कोल्लेरू।

4. जलवायु

(क) चिह्नित करने हेतु शहर—तिरूवनंतपुरम, चेन्नई, जोधपुर, बैंगलुरू, मुम्बई, कोलकाता, लेह, शिलांग, दिल्ली, नागपुर (चिह्नित तथा नामांकित करना)

(ख) 20 सेमी० से कम तथा 400 सेमी० से अधिक वर्षा वाले क्षेत्र (केवल चिह्नित करने हेतु)

5. प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य जीवन—

वनस्पति का प्रकार—ऊष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, ऊष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन, कंटीले वन, पर्वतीय वन तथा मैंग्रोव (केवल चिह्नित करने हेतु)।

राष्ट्रीय उद्यान—कार्बेट, काजीरंगा, रणथम्भौर, शिवपुरी, कान्हा, सिमलीपाल तथा मानस। पक्षी अभयारण्य—भरतपुर तथा रंगनथिट्टो। वन्यजीव अभयारण्य—सरिस्का, मदुमलाई, राजाजी, दचिगाम (चिह्नित तथा नामांकित करने हेतु)

6. जनसंख्या (चिह्नित तथा नामांकित करना)—

सबसे अधिक और कम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य उच्चतम तथा निम्नतम लिंग अनुपात वाले राज्य क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़े और छोटे राज्य।

नोट-दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों हेतु मानचित्र से सम्बन्धित पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे।

इकाई-III : लोकतांत्रिक राजनीति-1 (नागरिकशास्त्र) — 15 अंक

इकाई-1 **09 अंक**

(i) लोकतंत्र क्या एवं क्यूँ?

लोकतंत्र के परिभाषित करने के विभिन्न तरीके क्या हैं? लोकतंत्र शासन का सर्वाधिक प्रचलित स्वरूप क्यों बन चुका है? लोकतंत्र के विकल्प क्या हैं? क्या लोकतंत्र अपने मौजूदा विकल्पों से श्रेष्ठ है? क्या प्रत्येक लोकतंत्र में समान संस्थाएँ और आदर्श होने चाहिए?

(ii) संविधान निर्माण—

भारत लोकतंत्र बना-क्यूँ और कैसे? भारतीय संविधान कैसे विकसित हुआ है? भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? भारत में किस प्रकार से लोकतंत्र निरंतर रचित एवं पुनर्रचित हुआ है?

(iii) चुनावी राजनीति—

हम प्रतिनिधियों का चुनाव कैसे एवं क्यूँ करते हैं? हमारे यहाँ राजनीतिक दलों में प्रतिद्वंदिता क्यों है? चुनावी राजनीति में नागरिकों की सहभागिता किस प्रकार बदल गई है? स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित कराने के तरीके क्या हैं?

इकाई-2 **06 अंक**

(i) संस्थाओं की कार्यप्रणाली—

देश कैसे शासित होता है? हमारे लोकतंत्र में संसद की क्या भूमिका है? भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मन्त्रिपरिषद की क्या भूमिका होती है? ये कैसे एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं?

(ii) लोकतांत्रिक अधिकार—

हमें संविधान में अधिकारों की आवश्यकता क्यूँ है? भारतीय संविधान में नागरिकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले मौलिक अधिकार क्या हैं? न्यायपालिका किस प्रकार से नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है? न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के क्या उपाय हैं।

इकाई-IV : अर्थव्यवस्था (अर्थशास्त्र) — 15 अंक

1. पालमपुर की कहानी— **02 अंक**

पालमपुर में आर्थिक लेन-देन तथा शेष विश्व के साथ पालमपुर की पारस्परिक क्रिया जिनके द्वारा उत्पादन की अवधारणा (भूमि, पूँजी तथा श्रम) को समझाया जा सके।

2. संसाधन के रूप में जनसंख्या (लोग)— **05 अंक**

जनसंख्या किस प्रकार संसाधन/सम्पत्ति हो जाती है? पुरुषों एवं स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले आर्थिक क्रियाकलाप; महिलाओं द्वारा किये जाने वाले कार्य जिनका भुगतान नहीं होता; मानव संसाधन की गुणवत्ता; स्वास्थ्य एवं शिक्षा की भूमिका; मानव संसाधन के अनुपयोग के रूप में बेरोजगारी, इसके सामाजिक एवं राजनीतिक निहितार्थ किये जाने वाले सामान्य रूप।

3. निर्धनता-एक चुनौती **03 अंक**

गरीब कौन है (एक शहरी, एक ग्रामीण केस अध्ययन द्वारा), संकेतक; पूर्ण निर्धनता-लोग निर्धन क्यों हैं; संसाधन का असमान वितरण, देशों के मध्य तुलना, गरीबी उन्मूलन के लिये सरकार द्वारा उठाए गए कदम।

4. भारत में खाद्य सुरक्षा **05 अंक**

खाद्यान्नों के स्रोत, देश में विविधता, पिछले समय में अकाल, आत्मनिर्भरता की आवश्यकता, खाद्य सुरक्षा में सरकार की भूमिका, खाद्यान्नों की अधिप्राप्ति, छोटे भंडार (ठसाठस भरे भंडार) और भूखे लोग, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, खाद्य सुरक्षा में सहकारी समितियों की भूमिका (खाद्यान्नों, दूध तथा सब्जियों की राशन की दुकानें; सहकारी दुकानें, 2-3 उदाहरण)।

प्रोजेक्ट कार्य/गतिविधि—

- शिक्षार्थी भारत के गीत, नृत्य, पर्व और निश्चित मौसम में प्रमुख प्रकार के भोजन की पहचान, साथ ही क्या एक क्षेत्र की दूसरे क्षेत्र से कुछ समानता है? इसकी पहचान करें। शिक्षार्थी द्वारा अपने विद्यालय क्षेत्र के आस-पास की वनस्पति एवं पशु जगत से पदार्थों/सूचनाओं को एकत्र करना। इसमें उन प्रजातियों की सूची बनाना, जिनका अस्तित्व खतरे में है एवं उनको सुरक्षित करने से सम्बन्धित प्रयासों की सूचना सूचीबद्ध करना।

पोस्टर—

- नदी-प्रदूषण।
- वनों का क्षरण एवं पारिस्थितिकीय असंतुलन।

नोट—कोई समान गतिविधि भी चुनी जा सकती है।

प्रोजेक्ट कार्य—

- शिक्षक अपने विवेकानुसार पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कोई 3 प्रोजेक्ट प्रत्येक 5-5 अंक छात्र/छात्राओं को वितरित कर सकते हैं।
- अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह आवश्यक होगा कि प्रधानाचार्य/अध्यापक द्वारा विभिन्न स्थानीय सरकारी संस्थाएँ और संगठन, जैसे—आपदा प्रबंधन संस्थाएँ, सहायक, पुनर्वास और आपदा प्रबन्धन विभागों द्वारा (राज्यों के) जिलाधिकारी कार्यलय/उप आयुक्तों, अग्निशमन सेवा, पुलिस, नागरिक सुरक्षा आदि के द्वारा सहायता लिया जाना आवश्यक होगा।

प्रोजेक्ट कार्य हेतु अंक वितरण :

1.	विषयवस्तु की मौलिकता एवं शुद्धता	—	1 अंक
2.	प्रस्तुतीकरण तथा रचनात्मकता	—	1 अंक
3.	प्रोजेक्ट पूरा करने की प्रक्रिया	—	
	— पहल करना, सहयोगिता, सहभागिता तथा समयबद्धता	—	1 अंक
4.	विषयवक्तु आत्मसात करने हेतु मौखिक अथवा लिखित परीक्षा	—	2 अंक

05-05 अंकों के तीन त्रैमासिक टेस्ट	=	15 अंक
3 प्रोजेक्ट प्रत्येक 05 अंक के	=	15 अंक
योग—		**30 अंक**

नोट—प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा। ●●

विषय-सूची

इकाई-1 : भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

खण्ड-I : घटनायें और प्रक्रियाएँ

1. फ्रांसीसी क्रांति 01
2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति 12
3. नात्सीवाद और हिटलर का उदय 27

खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था और समाज

4. वन्य-समाज और उपनिवेशवाद 35
5. आधुनिक विश्व में चरवाहे 46

इकाई-2 : समकालीन भारत-1 (भूगोल)

1. भारत-आकार और स्थिति 53
2. भारत का भौतिक स्वरूप 58
3. अपवाह 71
4. जलवायु 83
5. प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी 94
6. जनसंख्या 103

इकाई-3 : लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (नागरिकशास्त्र)

1. लोकतन्त्र क्या? लोकतन्त्र क्यों? 112
2. संविधान निर्माण 124
3. चुनावी राजनीति 135
4. संस्थाओं की कार्यप्रणाली 148
5. लोकतान्त्रिक अधिकार 160

इकाई-4 : अर्थव्यवस्था (अर्थशास्त्र)

1. पालमपुर गाँव की कहानी 172
2. संसाधन के रूप में लोग 183
3. निर्धनता : एक चुनौती 193
4. भारत में खाद्य सुरक्षा 205

इकाई–1 : भारत और समकालीन विश्व–1 (इतिहास)

खण्ड–I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1 फ्रांसीसी क्रांति

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांस में क्रांति की शुरुआत किन परिस्थितियों में हुई?

उत्तर–फ्रांस में क्रांति की शुरुआत निम्नलिखित परिस्थितियों में हुई–

(i) 14 जुलाई, 1789 की सुबह को पेरिस शहर में खतरे की घंटी का बजाया जाना।

(ii) राजा द्वारा सेना को शहर में प्रवेश करने की आज्ञा देना।

(iii) इस प्रकार की अफवाहों का फैलना कि राजा जल्दी ही नागरिकों पर गोली चलाने का आदेश देने वाला है।

(iv) जब 5 मई, 1789 को राजा द्वारा एस्टेट के प्रतिनिधियों को बुलाया गया तो, दूसरे एवं पहले एस्टेटों के प्रतिनिधि तो बैठे हुये थे लेकिन, तीसरे एस्टेट के 600 प्रतिनिधियों को पीछे की ओर खड़ा रखा गया। साथ ही, तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों को पहले तथा दूसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों के बराबर मतदान का अधिकार नहीं दिया गया। इन्हीं कारणों से फ्रांस में क्रांतिकारी प्रतिरोध की आग भड़की।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी समाज के किन तबकों को क्रांति का फायदा मिला? कौन से समूह सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर हो गए? क्रांति के नतीजों से समाज के किन समूहों को निराशा हुई होगी?

उत्तर–(i) फ्रांस की क्रांति से सर्वाधिक फायदा पढ़े-लिखे धनी वर्ग को पहुँचा।

(ii) राज परिवार, पादरी तथा कुलीन समूह को सत्ता छोड़ने के लिये मजबूर हो गए।

(iii) क्रांति के नतीजों से वहाँ की महिलाओं को निराशा हुई होगी।

प्रश्न 3. उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की दुनिया के लिए फ्रांसीसी क्रांति कौन-सी विरासत छोड़ गई?

अथवा

19वीं तथा 20वीं सदी में विश्व समुदाय को फ्रांस की क्रांति की देन की व्याख्या कीजिये।

अथवा

फ्रांस की क्रान्ति का 19वीं और 20वीं शताब्दियों में विश्व के अन्य लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर–फ्रांस की क्रांति की 19वीं तथा 20वीं सदी में विश्व के अन्य लोगों पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा–

(i) उन्हें यह विचार मिला कि मानव जन्म से ही समान तथा स्वतंत्र है। इस विचार ने कई देशों में स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की।

(ii) इस आंदोलन से यह मान लिया गया कि सभी राजनीतिक दलों का उद्देश्य जनता के प्राकृतिक अधिकारों; जैसे–स्वतंत्रता, समानता, संपत्ति, सुरक्षा एवं दमन का विरोध करने के अधिकारों को सरंक्षित रखना है।

प्रश्न 4. उन जनवादी अधिकारों की सूची बनाइए जो हमें आज मिले हुए हैं और जिनका उद्‌गम फ्रांसीसी क्रांति में हुआ।

उत्तर–ऐसे प्रजातांत्रिक अधिकार जिनकी उत्पत्ति फ्रांसीसी क्रांति में खोजी जा सकती है तथा जिनका हम आज उपभोग करते हैं, निम्नलिखित हैं–

(i) समानता का अधिकार।

(ii) भाषण एवं विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार।

(iii) मत देने तथा किसी खास कार्यालय के लिये चुने जाने का अधिकार।

(iv) सुरक्षा का अधिकार।

(v) संपत्ति का अधिकार।

(vi) दमन के विरोध का अधिकार।

प्रश्न 5. क्या आप इस तर्क से सहमत हैं कि सार्वभौमिक अधिकारों के संदेश में नाना अंतर्विरोध थे?

उत्तर—हाँ, सार्वभौमिक अधिकार का संदेश निम्नलिखित विरोधाभासों से भरा हुआ था—

(i) महिलाओं ने लिंग आधारित अधिकारों के घोषणा-पत्र का विरोध किया।

(ii) ज्याँ-पॉल मरा ने इसका विरोध किया कि लोगों का प्रतिनिधित्व करने का संवैधानिक अधिकार केवल अमीर लोगों को उपलब्ध था। गरीबों एवं दलितों को इस अधिकार से वंचित रखा गया था।

(iii) डेस्मॉलिन्स ने आतंक के राज की आलोचना की जिसका उपयोग स्वतंत्रता के अधिकार की परिपक्वता तक इसको सीमित रखने के लिये किया गया था।

प्रश्न 6. नेपोलियन के उदय को कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर—नेपोलियन के उदय को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

(i) जब फ्रांस में कार्यपालिका तथा विधायी परिषदों के मध्य झगड़े के कारण राजनीतिक अस्थिरता का महौल बना हुआ था, नेपोलियन ने अवसर पाकर 1804 में स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया।

(ii) वह पड़ोसी राज्यों को विजित करने के अभियान पर निकल पड़ा। वहाँ के राजाओं को हटाकर वह स्वयं सत्ता हथियाना चाहता था।

(iii) उसने अपनी भूमिका का मूल्यांकन यूरोप को आधुनिक बनाने वाले व्यक्ति के रूप में की।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति किस राजा के शासन काल में हुई?
(क) लुई XV (ख) लुई XVI (ग) लुई XVII (घ) लुई XVIII।

2. मानव व नागरिक अधिकारों की घोषणा कब की गई ?
(क) 4 अगस्त, 1789 (ख) 6 अगस्त, 1789 (ग) 8 अगस्त, 1789 (घ) 10 अगस्त, 1789।

3. 'सामान्य इच्छा' शब्दावली की रचना निम्न में से किसने की?
(क) वॉल्टेयर (ख) लॉक (ग) मॉण्टेस्क्यू (घ) रूसो।

4. लुई XVI कहाँ रहता था?
(क) पेरिस (ख) लंदन (ग) वियना (घ) मैड्रिड।

5. 'टेनिस कोर्ट शपथ' कब ली गई?
(क) 20 जून, 1789 (ख) 20 जून, 1790 (ग) 20 जून, 1791 (घ) 20 जून, 1792।

6. 'मसाइक क्लब' (Massiac Club) की स्थापना कब हुई?
(क) अगस्त 1789 (ख) अगस्त 1790 (ग) अगस्त 1790 (घ) अगस्त 1792।

7. फ्रांस को कब एक गणतन्त्र घोषित किया गया?
(क) 22 सितम्बर, 1790 (ख) 22 सितम्बर, 1791
(ग) 22 सितम्बर, 1792 (घ) 22 सितम्बर, 1793।

8. मेरी ऐन्तोएनेत कहाँ की राजकुमारी थी?
(क) फ्रांस (ख) ऑस्ट्रिया (ग) जर्मनी (घ) प्रशा।

9. 'सोशल कॉण्ट्रेक्ट' (Social Contract) की रचना किसने की?
(क) एडम स्मिथ (ख) लॉक (ग) रूसो (घ) वॉल्टेयर।

10. किसने कहा—"मनुष्य स्वतन्त्र जन्मा है किन्तु उसे प्रत्येक जगह जंजीरों में जकड़ा जाता है"।
(क) रूसो (ख) वॉल्टेयर (ग) मॉन्टेस्क्यू (घ) लॉक।

11. 'स्प्रिट ऑफ लॉज' (Spirit of Laws) किसने लिखी?
(क) दिदरो (ख) वॉल्टेयर (ग) जॉन लॉक (घ) मॉण्टेस्क्यू।

12. मार्सिले (Marsillaise) नामक देशभक्ति के गीत की रचना किसने की थी?
(क) रोजेट-डि-लाइल (ख) दिदरो (ग) ओलम्प दे गूज (घ) नायकर।

13. एबे सिएज कौन था?
(क) कवि (ख) पादरी (ग) डॉक्टर (घ) कृषक।

14. फ्रांस में राजतन्त्र का अन्त कब हुआ?
(क) 1789 ई० (ख) 1791 ई० (ग) 1792 ई० (घ) 1793 ई०।

15. फ्रांस की महिलाओं को मताधिकार कब प्राप्त हुआ?
(क) 1944 ई० (ख) 1945 ई० (ग) 1946 ई० (घ) 1947 ई०।

16. किसे फ्रांसीसी क्रान्ति की सन्तान कहा जाता है?
(क) नेपोलियन बोनापार्ट (ख) लुई XVI
(ग) वॉल्टेयर (घ) रूसो।

17. लुई XVI को किस कारण गिलोटिन का दण्ड मिला?
(क) क्रूरता (ख) कुशासन
(ग) फिजूलखर्ची (घ) देशद्रोह।

18. बास्तील का किला किसका प्रतीक था?
(क) फ्रांसीसी देशभक्ति (ख) फ्रांसीसी लोकतन्त्र (ग) फ्रांसीसी निरंकुशता (घ) इनमें से कोई नहीं।

19. दास व्यापार कब आरम्भ हुआ?
(क) 15वीं शताब्दी (ख) 16वीं शताब्दी (ग) 17वीं शताब्दी (घ) 18वीं शताब्दी।

20. सन् 1802 में किसने दास प्रथा को पुनः प्रचलित किया?
(क) नेपोलियन बोनापार्ट (ख) लुई XVII
(ग) दांते (घ) रॉबेस्प्येर।

[**उत्तर—1.** (ख), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (क), **5.** (क), **6.** (क), **7.** (ग), **8.** (ख), **9.** (ग), **10.** (क), **11.** (घ), **12.** (क), **13.** (ख), **14.** (ग), **15.** (ग), **16.** (क), **17.** (घ), **18.** (ग), **19.** (ग), **20.** (क)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांसीसी क्रान्ति कब हुई थी?
उत्तर—1789 ई० में।

प्रश्न 2. 1789 ई० में फ्रांस में किस प्रकार की सरकार थी?
उत्तर—निरंकुश राजतन्त्र।

प्रश्न 3. क्रान्ति के समय फ्रांस का राजा कौन था?
उत्तर—लुई XVI।

प्रश्न 4. लुई XVI किस राजवंश से सम्बन्धित था?
उत्तर—बूर्बो राजवंश।

प्रश्न 5. 'फर्स्ट स्टेट्स' में कौन आता था?
उत्तर—पादरी वर्ग।

प्रश्न 6. जैकोबिन क्लब का नेता कौन था?
उत्तर—रॉबेस्प्येर।

प्रश्न 7. 'थर्ड एस्टेट्स' से सम्बन्धित कौन हैं?
उत्तर—व्यवसायी, व्यापारी, वकील, दरबार के अधिकारी, कृषक, कारीगर, भूमिहीन, श्रमिक, सेवक—ये सभी थर्ड एस्टेट्स में आते थे।

प्रश्न 8. 'सोशल कॉण्ट्रेक्ट' पुस्तक के लेखक का नाम बताइए।
उत्तर—रूसो।

प्रश्न 9. सौं-कुलॉत (Sans-Culottes) का क्या अर्थ है?
उत्तर—बिना घुटन्ने वाले ब्रीचेज सौं-कुलॉत कहलाते थे।

प्रश्न 10. 'मार्सिले' (Marselillaise) के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—मार्सिले एक देशभक्ति का गीत था जिसकी रचना कवि रोजेट-डि-लाइल ने की थी। बाद में यह फ्रांस का राष्ट्रगान बन गया।

प्रश्न 11. फ्रांसीसी समाज की कौन-सी एस्टेट्स सभी कर अदा करती थी?

उत्तर—थर्ड एस्टेट्स।

प्रश्न 12. फ्रांस की कुछ प्रमुख क्रान्तिकारी महिलाओं के नाम बताइए।

उत्तर—ओलम्प दे गूज, शार्लेट कोर्डे तथा मेरी जीन रोनॉल्ड।

प्रश्न 13. आतंक की मशीनरी के तीन प्रमुख हिस्से बताइए।

उत्तर—(क) संदिग्धों का कानून, (ख) क्रान्तिकारी ट्रिब्यूनल, (ग) क्रान्ति का स्क्वायर।

प्रश्न 14. नेपोलियन को अन्तिम रूप से कब और कहाँ पराजित किया गया?

उत्तर—सन् 1815 में वाटरलू के युद्ध में।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राजा लुई XVI के बारे में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—राजा लुई XVI वाँ फ्रांस में बूर्बो वंश का शासक था। जब वह शासक बना मात्र बीस वर्ष का था। लुई का विवाह आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी एन्टोएनेत से हुआ था। लुई सोलहवें के शासन काल में फ्रांस अमेरिकी स्वतन्त्रता संघर्ष में शामिल हुआ। युद्ध के कारण फ्रांस पर काफी कर्ज हो गया। 5 मई, 1789 को लुई ने नये करों के प्रस्ताव के लिए एस्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई। तीसरे एस्टेट्स ने इस बैठक का बहिष्कार किया। फ्रांस की क्रान्ति का आरम्भ हुआ। 21 सितम्बर, 1792 को राजतन्त्र के पूर्ण अन्त की घोषणा की गई और फ्रांस को एक गणतन्त्र राज्य घोषित किया गया। लुई सोलहवें को न्यायालय द्वारा देशद्रोह के आरोप में मृत्यु दण्ड दिया गया। 21 जनवरी, 1793 में उसे सार्वजनिक रूप से प्लेस डी लॉ कान्काई में फांसी दे दी गई।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी समाज कितने वर्गों में विभक्त था? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—अठारवीं सदी में फ्रांस का समाज तीन वर्गों में विभक्त था—

(1) प्रथम एस्टेट—यह पादरी वर्ग था। यह वर्ग चर्च-व्यवस्था से सम्बद्ध होने के कारण उसे विशेषाधिकार प्राप्त था। पादरी वर्ग जन्म से शिक्षा प्राप्त थे। ये कोई कर नहीं देते थे। चर्च किसानों से धार्मिक कर वसूलता था।

(2) द्वितीय एस्टेट—यह कुलीन लोगों का वर्ग था। इसमें धनी तथा सामंत लोग शमिल थे। ये भी कर नहीं देते थे। ये लोग कई विशेषाधिकारों से युक्त थे। ये भी किसानों से कर प्राप्त करते थे। इन्हें जनता से भेंट अथवा उपहार प्राप्त करने का अधिकार था।

(3) तृतीय एस्टेट—इसमें बड़े व्यापारी, कर्मचारी, वकील, किसान, मजदूर इत्यादि शामिल थे। यह विशेषाधिकारों से वंचित वर्ग था। इसे पादरी तथा कुलीनों द्वारा लगाये गये करों की अदायगी करनी होती थी।

प्रश्न 3. अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम ने किस प्रकार फ्रांसीसी क्रान्ति को प्रभावित किया?

उत्तर—अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम का भी फ्रांसीसी क्रान्ति पर प्रभाव पड़ा। फ्रांसीसी सैनिकों ने लफायते के नेतृत्व में इस युद्ध में भाग लिया था। उन्होंने देखा था कि अमेरिका के 133 उपनिवेशों ने कैसे औपनिवेशिक शासन को समाप्त कर वहाँ लोकतन्त्र की स्थापना की थी। स्वदेश वापस लौटकर उन लोगों ने पाया कि जिन सिद्धान्तों की रक्षा के लिए वे अमेरिका में युद्ध कर रहे थे उनका अपने देश में भी अभाव था अतः वे सैनिक फ्रांस में क्रान्ति के अग्रदूत बनकर लोकतन्त्र का सन्देश फैलाने लगे। जन साधारण इससे अत्यधिक प्रभावित हुआ।

प्रश्न 4. जीविका का संकट क्या था?

उत्तर—1715 में फ्रांस की कुल जनसंख्या 2.3 करोड़ थी जो वर्ष 1789 में 2.8 करोड़ हो गई। जनसंख्या वृद्धि के साथ खाद्यान्नों की माँग में वृद्धि हुई परन्तु उत्पादकता में वृद्धि न होने के कारण महँगाई में वृद्धि होने लगी। अतः फ्रांसीसी मजदूरों एवं गरीब वर्ग के भोजन पाव रोटी की कीमतों में कई गुना वृद्धि हो गई। कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की मजदूरी में कोई वृद्धि नहीं हुई। इससे स्थिति और बिगड़ती गई। अमीर और गरीब लोगों के बीच खाई और बढ़ गई। जबकि सूखा आदि प्राकृतिक कारणों से पैदावार प्रभावित हुई। इस दौर में रोजगार में कमी के कारण जीविका संकट उत्पन्न हुआ।

प्रश्न 5. जैकोबिन कौन थे? कोई तीन बिन्दु लिखिए।

उत्तर—1791 के संविधान की व्यवस्था से असंतृप्त लोग अपने असंतोष की अभिव्यक्ति राजनीतिक क्लबों में एकत्रित होकर करते थे। इन लोगों ने अपना एक दल बनाया जिसे जैकोबिन दल कहा जाता था। इन लोगों ने अपने मिलने का स्थान पेरिस के कान्वेन्ट ऑफ सेन्ट जैकब को बनाया। यह आगे चलकर जैकोबिन क्लब के नाम से विख्यात हुआ। इस क्लब के सदस्य समाज के निम्न तबके से आते थे। जैसे—छोटे दुकानदार, कारीगर, मजदूर आदि। ये धारीदार लम्बे पतलून पहनते थे अतः इन्हें जैकोबिन सौं कुलॉत अथवा बिना घुटने वाले के नाम से जाना जाता था। इस दल के सदस्य स्वतन्त्रता के प्रतीक लाल रंग की टोपी पहनते थे। इनका प्रभावशाली नेता मैक्स मिलियन रोबेस्प्येर था।

प्रश्न 6. फ्रांसीसी क्रान्ति में रूसो, मॉण्टेस्क्यू तथा वॉल्टेयर का क्या योगदान था?

उत्तर—(i) मॉटेस्क्यू (1689-1755)—वह उदार विचारों वाला दार्शनिक था। यद्यपि वह स्वयं कुलीनवंशी था तथापि उसने राज्य और चर्च दोनों की कटु आलोचना की। उसने अपने पुस्तकों की रचना की; जैसे—**पर्शियन लेटर्स** (Persian Letters) तथा **दि स्पिरिट ऑफ लॉज** (The Spirit of Laws)। उसका मानना था कि जीवन, सम्पत्ति एवं स्वतन्त्रता मानव के जन्मसिद्ध अधिकार हैं। इसके अतिरिक्त मान्टेस्क्यू का यह कथन भी उल्लेखनीय है कि यदि शासक उचित रूप से अपने उत्तरदायित्वों का पालन नहीं कर सके तो उसे क्रान्ति द्वारा नष्ट करने का अधिकार समाज को प्राप्त है। मॉटेस्क्यू की सबसे बड़ी देन **शक्ति के पृथक्करण** (Separation of Powers) **का सिद्धान्त** है। उसने अपनी पुस्तक **विधि की आत्मा** अथवा **दि स्पिरिट ऑफ लॉज** (The Spirit of Laws), जो वर्ष 1748 में प्रकाशित हुई, में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार, राज्य की शक्तियाँ—कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका—एक ही हाथों में केन्द्रित नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने से शासन निरंकुश और स्वेच्छाचारी नहीं होगा। मॉटेस्क्यू के सिद्धान्तों का प्रभाव अमेरिका में भी पड़ा। अमेरिकी उपनिवेशों ने इंग्लैण्ड से स्वतन्त्र होने के बाद अपने संविधान में इस सिद्धान्त को प्रमुख स्थान दिया; अतः फ्रांस में भी ऐसी माँग की जाने लगी।

(ii) वाल्टेयर (1694-1778)—मॉटेस्क्यू के समान वाल्टेयर ने भी अपने लेखों और पुस्तकों में राज्य और चर्च की कड़ी आलोचना की। वह प्रबुद्ध निरंकुश शासन में विश्वास करता था। उसका मानना था कि सौ चूहों की अपेक्षा एक सिंह का शासन उत्तम है। उसने चर्च के भ्रष्टाचार पर भी कड़ी चोट की तथा भ्रष्ट चर्च को नष्ट करने का आह्वान किया। अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण वाल्टेयर को देश-निर्वासन का दण्ड भुगतना पड़ा, परन्तु जनता पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा। उसकी पुस्तकों में उल्लेखनीय हैं—**ला हेनरीएड** (La Henriade) तथा **लेटर्स फिलोसोफिकल** (Letters Philosophiques)।

(iii) ज्याँ जाक रूसो (1712-78)—रूसो फ्रांस का सबसे बड़ा दार्शनिक था। उसकी प्रमुख पुस्तकें हैं—**एमिली** (Emile) और **दि सोशल कॉन्ट्रैक्ट** (The Social Contract)। वह लोकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था का समर्थक था। अपनी पुस्तक **दि सोशल कॉन्ट्रैक्ट** (1762 में प्रकाशित) में उसने जनमत (General Will) को ही सर्वशक्तिशाली माना; क्योंकि राज्य तो जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ही बना था। वह वर्तमान स्थिति से असन्तुष्ट था। उसका कहना था, कि "मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हुआ है, पर वह हर जगह जंजीरों से जकड़ा है।" (Man is born free but everywhere he is in chains.) रूसो ने इन जंजीरों को तोड़ फेंकने को कहा। रूसो के क्रान्तिकारी विचारों ने फ्रांस में क्रान्ति के विस्फोट के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

प्रश्न 7. 14 जुलाई, 1789 का क्या महत्व है?

उत्तर—14 जुलाई, 1789 में बास्तील के सुदृढ़ किले पर भीड़ ने आक्रमण कर दिया। यह किला राजशाही का प्रतीक था। यहाँ जेल में कैद सात कैदियों को आजाद कर दिया। किले का रक्षक मारा गया, हथियार लूट लिए गये एवं किला जो घृणा का केन्द्र था पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। यही दिन 14 जुलाई ही फ्रांस का स्वतन्त्रता दिवस बन गया।

प्रश्न 8. "फ्रांस की क्रान्तिकारी सरकार ने शासन के आरम्भिक वर्षों में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए कुछ कानून बनाये।" चार मूल्य आधारित बिन्दु देते हुए इस कथन को सिद्ध कीजिए।

उत्तर—फ्रांस की क्रान्तिकारी सरकार ने आरम्भ में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए निम्नलिखित कानून बनाए—

(1) लड़कियों के लिए स्कूली शिक्षा अनिवार्य कर दी गई थी। जिससे स्त्रियाँ साक्षर हों।

(2) लड़कियों को स्वेच्छा से विवाह करने का कानून बनाया गया। जो महिला स्वतन्त्रता के लिए आवश्यक था।

(3) विवाहों के पंजीकरण की व्यवस्था सरकार ने की।

(4) स्त्रियों को तलाक लेने का कानून बनाया गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रान्ति के राजनीतिक कारणों का वर्णन कीजिए। बूर्बो राजवंश इसके लिए कहाँ तक उत्तरदायी था?

उत्तर— **राजनीतिक कारण**

(i) राजदरबार की विलासिता—फ्रांस का राजदरबार विलासिता का केन्द्र था। जनता से वसूला गया धन निर्ममतापूर्वक राजा अपने भोग-विलास और आमोद-प्रमोद पर खर्च करता था। लुई सोलहवाँ पेरिस से मीलों दूर वर्साय के शीशमहल में रहता था। वह शान-शौकत की जिंदगी व्यतीत करता था। उसकी सेवा के लिए असंख्य पदाधिकारी और दास-दासियाँ थीं। उसकी रानी मेरी एन्तोएनेत (ऑस्ट्रिया की राजकुमारी) भी राजकीय आय की फिजूलखर्ची के लिए विख्यात थी तथा 'मैडम डेफिसिट' के नाम से जानी जाती थी। इतना ही नहीं, राजदरबार में चाटुकारों की भीड़ रहती थी जो राजा के ही समान भोग-विलास में मग्न रहते थे।

(ii) प्रशासनिक भ्रष्टाचार—राजा के सलाहकार, सेवक और अधिकारी भ्रष्ट थे। उनका एकमात्र उद्देश्य राजा की चाटुकारिता कर अपना उल्लू सीधा करना था। राज्य के महत्त्वपूर्ण पदों पर योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि पैरवी के आधार पर नियुक्ति की जाती थी। पदाधिकारी एवं दरबारी एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए षड्यन्त्र में लगे रहते थे जिससे प्रशासन पर बुरा प्रभाव पड़ा।

(iii) प्रशासनिक अव्यवस्था—फ्रांस में प्रशासनिक एकरूपता का सर्वथा अभाव था। वहाँ का प्रशासन अव्यवस्थित एवं बेढंगा था। विभिन्न प्रान्तों, जिलों और अन्य प्रशासनिक इकाइयों में अलग-अलग कानून प्रचलित थे। कानूनों में एकरूपता नहीं थी। विभिन्न क्षेत्रों में करीब चार सौ कानून प्रचलित थे। माप-तौल की प्रणाली, न्याय-व्यवस्था एवं कानून तथा मुद्रा के प्रचलन में भी एकरूपता का अभाव था।

(iv) अतिकेन्द्रीकृत प्रशासन—फ्रांस की प्रशासनिक व्यवस्था की एक बड़ी दुर्बलता यह थी कि प्रशासन की सारी शक्ति राजा के ही हाथों में केन्द्रित थी। उसकी इच्छा और सहमति के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता था। स्वायत्त प्रशासनिक संस्थाओं का प्रचलन नहीं था। इस परिस्थिति में प्रशासनिक व्यवस्था शिथिल पड़ गई; क्योंकि राजा को भोग-विलास से निकलकर प्रशासन की ओर ध्यान देने का समय नहीं था।

(v) निरंकुश राजशाही—यूरोप के अन्य देशों के समान फ्रांस में भी निरंकुश राजतन्त्र था। राजा के हाथों में सारी शक्ति केन्द्रित थी। राजा अपने-आपको ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसकी इच्छा ही कानून थी। फ्रांस के बूर्बो वंश (Bourbon dynasty) का सम्राट् लुई चौदहवाँ दम्भपूर्वक कहता था—"मैं ही राज्य हूँ। (I am the State)" लुई सोलहवाँ का यह भी कहना था कि "मेरी इच्च्छा ही कानून है।" इस व्यवस्था में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करना अपराध था।

फ्रांस में राजा की निरंकुशता को नियन्त्रित करने के लिए पार्लमेंट (Parlement) नामक संस्था थी। यह एक प्रकार का न्यायालय था जो संख्या में 17 थे। इसका विकास राजदरबार (curia regis) से हुआ था। यह एक प्रकार का सर्वोच्च न्यायालय भी था जो राजा के निर्णयों की समीक्षा कर सकता था। मुख्य पार्लमेंट पेरिस में था, जबकि प्रान्तों में भी यह संस्था थी। इसमें सिर्फ कुलीन वर्ग वाले ही न्यायाधीश थे तथा इनका पद वंशानुगत था। अतः ये भी अपनी सुख-सुविधा के लिए राजा पर ही आश्रित थे। इस प्रकार, राजा का अंकुश लगाने के स्थान पर पार्लमेंट राजा का ही समर्थन करती थी।

(vi) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव—फ्रांस की राजनीतिक-प्रशासनिक व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए कोई स्थान नहीं था। राजा के विरुद्ध भाषणों अथवा लेखों के माध्यम से आवाज नहीं उठाई जा सकती थी। भाषण, लेखन एवं प्रकाशन पर कठोर नियन्त्रण था। राजा मुकदमा चलाए बिना भी किसी को गिरफ्तार कर दण्डित कर सकता था। जनता को धार्मिक स्वतन्त्रता भी नहीं थी। फ्रांस का राजधर्म कैथोलिक धर्म था, इसलिए प्रोटेस्टेंट धर्मावलम्बियों के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था की गई थी।

(vii) न्याय-व्यवस्था की दुर्बलता—फ्रांस की न्याय-व्यवस्था में भी अनेक दुर्गुण विद्यमान थे। न्याय-व्यवस्था अत्यन्त महँगी थी तथा छोटे-छोटे मुकदमों में भी अधिक धन खर्च होता था। इसके अतिरिक्त सुयोग्य जज भी नहीं थे जिस कारण न्याय पाना अत्यन्त कठिन था। फ्रांस की न्यायिक प्रक्रिया की सबसे विचित्र व्यवस्था थी—राजाज्ञा या **लेटर दी कैचे** (Letters de cachet)। इसके द्वारा कोई भी कुलीन, दरबारी या सम्राट् का प्रियपात्र अपने विरोधियों को दण्डित करवा सकता था। इसके आधार पर किसी भी व्यक्ति पर बिना मुकदमा चलाए उसे गिरफ्तार किया जा सकता था। धनी लोग इसे खरीद कर इसका मनमाना दुरुपयोग करते थे। इसके अतिरिक्त दण्ड-सम्बन्धी कानून में वर्ग-विभेद था। समान अपराध के लिए उच्च वर्ग को हलकी सजा, परन्तु जनसाधारण को कड़ी सजा दी जाती थी।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी समाज के कौन से वर्ग क्रान्ति का हिस्सा थे तथा कौन शक्ति या सत्ता के त्याग के लिए विवश थे?

उत्तर—फ्रांसीसी समाज के तीसरे एस्टेट के लोगों को क्रान्ति से सबसे अधिक लाभ हुआ। इन वर्गों में श्रमिक, किसान, अधिकारी, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, व्यापारी आदि सम्मिलित थे। पहले उन्हें सभी प्रकार के कर देने पड़ते थे तथा समय-समय पर सामन्तों तथा पादरियों द्वारा अपमानित किया जाता था। फ्रांस की क्रान्ति के पश्चात् तीसरे एस्टेट के लोगों को भी राजनीतिक अधिकार प्रदान किए गए।

इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप पहले और दूसरे प्रकार के एस्टेट, जिन्हें सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त थीं, को सत्ता छोड़नी पड़ी। इस श्रेणी में पादरी और सामन्त थे। वस्तुतः ऊपरी वर्ग की विशेष सुविधाएँ समाप्त होने के पश्चात् फ्रांसीसी समाज का गठन सामाजिक समानता के आधार पर हुआ। अतः स्वाभाविक रूप से सुविधा प्राप्त वर्ग—पादरी तथा सामन्त ही क्रान्ति के परिणामों से निराश हुए होंगे।

प्रश्न 3. लुई XVI के आधीन राजकोष खाली होने के क्या कारण थे? कोई भी पाँच कारण बताइए।

उत्तर—(i) अव्यवस्थित अर्थव्यवस्था—फ्रांस की अर्थव्यवस्था अव्यवस्थित थी। राजकीय आय और राजा की व्यक्तिगत आय में अन्तर नहीं था। किस स्रोत से कितना धन आना है और किन-किन मदों में उन्हें खर्च करना है, यह निश्चित नहीं था। इस कारण निश्चित योजना के अभाव में फ्रांस में आर्थिक तंगी की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, वस्तुतः क्रान्ति के समय फ्रांस दिवालिया हो चुका था।

(ii) दोषपूर्ण कर-व्यवस्था—फ्रांस की कर-प्रणाली दोषपूर्ण थी। समाज के प्रथम दो वर्ग करमुक्त थे, जबकि कर का सारा बोझ तृतीय वर्ग, विशेषतः किसानों पर था। इसी कारण कहा जाता था कि फ्रांस में पादरी पूजा करते हैं, कुलीन युद्ध करते हैं और जनता कर देती है। (The clergies pray, the nobles fight and the people pay.) अतः ऐसी व्यवस्था में असन्तोष होना स्वाभाविक था।

(iii) कर-वसूली की प्रणाली—फ्रांस में कर निश्चित नहीं थे अर्थात् इन्हें इच्छानुसार बढ़ाया जा सकता था। कर वसूलने का काम ठेके पर दिया जाता था। ये ठेकेदार (टैक्स फॉर्मर) मनमाना कर वसूल कर स्वयं अधिक-से-अधिक धन कमाते थे। धन वसूलने के लिए वे किसानों पर अत्याचार करते थे। ऐसा कहा जाता था कि 'टैक्स फॉर्मर अस्त्र-शस्त्र युक्त आक्रमणकारियों से भी अधिक विनाशकारी थे।' इसके साथ-साथ विशेष लोगों को कर में छूट देने तथा सही ढंग से खजाने में कर नहीं जमा कराने से खर्च बढ़ता गया और आमदनी घटती गई जिससे फ्रांस आर्थिक रूप से दिवालिया हो गया।

(iv) व्यापारिक एवं व्यावसायिक अवरोध—अव्यवस्थित अर्थव्यवस्था में व्यवसाय एवं वाणिज्य का विकास भी ठप पड़ गया। व्यवसायियों और व्यापारियों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगे हुए थे। उन्हें प्रत्येक प्रान्त, जिला, शहर और स्थान में विभिन्न प्रकार के कर देने पड़ते थे। गिल्ड भी अबाध व्यापार में रोड़ा अटकाते थे, इसलिए व्यवसाय-वाणिज्य लाभप्रद नहीं रहा। इसका विपरीत असर फ्रांस की अर्थव्यवस्था पर पड़ा।

(v) बेकारी की समस्या—बेकारी की समस्या ने भी आर्थिक स्थिति को दयनीय बना दिया। औद्योगिकीकरण के कारण घरेलू उद्योग-धन्धे बन्द हो गए। इनमें कार्यरत कारीगर और मजदूर बेकार हो गए; अतः वे क्रान्ति के समर्थक बन गए।

प्रथम 4. 1789 की क्रान्ति के आरम्भ होने में फ्रांसीसी दार्शनिकों का क्या योगदान था?

उत्तर—मॉटेस्क्यू, बाल्टेयर, रूसो के दार्शनिक विचारों के लिए देखें लघु उत्तरीय प्रश्न 6 को।

जॉन लॉक (1632-1704)—इस समय का एक अन्य प्रबुद्ध चिंतक था—जॉन लॉक। उसने राजशाही के दैवी स्वरूप और निरंकुशवाद का जोरदार खण्डन किया। उसने अपनी पुस्तक **टू ट्रीटाइजेज ऑफ गवर्नमेंट** (Two Treatises of Government), जो 1690 में प्रकाशित हुई, में अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। वह मानव के प्राकृतिक अधिकारों तथा सीमित राजनीतिक सत्ता का समर्थक था। उसने राजनीतिक उदारवाद का समर्थन किया तथा उसके विचारों का प्रभाव अमेरिकी संविधान एवं फ्रांस की क्रान्ति पर पड़ा। रूसो ने लॉक के विचारों को ही आगे बढ़ाते हुए जनता और राज्य में अनुबन्ध की बात कही।

अन्य बुद्धिजीवी—इन विचारकों के अतिरिक्त फ्रांस में अन्य लेखक एवं विद्वान भी हुए जिनके विचारों ने क्रान्ति को प्रेरणा दी। 35 खण्डों में प्रकाशित अपने **विश्वकोश** (Encyclopedie) में **दिदरो** (1713--84) ने निरंकुश राजतन्त्र, सामंतवाद एवं जनता के शोषण की घोर भर्त्सना की। फ्रांस के अर्थशास्त्रियों—क्वेसने, तुर्जो और नेकर ने फ्रांस की दुर्बल अर्थव्यवस्था की आलोचना कर इसमें सुधार लाने के उपाय सुझाए। इन अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक शोषण की आलोचना की तथा मुक्त व्यापार (laissez-faire) की वकालत की। इन सभी का फ्रांस की जनता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 5. फ्रांसीसी क्रान्ति के घटनाक्रम का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर— अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी जनता सामाजिक स्तर पर असमानता की शिकार थी। फ्रांसीसी क्रान्ति का मुख्य कारण भी यही असमानता थी। इस क्रान्ति के बाद प्राचीन शासन पद्धति का समूल नाश हो गया।

फ्रांसीसी क्रान्ति का फ्रांस व यूरोप के लिए ही नहीं अपितु समस्त मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस क्रान्ति ने मानवता को स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व का नया नारा दिया। यह शस्त्रों के साथ ही विचारों का भी युद्ध था।

फ्रांसीसी समाज की वर्ग व्यवस्था—उस दौर में समाज तीन एस्टेट्स में बँटा हुआ था—पादरी, कुलीन और जनसामान्य। पहले दो वर्गों को विशेषाधिकार प्राप्त थे और उन्हें करों से भी छूट दी गयी थी। पूरी आबादी में 90 प्रतिशत गरीब किसान होते थे।

आर्थिक हालात—क्रान्ति के समय लुई सोलहवाँ फ्रांस का सम्राट था। फ्रांस के संसाधन नष्ट हो चुके थे। सरकार कर्ज लौटाने में असमर्थ थी। कर की अदायगी केवल तीसरे एस्टेट के लोगों अर्थात् जनसामान्य द्वारा ही की जाती थी। खाद्य पदार्थों की कीमतों में तेजी से वृद्धि हो रही थी। अमीर-गरीब की खाई चौड़ी होती जा रही थी।

मध्यम वर्ग का आविर्भाव—अठारहवीं शताब्दी में एक नए सामाजिक वर्ग के रूप में मध्यम वर्ग सामने आया। इन लोगों ने जन्मजात विशेषाधिकारों को समाप्त करने की आवाज बुलन्द की।

दार्शनिकों का योगदान—जान लॉक, रूसो व मान्टेस्क्यू जैसे विचारकों ने राजा के दैवी व निरंकुश अधिकारों का खण्डन अपनी रचनाओं में किया। अमेरिका में 13 उपनिवेशों ने स्वयं को ब्रिटेन से आजाद कर स्वतन्त्रता व समानता पर आधारित संविधान और उसके अनुरूप सरकार बनायी। इनका प्रभाव लोगों पर हुआ और वे लुई सोलहवें को सत्ता से हटाने के लिए उठ खड़े हुए।

क्रान्ति और उसका परिणाम—तीसरे एस्टेट के लोग स्वयं को फ्रांस का वास्तविक प्रवक्ता मानते थे। एस्टेट्स जनरल के अधिवेशन में सम्राट ने पूरी सभा द्वारा मतदान में भाग लेने की माँग अस्वीकार कर दी तो तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों ने अपनी सभा को ही नेशनल असेम्बली घोषित कर दिया। मिराब्यो और आबेसिए इनका नेतृत्व कर रहे थे। ये लोग वर्साय के टेनिस कोर्ट में जमा हुए। इसी दौरान गुस्साई भीड़ ने दुकानों पर धावा बोल दिया, सम्राट ने सेना को कार्यवाई की खुली छूट दे दी। भीड़ ने बास्तील के किले व जेल को तोड़कर शस्त्रों को लूट लिया और कैदियों को छुड़ा लिया।

क्रान्तिकारियों के उग्र विद्रोह को देखकर सम्राट ने सत्ता पर संविधान के अंकुश को मान्यता दी और सामन्ती व्यवस्था का अन्त करने का आदेश जारी कर दिया। इस प्रकार फ्रांस में संवैधानिक राजतन्त्र की नींव पड़ी। सभी नागरिकों को मूल व नैसर्गिक अधिकारों की प्राप्ति हुई।

गणतन्त्र की स्थापना—निर्वाचित कन्वेंशन (असेम्बली) ने 21 सितम्बर, 1792 को राजतन्त्र का अन्त कर फ्रांस को गणतन्त्र घोषित कर दिया। सम्राट लुई सोलहवें को देशद्रोह के आरोप में फाँसी पर चढ़ दिया गया। रानी मेरी एन्तोएनेत को भी मौत की सजा दी गयी।

प्रश्न 6. 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति की विरासत का वर्णन दीजिए।

अथवा

फ्रांस के इतिहास में फ्रांसीसी क्रान्ति का महत्व समझाइए।

अथवा

विश्व पर फ्रांसीसी क्रान्ति का क्या प्रभाव हुआ? समझाइए।

उत्तर—फ्रांस की क्रान्ति एक युगान्तकारी घटना थी। इसने पुरातन व्यवस्था को नष्ट कर नए युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस क्रान्ति से न सिर्फ फ्रांस, बल्कि सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हुआ। इस क्रान्ति के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित थे—

(i) सामंती व्यवस्था (पुरातन व्यवस्था) की समाप्ति—फ्रांस की क्रान्ति ने सामंती व्यवस्था को समाप्त कर दिया। सामंतों के विशेषाधिकार समाप्त कर दिए गए जिससे सबसे बड़ी राहत किसानों को मिली और उनका शोषण समाप्त हो गया।

(ii) राजतन्त्र की समाप्ति—1789 की फ्रांस की क्रान्ति ने फ्रांस में राजतन्त्र को समाप्त कर दिया; यद्यपि यह व्यवस्था स्थायी नहीं हो सकी। राजा को गद्दी से हटाकर उसे मृत्युदण्ड दिया गया। फ्रांस में गणतन्त्रात्मक व्यवस्था लागू की गई।

(iii) प्रशासनिक एकरूपता—फ्रांस की क्रान्ति की एक महत्त्वपूर्ण देन यह थी कि इसने राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से फ्रांस को एक इकाई में परिवर्तित कर दिया। पुरानी प्रशासनिक-व्यवस्था समाप्त कर दी गई। सम्पूर्ण देश में

एक प्रकार की शासन-व्यवस्था, एक तरह के आर्थिक नियम, एक ढंग की माप-तौल की प्रणाली एवं एक प्रकार का कानून लागू किया गया।

(iv) राजनीतिक चेतना का विकास—1789 की क्रान्ति ने जनसाधारण में भी राजनीतिक चेतना जगा दी। यद्यपि यह एक मध्यवर्गीय क्रान्ति थी तथापि जनसाधारण ने भी इसमें भाग लिया। यह विश्व इतिहास की पहली घटना थी जब सर्वसाधारण ने राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए आन्दोलन किया। क्रान्ति के नेताओं ने साधारण जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए अपने विचारों का प्रचार-प्रसार किया जिससे सर्वसाधारण में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। पहले जनसाधारण राजनीति में कोई रुचि नहीं लेता था, परन्तु 1789 की क्रान्ति के बाद परिस्थितियाँ बदल गईं।

(v) राष्ट्रीयता की भावना का उदय—फ्रांस की क्रान्ति ने नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना जगा दी। अब वे अपने को एक राष्ट्र के रूप में देखने लगे। क्षेत्रीयता की भावना विलुप्त हो गई। वे एकजुट होकर तानाशाही और शोषण के विरुद्ध खड़े हो गए तथा पुरातन व्यवस्था के स्थान पर नई व्यवस्था की स्थापना में लग गए।

(vi) व्यक्ति का महत्त्व बढ़ना—फ्रांस की क्रान्ति ने व्यक्ति के महत्त्व को स्वीकार किया। 1789 में राष्ट्रीय सभा ने मानव के मूलभूत अधिकारों की घोषणा कर तथा स्वतन्त्रता एवं समानता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसके द्वारा समाज में प्रत्येक व्यक्ति के महत्त्व को स्वीकार किया गया। प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक स्वतन्त्रता मिली तथा जनता की सार्वभौमिकता स्वीकार की गई। अब वैयक्तिक स्वतन्त्रता का सिद्धान्त स्थापित हुआ। सामाजिक असमानता का अन्त हुआ और वर्ग-विभेद समाप्त हो गया।

(vii) स्वतन्त्रता, समानता और बंधुत्व की भावना का उदय—1789 की क्रान्ति ने यूरोप के सामने एक नया सिद्धान्त रखा। यह था—स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व (Liberty, Equality and Fraternity) का सिद्धान्त। यह सिद्धान्त यूरोप के अन्य देशों के लिए भी अनुकरणीय बन गया। इसी के आधार पर अनेक यूरोपीय राष्ट्रों में क्रान्तियाँ हुईं।

(viii) नागरिक स्वतन्त्रता की स्थापना—फ्रांस की क्रान्ति के फलस्वरूप नागरिकों की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया। अब फ्रांस में न तो शासक वर्ग और न ही शासित वर्ग था। सभी नागरिक एकसमान माने गए, उन्हें विचार-अभिव्यक्ति और चुनावों में भाग लेने की स्वतन्त्रता मिली। सरकारी नौकरियाँ अब योग्यता के आधार पर सभी के लिए उपलब्ध थीं। कर मनमाने ढंग से नहीं, बल्कि कानून के अनुकूल वसूलने की व्यवस्था हुई। नागरिकों को न्यायिक स्वतन्त्रता भी मिली।

(ix) धार्मिक स्वतन्त्रता—क्रान्ति के पूर्व फ्रांस में रोमन कैथोलिक चर्च का व्यापक प्रभाव था, यह वस्तुतः राजधर्म था। राजा चर्च का हिमायती था, परन्तु गैर-कैथोलिकों पर अत्याचार होते थे। क्रान्ति के बाद लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिली और राज्य का धार्मिक मामलों पर से नियन्त्रण समाप्त कर दिया गया। फ्रांस में धर्मसहिष्णुता की नीति अपनाई गई और यह धर्मनिरपेक्ष राज्य बन गया। यह भी 1789 की क्रान्ति की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

(x) समाजवाद का आरम्भ—फ्रांसीसी क्रान्ति ने समाजवाद का बीजारोपण कर दिया। जैकोबिनों ने बहुसंख्यक गरीबों को अनेक सुविधाएँ दीं। अमीर-गरीब का भेद मिटाने का प्रयास हुआ तथा खाद्य पदार्थों के मूल्य निर्धारित किए गए।

(xi) शैक्षणिक व्यवस्था में परिवर्तन—1789 के पूर्व शैक्षणिक व्यवस्था पर भी चर्च का ही अधिकार था तथा पादरी ही शिक्षा देने का काम करते थे। क्रान्ति के बाद शिक्षा देने का दायित्व सरकार ने अपने ऊपर ले लिया, फलतः धार्मिक शिक्षा के स्थान पर राज्य ने ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को बढ़ावा दिया।

(xii) मीटरी प्रणाली लागू—क्रान्ति के बाद फ्रांस में माप-तौल के लिए मीटरी प्रणाली अपनाई गई। यह दशमलव पद्धति पर आधारित थी, बाद में यूरोप के अन्य राष्ट्रों ने भी इस प्रणाली को अपना लिया।

(xiii) वाणिज्य-व्यापार की वृद्धि—सामंती प्रतिबन्धों और 'गिल्ड प्रथा' के कारण व्यापार-वाणिज्य का विकास नहीं हो रहा था। सामंती प्रथा के समाप्त होते ही व्यापारियों पर लगे प्रतिबन्ध समाप्त हो गए। आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए व्यापारियों को अनेक सुविधाएँ दी गई जिससे व्यापार-वाणिज्य का विकास हुआ और फ्रांस की आर्थिक सम्पन्नता बढ़ी।

(xiv) नेपोलियन का कानून-संग्रह (नेपोलियन कोड)—क्रान्ति के बाद जब सत्ता नेपोलियन के हाथों में आई तो उसने फ्रांस में प्रचलित कानूनों का संकलन करवाया। यह संकलन नेपोलियन कोड के नाम से विख्यात है। इसके द्वारा एक विधि-संहिता तैयार की गई। इसका अनुकरण अन्य यूरोपीय राष्ट्रों ने भी किया। नेपोलियन की विधि-संहिता फ्रांसीसी क्रान्ति की अमूल्य देन है।

(xv) नया राष्ट्रीय कैलेंडर—क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस में एक नया राष्ट्रीय कैलेंडर गणतन्त्र की स्थापना के दिन (22 सितम्बर, 1792) से लागू किया गया। इसमें वर्ष को ऋतुओं के आधार पर बारह महीनों में बाँटा गया।

फ्रांस की क्रान्ति का अन्य देशों पर प्रभाव—फ्रांस की क्रान्ति के प्रभाव केवल फ्रांस तक ही सीमित नहीं रहे अपितु इस क्रान्ति ने पूरे यूरोप में हलचल मचा दी थी। इस क्रान्ति के अन्य देशों पर निम्नलिखित प्रभाव हुए—

(i) यूरोप पर प्रभाव—यूरोप के राजाओं और वहाँ की जनता दोनों का ध्यान फ्रांस की ओर था। क्रान्ति से जहाँ यूरोपीय निरंकुश शासक अपने लिए खतरा महसूस करने लगे, वहीं उन देशों की जनता आशाभरी निगाहों से फ्रांस की ओर देख रही थी। फ्रांस की देखादेखी सामंती व्यवस्था को मिटाने एवं समानता के सिद्धान्त को लागू करने का प्रयास किया गया।

(ii) इटली पर प्रभाव—नेपोलियन ने यूरोपीय राष्ट्रों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत कर दी, फलतः इटली के भावी एकीकरण की नींव पड़ी।

(iii) जर्मनी पर प्रभाव—जर्मनी में भी यही हुआ। जर्मनी के 300 राज्यों को नेपोलियन ने 39 राज्यों में संयुक्त कर राइन राज्यसंघ का गठन किया।

(iv) पोलैंड पर प्रभाव—नेपोलियन ने पोलैंड के लोगों के सामने भी एक संयुक्त पोलैंड की तस्वीर रखी जो प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पूरी हुई।

(v) इंग्लैंड पर प्रभाव—फ्रांसीसी क्रान्ति से प्रेरणा लेकर ही इंग्लैंड में सन् 1832 का रिफॉर्म ऐक्ट (Reform Act) पारित किया गया। इसने इंग्लैंड में संसदीय सुधारों का मार्ग प्रशस्त कर दिया। सन् 1789 की क्रान्ति के परिणामस्वरूप इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति को भी गति मिली।

(vi) भारत पर प्रभाव—फ्रांस की क्रान्ति से भारत भी अछूता नहीं रहा। इससे प्रेरणा लेकर मैसूर के शासक टीपू सुल्तान ने भारत से अंग्रेजों की सत्ता समाप्त करने का प्रयास किया। महान समाज सुधारक राजा राममोहन राय ने विचारों पर भी इस क्रान्ति ने गहरा प्रभाव डाला। जब वे इंग्लैंड जाते हुए फ्रांस से गुजरे तो उन्होंने क्रान्तिकारी तिरंगे झंडेवाले युद्धपोत को देखा। वस्तुतः, स्वतन्त्रता और जनवादी अधिकारों के विचार फ्रांसीसी क्रान्ति की सबसे महत्त्वपूर्ण विरासत बन गए।

प्रश्न 7. क्या आप सोचते हैं कि 'मानव व नागरिक अधिकारों की घोषणा' विरोधाभासों से परिपूर्ण है?

उत्तर—'मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा' विरोधाभासों से परिपूर्ण है क्योंकि—

(1) स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार नहीं दिए गये थे।

(2) नागरिकों को पूर्ण स्वतन्त्रता के अधिकार प्रदान नहीं किए गये थे।

(3) सभी नागरिकों को वोट देने का अधिकार नहीं था। मानव जो 25 वर्ष की आयु पूरा करता हो तथा कर दाता हो उसी व्यक्ति को वोट देने का अधिकार था तथा उसी को सक्रिय नागरिक होने का अधिकार प्राप्त था। उम्मीदवार बनने के लिए व्यक्ति को उच्च श्रेणी का करदाता होना चाहिए।

(4) जनता के प्रतिनिधि बनने का अधिकार केवल धनी व्यक्ति को ही था।

प्रश्न 8. रॉबेस्प्येर के द्वारा विभिन्न सुधार किये जाने के बावजूद उसका कार्यकाल 'आतंक का शासन' क्यों कहलाता है?

उत्तर—फ्रांस में सन् 1793 से 1794 तक 'आतंक का युग' था। रोबेस्प्येर के नियन्त्रण में दण्ड की कठोर नीतियों का अनुपालन किया गया। गणतंत्र के विरोधियों—कुलीन एवं पादरी तथा अन्य राजनीतिक दलों के सदस्यों को कठोर सजाएँ दी गईं। क्रान्तिकारी न्यायालयों द्वारा ऐसे लोगों पर मुकदमा चलाया गया। न्यायालय द्वारा दोषी पाए जाने पर लोगों को 'गिलोटिन' के द्वारा मृत्युदण्ड दिया गया। 'गिलोटिन' दो खंभों के बीच लटकते आरे वाली मशीन थी। जिस पर रखकर अपराधी का सिर काट दिया जाता था। इस मशीन का नाम उसके आविष्कारक जोसेफ इग्नेस गिलोटिन के नाम पर रखा गया। 10 अक्टूबर, 1789 को डॉक्टर जोसेफ इग्नेस गिलोटिन ने नेशनल असेम्बली को मृत्युदण्ड देने के लिए 'गिलोटिन' को अपनाने का सुझाव दिया।

रोबेस्प्येर सरकार ने कानून बनाकर मजदूरी एवं वेतन के साथ वस्तुओं का अधिकतम मूल्य भी निर्धारित किया। पावरोटी तथा माँग की राशनिंग की गई। किसानों को अपने अनाज शहरों के बाजारों में निर्धारित मूल्य पर बेचने को विवश किया गया। महँगे सफेद आटे के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। सभी नागरिकों के लिए गेहूँ की बनी रोटी खाना अनिवार्य किया गया, जिसे 'समता रोटी' कहा गया था। सभी नागरिकों को आचार-व्यवस्था में भी समानता लाने के प्रयासों का निर्देश दिया गया था।

परम्परागत संबोधनों मॉन्स्यूर (महाशय) तथा मादम (महोदया) की जगह पुरुष तथा महिलाओं के लिए क्रमशः सितोयेन (नागरिक) तथा सितोयीन (नागरिका) के संबोधन का प्रयोग करने का आदेश दिया गया है। चर्चों को बंद कर उनके भवनों में सैन्य ठिकाने तथा सरकारी कार्यालयों को खोला गया।

रोबेस्प्येर ने अपनी नीतियों को कठोरता से लागू किया, जिसके कारण उसके समर्थक भी त्रस्त हो गए। जुलाई, 1794 में न्यायालय ने कई मामलों में रोबेस्प्येर को भी दोषी ठहराया और उसी के आधार पर उसकी गिरफ्तारी हुई। गिरफ्तारी के अगले दिन ही उसे 'गिलोटिन' पर चढ़ा दिया गया।

प्रश्न 9. क्रान्तिकारी फ्रांस में महिलाओं की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर—फ्रांसीसी समाज में महिलाएँ सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों में संलग्न थीं। महिलाएँ यह मानकर चल रही थीं कि उनकी भागीदारी से क्रान्तिकारी सरकार उनके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक नीतियों का निर्माण करेगी।

तीसरे एस्टेट की अधिकांश महिलाएँ जीविका निर्वाह के लिए कार्य कर रही थीं। वे कपड़ों की धुलाई, सिलाई, बुनाई तथा बाजारों में फल-सब्जियाँ बेचने का कार्य करती थीं। महिलाएँ वेश्यावृत्ति में भी संलग्न थीं। अधिकांश महिलाएँ शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षणों से दूर ही रहीं। कुलीन वर्ग की महिलाएँ अथवा तीसरे एस्टेट के सम्पन्न परिवारों की महिलाएँ ही कॉन्वेंट (Convent) में शिक्षा ग्रहण कर पाती थीं। महिलाएँ कार्य करके अपने परिवार का पालन-पोषण करती थीं किन्तु उन्हें पुरुषों के मुकाबले कम पारिश्रमिक दिया जाता था।

महिलाओं ने अपने अधिकारों पर विचार-विमर्श के लिए 'राजनीतिक क्लब' गठित किए। फ्रांस के विभिन्न नगरों में ऐसे 60 क्लब अस्तित्व में थे। इन क्लबों ने अपने अखबार निकाले। इनमें 'द सोसाइटी ऑफ रिवयोल्यूशनरी एण्ड रिपब्लिकन वूमेन' (The Society of Revolutionary and Republican Women) सबसे प्रसिद्ध क्लब था। इन क्लबों की एक प्रमुख माँग महिलाओं को पुरुषों के समान राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति थी। महिलाओं को तब निराशा हाथ लगी, जब वर्ष 1791 में पारित संविधान में महिलाओं को 'निष्क्रिय नागरिक' का दर्जा दिया गया। महिलाओं ने मताधिकार, असेम्बली का सदस्य निर्वाचित होने तथा राजनीतिक पदों पर नियुक्ति जैसी माँगों का प्रस्ताव सामने रखा। उन्हें आशा थी कि नई सरकार उनकी माँगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी। क्रान्तिकारी सरकार ने कई ऐसे कानून बनाए, जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार आया। उदाहरणार्थ सरकारी विद्यालयों की स्थापना की गई तथा लड़कियों के लिए स्कूली शिक्षा को अनिवार्य बना दिया गया। अब पिता द्वारा किसी लड़की का विवाह बिना उसकी मर्जी के नहीं किया जा सकता था। विवाह को स्वैच्छिक अनुबंध माना गया तथा नागरिक कानूनों के तहत उसका पंजीकरण किया गया। तलाक को कानूनी रूप दिया गया। स्त्री तथा पुरुष की समानता का कानून लाया गया। सुधारों की घोषणा के बाद महिलाओं की राजनीतिक गतिविधियों को प्रतिबन्धित किया गया।

सुधार तथा प्रतिबंधों के बाद भी कई महिला क्लबों की गतिविधियाँ संचालित की जाती रहीं। इस दौर में जैकोबिन सरकार ने कई महिलाओं को गिरफ्तार किया तथा कुछ महिलाओं को मृत्युदण्ड दिया गया। मताधिकार तथा समान वेतन के लिए महिलाओं का आन्दोलन 19वीं सदी के अंत से 20वीं सदी के आरम्भ तक चलता रहा। वर्ष 1946 में फ्रांस की महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ।

●

2 यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. रूस के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हालात 1905 से पहले कैसे थे?

उत्तर—रूस के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हालात 1905 से पहले निम्न प्रकार थे—

(1) ग्रामीण क्षेत्रों में समाज मजदूरों, अभिजात वर्ग एवं चर्च के मध्य बँटा हुआ था। अभिजात वर्ग एवं चर्च के सदस्यों के पास विशाल भूमिखंड थे। शहरों में समाज मालिकों एवं नौकरों में विभाजित था। श्रमिक अपने-अपने कौशलों के अनुसार समूहों में बँटे हुए थे। महिला श्रमिक कुल श्रमिक संख्या का 31 प्रतिशत थे।

(2) ग्रामीण क्षेत्रों में 85 प्रतिशत जनसंख्या कृषि-सम्बन्धी कार्यों से जुड़ी हुई थी। इसमें से अधिकांश श्रमिक अथवा छोटे किसान थे। शहरों में कारखानों के मजदूरों को बहुत कम वेतन दिया जाता था। उनकी आय उनके जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए पर्याप्त न थी। श्रमिक लगातार 12-15 घंटे कार्य करते रहते थे। कारखानों से प्राप्त लाभ पूर्ण रूप से मालिकों की संपत्ति होता था।

(3) मजदूरों, भूमिहीन किसानों एवं महिलाओं को राज्य की शासन प्रक्रिया में भाग लेने का कोई अधिकार नहीं था। शासन सत्ता केवल राजवंश के हाथों में थी।

प्रश्न 2. 1917 से पहले रूस की कामकाजी आबादी यूरोप के बाकी देशों के मुकाबले किन-किन स्तरों पर भिन्न थी?

उत्तर—1917 से पहले रूस की कामकाजी आबादी यूरोप के बाकी देशों के मुकाबले निम्नलिखित स्तरों पर भिन्न थी—(1) 1917 से पहले रूस की लगभग 85 प्रतिशत श्रमिक जनसंख्या कृषि-सम्बन्धी कार्यों में लिप्त थी। वे इसी से आय प्राप्त करते थे। शहरों में कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों की संख्या बहुत कम थी।

(2) अन्य यूरोपीय देशों में कृषि-सम्बन्धी कार्यों में लिप्त श्रमिक जनसंख्या बहुत कम थी। उदाहरण के लिए, फ्रांस और जर्मनी में यह जनसंख्या 40 से 50 प्रतिशत थी।

(3) रूसी श्रमिकों का सामाजिक जीवन अन्य यूरोपीय श्रमिकों से अलग था। रूस में छोटे किसान कम्यून में रहकर सामुदायिक कृषि करते थे, तथा उत्पादन एवं लाभ को परिवारों की आवश्यकतानुसार आपस में बाँट लिया करते थे।

प्रश्न 3. 1917 में ज़ार का शासन क्यों खत्म हो गया?

उत्तर—1917 में ज़ार का शासन निम्नलिखित कारणों से खत्म हो गया—

(1) 1917 से पूर्व रूस में आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ अत्यन्त शोचनीय थीं। प्रथम गृहयुद्ध में 70 लाख रूसी मारे गए थे तथा फसलों एवं इमारतों के नष्ट हो जाने के कारण 30 लाख लोग शरणार्थी बन गए थे।

(2) सैनिक युद्ध लड़ने के पक्ष में नहीं थे, इसीलिए वे युद्ध को जारी रखने के सरकारी निर्णय के विरुद्ध थे।

(3) 22 फरवरी को सरकारी अधिकारियों ने एक फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी, जिसके परिणामस्वरूप 50 फैक्ट्रियों के श्रमिकों ने हड़ताल कर दी।

(4) 25 फरवरी को सरकार ने ड्यूमा को स्थगित कर दिया। परिणामस्वरूप 26 फरवरी को सड़कों पर बड़ी संख्या में विरोध प्रदर्शन किया गया।

(5) सरकार ने घुड़सवार फौज को प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया ताकि स्थिति को नियंत्रण में लाया जा सके। लेकिन फौज ने यह आदेश मानने से इंकार कर दिया और श्रमिकों से हाथ मिला लिया।

(6) अंत में फौज एवं श्रमिकों ने मिलकर 'सोवियत' अथवा 'पेत्रोग्राद सोवियत' का निर्माण किया। इस प्रकार फरवरी क्रांति ने ज़ार के शासन का अंत कर दिया।

प्रश्न 4. दो सूचियाँ बनाइए : एक सूची में फरवरी क्रांति की मुख्य घटनाओं और प्रभावों को लिखिए और दूसरी सूची में अक्टूबर क्रांति की प्रमुख घटनाओं और प्रभावों को दर्ज कीजिए।

उत्तर—(1) फरवरी क्रांति (1917) की तिथियाँ एवं घटनाएँ :

(i) 22 फरवरी—दाहिने किनारे की एक फैक्ट्री में तालाबंदी। अगले दिन 50 फैक्ट्रियों के श्रमिकों की हड़ताल।

(ii) 24 और 25 फरवरी—सरकार द्वारा ड्यूमा का स्थगन। राजनीतिकों द्वारा इस कदम की आलोचना।

(iii) 26 फरवरी—श्रमिकों ने सड़कों पर बड़ी संख्या में विरोध प्रदर्शन किया।

(iv) 27 फरवरी—श्रमिकों द्वारा पुलिस मुख्यालय पर हमला।

(v) 2 मार्च—ज़ार का पदत्याग। ज़ार के शासन का अंत।

(2) अक्टूबर क्रांति (1917) की तिथियाँ एवं घटनाएँ :

(i) 16 अक्टूबर—लेनिन ने पेत्रोग्राद सोवियत और बोल्शेविक पार्टी को सत्ता हथियाने के लिए सहमत कर लिया। इस कार्य के लिए एक सैन्य क्रांतिकारी समिति का गठन किया गया।

(ii) 24 अक्टूबर—विद्रोह आरम्भ हुआ। दो बोल्शेविक समाचारपत्रों की इमारतों पर नियन्त्रण किया गया। टेलीफोन एवं टेलीग्राफ विभागों पर भी कब्जा किया गया। विन्टर पैलेस की सुरक्षा का प्रबंध किया गया। इन सरकारी गतिविधियों के जवाब में सैन्य क्रांतिकारी समिति के सदस्यों ने अनेक सैन्य ठिकानों पर कब्जा किया। रात होते-होते पूरा शहर समिति के कब्जे में आ गया और मंत्रियों ने त्यागपत्र दे दिए।

(iii) दिसम्बर तक मॉस्को-पेत्रोग्राद क्षेत्र पर बोल्शेविकों का पूर्ण कब्जा हो गया।

फरवरी क्रांति में पुरुष एवं महिला श्रमिक, दोनों सम्मिलित थे। मार्फा वासीलेवा एक महिला श्रमिक ने अकेले ही सफल हड़ताल की। अक्टूबर क्रांति में मुख्यत: बोल्शेविक सम्मिलित थे। क्रांतिकारियों के प्रमुख नेता थे लेनिन और लियोन त्रात्सकी। फरवरी क्रांति के फलस्वरूप राजवंश का अंत हुआ, जबकि अक्टूबर क्रांति के बाद बोल्शेविकों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया और रूस में साम्यवादी दौर आरम्भ हुआ।

प्रश्न 5. बोल्शेविकों ने अक्टूबर क्रांति के फौरन बाद कौन-कौन से प्रमुख परिवर्तन किए?

उत्तर—अक्टूबर क्रांति के फौरन बाद बोल्शेविकों ने निम्नलिखित परिवर्तन किये—

(1) अधिकांश उद्योग और बैंक राष्ट्रीयकृत कर दिये गये।

(2) भूमि को सार्वजनिक संपत्ति घोषित कर दिया गया और श्रमिकों को अभिजात वर्ग की जमीनों पर कब्जा करने का अधिकार दिया गया।

(3) शहरों में बड़े घरों में कई परिवारों को आवास दिया गया।

(4) अभिजात वर्ग की पदवियों पर पाबंदी लगा दी गई।

(5) सेना एवं अधिकारियों के लिए नई वर्दी, उदाहरण के लिए सोवियत हैट, निश्चित की गई।

(6) बोल्शेविक पार्टी का नाम बदलकर रूसी साम्यवादी पार्टी कर दिया गया।

प्रश्न 6. निम्नलिखित के बारे में संक्षेप में लिखिये—

(1) कुलक, **(2) ड्यूमा,**
(3) 1900 से 1930 के बीच महिला कामगार, **(4) उदारवादी,**
(5) स्टालिन का सामूहिकीकरण कार्यक्रम।

उत्तर—(1) कुलक—रूस में बड़े किसानों को कुलक कहा जाता था। 1928 में साम्यवादी पार्टी के सदस्यों ने ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया और कुलकों के खेतों में अनाज उत्पादन एवं संग्रहण का निरीक्षण किया।

(2) ड्यूमा—रूस में निर्वाचित परामर्शी संसद को ड्यूमा कहते हैं। इसे 1905 की क्रांति के बाद जार द्वारा गठित किया गया था। लेकिन जार ने प्रथम ड्यूमा 75 दिनों के अन्दर स्थगित कर दी।

(3) 1900 से 1930 के बीच महिला कामगार—फैक्ट्री मजदूरों का 31 प्रतिशत महिला कामगारों का था। लेकिन, उन्हें पुरुष श्रमिकों से कम मजदूरी मिलती थी। अधिकांश फैक्ट्रियों में उन्हें पुरुषों की मजदूरी का आधा अथवा तीन-चौथाई ही दिया जाता था। इसी कारण उन्होंने विद्रोह में पुरुषों का साथ दिया। 22 फरवरी, 1917 को कई फैक्ट्रियों में महिला कामगारों ने हड़ताल की। इसीलिए इस दिन को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के नाम से जाना जाता है। रूसी क्रांति के दौरान महिलाएँ पुरुष क्रांतिकारियों को प्रेरित करती थीं। मार्फा वासीलेवा नामक एक महिला श्रमिक ने अकेले ही हड़ताल की घोषणा की। जब मालिकों ने उसके पास डबलरोटी का टुकड़ा भेजा, तो उसने वह ले लिया लेकिन काम पर वापस जाने से मना कर दिया। उसने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता कि केवल मेरा पेट भरा रहे और बाकी सब भूखों मरें।"

(4) उदारवादी—उदारवादी रूस में सामाजिक परिवर्तन के समर्थक थे। वे चाहते थे कि राष्ट्र धर्म-निरपेक्ष हो, अर्थात् सभी धर्मों का सम्मान हो। वे राजवंश की अनियंत्रित शक्ति के विरुद्ध थे। वे सरकार के विरुद्ध व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा चाहते थे। वे चाहते थे कि राष्ट्र को एक निर्वाचित संसद द्वारा गठित एवं एक स्वतंत्र न्यायपालिका द्वारा लागू विधान के अनुसार चलाया जाए। वे लोकतंत्र में विश्वास नहीं रखते थे। वे सार्वजनिक मताधिकार के भी विरुद्ध थे। इसके विपरीत, वे चाहते थे कि केवल समृद्ध पुरुष ही वोट दें। लेकिन वे महिलाओं को मताधिकार देने के विरुद्ध थे।

(5) स्टालिन का सामूहिकीकरण कार्यक्रम—रूस में अनाज की कमी को देखते हुए स्टालिन ने छोटे-छोटे खेतों के सामूहिकीकरण की प्रक्रिया शुरू की क्योंकि वह मानता था कि छोटे-छोटे भूमि के टुकड़े आधुनिकीकरण में बाधा डालते हैं। इसलिए छोटे-छोटे किसानों से उनकी जमीन छीनकर राज्य के नियंत्रण में एक विशाल जमीन का टुकड़ा बनाया जाना था। सभी किसानों को राज्य बाध्य करता था कि सामूहिक खेती करें। सामूहिक खेती करने के लिए बड़ी भूमि अर्जित करना ही स्टालिन की सामूहिकीकरण प्रक्रिया कहलाया।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सन् 1917 की रूस की क्रान्ति किसके शासन काल में हुई थी?
(क) जार निकोलस I (ख) जार निकोलस II (ग) जार निकोलस III (घ) जार निकोलस IV।

2. जारीना अलेव सान्द्रा कहाँ की राजकुमारी थी?
(क) फ्रांस (ख) जर्मनी (ग) ऑस्ट्रिया (घ) इंग्लैण्ड।

3. 'रूसी समाजवादी प्रजातान्त्रिक दल' का गठन किसने किया?
(क) लेनिन (ख) मार्क्स (ग) जॉर्ज प्लेखानोव (घ) गोर्की।

4. मेंशेविकों का नेता कौन था?
(क) लेनिन (ख) एलेक्जेण्डर कैरेंन्स्की
(ग) तुरगेव (घ) बुकानिन।

5. अक्टूबर मैनीफेस्टो किसने जारी किया?
(क) जार निकोलस I (ख) जार निकोलस II (ग) जार निकोलस III (घ) जार निकोलस IV।

6. 8 नवम्बर, 1917 को गठित नई बोल्शेविक सरकार की प्रथम घोषणा क्या थी?
(क) भूमि पर घोषणा (ख) शान्ति पर घोषणा
(ग) उद्योगों का राष्ट्रीयकरण (घ) जनता के अधिकारों की घोषणा।

7. रूस की गुप्त पुलिस का नाम क्या था?
(क) चेका (ख) गेस्टापो (ग) सुरक्षा पुलिस (घ) एफ० बी० आई०।

8. रूस में 'कुलक' शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया जाता था?
(क) मन्त्री (ख) कृषक (ग) विद्यार्थी (घ) राजनीतिक नेता।

9. रूस में 'सामूहिक खेत' क्या कहलाते थे?
(क) कोलखोज (ख) कुलक (ग) सोवियत (घ) ड्यूमा।

10. 'महान विशुद्ध' (The Great Purge) की उपाधि किससे सम्बन्धित है?
(क) लेनिन (ख) स्तालिन (ग) जार निकोलस II (घ) जार निकोलस I।

11. जारीना अलेक्सान्द्रा का पति कौन था?
(क) जार निकोलस I (ख) जार निकोलस II (ग) जार निकोलस III (घ) जार निकोलस IV।

12. जार के अधीन रूस से मुख्यतया किस वस्तु का निर्यात किया जाता था?
(क) अनाज (ख) सोना (ग) चाँदी (घ) टैक्सटाइल।

13. निम्न में से किसने किसी भी प्रकार के राजनैतिक या सामाजिक परिवर्तन का घोर विरोध किया?
(क) रूढ़िवादी (ख) उदारवादी (ग) रैडिकल्स (घ) राष्ट्रवादी।

14. 'प्रथम इण्टरनेशनल' का उद्देश्य किसकी सत्ता स्थापित करना था?
(क) शासक वर्ग (ख) श्रमिक वर्ग (ग) सेना (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. 1 मई किस रूप में माना जाता है?
(क) अध्यापक दिवस (ख) दार्शनिक दिवस (ग) श्रमिक दिवस (घ) बाल दिवस।

16. किसने 'समानों के समाज' (Society of Equals) का गठन किया?
(क) सेण्ट साइमन (ख) बेवौफ (ग) फोरियर (घ) कार्ल मार्क्स।

17. 'दास कैपिटल' किसने लिखी?
(क) बेबौफ (ख) सेण्ट साइमन (ग) फ्रेडरिक एन्जेल्स (घ) कार्ल मार्क्स।

18. 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक पुरुष संघ' की स्थापना कब की गई?
(क) 1864 (ख) 1865 (ग) 1866 (घ) 1867।

19. किसने स्मरण किया कि "उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं है सिवाय अपने बन्धनों के।"
(क) जार निकोलस I (ख) जारीना अलेक्सान्द्रा (ग) कार्ल मार्क्स (घ) सेण्ट साइमन।

20. फरवरी क्रान्ति के समय लेनिन को कहाँ देश निकाला दिया गया?
(क) स्विटजरलैण्ड (ख) पोलैण्ड (ग) जर्मनी (घ) इंग्लैण्ड।

[**उत्तर—1.** (ख), **2.** (ख), **3.** (ग), **4.** (ख), **5.** (ख), **6.** (ख), **7.** (क), **8.** (ख), **9.** (क), **10.** (ख), **11.** (ख), **12.** (क), **13.** (क), **14.** (ख), **15.** (ग), **16.** (ख), **17.** (घ), **18.** (क), **19.** (ग), **20.** (क)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रूस का अन्तिम जार कौन था?

उत्तर—निकोलस II रूस का अन्तिम जार था।

प्रश्न 2. रूसी क्रान्ति किस नाम से विख्यात है?

उत्तर—रूसी क्रान्ति बोल्शेविक क्रान्ति के नाम से विख्यात है।

प्रश्न 3. रैडिकल्स कौन थे?

उत्तर—रैडिकल्स वे व्यक्ति थे जो पूर्ण राजनीतिक या सामाजिक सुधार के पक्ष में थे।

प्रश्न 4. रूढ़िवादी किस प्रकार रैडिकल्स से भिन्न थे?

उत्तर—रैडिकल्स के विपरीत, रूढ़िवादी अपने दृष्टिकोण में पूर्णतया परम्परागत थे तथा आकस्मिक राजनीतिक या सामाजिक परिवर्तन के विरोधी थे।

प्रश्न 5. 'प्रथम इण्टरनेशनल' का उद्देश्य क्या था?

उत्तर—प्रथम इण्टरनेशनल का उद्देश्य श्रमिक वर्ग की सत्ता स्थापित करना था।

प्रश्न 6. रूसी क्रान्ति किसके शासन काल में हुई थी?

उत्तर—रूसी क्रान्ति जार निकोलस द्वितीय के शासन काल में हुई थी।

प्रश्न 7. किन्हीं दो रूसी विद्वानों के नाम लिखिए।

उत्तर—लियो टॉल्सटॉय तथा मैक्सिम गोर्की।

प्रश्न 8. बोल्शेविक पार्टी कब सत्ता में आई?

उत्तर—बोल्शेविक पार्टी 7 नवम्बर, 1917 को सत्ता में आई।

प्रश्न 9. बोल्शेविकों का नेता कौन था?

उत्तर—बोल्शेविकों का नेता लेनिन था।

प्रश्न 10. ड्यूमा क्या थी?

उत्तर—ड्यूमा कानूनों को क्रियान्वित करने वाली निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक संस्था थी। इसे जार द्वारा अधिकार प्राप्त थे।

प्रश्न 11. अक्टूबर मैनीफैस्टो क्या है?

उत्तर—जार निकोलस II ने 30 अक्टूबर, 1905 को प्रशासिनक सुधारों का एक घोषणा-पत्र जारी किया जिसे 'अक्टूबर मैनीफैस्टो' कहा जाता है।

प्रश्न 12. अक्टूबर क्रान्ति का प्रमुख नेता कौन था?
उत्तर—अक्टूबर क्रान्ति का प्रमुख नेता लेनिन था।
प्रश्न 13. कुलक कौन थे?
उत्तर—रूस के सम्पन्न कृषक 'कुलक' कहलाते थे।
प्रश्न 14. 'दास कैपिटल' किसने लिखी?
उत्तर—कार्ल मार्क्स।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रूस में 'खूनी रविवार' की घटना किस कारण से घटित हुई? इसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर—रूस में जारशाही की निरंकुशता का बोल-बाला था जार अर्थात् सम्राट के अधिकारी जनसाधारण वर्ग पर भीषण अत्याचार किया करते थे। 9 जनवरी, 1905 को रविवार के दिन मजदूरों का एक समूह जार को याचिका देने के लिए जा रहा था। उन्होंने जार के सामने अपनी माँगें रखीं। लेकिन जार के आदेश से शाही सैनिकों ने उन पर गोली चला दी जिसके फलस्वरूप बहुत से निहत्थे सैनिकों का खून बह गया। यह घटना रविवार को घटी थी। अतः रूस के इतिहास में इसे खूनी रविवार के नाम से जाना जाता है। इस घटना से रूस की सेना व नौसेना में हलचल मच गई। इसने रूसी जनता को क्रान्ति के लिए तैयार कर दिया।

प्रश्न 2. लेनिन ने क्या घोषणा की? उसने अपने विरोधियों का दमन किस प्रकार किया?

उत्तर—सन् 1917 की अक्टूबर क्रान्ति के पश्चात् लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने सत्ता सँभाली। इस पार्टी ने लेनिन के नेतृत्व में किसानों को भूमि हस्तान्तरित करने और सारी सत्ता सोवियतों को देने के लिए स्पष्ट नीतियाँ अपनाईं। लेनिन ने रूसी क्रान्ति को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित घोषणाएँ कीं—

(i) सर्वप्रथम उसने रूस को पहले विश्वयुद्ध से अलग कर दिया तथा जर्मनी के साथ ब्रेस्ट लिटोव्स्क में सन्धि की।

(ii) शहरों में बड़े घरों को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित कर दिया गया।

(iii) परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए बोल्शेविकों ने सेना एवं कर्मचारियों की नई वर्दियाँ प्रस्तुत कीं।

(iv) देश की प्रगति के लिए पंचवर्षीय योजनाओं को अपनाया गया।

(v) रूस एक दलीय देश बन गया और ट्रेड यूनियनों को पार्टी के नियंत्रण में रखा गया।

(vi) भूमि को सामाजिक संपत्ति घोषित कर दिया गया और किसानों को उस भूमि पर कब्जा करने दिया गया जिस पर वे कार्य करना चाहते थे।

(vii) बोल्शेविक निजी संपत्ति के पक्षधर नहीं थे। अतः अधिकांश उद्योगों एवं बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

(viii) पुराने अभिजात्य वर्ग की पदवियों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिए गए।

(ix) उत्पादन के सभी साधनों पर सरकार का नियंत्रण हो गया।

(x) लोगों के अधिकारों का एक घोषणा-पत्र जारी किया गया जिसमें सभी जनगणों के लिए आत्मनिर्णय का अधिकार दे दिया गया।

प्रश्न 3. निम्नलिखित को समझाइए—

बोल्शेविक, मेन्शेविक, फरवरी क्रान्ति, अक्टूबर क्रान्ति, खूनी रविवार, कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल, सोवियत।

उत्तर—बोल्शेविक—यह रूस का एक दल था जिसका नेतृत्व लेनिन के हाथों में था। यह रूस में समाजवाद स्थापित करना चाहता था।

मेन्शेविक—यह भी एक दूसरा रूसी संगठन था जिसका नेतृत्व अलैक्जेण्डर करेंस्की के हाथों में था।

फरवरी क्रान्ति—फरवरी सन् 1917 में रूस के पेत्रोग्राद में मजदूरों द्वारा की गई क्रान्ति को फरवरी क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

अक्टूबर क्रान्ति—सन् 1917 में लेनिन के नेतृत्व में हुई क्रान्ति को अक्टूबर क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

खूनी रविवार—रूस में 9 जनवरी, 1905 को जारशाही सैनिकों ने मजदूरों पर गोलियाँ चलाई जिससे उनका खून बहा इस कारण इस दिन को खूनी रविवार के रूप में जाना जाता है।

कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल—रूसी कम्युनिस्ट नेताओं ने अपनी विचारधारा को दुनिया के अन्य देशों तक पहुँचाया इसे कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के नाम से जाना जाता है।

सोवियत—रूस में श्रमिकों के प्रतिनिधियों की परिषद को सोवियत नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 4. बोल्शेविकों एवं मेन्शेविकों की विचारधारा में क्या अन्तर थे?

उत्तर—रूस की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी दो भागों बोल्शेविक एवं मेन्शेविक में विभाजित हो गई। बोल्शेविक का नेतृत्व लेनिन द्वारा किया गया। लेनिन के अनुसार जार (राजा) द्वारा शासित रूस एक दमनकारी समाज है। जिसमें पार्टी को अधिक अनुशासन में रहना चाहिए तथा अपने सदस्यों की संख्या पर पूरा नियंत्रण होना चाहिए, जबकि मेन्शेविकों का मानना था कि पार्टी में सभी को सदस्यता मिलनी चाहिए जिस प्रकार जर्मनी में सभी को मिल रही है।

प्रश्न 5. रूस में 9 जनवरी, 1905 का हत्याकाण्ड 'खूनी रविवार' के नाम से जाना जाता है। इस घटना से भारत के किस नरसंहार की याद आती है, क्यों?

उत्तर—खूनी रविवार के लिए देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर।

खूनी रविवार की घटना से भारत में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड की घटना याद हो आती है। दोनों में निर्दोष लोगों का नरसंहार हुआ था।

प्रश्न 6. रूसी क्रान्ति के आर्थिक व सामाजिक कारण क्या थे?

उत्तर—(1) आर्थिक कारण—रूसी क्रान्ति के आर्थिक कारण निम्नलिखित थे—

(a) दुर्बल आर्थिक स्थिति—क्रान्ति के समय रूस की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। उद्योग-धन्धों की स्थिति ठीक नहीं थी। प्रथम विश्व युद्ध के कारण रूस दिवालियापन की स्थिति में पहुँच चुका था।

(b) उद्योगीकरण की समस्या—सरकार के पास औद्योगिक नीति का अभाव था। उद्योगों का स्वामित्व जार और कुलीनों के पास था। विदेशी लोगों ने पूँजी निवेश कर अच्छा लाभ कमाने के लिए मजदूरों का शोषण आरम्भ कर दिया जिससे मजदूरों में असंतोष फैल गया।

(2) सामाजिक कारण—रूसी क्रान्ति के सामाजिक कारण निम्नलिखित थे—

(a) किसानों की स्थिति—1861 तक रूस में अधिकांश किसान बंधुआ मजदूर थे। वे सामंतों के अधीन काम करते थे।

(b) मजदूरों की स्थिति—यद्यपि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रूस में उद्योगों का विकास हुआ परन्तु मजदूरों की दशा दयनीय ही बनी रही। उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए थे। सरकार उन्हें संगठित होने देना नहीं चाहती थी। इस कारण किसानों के साथ मजदूर भी जारशाही के विरोधी बन गये।

(c) सुधार आन्दोलन—रूस के कुछ लोग चाहते थे कि रूस में सुधार जार द्वारा किए जायें। जार द्वारा किए गये सुधार संतोषजनक नहीं थे जिससे निहिलिस्ट आन्दोलन का जन्म हुआ। इनके विचारों से प्रभावित होकर क्रान्तिकारी जारशाही के विरुद्ध एकजुट होने लगे।

प्रश्न 7. "रूस में वास्तविक क्रान्ति होने से पूर्व ही एक मानसिक क्रान्ति हो गई थी।" समझाइए।

उत्तर—रूस में बौद्धिक जागरण—19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रूस में बौद्धिक जागरण हुआ जिसने लोगों को निरंकुश राजतन्त्र के विरुद्ध बगावत करने की प्रेरणा दी। अनेक विख्यात लेखकों एवं बुद्धिजीवियों—**लियो टॉल्सटाय, ईवान तुर्गनेव, फ्योदोर दोस्तोवस्की, मैक्सिम गोर्की, पावलोविच एंटन चेखव** ने अपनी रचनाओं द्वारा सामाजिक अन्याय एवं भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था का विरोध कर एक नए प्रगतिशील समाज के निर्माण का आह्वान किया। टॉल्सटाय ने सामंतवाद और किसानों के शोषण की कटु आलोचना की। उसकी विख्यात पुस्तक **युद्ध और शांति** (War and Peace) है। ईवान तुर्गनेव ने अपने उपन्यास **फादर्स एंड सन्स** (Fathers and Sons) में युवाओं को इस बात के लिए उत्प्रेरित किया कि वे अत्याचारों का डटकर मुकाबला करें। उसके एक अन्य उपन्यास **दि वर्जीन स्वायल** (The Virgin Soil) से प्रेरित होकर युवाओं ने **निहिलिस्ट आन्दोलन** चलाया। दोस्तोवस्की ने अनेक प्रेरक उपन्यास लिखे जिनमें सर्वविख्यात है **क्राइम एंड पनिशमेंट** (Crime and Punishment)। मैक्सिम गोर्की के उपन्यास **माँ** (The Mother) में रूस की दयनीय स्थिति का अवलोकन किया जा सकता है। जनता इनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुई। चेखव ने अनेक कहानियाँ एवं नाटक लिखे जिनमें तत्कालीन सामाजिक जीवन का वर्णन किया गया। उनके नाटकों में विख्यात है—**दि थ्री सिस्टर्स** (The Three Sisters) तथा **दि चेरी ऑचर्ड** (The Cherry Orchard)। रूसी लोग, विशेषत: किसान और मजदूर, कार्ल मार्क्स के दर्शन से भी गहरे रूप से प्रभावित हुए। अपनी रचनाओं **कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो** (Communist Manifesto) और **दास कैपिटल** (Das Kapital) द्वारा मार्क्स ने समाजवादी विचारधारा और वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसने नारा दिया—विश्व के मजदूरो, एक हो जाओ, तुम्हारे पास खोने के लिए अभावों और कष्टों के अलावा और कुछ नहीं है। मार्क्स के विचारों से श्रमिक वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ। वे शोषण और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने को तत्पर हो गये।

प्रश्न 8. सन् 1905 की रूसी क्रान्ति पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—सन् 1905 की क्रान्ति—9 जनवरी, 1905 ई. का रविवार रूस के इतिहास में **'खूनी रविवार'** के नाम से जाना जाता है। इस दिन मॉस्को में जनसाधारण एक जुलूस के रूप में अपनी 11 माँगों का माँग-पत्र लेकर जार के महल की ओर पूर्णतया शान्ति से जा रहे थे। ये लोग नारा लगा रहे थे—**"छोटे भगवान! हमें रोटी दो।"** लेकिन इस छोटे भगवान (जार) ने जनता की उचित माँगों की ओर ध्यान न देकर निहत्थे लोगों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। जिसके कारण लगभग 1000 व्यक्ति मारे गए। शाही सेना ने करीब 60 हजार से भी अधिक व्यक्तियों को बंदी बना लिया। रूस की सड़कों पर इस दिन बहुत अधिक रक्तपात हुआ। अनेक इतिहासकारों का मानना है कि यद्यपि 1905 ई० की क्रान्ति को कुचलने में जार कामयाब रहा लेकिन इस क्रान्ति ने अक्टूबर, 1917 ई० की क्रान्ति के लिए उचित वातावरण तैयार करने की भूमिका अदा की। इस दिन हुए हत्याकाण्ड से सारे रूस में रोष फैल गया। क्रान्तिकारियों के समर्थन में जगह-जगह बंद आयोजित किये गए और हड़तालें हुईं। इस क्रान्ति के कारण शिक्षित वर्ग के लोग भी क्रान्तिकारियों के साथ मिल गए। यही कारण है कि 1905 ई० की क्रान्ति को **1917 ई०** की क्रान्ति की जननी भी कहा जाता है।

प्रश्न 9. प्रथम विश्वयुद्ध में रूस का प्रवेश किस प्रकार रूसी क्रान्ति के कारणों में एक महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुआ?

उत्तर—प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय—प्रथम विश्वयुद्ध में रूस भी सम्मिलित हुआ। जार का मानना था कि युद्ध के अवसर पर जनता सरकार का समर्थन करेगी तथा देश के अन्दर सरकार-विरोधी प्रतिरोध कमजोर पड़ जाएगा, परन्तु जार की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। विश्व युद्ध में रूस की लगातार हार होती गई। सैनिकों के पास न तो अस्त्र-शस्त्र थे और न ही पर्याप्त रसद और वस्त्र; अतः रूसी सेना की हार होती गई। रूसी सेना की कमान स्वयं जार ने सँभाल रखी थी। पराजय से उसकी प्रतिष्ठा को गहरी ठेस लगी। इस स्थिति से रूसी और अधिक क्षुब्ध और क्रुद्ध हो गए। वे पूरी तरह जारशाही को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध हो गए, वस्तुतः प्रथम विश्वयुद्ध में पराजय सन् 1917 की रूसी क्रान्ति का तात्कालिक कारण बना।

प्रश्न 10. रूसी क्रान्ति के प्रमुख उद्देश्य क्या थे?

उत्तर—रूसी क्रान्ति का प्रमुख उद्देश्य निरंकुश जारशाही का अन्त करना था जो रूसी जनता पर लम्बे समय से कहर बरपा रही थी। क्रान्तिकारी किसानों और मजदूरों की दशा सुधारना चाहते थे, इसके लिए उन्होंने समाजवाद का रास्ता चुना।

प्रश्न 11. रूसी क्रान्ति में लेनिन के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर—ब्लादिमीर इलिच उल्यानेव या लेनिन—लेनिन कार्ल मार्क्स के अनुयायी तथा एक महान क्रान्तिकारी रूसी नेता थे। उनका जन्म सन् 1870 में रूस के कजान प्रान्त के सियविस्थ नगर में हुआ था। लेनिन का वास्तविक नाम ब्लादिमीर इलिइच उल्यानेव था। मैट्रिक पास करने के बाद वह साम्यवादी क्रान्ति दल के नेता बने। 1895 में उन्हें बंदी बनाकर साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया। सन् 1900 में रिहा होने के बाद वह स्विट्ज़रलैंड चले गए। वहाँ मजदूरों को संगठित करने के उद्देश्य से उन्होंने **'इस्का'** नामक समाचार-पत्र के माध्यम से रूसी मजदूरों तथा किसानों को समाजवादी विचारधारा में ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1905 की क्रान्ति के समय वह रूस लौटे। बाद में 1917 तक रूस से बाहर रहकर समाजवाद और क्रान्तिकारी भावनाओं का प्रचार करते रहे थे। संगठन में विभाजन के बाद ये बोल्शेविक दल के नेता बने।

रूस की बागडोर अपने हाथ में लेकर लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने युद्ध को समाप्त करने, किसानों को भूमि दिलाने तथा सम्पूर्ण सत्ता सोवियतों को सौंपने के सम्बन्ध में स्पष्ट नीतियाँ अपनाईं। सर्वप्रथम रूस ने अपने-आपको प्रथम विश्वयुद्ध से बिल्कुल अलग कर लिया, चाहे इसके लिए उसे भारी कीमत क्यों न चुकानी पड़ी। इसके बाद जो-जो उपनिवेश रूस के अधीन थे उन सब उपनिवेशों को स्वतन्त्र कर दिया गया। तदुपरान्त लेनिन महोदय ने अनेक घोषणाएँ कीं जिनसे रूस में समाजवाद का सूत्रपात हुआ। ये घोषणाएँ निम्नलिखित थीं—

1. उत्पादन के सम्पूर्ण साधनों पर सरकार का स्वामित्व होगा।
2. भूमि की मालिक सरकार है, जमींदार नहीं। किसान भूमि जोतेंगे तथा अपनी जरूरत के हिसाब से अन्न रखकर शेष को सरकार को दे देंगे।
3. सरकार ही किसानों एवं मजदूरों को वेतन देगी।
4. चर्च की सम्पत्ति पर सरकार का अधिकार होगा।
5. जनता को ऋण से मुक्त कर दिया जायेगा।
6. किसी सम्पत्ति, कारखाने या भूमि के बदले कोई मुआवजा नहीं दिया जाएगा।

इन सभी घोषणाओं का यह परिणाम हुआ कि रूस में न केवल शान्ति स्थापित हुई अपितु नवीन समाज का उदय हुआ। यह सब कुछ लेनिन की बजह से हो सका, अतः रूस की क्रान्ति भी लेनिन के नाम से जुड़ी हुई है।

प्रश्न 12. औद्योगीकरण रूस के औद्योगिक श्रमिकों के लिए कौन-से कष्ट लेकर आया?

उत्तर—यह काल औद्योगिक प्रगति का युग था। इस समय गहन सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव हुए। इस समय नए शहर बस रहे थे, नए-नए औद्योगिक क्षेत्र विकसित हो रहे थे, रेलवे का काफी विस्तार हो चुका था और औद्योगिक क्रान्ति भी सम्पन्न हो चुकी थी।

औद्योगीकरण ने पुरुषों-स्त्रियों और बच्चों, सभी को कारखानों के कार्य हेतु प्रेरित किया। काम के घण्टे अथवा पाली बहुत लम्बी होती थी और मजदूरी बहुत कम थी। बेरोजगारी एक आम समस्या थी तथा औद्योगिक वस्तुओं की माँग में गिरावट आ जाने पर तो बेरोजगारी और बढ़ जाती थी। शहर तेजी से बसते और फैलते जा रहे थे, इसलिए आवास और साफ-सफाई का काम भी मुश्किल होता जा रहा था। उदारवादी और रैडिकल, दोनों ही इन समस्याओं का हल खोजने का प्रयास कर रहे थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सन् 1917 की क्रान्ति से पूर्व रूस की सामाजिक व आर्थिक स्थितियों का वर्णन कीजिए। रूस के प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेने ने किस प्रकार रूस के निरंकुश राजतन्त्र के पतन में योगदान दिया?

अथवा

बोल्शेविक क्रान्ति से पूर्व रूस की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—(1) आर्थिक स्थिति—20वीं शताब्दी के आरम्भ में रूस की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कृषि कार्य से सम्बद्ध था। रूसी साम्राज्य की लगभग 85 प्रतिशत जनता आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर थी, जबकि यूरोप के किसी भी देश में कृषि पर आश्रित जनता का प्रतिशत इतना नहीं था। उदाहरण के तौर पर, फ्रांस और जर्मनी में कृषि पर निर्भर जनसंख्या 40-45 प्रतिशत से अधिक नहीं थी, जबकि रूसी साम्राज्य के कृषक आवश्यकता-पूर्ति के अतिरिक्त बाजार के लिए भी पैदावार करते थे। यही कारण था कि रूस अनाज का एक बड़ा निर्यातक था।

उस समय उद्योग-धन्धे बहुत कम थे। सेंट पीटर्सबर्ग और मॉस्को प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र थे। यद्यपि अधिकांश उत्पादन कारीगर ही करते थे, लेकिन कारीगरों की वर्कशॉपों के साथ-साथ बड़े-बड़े कल-कारखाने भी स्थापित थे। अधिकांश कारखाने 1890 के दशक में स्थापित किये गये थे जबकि रूस के रेल नेटवर्क को फैलाया जा रहा था। उसी समय रूसी उद्योगों में विदेशी निवेश भी तेजी से बढ़ा था। इन सभी कारणों से कुछ ही वर्षों में रूस के कोयला उत्पादन में दोगुना और स्टील उत्पादन में चार गुना वृद्धि हुई थी। सन् 1900 तक कुछ क्षेत्रों में तो कारीगरों और कारखाना मजदूरों की संख्या लगभग बराबर हो चुकी थी।

अधिकतर कारखाने उद्योगपतियों की निजी सम्पत्ति थे। मजदूरों को न्यूनतम वेतन की प्राप्ति होती रहे और काम के घण्टे निश्चित हों—इस बात का ध्यान रखने के लिए सरकारी विभाग बड़े कारखानों पर निरन्तर दृष्टि बनाए रखते थे किन्तु फैक्ट्री इंस्पेक्टर भी नियमों के उल्लंघन को रोक पाने में असफल थे। कारीगरों की इकाइयों और वर्कशॉपों में काम की शिफ्ट प्रायः 15 घण्टे तक खिंच जाती थी, जबकि कारखानों में मजदूर आमतौर पर 10-12 घण्टे की शिफ्टों में काम करते थे। मजदूरों के रहने के लिए भी कमरों से लेकर डॉर्मिटरी तक तरह-तरह की व्यवस्था उपलब्ध थी।

(2) सामाजिक स्थिति—सामाजिक स्तर पर मजदूरों की कई श्रेणियाँ थीं। कुछ मजदूर अपने मूल गाँवों के साथ अभी भी गहरे सम्बन्ध बनाए हुए थे। बहुत सारे मजदूर स्थायी रूप से शहरों में ही बस चुके थे। उनके मध्य योग्यता और दक्षता के आधार पर भी काफी अन्तर था। सेंट पीटर्सबर्ग के एक धातु मजदूर ने कहा था 'धातुकर्मी मजदूरों में खुद को साहब मानते थे। उनके काम में ज्यादा प्रशिक्षण और निपुणता की जरूरत जो रहती थी....।' 1914 में फैक्ट्री मजदूरों में औरतों की संख्या 31 प्रतिशत थी, लेकिन उन्हें पुरुष मजदूरों की तुलना में कम वेतन मिलता था। (पुरुषों के वेतन के सापेक्ष आधे से तीन-चौथाई तक)। मजदूरों के मध्य अन्तर उनके पहनावे और व्यवहार में भी साफ दिखाई देता था। यद्यपि कुछ मजदूरों ने बेरोजगारी या आर्थिक संकट के समय एक-दूसरे की सहायता करने के लिए संगठन बना लिए थे, किन्तु ऐसे संगठन बहुत कम थे।

मजदूरों के मध्य इन अन्तरों के बावजूद, जब किसी को नौकरी से निष्कासित कर दिया जाता था (स्रोत क) या उन्हें संचालकों से कोई शिकायत होती थी तो मजदूर एकजुट होकर हड़ताल भी कर देते थे। 1896-1897 के बीच कपड़ा उद्योग में और 1902 में धातु उद्योग में ऐसी हड़तालें काफी बड़ी संख्या में आयोजित की गईं।

ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कृषि कार्य करता था जबकि विशाल सम्पत्तियों पर सामंतों, राजशाही और ऑर्थोडॉक्स (रूढ़िवादी) चर्च का आधिपत्य था। मजदूरों की तरह किसान भी बँटे हुए थे। किसान बहुत धार्मिक स्वभाव

के थे। कुछ अपवादों को छोड़कर वे सामंतों और नवाबों का बिल्कुल सम्मान नहीं करते थे। नवाबों और सामंतों को जो सत्ता और हैसियत प्राप्त थी, वह लोकप्रियता के कारण नहीं बल्कि जार के प्रति उनकी निष्ठा और सेवाओं के परिणामस्वरूप प्राप्त थी। यहाँ की स्थिति फ्रांस जैसी नहीं थी। उदाहरण के रूप में, फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान ब्रिटनी के किसान न केवल नवाबों का सम्मान करते थे बल्कि उन्होंने नवाबों को बचाने के लिए लड़ाइयाँ भी लड़ीं। इसके विपरीत, रूस के किसान चाहते थे कि नवाबों की जमीन छीनकर किसानों के बीच वितरित कर दी जाए। रूस के अधिकांश किसान लगान भी नहीं चुकाते थे। कई स्थानों पर तो जमींदारों की हत्या भी की जा चुकी थी। सन् 1902 में दक्षिणी रूस में ऐसी घटनाएँ बड़े पैमाने पर घटित हुईं, जबकि सन् 1905 में तो पूरे रूस में ही ऐसी घटनाएँ आम बातें हो गईं थीं।

रूस के किसान यूरोप के अन्य किसानों की तुलना में एक और आधार पर भी भिन्न थे। यहाँ के किसान समय-समय पर सारी भूमि को अपने कम्यून (मीर) को सौंप देते थे और फिर कम्यून ही प्रत्येक परिवार की आवश्यकता के हिसाब से किसानों के मध्य भूमि वितरित करता था।

प्रश्न 2. अक्टूबर क्रान्ति के निम्न पर क्या तात्कालिक प्रभाव हुए?

(क) रूस का प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेना।

(ख) कृषि तथा भू-स्वामित्व।

(ग) रूसी साम्राज्य के गैर-रूसी राष्ट्रीयताओं की स्थिति।

उत्तर—(क) रूस का प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेना—बोल्शेविकों ने अक्टूबर क्रान्ति के बाद रूस को प्रथम विश्व युद्ध से अलग कर लिया तथा जर्मनी के साथ ब्रेस्ट लिटोव्स्क में सन्धि कर ली। लोग जार निकोलस से नाराज थे। प्रारम्भ में लोगों ने जार का साथ दिया था। परन्तु बाद में वे इससे असंतुष्ट हो गये।

(ख) कृषि तथा भू-स्वामित्व—जिस दिन क्रान्ति की सूचना मिली उसी दिन जमीदारों की हवेली लूट लीं गईं उनके खेत कब्जे में ले लिए गये। उनके बागों के विशालकाय पेड़ काटकर लकड़ी किसानों में बाँट दी गईं। उनकी सारी इमारतें तोड़ दी गईं और उनकी जमीनें किसानों के बीच बाँट दी गई, जो एक नई सोवियत जिंदगी जीने के लिए तैयार थे। रूसी सरकार ने भूमि को सामाजिक संपति घोषित कर दिया और किसानों को उस पर कब्जा करने दिया गया जिस पर वे कृषि कार्य करना चाहते थे। उत्पादन के सम्पूर्ण साधनों पर सरकार का स्वामित्व हो गया।

(ग) रूसी साम्राज्य के गैर-रूसी राष्ट्रीयताओं की स्थिति—क्रान्ति से पूर्व जार द्वारा अपनाई गई रूसी कारण की नीति से गैर रूसियों में गहरा असंतोष व्याप्त था अत: नई सरकार ने पुराने रूसी साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले सभी राष्ट्रों को सोवियत गण राज्य का अभिन्न अंग बना लिया। इसके साथ ही सभी प्रजाति के लोगों को समानता का अधिकार दिया गया। फलत: देश के अन्दर असंतोष की भावना कमजोर पड़ गई।

प्रश्न 3. अक्टूबर क्रान्ति के बाद बोल्शेविकों के द्वारा क्या परिवर्तन लाये गये?

उत्तर—सन् 1917 के अक्टूबर क्रान्ति के पश्चात् लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने सत्ता सँभाली। इस पार्टी ने लेनिन के नेतृत्व में किसानों को भूमि हस्तान्तरित करने और सारी सत्ता सोवियतों को देने के लिए स्पष्ट नीतियाँ अपनाईं। लेनिन ने रूसी क्रान्ति को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित घोषणाएँ कीं—

(i) सर्वप्रथम उसने रूस को पहले विश्वयुद्ध से अलग कर दिया तथा जर्मनी के साथ ब्रेस्ट लिटोव्स्क में सन्धि की।

(ii) शहरों में बड़े घरों को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित कर दिया गया।

(iii) परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए बोल्शेविकों ने सेना एवं कर्मचारियों की नई वर्दियाँ प्रस्तुत कीं।

(iv) देश की प्रगति के लिए पंचवर्षीय योजनाओं को अपनाया गया।

(v) रूस एक दलीय देश बन गया और ट्रेड यूनियनों को पार्टी के नियंत्रण में रखा गया।

(vi) भूमि को सामाजिक संपत्ति घोषित कर दिया गया और किसानों को उस भूमि पर कब्जा करने दिया गया जिस पर वे कार्य करना चाहते थे।

(vii) बोल्शेविक निजी संपत्ति के पक्षधर नहीं थे। अत: अधिकांश उद्योगों एवं बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

(viii) पुराने अभिजात्य वर्ग की पदवियों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिए गए।

(ix) उत्पादन के सभी साधनों पर सरकार का नियंत्रण हो गया।

(x) लोगों के अधिकारों का एक घोषणा-पत्र जारी किया गया जिसमें सभी जनगणों के लिए आत्मनिर्णय का अधिकार दे दिया गया।

प्रश्न 4. 1917 की रूसी क्रान्ति से पूर्व रूस के कृषकों व श्रमिकों की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—किसानों की स्थिति—सन् 1861 तक रूस में अधिकांश किसान बँधुआ मजदूर थे। वे सामंतों के अधीन थे और जमीन से बँधे हुए थे। क्रीमिया युद्ध में पराजय के उपरान्त जार एलेक्जेंडर द्वितीय ने सन् 1861 में किसानों को राहत देने के लिए **कृषिदासता** (serfdom) की प्रथा समाप्त कर दी। इससे किसानों को कुछ राहत तो मिली, परन्तु उनकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। किसानों को जमीन तो मिली, लेकिन उसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ी। इससे उन पर कर्ज का बोझ बढ़ गया। कृषि को विकसित करने का कोई प्रयास नहीं हुआ। किसानों के पास छोटे-छोटे भूखण्ड थे जिन पर वे परम्परागत ढंग से खेती करते थे। उनके पास धन नहीं था कि वे कृषि का विकास कर उपज बढ़ा सकें। दूसरी ओर, उन पर करों का बोझ भी डाल दिया गया, इससे उनकी स्थिति दयनीय होती चली गई। कर चुकाने के लिए उन्हें अपनी जमीन गिरवी रखनी पड़ी अथवा बेचनी पड़ी; अतः वे पुनः खेतिहर मजदूर मात्र बनकर रह गए।

किसानों का विद्रोह—रूसी समाज में अधिक संख्या में होने के बावजूद किसानों की स्थिति सबसे अधिक खराब थी। अपनी स्थिति से मजबूर होकर किसानों ने बार-बार विद्रोह किए। एक अनुमान के अनुसार, 1858-60 के मध्य रूसी किसानों ने 284 बार विद्रोह किए। बाध्य होकर जार ने सन् 1861 में कृषिदासता को समाप्त कर दिया, परन्तु इससे किसानों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ; अतः उनके विद्रोह होते रहे। सन् 1905 के बाद किसान-विद्रोहों की संख्या बढ़ती ही गई। किसानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए रूसी प्रधानमन्त्री पीटर स्टोलीपीन (1906-11) ने किसानों को जमीन खरीदने को उत्प्रेरित किया। इससे किसानों का सम्पन्न कुलक वर्ग उभरा। पीटर का मानना था कि सरकार कुलकों पर क्रान्तिकारियों के विरुद्ध भरोसा कर सकती थी, परन्तु साधारण किसान वर्ग की स्थिति दयनीय बनी रही। अतः किसान सन् 1917 की क्रान्ति के मजबूत स्तम्भ बन गए। लेनिन ने भी अपनी अप्रैल थीसिस (April Thesis) में जमीन अथवा किसानों को पहला स्थान दिया।

मजदूरों की स्थिति—यद्यपि रूस औद्योगिक दृष्टि से यूरोप का एक पिछड़ा राष्ट्र था, परन्तु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से रूस में भी उद्योगों का विकास हुआ। इससे मजदूरों की संख्या बढ़ी, परन्तु किसानों के समान उनकी स्थिति भी दयनीय थी। उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए थे। सरकार उन्हें संगठित होने देना नहीं चाहती थी, इसीलिए श्रमिक संघों के निर्माण पर रोक लगा दी गई थी। मजदूरों को आवश्यकता से अधिक घण्टों तक काम करना पड़ता था, उन्हें मजदूरी कम दी जाती थी तथा कारखानों में असहनीय स्थिति में काम करना पड़ता था, इसके विरोध में मजदूरों ने संघर्ष आरम्भ किया और हड़ताल की। बाध्य होकर सरकार ने **कारखाना अधिनियम** बनाकर मजदूरों को कुछ सुविधाएँ देने का प्रयास किया, परन्तु इससे स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। क्षुब्ध मजदूरों ने सन् 1905 में देशव्यापी हड़ताल की जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया। 1905-17 के बीच भी मजदूरों की अनेक हड़तालें हुईं। किसानों के समान मजदूर भी जारशाही के प्रबल विरोधी बन गए।

प्रश्न 5. रूसी क्रान्ति के क्या कारण थे?

उत्तर—रूसी क्रान्ति के कारण—रूसी क्रान्ति के निम्नलिखित कारण थे—

1. निरंकुश राजतंत्र—अक्टूबर क्रान्ति से पहले रूस की राजनैतिक स्थिति बिल्कुल अच्छी नहीं थी। लम्बे समय तक रूस में जारशाही स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता, अकुशलता, दुर्बल लोगों के शोषण का प्रतीक बनी रही। अतः ऐसे शासन के विरुद्ध क्रान्ति होना एक स्वाभाविक कदम था। क्रान्ति से पहले रूस में शासन पर भ्रष्ट जमींदारों, शाही परिवार के लोगों, अमीरों एवं सैनिक अधिकारियों का प्रभुत्व था। रूस के विशाल साम्राज्य में गैर-रूसी जनता पर बहुत अधिक अत्याचार होते थे। वस्तुतः शासकों एवं शासितों के मध्य अन्तर निरन्तर बढ़ता ही जा रहा था। अतः जनता में असंतोष की सभी सीमाएँ पार हो गई थीं। रूस के जार पूरी तरह निरंकुश व स्वेच्छाचारी थे। उन्होंने समय-समय पर जो परामर्शदात्री सभाएँ गठित कीं, उनके विचारों को मानने के लिए वे बाध्य नहीं थे। जापान से पराजित हो जाने के बाद निकोलस द्वितीय को **ड्यूमा** नामक संसद के गठन के लिए विवश होना पड़ा। किन्तु वह वास्तव में जनता तथा विशेषतः समाज के दुर्बल वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी। दूसरे, इसकी शक्तियाँ सीमित थीं। सम्राट इसके निर्णय से बँधा हुआ नहीं था। वह पूर्ववत् निरंकुश शासक बना रहा। जब कभी जार के शासन के विरुद्ध जन-आन्दोलन हुए, उन्हें निर्दयतापूर्वक दबा दिया गया। जार देवी सिद्धान्त में विश्वास रखता था तथा भोग-विलास में जीवन व्यतीत करता था। जनसाधारण को कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे।

2. किसानों की दयनीय स्थिति—रूस में किसानों की दशा अत्यधिक शोचनीय थी। 1861 ई० से पहले रूस में सामंतवादी प्रथा विद्यमान थी। अधिकांश किसान भूमि दासों या सर्फ (Serfs) के रूप में भूमि जोता करते थे। उन्हें अपनी उपज का एक बहुत बड़ा हिस्सा सामंतों को देना पड़ता था। यद्यपि 1861 ई० में सामंत-प्रथा समाप्त कर दी गई तो भी

किसानों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ। उनके खेत बहुत छोटे होते थे जिन पर वे परम्परागत ढंग से खेती करते थे। उन पर करों का भी बोझ भारी था इसलिए वे सदा ऋण में दबे रहते थे। सच तो यह है कि उन्हें दो समय का भरपेट भोजन भी प्राप्त नहीं होता था। रूस में जमीन के लिए किसानों की भूख असन्तोष का एक प्रबल सामाजिक कारण था।

3. श्रमिकों की हीन दशा—औद्योगिक क्रान्ति के कारण रूस में कई उद्योग स्थापित हुए। इन उद्योगों के कारखानों में लाखों मजदूर काम करते थे। इन कारखानों और उद्योगों में रूसी व विदेशी पूँजीपतियों का धन लगा हुआ था। ये पूँजीपति अधिक-से-अधिक मुनाफा कमाने के लिए रूसी-श्रमिकों का शोषण किया करते थे। इन्हें बहुत कम वेतन दिया जाता था। कारखानों में कार्यरत श्रमिकों की दशाएँ अच्छी नहीं थीं। उन्हें गन्दी बस्तियों में रहना पड़ता था। यहाँ तक कि पूँजीपति मजदूरों के बच्चों व स्त्रियों के जीवन से भी अपने स्वार्थों के लिए लाभ उठाने से नहीं चूकते थे। ऐसी दयनीय स्थिति से बचने के लिए मजदूर एक होने लगे। उन्होंने श्रम संघों का निर्माण शुरू किया। परन्तु पूँजीपति व उनके इशारों पर चलने वाली सरकार ने 1900 ई० में श्रम संघ बनाने एवं हड़ताल करने पर रोक लगा दी। श्रमिकों को न तो राजनैतिक अधिकार प्राप्त थे और न ही उन्हें सुधारों की कोई उम्मीद थी।

4. 1905 की क्रान्ति—9 जनवरी, 1905 ई० का रविवार रूस के इतिहास में '**खूनी रविवार**' के नाम से जाना जाता है। इस दिन मॉस्को में जनसाधारण एक जुलूस के रूप में अपनी 11 माँगों का माँग-पत्र लेकर जार के महल की ओर पूर्णतया शान्ति से जा रहा था। ये लोग नारा लगा रहे थे—**"छोटे भगवान! हमें रोटी दो।"** लेकिन इस छोटे भगवान (जार) ने जनता की उचित माँगों की ओर ध्यान न देकर निहत्थे लोगों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। जिसके कारण लगभग 1000 व्यक्ति मारे गए। शाही सेना ने करीब 60 हजार से भी अधिक व्यक्तियों को बंदी बना लिया। रूस की सड़कों पर इस दिन बहुत अधिक रक्तपात हुआ। अनेक इतिहासकारों का मानना है कि यद्यपि 1905 ई० की क्रान्ति को कुचलने में जार कामयाब रहा लेकिन इस क्रान्ति ने अक्टूबर, 1917 ई० की क्रान्ति के लिए उचित वातावरण तैयार करने की भूमिका अदा की। इस दिन हुए हत्याकांड से सारे रूस में रोष फैल गया। क्रान्तिकारियों के समर्थन में जगह-जगह बंद आयोजित किये गए और हड़तालें हुईं। इस क्रान्ति के कारण शिक्षित वर्ग के लोग भी क्रान्तिकारियों के साथ मिल गए। यही कारण है कि 1905 ई० की क्रान्ति को **1917 ई० की क्रान्ति की जननी** भी कहा जाता है।

5. प्रथम विश्वयुद्ध में हुआ नुकसान—प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की सेना निरन्तर कई मोर्चों पर पराजय का सामना कर रही थी। उनके लगभग 60 लाख सैनिक मारे जा चुके थे। अतः रूस की जनता युद्ध को जारी रखने के पक्ष में नहीं थी। युद्ध में हुए नुकसान से सारे साम्राज्य और सैनिकों में व्यापक असंतोष था।

6. 1904-05 का रूस-जापान युद्ध—1904-05 ई० के रूस-जापान युद्ध में रूस की पराजय हुई। छोटे से देश जापान से हारने के कारण रूस की जनता जार के शासन की विरोधी बन गई, क्योंकि उसको विश्वास हो गया कि इस हार का एक मात्र कारण जार की निर्बल और अयोग्य सरकार है जो युद्ध का ठीक प्रकार संचालन करने में असफल रही है।

7. विचारकों का प्रभाव—अनेक रूसी विचारक यूरोप में हो रहे परिवर्तनों से बहुत प्रभावित हुए। वे उसी तरह के परिवर्तन रूस में भी चाहते थे। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने किसानों में जागृति लाने और श्रमिकों में संगठित होने की विचारधारा का प्रसार किया। 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण के दौरान '**जनता के पास जाओ**' नामक एक आन्दोलन आरम्भ हुआ। इस प्रकार यूरोप के उदार विचारों ने भी रूसी-क्रान्ति लाने में बड़ा योगदान दिया। भौतिक क्रान्ति से पहले रूसी जनता के विचारों में क्रान्ति हुई। जार के अनेक प्रतिबंध लगाने पर भी पश्चिम के उदार विचारों ने रूस में साहित्य के माध्यम से प्रवेश किया। विभिन्न रूसी लेखकों; जैसे **टॉलस्टाय, टर्जने** आदि ने नवयुवकों के विचारों में क्रान्ति उत्पन्न कर दी और वे पश्चिमी देशों के लोगों को प्राप्त सुविधाओं और अधिकारों की माँग करने लगे। जार ने जब उनकी माँगों को ठुकराने की कोशिश की तो उन्होंने क्रान्ति का मार्ग अपनाया।

प्रश्न 6. 'रूसी सामाजिक प्रजातान्त्रिक श्रमिक दल' का गठन किस प्रकार हुआ? यह दो धड़ों में विभक्त क्यों हो गया?

उत्तर—रूस में सन् 1914 के पहले जो भी राजनीतिक पार्टियाँ बनीं थीं, वे सब गैर-कानूनी थीं। मार्क्स के विचारों के समर्थक समाजवादियों ने 1898 ई० में रूसी सामाजिक लोकतान्त्रिक श्रमिक पार्टी (Russian Social Democratic Workers Party) का गठन किया था, किन्तु पार्टी को सरकारी आतंक के कारण गैर-कानूनी संगठन के रूप में कार्य करना पड़ता था। कुछ समय बाद इस पार्टी ने अपना अखबार निकाला तथा मजदूरों को संगठित कर हड़ताल आदि कार्यक्रम आयोजित किए।

कुछ रूसी समाजवादियों का मानना था कि रूसी किसान स्वाभाविक रूप से समाजवादी हैं, जिसका मुख्य कारण

इनके द्वारा समय-समय पर भूमि का वितरण करना था। इसी आधार पर यह माना गया कि रूस में क्रान्ति की मुख्य शक्ति मजदूर न होकर कृषक रहे होंगे। 19वीं शताब्दी में 'समाजवादी क्रान्तिकारी दल' अथवा 'सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी' (Socialist Revolutionary Party) का गठन किया गया। इस पार्टी ने कृषकों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया तथा माँग की कि सामन्तों द्वारा अधिकृत की गई भूमि कृषकों को वापस कर दी जाए।

लेनिन, जोकि एक लोकतन्त्रवादी थे, ने यह अनुभव किया कि वित्तीय मतभेदों के कारण कृषक एक संयुक्त समूह नहीं था। इस विभेद (Differentiation) के कारण ये लोग समाजवादी आन्दोलन का हिस्सा नहीं बन सकते थे। कालान्तर में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी दो भागों **बोल्शेविक** (Bolshevik) एवं **मेंशेविक** (Menshevik) में विभाजित हो गई।

बोल्शेविक का नेतृत्व लेनिन द्वारा किया गया। लेनिन के अनुसार, जार (राजा) द्वारा शासित रूस एक दमनकारी समाज है जिसमें पार्टी को अधिक अनुशासन में रहना चाहिए तथा अपने सदस्यों की संख्या पर पूरा नियन्त्रण होना चाहिए, जबकि मेंशेविकों का मानना था कि पार्टी में सभी को सदस्यता मिलनी चाहिए, जिस प्रकार जर्मनी में सभी को मिल रही है।

प्रश्न 7. सन् 1917 की अक्टूबर क्रान्ति के रूस पर कौन से चार तात्कालिक प्रभाव हुए?

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2 का उत्तर।

प्रश्न 8. सन् 1917 में निरंकुश जारशाही का पतन क्यों हुआ?

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 5 का उत्तर।

प्रश्न 9. देश पर रूसी क्रान्ति का क्या प्रभाव हुआ? अथवा
रूसी क्रान्ति की उपलब्धियों व प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—बोल्शेविक क्रान्ति का सोवियत संघ पर प्रभाव

स्वेच्छाचारी जारशाही का अन्त—सन् 1917 की फरवरी क्रान्ति के परिणामस्वरूप अत्याचारी एवं निरंकुश राजतन्त्र की समाप्ति हो गई। सदियों पुराना रोमोनोव वंश का शासन समाप्त हो गया। क्रान्ति के बाद रूस में जनतन्त्र की स्थापना की गई। रूसी साम्राज्य के स्थान पर **सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ** (Union of Soviet Socialist Republics—USSR) का गठन हुआ।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना—बोल्शेविक क्रान्ति ने पहली बार शोषित सर्वहारा वर्ग को सत्ता और अधिकार प्रदान किया। नई व्यवस्था के अनुसार, भूमि पर कुलकों के अधिकार समाप्त कर दिए गए एवं भूमि का स्वामित्व किसानों को दिया गया। कल-कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया गया तथा देश की सारी सम्पत्ति राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित की गई। उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया। उद्योगों का प्रबन्धन मजदूरों के नियन्त्रण में दे दिया गया। मजदूरों को मतदान का अधिकार दिया गया एवं उनकी सुरक्षा के लिए नियम बनाए गए। इस प्रकार, सोवियत संघ में सर्वहारा वर्ग को सबसे प्रमुख स्थान दिया गया।

नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना—क्रान्ति के बाद सोवियत संघ में एक नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की गई। यह व्यवस्था साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल थी। प्रशासन का मुख्य उद्देश्य कृषकों एवं मजदूरों के हितों की सुरक्षा करना एवं उनकी प्रगति के लिए कार्य करना था। सोवियत संघ में पहली बार साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। इससे साम्यवाद का तेजी से प्रचार हुआ।

नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था—क्रान्ति के बाद सोवियत संघ में नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई। सामाजिक असमानता समाप्त कर दी गई तथा वर्गविहीन समाज का निर्माण कर समाज का परम्परागत स्वरूप बदल दिया गया। पूँजीपति और जमींदार वर्ग का उन्मूलन कर दिया गया, इसके पश्चात् समाज में एक ही वर्ग रहा जो साम्यवादी नागरिकों का था। काम के अधिकार को संवैधानिक अधिकार बना दिया गया। व्यक्तिगत सम्पत्ति समाप्त कर पूँजीपतियों का वर्चस्व समाप्त कर दिया गया। देश की सारी सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इस प्रकार, एक वर्गविहीन और शोषणमुक्त सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई।

धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना—क्रान्ति के पूर्व रूसियों को धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं थी। चर्च का इस पर नियन्त्रण था। बोल्शेविक क्रान्ति ने इस व्यवस्था को भी बदल दिया। धार्मिक जीवन पर से चर्च का नियन्त्रण समाप्त कर दिया गया। चर्च की सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। राज्य ने किसी धर्म को प्रश्रय नहीं दिया, बल्कि सभी को अपनी व्यक्तिगत मानयता के अनुरूप किसी भी धर्म को अपनाने की छूट दी, फलस्वरूप, सोवियत संघ में धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना हुई।

रूसीकरण की नीति का परित्याग—क्रान्ति के पूर्व जार द्वारा अपनाई गई रूसीकरण की नीति से गैर-रूसियों में गहरा असन्तोष व्याप्त था; अत: नई सरकार ने पुराने रूसी साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले सभी राष्ट्रों को सोवियत गणराज्य का

अभिन्न अंग बना लिया। इसके साथ ही सभी प्रजाति के लोगों को समानता का अधिकार दिया गया, फलतः देश के भीतर असन्तोष की भावना कमजोर पड़ गई।

बोल्शेविक क्रान्ति का विश्व पर प्रभाव—बोल्शेविक क्रान्ति का विश्व के दूसरे देशों पर भी प्रभाव पड़ा। ये प्रभाव निम्नलिखित थे—

पूँजीवादी राष्ट्रों में आर्थिक सुधार के प्रयास—विश्व के जिन देशों में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था थी, वे भी यह महसूस करने लगे कि बिना सामाजिक-आर्थिक समानता के राजनीतिक समानता अपर्याप्त है। अतः इस दिशा में कुछ प्रयास किए गए। पूँजीवादी देशों ने भी परिवर्तित रूप में सोवियत संघ के आर्थिक मॉडल को अपना लिया। इससे पूँजीवाद का चरित्र भी परिवर्तित हो गया।

सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि—बोल्शेविक क्रान्ति के परिणामस्वरूप विश्व के अन्य देशों में भी किसानों-मजदूरों का सम्मान बढ़ा। पूँजीपतियों और मजदूरों में वर्ग संघर्ष बढ़ गया। प्रत्येक राष्ट्र की सरकार अपने लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, भूमि और शांति उपलब्ध कराना अपना मुख्य दायित्व समझने लगी।

साम्यवादी सरकारों की स्थापना—सोवियत संघ के समान ही विश्व के अन्य देशों—चीन, वियतनाम इत्यादि में भी बाद में साम्यवादी सरकारों की स्थापना हुई। साम्यवादी विचारधारा के प्रसार और प्रभाव को देखते हुए राष्ट्रसंघ ने भी मजदूरों की दशा में सुधार लाने के प्रयास किए। इस उद्देश्य से **अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन** (ILO) की स्थापना की गई। इसने मजदूरों को शोषण से मुक्ति दिलाने एवं उनके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया।

अन्तर्राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन—समाजवादी विचारों के प्रसार से अन्तर्राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला। सिद्धान्तरूप में ही सही, सभी राष्ट्रों ने ऐसा महसूस किया कि दूसरे राष्ट्रों के साथ उनके सम्बन्ध का आधार मात्र अपना-अपना स्वार्थ ही नहीं होना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप अब अनेक राष्ट्रीय समस्याओं को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का रूप देकर उनका शांतिपूर्ण समाधान निकालने का प्रयास किया जाने लगा है।

साम्राज्यवाद के पतन की प्रक्रिया तीव्र—बोल्शेविक क्रान्ति ने साम्राज्यवाद के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। समाजवादियों ने सम्पूर्ण विश्व में साम्राज्यवाद के विनाश के लिए अभियान तेज कर दिया। सोवियत संघ ने सभी राष्ट्रों में विदेशी शासन के विरुद्ध चलाए जा रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन को अपना समर्थन दिया। एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों में स्वतन्त्रता के लिए प्रयास तेज कर दिए गए। सोवियत संघ की साम्यवादी सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलनों एवं उपनिवेश-मुक्ति को नैतिक समर्थन प्रदान किया।

नया शक्ति-सन्तुलन—नवनिर्माण के बाद सोवियत संघ साम्यवादी राष्ट्रों का अगुवा बन गया, दूसरी ओर अमेरिका पूँजीवादी राष्ट्रों का नेता बन गया। इससे विश्व दो शक्ति-खण्डों साम्यवादी एवं पूँजीवादी में विभक्त हो गया और दोनों अपनी-अपनी विचारधारा का प्रसार करने लगे। यूरोप भी वैचारिक आधार पर दो भागों में विभक्त हो गया—पूर्वी एवं पश्चिमी यूरोप। धर्मसुधार आन्दोलन के पश्चात् और साम्यवादी क्रान्ति से पहले यूरोप में वैचारिक आधार पर इस तरह का वैचारिक विभाजन नहीं देखा गया था। इसने आगे चलकर द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् दो खेमों में सशस्त्रीकरण की होड़ एवं शीत युद्ध को जन्म दिया।

प्रश्न 10. रूसी क्रान्ति से पूर्व श्रमिक वर्ग की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 4 का उत्तर।

प्रश्न 11. सन् 1917 की रूसी क्रान्ति की प्रमुख घटनाओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—

1917 की फरवरी क्रान्ति

तत्कालीन परिस्थिति से क्षुब्ध होकर मार्च, 1917 (ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार तथा जूलियन कैलेंडर के अनुसार फरवरी, 1917) में मजदूरों ने पेत्रोग्राद (लेनिनग्राद) में एक विशाल जुलूस निकाला। वे रोटी देने, युद्ध बन्द करने, निरंकुश शासन समाप्त करने की माँग कर रहे थे। जार ने सैनिकों को जुलूस पर गोली चलाने का आदेश दिया, परन्तु सेना ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। बाध्य होकर सरकार ने सैनिकों के हथियार ले लिए, जिससे सेना भी विद्रोह पर उतारू हो गई। इसके बाद जार की सबसे विश्वस्त सेना की टुकड़ी प्रैओब्राशेंसकी रेजिमेंट ने भी विद्रोह कर दिया। मजदूरों ने भी आम हड़ताल रखी तथा जार ने तीसरी ड्यूमा को भी भंग कर दिया। इस प्रकार परिस्थिति अनियन्त्रित हो गई, फलतः उदारवादी राजकुमार जॉर्ज ल्यूवोव के नेतृत्व में एक बुर्जुआ सरकार का गठन विद्रोहियों ने किया। इस सरकार ने जार को गद्दी त्यागने को विवश कर दिया। बाध्य होकर जार निकोलस द्वितीय ने गद्दी छोड़ दी। उसे और उसके परिवार को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके साथ ही रूस में रोमोनोव वंश का निरंकुश शासन समाप्त हो गया। जुलाई, 1918 में जार, जारीना और उसके

परिजनों को गोली मार दी गई।

केरेन्सकी की सरकार का पतन एवं बोल्शेविक क्रान्ति—जॉर्ज ल्यूवोव की सरकार में बुर्जुआ वर्ग का प्रभाव था। यह जनता की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकी; अतः लोगों का असन्तोष बढ़ता गया, इस कारण केरेन्सकी के अधीन एक नई सरकार का गठन किया गया। इस सरकार में मेन्शेविकों अथवा उदार समाजवादियों का प्रभाव था, परन्तु इस सरकार ने भी जनता की समस्याओं के निराकरण का प्रयास नहीं किया। इस सरकार ने जनतान्त्रिक एवं वैधानिक सरकार की स्थापना के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। इसने युद्ध जारी रखा। भूमि एवं व्यक्तिगत सम्पत्ति की सुरक्षा के कुछ उपाय किए गए, परन्तु जनता इससे सन्तुष्ट नहीं हुई। उसका असन्तोष बढ़ता गया।

फरवरी के बाद—अन्तरित सरकार में सैन्य अधिकारी, भूस्वामी और उद्योगपतियों की भूमिका प्रमुख थी। उनमें उदारवादी और समाजवादी शीघ्रतिशीघ्र निर्वाचित सरकार का गठन चाहते थे। जन सभा करने और संगठन बनाने पर लगी पाबंदी हटा ली गई। यद्यपि निर्वाचन की प्रक्रिया सब जगह एक जैसी नहीं थी, लेकिन पेत्रोग्राद सोवियत की तर्ज पर सब जगह 'सोवियत' बना ली गईं। इन्हीं परिस्थितियों में लेनिन स्विट्जरलैंड से वापस रूस पहुँचा। रूस की स्थिति देखकर वह क्षुब्ध हो गया। उसने कहा कि रूसी क्रान्ति पूरी नहीं हुई है। वांछित परिवर्तन के लिए एक अन्य क्रान्ति आवश्यक है; अतः लेनिन इसकी तैयारी में लग गया। रूस पहुँचकर उसने बोल्शेविक दल का नेतृत्व ग्रहण किया। **अप्रैल थीसिस** (April Thesis) में उसने बोल्शेविक दल के उद्देश्य और कार्यक्रम निर्दिष्ट किए। ये थे—'भूमि, शांति और रोटी की व्यवस्था करना।' उसने अपने सहयोगी ट्रॉटस्की की सहायता से मजदूरों को एकजुट करना आरम्भ किया। लेनिन और ट्रॉटस्की दोनों ही केरेन्सकी की सरकार को बलपूर्वक हटाना चाहते थे; अतः 7 नवम्बर, 1917 (जूलियन कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर, 1917) को बोल्शेविकों ने सरकारी भवनों पर सेना और जनता की सहायता से अधिकार कर लिया। केरेन्सकी रूस छोड़कर भाग गया। इस तरह, एक महान क्रान्ति हुई। सत्ता की बागडोर अब बोल्शेविकों के हाथों में आई। लेनिन के नेतृत्व में एक नई सरकार का गठन किया गया जिसने रूस के नवनिर्माण के लिए कार्य आरम्भ किया। अक्टूबर क्रान्ति अथवा बोल्शेविक क्रान्ति के साथ ही रूसी इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ।

अक्टूबर, 1917 की क्रान्ति—जैसे-जैसे अन्तरिम सरकार और बोल्शेविकों के बीच टकराव बढ़ता गया, लेनिन को अन्तरिम सरकार द्वारा तानाशाही की आशंका दिखाई देने लगी। सितम्बर में उन्होंने सरकार के खिलाफ विद्रोह के बारे में चर्चा शुरू कर दी। सेना और फैक्टरी सोवियतों में मौजूद बोल्शेविकों को इकट्ठा किया गया।

16 अक्टूबर, 1917 को लेनिन ने पेत्रोग्राद सोवियत और बोल्शेविक पार्टी को सत्ता पर कब्जा करने के लिए सहमत कर लिया। सत्ता पर कब्जे के लिए लियॉन ट्रॉट्स्की के नेतृत्व में सोवियत की ओर से एक सैनिक क्रान्तिकारी समिति का गठन किया गया।

24 अक्टूबर को विद्रोह शुरू हो गया। संकट की आशंका को देखते हुए प्रधानमन्त्री केरेंस्की सैनिक टुकड़ियों को एकत्र करने शहर से बाहर चले गए। सुबह से ही सरकार के वफादार सैनिकों ने दो बोल्शेविक अखबारों के दफ्तरों पर घेरा डाल दिया। टेलीफोन और टेलीग्राफ दफ्तरों पर नियन्त्रण प्राप्त करने और विंटर पैलेस की रक्षा करने के लिए सरकार समर्थक सैनिकों को रवाना कर दिया गया। देखते ही देखते क्रान्तिकारी समिति ने भी अपने समर्थकों को आदेश दे दिया कि सरकारी कार्यालयों पर कब्जा कर लें और मन्त्रियों को गिरफ्तार कर लें। उसी दिन ऑरोरा नामक युद्धपोत ने विंटर पैलेस पर बमबारी शुरू कर दी। अन्य युद्धपोतों ने नेवा के रास्ते से आगे बढ़ते हुए विभिन्न सैनिक ठिकानों को अपने नियन्त्रण में ले लिया। शाम तक पूरा शहर क्रान्तिकारी समिति के नियन्त्रण में आ चुका और मन्त्रियों ने आत्म-समर्पण कर दिया था। पेत्रोग्राद में अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस की बैठक हुई जिसमें बहुमत ने बोल्शेविकों की कार्यवाही का समर्थन किया और साथ ही अन्य शहरों में भी बगावतें होने लगीं।

प्रश्न 12. सन् 1917 की क्रान्ति से पूर्व गैर-रूसी राष्ट्रीयताओं में असन्तोष के क्या कारण थे?

उत्तर—सन् 1914 में रूस और उसके पूरे साम्राज्य पर जार निकोलस II का शासन था। मॉस्को के निकटवर्ती क्षेत्र के अतिरिक्त वर्तमान फिनलैण्ड, लातविया, लिथुआनिया, एस्टोनिया तथा पोलैण्ड, यूक्रेन व बेला रूस के कुछ हिस्से रूसी साम्राज्य के हिस्से थे। यह साम्राज्य प्रशान्त महासागर तक फैला हुआ था। वर्तमान मध्य एशियाई राज्यों के साथ-साथ जार्जिया, आर्मेनिया व अजरबैजान भी इसी साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे। रूस में इस प्रकार विभिन्न प्रजातियों के निवासी थे। इसमें स्लावों की संख्या सबसे अधिक थी। इनके अतिरिक्त फिन पोल, जर्मन, यहूदी इत्यादि भी थे। इन सभी की भाषा, रीति-रिवाज अलग-अलग थे। इसलिए रूसी सरकार ने देश की एकता के लिए रूसी कारण की नीति अपनाई सम्पूर्ण देश पर रूसी भाषा, शिक्षा और संस्कृति लागू करने का प्रयास किया गया। जार की नीति थी—एक जार, एक चर्च और एक

रूस। सरकार की इस नीति से अल्पसंख्यक व्यग्र हो गये। 1863 में पोलों ने रूसीकरण की नीति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। यद्यपि यह विद्रोह दबा दिया गया परन्तु इससे अल्पसंख्यकों में अलगाववादी भावना बढ़ती गई। जो आगे चलकर 1917 की क्रान्ति का कारण बनी।

प्रश्न 13. स्टालिन के सामूहिकीकरण कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर—जोसेफ स्टालिन के अधीन सोवियत संघ—लेनिन की मृत्यु के बाद भी सोवियत संघ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता रहा। आर्थिक विकास के लिए सतत् प्रयास किए गए। लेनिन के बाद सत्ता स्टालिन (1879-1953) के हाथों में आई। स्टालिन का अर्थ है—**स्टील का आदमी** (man of steel) यानी **फौलादी पुरुष।** स्टालिन के समय अनेक आर्थिक एवं अन्य समस्याएँ विद्यमान थीं। अतः सुनियोजित आर्थिक विकास के लिए 1928 में प्रथम पंचवर्षीय योजना लागू की गई। तीन पंचवर्षीय योजनाओं से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई और अर्थव्यवस्था में सुधार आया। तेल, कोयला और स्टील उद्योग में बढ़ोतरी हुई जिससे अनेक औद्योगिक नगर अस्तित्व में आए। इसके अतिरिक्त कृषि का आधुनिकीकरण हुआ, साथ ही वैज्ञानिक प्रगति भी हुई। सरकार ने श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए भी कुछ प्रयास किए। श्रमिकों और किसानों की शिक्षा के लिए स्कूलों की व्यवस्था की गई। इसके अलावा यह व्यवस्था भी की गई कि वे विश्वविद्यालयों में प्रवेश पा सकें। कामकाजी महिला श्रमिकों के बच्चों की देखभाल की व्यवस्था की गई तथा श्रमिकों के लिए आवास एवं चिकित्सा की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई।

सामूहिक कृषि की विफलता—इसके बावजूद नियोजित अर्थव्यवस्था के आरम्भिक चरण में सामूहिक कृषि का प्रयोग सफल नहीं हो सका। अतः स्टालिन ने राज्य-नियन्त्रित कृषि फार्म स्थापित करने की योजना बनाई। इनका आधुनिक रूप से विकास किया जाना था। सन् 1929 से किसानों को सामूहिक कृषि फार्म **(कोलखोज)** में खेती करने को बाध्य किया गया। इससे होने वाली आय को किसानों में वितरण करने की व्यवस्था की गई। अनेक किसानों ने इस नई व्यवस्था का विरोध किया, परन्तु स्टालिन की सरकार ने ऐसे लोगों के विरुद्ध कड़ी नीति अपनाई। अनेक लोगों को देश से निर्वासित कर दिया गया। स्टालिन की नियोजित अर्थव्यवस्था और सामूहिक कृषि की नीति की आलोचना पार्टी के अन्दर कुछ लोगों ने की जिस कारण उन्हें समाजवाद के विरुद्ध षड्यन्त्रकारी मानकर कठोर दण्ड दिया गया। स्टालिन के विरोधी नेताओं को समाप्त कर दिया गया। ट्रॉटस्की को सोवियत संघ छोड़ना पड़ा। लोकतन्त्र, भाषण और प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस कारण कला और साहित्य के विकास पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। स्टालिन ने सर्वाधिकारवाद की जो नीति अपनाई, उसमें मार्क्सवाद और क्रान्ति के आदर्शों की घोर उपेक्षा की गई। स्टालिन वस्तुतः एक तानाशाह बन गया, यद्यपि उसने सोवियत संघ को एक महान शक्ति बना दिया। अब सोवियत संघ साम्यवादी गुट का अगुआ बन गया तथा स्टालिन के प्रयासों से सोवियत संघ एक शक्तिशाली देश के रूप में विश्व मानचित्र पर सामने आया। इस दौरान कृषि, उद्योग एवं विज्ञान का विकास हुआ। सोवियत संघ की गणना ब्रिटेन और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देशों में होने लगी। युद्ध सम्मेलनों में अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ओर ब्रिटिश प्रधानमन्त्री चर्चिल के साथ स्टालिन भी भाग लेने लगा। इससे सोवियत संघ की शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इस प्रकार, स्टालिन ने कठोर नीति का अनुसरण कर सोवियत संघ में सर्वाधिकारवाद की स्थापना की।

साम्यवादी व्यवस्था का प्रभाव—बोल्शेविकों द्वारा जिस प्रकार सत्ता ग्रहण की गई और इसे बनाए रखा गया, उसे यूरोप के अनेक समाजवादियों ने स्वीकार नहीं किया, तथापि पहली बार श्रमिक राज्य की स्थापना का प्रभाव विश्व के अनेक भागों पर पड़ा। अनेक देशों में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की गई। ताशकंद में 1920 में हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई, इसके सदस्य सोवियत संघ से सम्पर्क बनाए हुए थे। जवाहरलाल नेहरू, रवींद्रनाथ टैगोर और अन्य अनेक भारतीयों ने सोवियत समाजवाद पर लेख एवं पुस्तकें लिखीं। औपनिवेशिक राज्यों पर रूसी क्रान्ति का गहरा प्रभाव पड़ा। द्वितीय विश्वयुद्ध तक सोवियत संघ ने समाजवाद को विश्वव्यापी आदर्श बना दिया।

●

3 नात्सीवाद और हिटलर का उदय

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. वाइमर गणराज्य के सामने क्या समस्याएँ थीं?

उत्तर—वाइमर गणराज्य का जन्म प्रथम विश्व युद्ध में पराजित जर्मन साम्राज्य के ध्वंसावशेष पर हुआ। वाइमर गणराज्य के सामने निम्नलिखित समस्याएँ थीं—

(1) आर्थिक संकट—प्रथम विश्व युद्ध दोनों ही पक्षों के लिए महँगा साबित हुआ। लेकिन युद्ध के बाद संसाधनों में आई कमी, बढ़ते कर्ज तथा ब्याज की बड़ी राशि के कारण आर्थिक एवं नागरिक क्षति की मात्रा दूनी हो गई। इसके अलावा युद्ध क्षतिपूर्ति ने भी वाइमर गणराज्य के सामने घोर आर्थिक संकट पैदा कर दिया।

(2) राजनीतिक संकट—हालांकि, राष्ट्रीय सभा द्वारा वाइमर गणराज्य का विकास तथा सुरक्षा के रास्ते पर लाने के लिए एक नये जनतांत्रिक संविधान का निर्माण किया गया, लेकिन यह अपने उद्देश्य में असफल रहा। संविधान में बहुत सारी कमजोरियाँ थीं।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व सम्बन्धी नियमों तथा अनुच्छेद 48 के कारण एक राजनीतिक संकट उत्पन्न हुआ जिसने तानाशाही के हाथों वाइमर गणराज्य की हत्या का रास्ता खोल दिया।

प्रश्न 2. इस बारे में चर्चा कीजिए कि 1930 तक आते-आते जर्मनी में नात्सीवाद को लोकप्रियता क्यों मिलने लगी?

उत्तर—वाइमर गणराज्य के असफल होने के पश्चात् जर्मनी में एक राजनीतिक शून्यता की स्थिति थी। 1932 में हुए चुनाव में 32% मत प्राप्त कर नात्सी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आई। इसने गणराज्य के बाद की शून्यता को, जनता का समर्थन प्राप्त कर भर दिया। यह नात्सी प्रचार तथा हिटलर के नारे का प्रभाव था। उसने एक शक्तिशाली, समृद्ध एवं खुशहाल जर्मनी का सपना देखा। उसने सोचा कि इस सपने को जनता की सहभागिता के बिना पूरा करना संभव नहीं है। अत: उसने सफलतापूर्वक लोगों की भीड़ एकत्रित करना आरम्भ कर दिया। वह बड़ी चतुराई से अपने राजनीतिक विरोधियों का खात्मा करने लगा। हिटलर यूथ, जर्मन युवाओं को सेना में भर्ती होने का आह्वान एवं प्रजातीय विभेदीकरण जैसी नीतियों को शीघ्र जनसमर्थन प्राप्त हुआ। हिटलर जनता की इच्छा को समझने में माहिर था। यह वही जनता थी जिसके आत्मसम्मान को युद्ध में पराजय तथा वर्साय की अपमानजनक संधि से गहरा धक्का लगा था। हिटलर ने लोगों को उनका आत्म-सम्मान लौटाने का वादा किया। यह राजनीतिक-आर्थिक संकट का दौर था जिसमें हिटलर के छद्म नारों ने अपना काम किया एवं जर्मनी में नात्सीवाद लोकप्रिय हो गया।

प्रश्न 3. नात्सी सोच के खास पहलू कौन-से थे?

उत्तर—नात्सी सोच के खास पहलू निम्नलिखित थे—

(i) लोगों के बीच कोई समानता नहीं, बल्कि केवल एक प्रजातीय वंशानुक्रम है।

(ii) नीली आँखों वाले नॉर्डिक जर्मन आर्य वंशानुक्रम में सबसे श्रेष्ठ और यहूदी लोग सबसे हीन हैं।

(iii) नात्सियों का मानना था कि श्रेष्ठ प्रजाति रहेगी और हीन प्रजाति को नष्ट होना पड़ेगा।

(iv) इनके विचार का एक दृष्टिकोण भू-राजनीतिक विस्तार अर्थात् 'लेबेन्स्राउम्' था। इसके अन्तर्गत उन्हें बस्तियों के लिए अपने क्षेत्र के विस्तार की स्वतंत्रता थी।

प्रश्न 4. नात्सियों का प्रोपेगैंडा यहूदियों के खिलाफ नफरत पैदा करने में इतना असरदार कैसे रहा?

उत्तर—नात्सियों ने मध्यकाल में यहूदियों की निम्न स्थिति का सफलतापूर्वक शोषण किया क्योंकि परंपरागत रूप में ईसाई, यहूदियों से घृणा करते थे। यहूदियों को यीशु का हत्यारा माना जाता था। उन्हें सांस्कारिक हत्यारा माना जाता था तथा जमीन खरीदने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। उन्हें शोषक महाजन के रूप में देखा जाता था।

जैसे ही ईसाइयों को अवसर मिलता वे संगठित रूप से यहूदियों का सामूहिक नरसंहार करते थे।

इसके परिणामस्वरूप बहुत सारे यहूदियों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। लेकिन नात्सियों का कहना था कि यह समस्या का समाधान नहीं है, वे यहूदियों को समूल नष्ट करने में विश्वास करते थे। इन ऐतिहासिक धारणाओं तथा पोस्टर, फिल्म, पर्चियों, नारे, रेडियो आदि के माध्यम से नात्सियों द्वारा किये गये प्रचार ने यहूदियों के विरुद्ध लोगों के मन में घृणा उत्पन्न कर दी।

प्रश्न 5. नात्सी समाज में औरतों की क्या भूमिका थी? फ्रांसीसी क्रांति के बारे में जानने के लिए अध्याय 1 देखें। फ्रांसीसी क्रांति और नात्सी शासन में औरतों की भूमिका के बीच क्या फर्क था? एक पैराग्राफ में बताएँ।

उत्तर—नात्सी समाज में औरतों ने द्वितीयक स्तर की भूमिका अदा की। उन्हें आर्य संस्कृति का संवाहक माना जाता था। इस संहिता का उल्लंघन करने वाली औरतों को दंडित तथा अपमानित कर जेलों में कैद कर दिया जाता था। दूसरी तरफ, जो महिलाएँ इन आचार संहिताओं का पालन करती थीं उन्हें सम्मानित किया जाता था। इस प्रकार गैर-जर्मन महिलाओं के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाई जाती थी।

इसके विपरीत फ्रांसीसी क्रांति ने औरतों के जीवन में नई गतिविधियों का संचार किया। औरतों को क्रांति में बराबर का भागीदार माना जाता था। वे कई प्रगतिशील गतिविधियों; जैसे—राजनीतिक क्लबों की सदस्यता, पेंटिंग, अखबार, नौकरी आदि में भाग ले सकती थीं। औरतों ने अपनी एक संस्था 'क्रांतिकारी एवं गणतांत्रिक महिला समाज' की स्थापना की। उन्होंने अपने लिए समान राजनीतिक अधिकारों की माँग की जिसे अंततः 300 वर्षों के लंबे संघर्ष के पश्चात् प्राप्त किया। 1946 में फ्रांसीसी औरतों को मत देने का अधिकार प्रदान कर दिया गया।

प्रश्न 6. नात्सियों ने जनता पर पूरा नियंत्रण हासिल करने के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाए?

उत्तर—नात्सी सरकार ने जनता पर पूरा नियंत्रण हासिल करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाये—

(1) युवाओं का विचार परिवर्तन—उनकी बाल्यावस्था से ही नात्सी सरकार ने बच्चों के मन-मस्तिष्क पर कब्जा कर लिया। जैसे-जैसे वे बड़े होते गये उन्हें वैचारिक प्रशिक्षण द्वारा नात्सीवाद की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया।

(2) स्कूली बच्चों का विचार परिवर्तन—नात्सी सरकार ने अपनी विचारधारा पर आधारित नए पाठ्यक्रम के अनुरूप पुस्तकें तैयार करवाईं। कई युवा चित्रकारिता कार्यक्रम बनाये गये। इन सबके द्वारा उन्हें नम्रता एवं कृतज्ञता का पाठ पढ़ाया गया। उनसे कहा जाता था कि वे यहूदियों से घृणा और हिटलर की पूजा करें।

(3) खेल गतिविधियाँ—उन सभी खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया जो बच्चों में हिंसा तथा आक्रामकता की भावना पैदा करती थीं।

(4) लड़कियों का विचार परिवर्तन—लड़कियों को शिक्षा दी जाती थी कि उन्हें अच्छी माँ बनना है तथा शुद्ध रक्त वाले आर्य बच्चों का लालन-पालन करना है।

(5) महिलाओं के बीच भेदभाव—महिलाओं के बीच उनके बच्चों के आधार पर भेदभाव किया जाता था। एक अनुपयुक्त बच्चे की माँ होने पर महिलाओं को दंडित किया जाता था तथा जेल में कैद कर दिया जाता था। लेकिन, बच्चे के शुद्ध आर्य प्रजाति का होने पर महिलाओं को सम्मानित किया जाता था तथा इनाम दिया जाता था।

(6) आर्यों के आर्थिक हितों की रक्षा—आर्य प्रजाति के लोगों के लिए आर्थिक अवसरों की भरमार थी। उन्हें रोजगार दिया जाता था, उनके व्यापार को सुरक्षा दी जाती थी तथा सरकार की ओर से उन्हें हर संभव सहायता दी जाती थी।

(7) नाजी प्रचार—जनता पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने में नात्सियों द्वारा विशेष पूर्वनियोजित प्रचार का सर्वाधिक योगदान था।

(8) नात्सियों ने आबादी के विभिन्न भागों को अपील करने का हर संभव प्रयास किया। उन्होंने इस आधार पर उनका समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया कि केवल नात्सी ही उनकी हर समस्या का हल ढूँढ़ सकते थे।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नाजी पार्टी की स्थापना किसने की?

(क) बिस्मार्क (ख) हिटलर (ग) नेपोलियन बोनापार्ट (घ) जार निकोलस II।

2. वाइमर गणतन्त्र की स्थापना किसने की?

(क) जर्मनी (ख) इंग्लैण्ड (ग) रूस (घ) जर्मनी।

3. बिस्मार्क कहाँ का चांसलर था?

(क) इंग्लैण्ड (ख) ऑस्ट्रिया (ग) पुर्तगाल (घ) जर्मनी।

4. सितम्बर, 1940 में किसने त्रिपक्षीय समझौते (Tripartite Pact) पर हस्ताक्षर किये?
(क) जर्मनी, इटली, जापान (ख) स्पेन, पुर्तगाल, हॉलैण्ड
(ग) इंग्लैण्ड, रूस, डेनमार्क (घ) भारत, बर्मा, स्वीडन।

5. नाजी किससे अत्यधिक घृणा करते थे?
(क) पोल (ख) यहूदी (ग) भारतीय (घ) फ्रांसीसी।

6. यहूदी कहाँ रहते थे?
(क) घेटो (ख) रुहर (ग) कोल्खोज (घ) चेका।

7. जर्मन बच्चों को किस आयु में जंगवोक (Jungvolk) में सम्मिलित होना पड़ता था?
(क) 5 (ख) 10 (ग) 15 (घ) 20।

8. नाजियों की युवा लीग की स्थापना कब की गई?
(क) 1922 (ख) 1924 (ग) 1926 (घ) 1928।

9. किसने कहा, "मेरे राज्य में माँ सबसे अधिक महत्वपूर्ण नागरिक है।"
(क) लेनिन (ख) हिटलर (ग) कैसर विलियम II (घ) बिस्मार्क।

10. अमेरिका ने हिरोशिमा पर परमाणु बम कब गिराया?
(क) 6 अगस्त, 1945 (ख) 7 अगस्त, 1945 (ग) 8 अगस्त, 1945 (घ) 9 अगस्त, 1945।

11. राज्य समाजवाद की नीति किसने लागू की?
(क) हिटलर (ख) लेनिन (ग) बिस्मार्क (घ) इनमें से कोई नहीं।

12. डॉ. काप (Dr. Kapp) सैनिकवादी थे–
(क) रूसी अधिकारी (ख) जर्मन अधिकारी (ग) इटालियन अधिकारी (घ) फ्रांसीसी अधिकारी।

13. सन् 1920 में वाइमर गणतन्त्र को एक सशस्त्र विद्रोह का सामना करना पड़ा जो निम्न के द्वारा किया गया–
(क) रोजा लक्जमबर्ग (ख) कार्ल लाइब्कनेश्त (ग) बिस्मार्क (घ) डॉ० काप।

14. रोजा लक्जमबर्ग किसका नेता था?
(क) साम्यवादियों (ख) समाजवादियों (ग) राष्ट्रवादियों (घ) लोकतन्त्रवादियों।

15. डर्म्सडतार राष्ट्रीय बैंक (Durmsdtar National Bank) कहाँ स्थित है?
(क) जर्मनी (ख) फ्रांस (ग) इटली (घ) इंग्लैण्ड।

16. गेस्टापो का गठन किसने किया?
(क) बिस्मार्क (ख) हिटलर (ग) जार निकोलस II (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. 'मीन कैम्फ' (Mein Kampf) पुस्तक किसने लिखी?
(क) हिटलर (ख) कार्ल मार्क्स (ग) सेण्ट साइमन (घ) बेव्यूफ।

18. हिटलर अपनी शक्ति के शिखर पर कब पहुँचा?
(क) 1939 (ख) 1940 (ग) 1941 (घ) 1942।

19. 7 दिसम्बर, 1941 को किसने यू० एस० स्थित पर्ल हार्बर पर हमला किया?
(क) जर्मनी (ख) जापान (ग) ऑस्ट्रिया (घ) इटली।

20. 'क्रिस्टल या टूटे काँच की रात्रि' कार्यक्रम का आयोजन किसने किया?
(क) नाजी पार्टी (ख) समाजवादी पार्टी
(ग) फासीवादी पार्टी (घ) इनमें से कोई नहीं।

[**उत्तर–1.** (क), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (क), **5.** (ख), **6.** (क), **7.** (ख), **8.** (क), **9.** (ख), **10.** (क), **11.** (ग), **12.** (क), **13.** (घ), **14.** (क), **15.** (क), **16.** (ख), **17.** (क), **18.** (ख), **19.** (ख), **20.** (क)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. नाजी पार्टी का गठन कब और किसके द्वारा किया गया?
उत्तर–नाजी पार्टी का गठन सन् 1921 में हिटलर ने किया।

प्रश्न 2. जर्मन संसद को क्या नाम दिया गया?
उत्तर—जर्मन संसद को 'रीश्टाग' का नाम दिया गया।
प्रश्न 3. नाजी पार्टी का मूल नाम क्या था?
उत्तर—'राष्ट्रवादी समाजवादी जर्मन श्रमिक दल।'
प्रश्न 4. अति मुद्रास्फीति या हाइपर इन्फ्लेशन का क्या अर्थ है?
उत्तर—यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें मूल्य बहुत अधिक ऊँचे हो जाते हैं।
प्रश्न 5. 'मीन कैम्फ' पुस्तक किसने लिखी? इसका शाब्दिक अर्थ क्या है?
उत्तर—'मीन कैम्फ' पुस्तक हिटलर ने लिखी तथा इसका शाब्दिक अर्थ है 'मेरा संघर्ष'।
प्रश्न 6. गेस्टापो का क्या अर्थ है?
उत्तर—गुप्त राज्य पुलिस।
प्रश्न 7. 'वोल्क्सवेगन' क्या थी?
उत्तर—यह जनता की कार थी।
प्रश्न 8. नाजी पार्टी का प्रतीक क्या था?
उत्तर—स्वास्तिक के चिह्न के साथ लाल बैनर।
प्रश्न 9. त्रिपक्षीय समझौते में सम्मिलित तीनों देशों के नाम बताइए।
उत्तर—जर्मनी, इटली व जापान।
प्रश्न 10. वोल्क्सवेगन का क्या अर्थ है?
उत्तर—जर्मनी के संदर्भ में इसका अर्थ है लोगों की कार।
प्रश्न 11. नाजी जर्मनी की विदेशी नीति के प्रमुख उद्देश्य क्या थे?
उत्तर—विस्तारवाद, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद।
प्रश्न 12. हिटलर की आक्रामक विदेश नीति का नारा क्या था?
उत्तर—'एक लोग, एक साम्राज्य व एक नेता'।
प्रश्न 13. 'होलोकास्ट' किसे कहा जाता था?
उत्तर—यह शब्द यहूदियों की सामूहिक हत्या के लिए प्रयुक्त किया जाता था।
प्रश्न 14. नाजी जर्मनी में सबसे अधिक पीड़ित कौन थे?
उत्तर—नाजी जर्मनी में यहूदी सबसे अधिक पीड़ित थे।
प्रश्न 15. यहूदियों की सामूहिक हत्या के लिए क्या शब्द प्रयुक्त किये जाते थे?
उत्तर—'विशेष व्यवहार तथा अन्तिम समाधान'।
प्रश्न 16. कन्सण्ट्रेशन कैम्प क्या थे?
उत्तर—कन्सण्ट्रेशन कैम्प वस्तुतः मृत्यु के कैम्प थे, जहाँ यूरोप के विभिन्न हिस्सों से यहूदियों को लाकर मृत्यु दण्ड दिया जाता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. वाइमर गणतन्त्र को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में स्थापित वाइमर गणतन्त्र क्यों लोकप्रिय हो गया? कोई तीन कारण बताइए।

उत्तर—सन् 1914 के प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जर्मनी का सम्राट कैसर विलियम द्वितीय देश छोड़कर भाग गया। जर्मनी में राजतन्त्र का पतन हो गया। इसके पश्चात् वहाँ गणराज्य की स्थापना हो गई। जर्मनी के इतिहास में यह गणराज्य 'वाइमर गणराज्य' के नाम से विख्यात है। वाइमर गणराज्य को शीघ्र ही कुछ बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जो निम्नलिखित थीं—

(1) इसे वर्साय की अपमानजनक सन्धि पर हस्ताक्षर करने पड़े।
(2) इसे मित्र राष्ट्रों को युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में भारी धनराशि देनी पड़ी।

(3) देश में मुद्रास्फीति के कारण कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हो चुकी थी। वाइमर सरकार मूल्य-वृद्धि को रोकने में पूर्णतः असफल रही।

(4) देश में बेरोजगारी बढ़ गई थी तथा उद्योग व व्यापार पिछड़ गए थे।

(5) मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को कमजोर करने के लिए इसका विसैन्यीकरण कर दिया।

(6) युद्ध अपराध न्यायाधिकरण ने जर्मनी को युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराने के साथ-साथ मित्र राष्ट्रों को हुए नुकसान के लिए भी उत्तरदायी ठहराया।

अतः इसके साथ-साथ सेना में असन्तोष बढ़ने लगा। जर्मन जनता का वाइमर सरकार से मोह भंग हो गया। परिणामस्वरूप उक्त असन्तोषजनक स्थिति हिटलर के उत्कर्ष में सहायक रही।

प्रश्न 2. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी मे नाजीवाद के उदय के क्या कारण थे?

अथवा

जर्मनी में नाजीवाद के प्रमुख उत्तरदायी कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् पराजित जर्मनी के लिए वर्साय की सन्धि बहुत अपमानजनक थी। इसकी कठोरता के कारण जर्मनी में नाजीवाद का उत्थान हुआ। इसके नेता हिटलर ने वर्साय के सन्धि-पत्र की अपमानजनक शर्तों की धीरे-धीरे अवहेलना करनी शुरू कर दी। वह उपनिवेशवाद, सैन्यवाद व विस्तारवाद में विश्वास करता था। जर्मनी में जिन कारकों ने नाजीवाद के उत्थान में योगदान दिया, वे निम्नलिखित थे—

1. जर्मनी में राजनीतिक अस्थिरता—हिटलर के उत्थान से पूर्व जर्मनी पर वाइमर गणराज्य का शासन था। इसके शासनकाल में देश में बेरोजगारी बढ़ गई तथा कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई। इससे सेना में भी असन्तोष फैल गया। हिटलर ने ऐसी स्थिति का पूरा-पूरा लाभ उठाया। उसने जर्मनी की जनता को विश्वास दिलाया कि वह राष्ट्र का खोया हुआ सम्मान पुनः वापस लाएगा। जर्मनी की सभी समस्याओं का समाधान करके वह उसे विश्व की नई शक्ति बनाएगा।

2. आर्थिक संकट—प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी को गहरे आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस युद्ध में जर्मनी को अपार जन एवं धन की हानि उठानी पड़ी। इसके शहर एवं कस्बे, व्यापार एवं वाणिज्य, कारखानों एवं उद्योगों को पूर्णतया नष्ट कर दिया गया था। सन् 1929 के आर्थिक संकट ने जर्मनी की आर्थिक स्थिति पर और भी कुप्रभाव डाला। जर्मनी की गणतन्त्रीय सरकार देश की आर्थिक समस्याओं का समाधान करने में असफल रही।

3. जर्मन जनता का प्रजातन्त्र में अविश्वास—जर्मनी के लोगों का स्वभाव से ही प्रजातन्त्र में विश्वास नहीं था। प्रजातन्त्र उनकी सभ्यता और परम्पराओं के विरुद्ध था। वे पार्लियामेंटरी संस्थाओं व उसके क्रियाकलापों को समझने में असमर्थ थे। अतः जर्मनी में वाइमर संविधान बड़े प्रतिकूल वातावरण में लागू हुआ, जिसका सफल होना भी सम्भव नहीं था। अतः वहाँ के लोगों की मनोवृत्ति नाजीदल के विकास और हिटलर के अधिनायक बनने में सहायक सिद्ध हुई।

4. साम्यवाद का खतरा—जर्मनी में साम्यवाद का प्रसार दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा था। जर्मनी में साम्यवादियों ने सन् 1917 की रूसी क्रान्ति करने का प्रयास किया। साम्यवादी विचारधारा जर्मनी की राष्ट्रीयता के लिए एक बड़ा खतरा थी। इस कारण जर्मन पूँजीवादियों ने हिटलर की नाजी पार्टी को पूर्ण समर्थन दिया। परिणामस्वरूप एक विशाल जनसमूह श्रमिक-साम्यवाद के खतरों से बचने के लिए नाजीदल में शामिल हो गया।

5. दलीय संघर्ष से नाजीवाद को लाभ—जर्मनी में अनेक राजनीतिक दल थे जिनमें साम्यवादी, प्रजातन्त्रवादी, राष्ट्रवादी और समाजवादी प्रमुख थे। प्रत्येक राजनीतिक दल ने शक्ति-प्राप्ति का प्रयास किया। सन् 1919 से 1933 तक जर्मनी में गणतन्त्र का इतिहास विभिन्न दलों के सत्तारूढ़ होने के लिए दलीय संघर्ष का इतिहास है। इसका परिणाम यह हुआ कि जर्मनी की वाइमर गणतन्त्रीय सरकार अत्यधिक कमजोर हो गई और नाजीवाद को राजसत्ता पर अधिकार करने का अवसर मिल गया।

6. हिटलर के व्यक्तित्व का प्रभाव—हिटलर एक असाधारण एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी था। वह उच्चकोटि का वक्ता था। वह साम्यवाद का कटु आलोचक था। उसने अपने देश की जनता को यह विश्वास दिलाया कि यदि वह सत्ता में आएगा तो वह अपने राष्ट्र को स्वाभिमान तथा सम्मान दिलाएगा। परिणामस्वरूप नाजीदल अधिक लोकप्रिय होता गया और उसके सदस्यों की संख्या में वृद्धि होती गई।

अतः उपर्युक्त कारण नात्सीवाद की लोकप्रियता में सहायक सिद्ध हुए।

प्रश्न 3. नाजीवाद के प्रमुख उद्देश्यों व सिद्धान्तों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—नात्सी सोच (विचारधारा) एक निरंकुश व बर्बर तानाशाही विचारधारा थी। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जर्मनी में वर्साय की सन्धि द्वारा जो कठोर व अपमानजनक शर्तें रखी गयीं, उसके परिणामस्वरूप जर्मनी में नाजीवाद के नाम से एक तानाशाही राज्य स्थापित हो गया। इसका नेता हिटलर था। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—

(1) राज्य सर्वोच्च है। नाजीवाद के अनुसार—"लोग राज्य के लिए हैं, न कि राज्य लोगों के लिए।"

(2) यह साम्यवाद, समाजवाद व उदारवाद को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता था।

(3) यह युद्ध को उचित ठहराता था और शक्ति के प्रयोग की सराहना करता था।

(4) नाजीवाद सभी प्रकार की संसदीय संस्थाओं को समाप्त करने का पक्षधर था और एक शक्तिशाली नेता के नेतृत्व में विश्वास रखता था।

(5) नाजीवाद जर्मनी की सैन्य शक्ति को बढ़ाना चाहता था और उसे विश्व की सर्वाधिक प्रबल शक्ति के रूप में देखना चाहता था।

(6) नाजीवाद जर्मनी साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था और उन सभी बस्तियों को वापस लेना चाहता था जो प्रथम विश्वयुद्ध से पहले जर्मनी के अधीन थीं।

(7) नाजीवाद यहूदियों का कट्टर विरोधी था। उसकी धारणा थी कि यहूदी स्वार्थी तथा धन के लोभी हैं। उन्हीं के कारण ही जर्मनी को प्रथम विश्वयुद्ध में पराजय का मुँह देखना पड़ा था। स्पष्ट है कि नात्सी सोच निरंकुश थी। यह विचारधारा यहूदियों को समूल नष्ट करने की पक्षधर थी।

प्रश्न 4. नाजी विचारधारा की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 3 का उत्तर।

प्रश्न 5. नाजी समाज में स्त्रियों की भूमिका व स्थिति का वर्णन कीजिए। उनकी भूमिका व स्थिति की तुलना फ्रांसीसी क्रान्ति के समय की फ्रांसीसी स्त्रियों की भूमिका व उनकी स्थिति से कीजिए।

उत्तर—नात्सी समाज में औरतों की भूमिका निम्नलिखित प्रकार थी—

(i) घरेलू दायित्वों की पूर्ति करना।

(ii) बच्चों को नात्सी मूल्यों एवं मान्यताओं की शिक्षा देना।

(iii) लड़कियों का फर्ज था कि अच्छी माँ बनना और शुद्ध आर्य रक्त वाले बच्चों को जन्म देना।

(iv) नात्सी मान्यता के अनुसार औरत-मर्द के लिए समान अधिकारों का संघर्ष गलत है।

(v) आर्य नस्ल की शुद्धता को बनाए रखने के लिए यहूदियों से दूर रहना।

(vi) शुद्ध आर्य नस्ल के बच्चों को जन्म देने वाली माताओं को कई सुविधाएँ प्रदान की जाती थीं।

फ्रांसीसी क्रांति और नात्सी शासन में औरतों की भूमिका में अंतर—

(i) फ्रांसीसी क्रांति में महिलाओं की भूमिका—फ्रांसीसी समाज में महिलाएँ अपने हितों के प्रति जागरूक थीं। फ्रांस के कई राज्यों में 60 महिला राजनीतिक क्लब अस्तित्व में थे। वह पुरुषों के समान अधिकारों के लिए माँग कर रही थीं। लड़कियों के लिए स्कूली शिक्षा अनिवार्य थी। वह अपनी इच्छा से विवाह के लिए आजाद थीं। महिलाओं को तलाक देने का अधिकार प्राप्त था। महिलाएँ व्यावसायिक प्रशिक्षण ले सकती थीं, कलाकार बन सकती थीं और व्यवसाय कर सकती थीं।

(ii) नात्सी शासन में महिलाओं की भूमिका—फ्रांस के विपरीत जर्मनी में महिलाओं को अपनी इच्छा से विवाह करने की अनुमति नहीं थी। महिलाओं के लिए नात्सी सरकार द्वारा निर्धारित आचार संहिता का उल्लंघन करने पर महिलाओं को सार्वजनिक रूप से दंडित किया जाता था। उन्हें न केवल कारागार में डाल दिया जाता था अपितु उनके नागरिक अधिकार छीनकर पति और परिवार से भी उन्हें दूर कर दिया जाता था।

प्रश्न 6. व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार नाजियों के द्वारा किया गया प्रचार यहूदियों के प्रति घृणा फैलाने में प्रभावी सिद्ध हुआ?

उत्तर—जर्मन समाज जातीय आधार पर विभाजित था। नाजीवादी स्वयं को शुद्ध रक्त के आर्य मानते थे। अत: उन्होंने यहूदियों के विरुद्ध घृणा का वातावरण बना दिया। उनका यहूदियों के विरुद्ध प्रचार निम्नलिखित रूप से प्रभावी सिद्ध हुआ—

(1) नाजियों ने यहूदियों के प्रति उस घृणा को अपनी कार्यवाई का आधार बनाया जो ईसाई लोग उनके विरुद्ध रखते थे। ईसाई लोग यहूदियों को ईसा मसीह का हत्यारा मानते हैं। मध्ययुग तक यहूदियों पर जमीन खरीदने पर पूरी पाबन्दी थी। सन् 1933 से 1938 तक नाजियों ने यहूदियों पर घोर अत्याचार किए। उन्हें देश से भगा दिया गया व गैस चैम्बरों में बन्द करके बड़ी संख्या में उनकी हत्या कर दी गई।

(2) नाजियों द्वारा प्रचार किया गया कि यहूदी घटिया शारीरिक रचना वाले लोग हैं। अत: उन्हें समाज के अवांछित वर्ग का दर्जा दिया जाना ही उचित है।

(3) नाजियों द्वारा यह व्यक्त किया गया कि यहूदी धन के लोभी हैं। वे लोगों को पैसा उधार देकर अत्यधिक ब्याज वसूल करते हैं।

(4) एडोल्फ हिटलर जर्मन यहूदियों से अत्यधिक घृणा करता था। प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय का कारण वह यहूदियों को ही मानता था।

(5) नाजी लोगों ने यहूदियों के प्रति घृणा की भावना का प्रचार स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों से ही करना शुरू कर दिया। स्कूलों से यहूदी अध्यापकों को निकाल दिया गया। अत: जर्मनी की नई पीढ़ी में यहूदियों के प्रति घृणा व द्वेष के भाव पहले से ही भर दिए गए।

(6) नाजियों ने विश्व की प्रतिक्रिया से बचने के लिए यहूदियों के लिए सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया। जैसे सामूहिक हत्याओं के लिए 'विशेष व्यवहार' शब्द को प्रयोग में लाया जाता था।

उपर्युक्त बिन्दुओं से स्पष्ट है कि नात्सियों का प्रोपेगैंडा यहूदियों के विरुद्ध नफरत पैदा करने में पूर्णतया सफल रहा। इस नफरत के कारण यहूदियों को बिना अपराध मौत के घाट उतारा गया।

प्रश्न 7. नाजीवाद की सफलता ने किस प्रकार यूरोप में भयानक परिणाम उत्पन्न किये?

उत्तर—सत्ता प्राप्त करते ही हिटलर ने लीग ऑफ नेशन्स और निरस्त्रीकरण का परित्याग कर दिया। 26 जनवरी, 1934 ई० को उसने पोलैण्ड से 'अनाक्रमण समझौता' करके विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। 25 जुलाई, 1934 ई. को हिटलर ने ऑस्ट्रिया पर अधिकार करने का विफल प्रयास किया। 1 जनवरी, 1935 ई० को उसने सार घाटी में जनमत संग्रह करवाया और 10 प्रतिशत जनता के बहुमत के कारण हिटलर ने 1 मार्च, 1935 ई० को सार घाटी को जर्मन राज्य में मिला लिया। 16 मार्च, 1935 ई० को हिटलर ने जर्मनी का शस्त्रीकरण करने की घोषणा कर दी। 10 जून, 1935 ई० को हिटलर ने कूटनीति से काम लेते हुए **'एंग्लो-जर्मन-नाविक समझौते'** पर हस्ताक्षर कर दिए। 7 मार्च, 1936 ई० को हिटलर ने वर्साय की सन्धि की धाराओं का उल्लंघन करते हुए राइनलैण्ड की किलेबन्दी शुरू कर दी। हिटलर की इस कार्यवाई ने लगभग सभी यूरोपीय समझौतों को महत्त्वहीन बना दिया। 14 अक्टूबर, 1936 ई० को बेल्जियम ने अपनी तटस्थता की घोषणा कर दी। पोलैण्ड, एस्टोनिया, लाटविया, लिथुआनिया, यूगोस्लाविया, हंगरी, बल्गेरिया आदि छोटे राज्य जर्मनी के प्रभाव में आ गए। डेनमार्क, नार्वे तथा स्वीडन ने भी अपनी तटस्थता घोषित कर दी।

अबीसीनिया युद्ध में हिटलर ने **मुसोलिनी** का समर्थन करके इटली के साथ 25 अक्टूबर, 1936 ई० को **'रोम-बर्लिन समझौता'** कर लिया। इटली से सन्धि करने के बाद हिटलर ने 25 नवम्बर, 1936 ई० को जापान के साथ रूस के विरुद्ध **'एण्टी कोमिन्टर्न पैक्ट'** किया। 26 नवम्बर, 1936 ई० को इटली भी इस समझौते में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार **'रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी'** का निर्माण हो गया। इस सन्धि के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण यूरोप दो शक्तिशाली गुटों में विभक्त हो गया। एक गुट धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली और जापान) का था और दूसरा गुट मित्र राष्ट्रों (इंगलैण्ड, फ्रांस और रूस) का था।

14 मार्च, 1938 ई० को वियना पर जर्मनी का अधिकार हो गया। 19 अप्रैल, 1938 ई० को हिटलर ने सम्पूर्ण ऑस्ट्रिया को जर्मन साम्राज्य में मिला लिया। **म्यूनिख समझौते** के बाद हिटलर ने 15 मार्च, 1939 ई० को चेकोस्लोवाकिया पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। हिटलर की साम्राज्यवादी भूख का अगला शिकार लिथुआनिया बना। 22 मार्च, 1939 ई० को जर्मन सेनाओं ने लिथुआनिया के मेमल प्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। 6 अप्रैल, 1939 ई० को उसने अल्बानिया पर भी अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया। अपनी स्थिति को अधिक सुदृढ़ करने के लिए हिटलर ने रूस के साथ 23 अगस्त, 1939 ई० को एक 'अनाक्रमण समझौता' कर लिया। उसका यह कार्य कूटनीतिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। इसके बाद हिटलर ने पोलैण्ड से डेन्जिग बन्दरगाह तक जाने के लिए 'पोलिश गलियारे' की माँग की। 31 अगस्त, 1939 ई० को हिटलर ने पोलैण्ड सरकार के उत्तर को प्राप्त किए बिना ही, बगैर किसी सूचना के, जर्मन सेनाओं को पोलैण्ड पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया। 1 सितम्बर, 1939 ई० की सुबह 5 बजे जर्मन सेनाएँ पोलैण्ड की सीमा के पार पहुँच गईं और द्वितीय विश्वयुद्ध का विस्फोट हो गया। पोलैण्ड की सुरक्षा के लिए 3 सितम्बर, 1939 ई० को इंगलैण्ड तथा फ्रांस ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नाजी जर्मनी की नीतियों के कारण द्वितीय विश्वयुद्ध का जन्म हुआ।

प्रश्न 8. नाजीवाद के स्कूल व्यवस्था पर क्या प्रभाव हुए? किन्हीं पाँच प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—हिटलर का यह विचार था कि शक्तिशाली नात्सी समाज की स्थापना के लिए बच्चों को इसके विषय में ज्ञान देना अति आवश्यक है। अवांछित बच्चों और शिक्षकों को अर्थात् यहूदियों, जिप्सियों और विकलांग बच्चों को स्कूल से

निकाल दिया गया। स्कूली पाठ्य-पुस्तकों को पुनः लिखा गया। जर्मन और यहूदी बच्चों को एक साथ बैठने या खेलने की अनुमति नहीं थी। नात्सी विचारों को उचित ठहराने के लिए नस्ल विज्ञान (Racial Science) के नाम से एक नया विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। बच्चों को सिखाया गया कि वे वफादार (Faithful) व आज्ञाकारी बनें और यहूदियों से नफरत करें तथा हिटलर की पूजा करें। बच्चों को दिए जाने वाले खेलकूद प्रशिक्षण में हिंसा और आक्रामकता की भावना पर बल दिया जाता था। हिटलर का विचार था कि बच्चों को विशेषतः मुक्केबाजी का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे बच्चे ताकतवर बन सकें। विकलांग बच्चों को गैस के चैम्बर में झोंक कर मार दिया जाता था।

युवा संगठनों को जर्मन बच्चों एवं युवाओं में 'राष्ट्रीय समाजवाद की भावना' (Spirit of National Socialism) उत्पन्न करने का कार्य सौंपा गया। 10 वर्ष के बच्चों को युंगफोक में दाखिला एवं 14 वर्ष के लड़कों को नात्सियों के युवा संगठन **हिटलर यूथ** (Hitler Youth) की सदस्यता लेनी अनिवार्य थी। शारीरिक प्रशिक्षण के बाद 18 वर्ष की आयु में **लेबर सर्विस** (श्रम सेवा) में सम्मिलित होना पड़ता था। इसके उपरान्त इन्हें सेना में कार्य करना पड़ता था तथा इनके लिए नात्सी संगठन की सदस्यता अनिवार्य थी। नात्सी यूथ लीग का गठन सन् 1922 में हुआ था। चार वर्ष बाद ही इस लीग को हिटलर यूथ के नाम से जाना गया।

●●

खण्ड–II : जीविका, अर्थव्यवस्था और समाज

4 वन्य–समाज और उपनिवेशवाद

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. औपनिवेशिक काल के वन प्रबंधन में आए परिवर्तनों ने इन समूहों को कैसे प्रभावित किया–

(i) झूम-खेती करने वालों को,

(ii) घुमंतू और चरवाहा समुदायों को,

(iii) लकड़ी और वन-उत्पादों का व्यापार करने वाली कंपनियों को,

(iv) बागान मालिकों को,

(v) शिकार खेलने वाले राजाओं और अंग्रेज अफसरों को।

उत्तर–(i) झूम-खेती करने वालों को–वन प्रबन्धन की नीति में परिवर्तन का झूम-खेती करने वालों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। खेती की इस पद्धति को प्रतिबंधित कर दिये जाने के कारण उन्हें दूसरा व्यवसाय अपनाना पड़ा और उनके स्वतंत्र जीवन-यापन की पुरातन व्यवस्था चरमरा गई। विभिन्न क्षेत्रों में उनका शोषण होने लगा। साथ ही नई नीति ने एक प्रकार से उन्हें बंधुआ मजदूर बना दिया।

(ii) घुमंतू और चरवाहा समुदायों को–नई नीति के अन्तर्गत इन समुदायों को सुरक्षित वनों में अपनी गतिविधियाँ चलाने से रोक दिया गया। परिणामस्वरूप, उनकी रोजी-रोटी प्रभावित हुई। वनोत्पादों के व्यापार को रोके जाने से इन समुदायों के लिए आय के स्रोत बंद हो गये और इनका जीवन-यापन कठिन हो गया।

(iii) लकड़ी और वन-उत्पादों का व्यापार करने वाली कंपनियों को–वन प्रबंधन की नीति के अन्तर्गत इन फर्मों को लकड़ी तथा वनोत्पाद का व्यापार करने का एकाधिकार दे दिया गया। इस समूह के लोगों को इस नीति का सबसे अधिक लाभ पहुँचा। परिणामस्वरूप, उन्होंने अपने तथा सरकार के लिए विशाल मात्रा में वनों के दोहन एवं आदिवासियों के शोषण द्वारा धन जुटाया।

(iv) बागान मालिकों को–बागान मालिकों को अपने व्यवसाय से बहुत अधिक लाभ हुआ। अवन्यीकरण के पश्चात् चाय, कॉफी, रबर आदि के नये-नये बागान विकसित किये गये। इन बागानों में जीवन-यापन से हीन आदिवासियों से मुफ्त काम करवाया जाता था। चूँकि इन उत्पादों का निर्यात होता था, अतः, सरकार एवं फर्म दोनों को बहुत अधिक लाभ हुआ।

(v) शिकार खेलने वाले राजाओं और अंग्रेज अफसरों को–हालांकि जंगलों में शिकार करना प्रतिबंधित कर दिया गया था लेकिन, इसमें भेद-भाव बरता गया। राजा-महाराजा तथा ब्रिटिश अधिकारी इन नियमों के बावजूद शिकार करते रहे। उनके साथ सरकार की मौन स्वीकृति थी। चूँकि बड़े जंगली जानवरों को वे आदिम, असभ्य एवं बर्बर समुदाय का सूचक मानते थे, अतः भारत को सभ्य बनाने के नाम पर इन वन्य जीवों का शिकार चलता रहा।

प्रश्न 2. बस्तर और जावा के औपनिवेशिक वन प्रबंधन में क्या समानताएँ हैं?

उत्तर–औपनिवेशिक काल में बस्तर और जावा में वन प्रबंधन में निम्नलिखित समानताएँ हैं–

(i) दोनों ही स्थानों पर शिकार को प्रतिबंधित कर दिया गया।

(ii) रेलवे एवं जहाज निर्माण के लिए अत्यधिक संख्या में पेड़ों की कटाई की गई।

(iii) वनवासी समुदायों द्वारा विरोध करने पर उन्हें प्रताड़ित किया गया।

(iv) घुमंतू एवं चरवाहे समुदायों को वनों में प्रवेश करने से रोका गया।

(v) वनोत्पाद से सम्बन्धित स्थानीय लोगों द्वारा किये जाने वाले व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाया गया।

(vi) वनों की कटाई एवं बगीचों के विकास के लिए यूरोपीय फर्मों को लाइसेंस या परमिट दिये गये।

(vii) वनवासी समुदायों को जंगल में अपने घरों में रहने के लिए अथवा किराया देने के लिए या बेगारी के लिए विवश किया गया।

(viii) वन भूमि का ग्रामीण, सुरक्षित एवं संरक्षित वनों में वर्गीकरण कर दिया गया।

(ix) इन नीतियों के निर्माण में दोनों ही स्थानों पर स्थानीय लोगों को सम्मिलित नहीं किया गया, बल्कि यूरोपीय विशेषज्ञों ने इन नीतियों का अपने हितों के लिए निर्माण किया।

(x) दोनों ही स्थानों पर औपनिवेशिक वन प्रबंधन का उद्देश्य सरकारी सत्ता को लाभ पहुँचाना तथा स्थानीय वनों में अथवा आस-पास रहने वालों का शोषण करना था।

प्रश्न 3. सन् 1880 से 1920 के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के वनाच्छादित क्षेत्र में 97 लाख हेक्टेयर की गिरावट आयी। पहले के 10.86 करोड़ हेक्टेयर से घटकर यह क्षेत्र 9.89 करोड़ हेक्टेयर रह गया था। इस गिरावट में निम्नलिखित कारकों की भूमिका बताएँ—

(i) रेलवे, (ii) जहाज निर्माण, (iii) कृषि-विस्तार,
(iv) व्यावसायिक खेती, (v) चाय-कॉफी के बागान, (vi) आदिवासी और किसान।

उत्तर—(i) रेलवे—रेलवे के विस्तार का वन क्षेत्र की कमी में विशेष योगदान रहा। रेल की पटरियाँ बिछाने के लिए आवश्यक स्लीपरों के लिए बहुत अधिक संख्या में पेड़ काटे गये। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 1 मील लंबी पटरी बिछाने के लिए लगभग 500 पेड़ों की आवश्यकता होती थी। इस कार्य को बहुत तीव्रता से किया गया क्योंकि, रेलवे सैनिकों एवं वाणिज्यिक वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने-ले जाने में सहायक था। परिणामस्वरूप वनों का तेजी से ह्रास हुआ।

(ii) जहाज निर्माण—जहाज निर्माण उद्योग वन क्षेत्र में कमी के लिए दूसरा सबसे बड़ा कारण था। चूँकि यूरोप के ओक वन लगभग समाप्त हो चुके थे, अत: भारतीय वनों की कठोर एवं टिकाऊ लकड़ियों पर यूरोपीय लोगों की नजर पड़ी। उन्होंने उसकी अंधाधुंध कटाई शुरू की। परिणामस्वरूप वनों का तेजी से ह्रास हुआ।

(iii) कृषि-विस्तार—इस दौरान न केवल यूरोपीय वरन् भारतीय आबादी भी तीव्रता से बढ़ रही थी। परिणामस्वरूप कृषि उत्पादों की माँग में भी तेजी से वृद्धि हुई। लेकिन, सीमित कृषि भूमि के कारण बढ़ती आबादी की माँग को तेजी से पूरा नहीं किया जा सकता था। ऐसी स्थिति में औपनिवेशिक सरकारों ने कृषि-भूमि में वृद्धि करने की सोची। लेकिन, फैसला अविवेकपूर्ण ढंग से लिए जाने के कारण इसकी कीमत हमें वनों के ह्रास के रूप में चुकानी पड़ी।

(iv) व्यावसायिक खेती—व्यावसायिक खेती ने भी भारत में वन क्षेत्रों को प्रभावित किया। इस तरह की खेती के लिए अधिक उपजाऊ भूमि की आवश्यकता थी। उपलब्ध भूमि पर पारंपरिक तरीके से वर्षों से की जा रही खेती के कारण वह विशेष उपजाऊ नहीं रह गई थी। अत: नई उपजाऊ भूमि के लिए जंगलों को साफ किया जाने लगा। परिणामस्वरूप वनों का तेजी से ह्रास हुआ।

(v) चाय-कॉफी के बागान—वनों की कीमत पर चाय एवं कॉफी के बागानों के विकास को प्रोत्साहित किया गया। इसके लिए यूरोपीय लोगों को परमिट या लाइसेंस दिया गया और हर संभव सहायता दी गई। वनवासियों को न्यूनतम मजदूरी पर पेड़ काटकर बागान के लिए जमीन तैयार करने के साथ-साथ बागान के विकास सम्बन्धी अन्य कार्यों में लगाया गया। इस प्रकार वन तथा वनवासी दोनों को ही नुकसान पहुँचाया गया।

(vi) आदिवासी और किसान—इन समूहों ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष किया क्योंकि, ये अपनी वन संपदा सरकार के हाथों खो चुके थे। लेकिन जैसे ही उन्हें अपनी जमीन वापस मिली, वे वापस अपने परंपरागत कार्यों पर लौट गए। यहाँ तक कि स्वतंत्रता के बाद आज भी वे वन में ही रहना पसन्द करते हैं।

प्रश्न 4. युद्धों से जंगल क्यों प्रभावित होते हैं?

उत्तर—युद्धों से वन इसलिए प्रभावित होते हैं क्योंकि विरोधी सैन्य बल सबसे पहले भोजन संसाधन और छुपने की जगहों को नष्ट करना चाहता है। इन दोनों की आपूर्ति में वन बहुत सहायक होता है। साथ ही जमीनी सैन्य बल एवं वायु सेना की दृश्यता स्पष्ट करने के लिए भी जंगलों को जला दिया जाता है जो एक अवरोध के रूप में काम करते हैं।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भारत में रेलवे और टेलीग्राफ व्यवस्था के जन्मदाता कौन थे?
(क) लॉर्ड विलियम बैंटिक (ख) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(ग) लॉर्ड डलहौजी (घ) लॉर्ड कर्जन।

2. सन् 1910 के भूमकाल विद्रोह का नेता कौन था?
(क) रानी सुबरन कुंवर (ख) रानी लक्ष्मीबाई
(ग) बेगम हजरत महल (घ) बेगम जीनत महल।

3. लॉर्ड हलहौजी ने भारत में अपना प्रसिद्ध रेलवे मिनट कब प्रस्तुत किया?
(क) 1851 (ख) 1852 (ग) 1853 (घ) 1854।

4. श्रीलंका में 'स्थानान्तरित कृषि' (Shifting Cultivation) को क्या नाम दिया गया?
(क) चेना (ख) मिल्या (ग) पोडू (घ) कुमरी।

5. भारत में वनों का प्रथम इंस्पेक्टर जनरल कौन था?
(क) डाइटरिच ब्रैन्डिस (ख) लॉर्ड क्लाइव (ग) लॉर्ड कर्जन (घ) लॉर्ड हेस्टिंग्स।

6. सन् 1906 में भारत के किस राज्य में 'इम्पीरियल वन अनुसन्धान संस्थान' स्थापित किया गया?
(क) अल्मोड़ा (ख) हरिद्वार (ग) कलकत्ता (घ) देहरादून।

7. डच बन्दरगाह के किस स्थान पर कालांग ने आक्रमण किया?
(क) बस्तर (ख) जोआना (ग) छत्तीसगढ़ (घ) देहरादून।

8. सामिनिस्ट (समाजवादी) आन्दोलन कहाँ हुआ था?
(क) जावा (ख) जापान (ग) श्रीलंका (घ) भारत।

9. अल्लूरी सीताराम राजू किस राज्य से सम्बन्धित थे?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) आन्ध्र प्रदेश (ग) राजस्थान (घ) कर्नाटक।

10. निम्न में से कौनसा स्थान वर्तमान में इण्डोनेशिया का प्रसिद्ध चावल उत्पादक क्षेत्र है?
(क) बाली (ख) सुमात्रा (ग) जावा (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. प्रथम भारतीय वन अधिनियम कब पारित हुआ था?
(क) 1865 (ख) 1866 (ग) 1867 (घ) 1868

12. भारतीय वन सेवा की स्थापना कब हुई थी?
(क) 1860 (ख) 1864 (ग) 1862 (घ) 1868

13. वर्तमान में बस्तर किस राज्य में है?
(क) बिहार (ख) झारखण्ड (ग) छत्तीसगढ़ (घ) मध्य प्रदेश।

14. इंग्लैण्ड में ओक के वृक्ष कब समाप्त होने शुरू हुए?
(क) 17वीं शताब्दी के आरम्भ में (ख) 18वीं शताब्दी के आरम्भ में
(ग) 19वीं शताब्दी के आरम्भ में (घ) 20वीं शताब्दी के आरम्भ में।

15. कलकत्ता और रानीगंज के बीच दूसरी रेल लाइन की स्थापना कब हुई थी?
(क) 1854 (ख) 1855 (ग) 1856 (घ) 1857

16. इण्डोनेशिया में किस यूरोपीय शक्ति ने अपना उपनिवेश स्थापित किया था?
(क) ब्रिटिश (ख) पुर्तगाली (ग) फ्रांसीसी (घ) डच।

17. बम्बई से थाणे के बीच रेलवे लाइन कब बिछाई गई?
(क) 1851 (ख) 1852 (ग) 1853 (घ) 1854

18. डाइटरिच-ब्रैन्डिस कौन थे जिसे भारत में वन्य प्रबन्ध व संरक्षण के संबंध में सलाह हेतु बुलाया गया था?
(क) इटली का विशेषज्ञ (ख) ऑस्ट्रिया का विशेषज्ञ
(ग) जर्मन विशेषज्ञ (घ) ब्रिटिश विशेषज्ञ।

19. सन् 1867 का भारतीय वन अधिनियम भारत में वनों को कितनी श्रेणियों में विभक्त करता है?
(क) दो श्रेणियों में (ख) तीन श्रेणियों में (ग) चार श्रेणियों में (घ) पाँच श्रेणियों में।

20. मध्य अमेरिका में 'स्थानान्तरित कृषि' को क्या नाम दिया गया?
(क) मिल्पा (ख) चितमेने (ग) चेना (घ) इनमें से कोई नहीं।

[उत्तर—1. (ग), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ग), **5.** (क), **6.** (घ), **7.** (ख), **8.** (क), **9.** (ख), **10.** (ग), **11.** (क), **12.** (ख), **13.** (ग), **14.** (ग), **15.** (क), **16.** (घ), **17.** (ग), **18.** (ख), **19.** (ख), **20.** (क)।**]**

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. वन शब्द को परिभाषित कीजिए।
उत्तर—पौधों, वृक्षों व घास का प्राकृतिक रूप से घने रूप में विकास वन कहलाता है।
प्रश्न 2. 'वननाशन' क्या है?
उत्तर—किसी भी वन से व्यापक पैमाने पर वृक्षों की समाप्ति या कटाव वननाशन कहलाता है।
प्रश्न 3. सन् 1600 में भारत की भूमि का कितना क्षेत्र उपजाऊ कृषि के आधीन था?
उत्तर—सन् 1600 में भारत की कुल भूमि का 1/6 भाग उपजाऊ कृषि भूमि के रूप में था।
प्रश्न 4. 'भारतीय वन सेवा' की स्थापना कब की गई?
उत्तर—'भारतीय वन सेवा' की स्थापना सन् 1864 में की गई।
प्रश्न 5. सन् 1867 के भारतीय वन अधिनियम के तहत वनों की कितनी श्रेणियाँ थीं?
उत्तर—तीन श्रेणियाँ—(i) संरक्षित, (ii) सुरक्षित एवं (iii) ग्राम्य वन।
प्रश्न 6. औपनिवेशिक व्यापार के लिए परिवहन का कौन-सा साधन सर्वाधिक महत्वपूर्ण था?
उत्तर—औपनिवेशिक व्यापार के लिए रेल व्यवस्था सर्वाधिक अनिवार्य थी।
प्रश्न 7. स्थानान्तरित कृषि कहाँ की जाती है?
उत्तर—स्थानान्तरित कृषि एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिणी एशिया के विभिन्न भागों में की जाती है।
प्रश्न 8. भारत में वनों का प्रथम इंस्पेक्टर जनरल कौन था?
उत्तर—भारत में वनों का प्रथम इंस्पेक्टर जनरल एक जर्मन डाइटरिच-ब्रैन्डिस था।
प्रश्न 9. बस्तर की जनजातियाँ शराब के सेवन को कैसा मानती थीं?
उत्तर—बस्तर की जनजातियाँ शराब के सेवन को ईश्वर का प्रसाद मानती थीं।
प्रश्न 10. प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध वनों के लिए किस प्रकार घातक सिद्ध हुए?
उत्तर—इन युद्धों ने वननाशन की प्रक्रिया को बढ़ा दिया।
प्रश्न 11. दक्षिण पूर्व एशिया में स्थानान्तरित कृषि का स्थानीय नाम क्या था?
उत्तर—दक्षिण पूर्व एशिया में स्थानान्तरित कृषि को लैडिंग कहा जाता था।
प्रश्न 12. वैज्ञानिक वानिकी में क्या किया जाता है?
उत्तर—वैज्ञानिक वानिकी में पुराने वृक्ष काटकर उनके स्थान पर नये वृक्ष लगाये जाते हैं।
प्रश्न 13. किस वृक्ष से लैटेक्स एकत्रित किया जाता है?
उत्तर—लैटेक्स रबर के वृक्ष से एकत्रित किया जाता है।
प्रश्न 14. जावा किस उत्पाद के लिए प्रसिद्ध है?
उत्तर—जावा चावल उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. वानिकी क्या है?

उत्तर—वानिकी—वन एवं वन सम्पदाओं को सामूहिक रूप से वानिकी कहते हैं। आज के युग में वानिकी का विशेष महत्व है। वन प्रबन्धन वानिकी के अन्तर्गत आता है। अंग्रेजों ने भारत में वैज्ञानिक वानिकी का प्रयोग किया। उन्होंने वन के पेड़ों को काटकर एक ही प्रकार के पंक्तिबद्ध पौधे लगाए।

प्रश्न 2. वन किस प्रकार हमारी राष्ट्रीय सम्पदा हैं?

उत्तर—पर्यावरण की गुणवत्ता को बढ़ाने में वन प्रमुख भूमिका निभाते हैं। वन आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि के साथ-साथ औषधियों से सम्बन्धित अनेक प्राकृतिक संसाधन भी प्रदान करते हैं अत: हम कह सकते हैं कि वन हमारी राष्ट्रीय सम्पदा हैं।

प्रश्न 3. औपनिवेशिक शासन के आधीन भारत में वन विनाश के किन्हीं तीन कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सन् 1820 ई० के दशक में ब्रिटिश सरकार को मजबूत लकड़ी की बहुत आवश्यकता पड़ी। इस कार्य के लिए वनों को बड़े पैमाने पर काटा जाने लगा। वनों को काटने के निम्नलिखित कारण थे—

(1) अंग्रेजी सरकार ने लकड़ी की आपूर्ति बनाए रखने के लिए निजी कम्पनियों को वन काटने के ठेके दिए। इन कम्पनियों ने बड़ी संख्या में वृक्षों को काट दिया।

(2) इंग्लैण्ड की शाही नौसेना के लिए ओक के वृक्षों से जलयान बनाए जाते थे। परन्तु इंग्लैण्ड में ओक के वन समाप्त होते जा रहे थे अत: भारत में वन संसाधनों का पता लगाया गया और यहाँ के वृक्ष काटकर जलयान के लिए लकड़ी इंग्लैण्ड भेजी जाने लगी।

(3) रेलों के निर्माण और पटरियों के बिछाने में प्रयोग आने वाली लकड़ी के स्लीपरों ने वन क्षेत्र को घटाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(4) रेल के इंजनों में भी लकड़ी का कोयला जलता था जिससे वन धीरे-धीरे समाप्त होते चले गये।

प्रश्न 4. वैज्ञानिक वानिकी के दोषों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—वैज्ञानिक वानिकी के दोष—(1) वैज्ञानिक वानिकी के नाम पर विविध प्रजाति वाले प्राकृतिक वनों को काट डाला गया।

(2) वैज्ञानिक वानिकी के कारण वन क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लाचार हो गये।

(3) वन अधिनियम लागू होने से घर के लिए लकड़ी काटना, पशुओं को चराना, कन्द-मूल-फल इकट्ठा करना आदि दैनिक उपयोग की वस्तुएँ गैर-कानूनी घोषित की गईं।

प्रश्न 5. डाइटरिच ब्रैण्डिस कौन था? भारत में वनों के प्रबन्ध में उसकी उपलब्धियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—वननाशन की प्रक्रिया के दौरान ब्रिटिश सरकार ने **डाइटरिच ब्रैण्डिस** नामक एक जर्मन विशेषज्ञ को देश का पहला वन महानिदेशक (The First Inspector-General of Forests) नियुक्त किया। ब्रैण्डिस को आभास हुआ कि व्यवस्थित ढंग से वनों के प्रबन्धन एवं संरक्षण के लिए यहाँ के लोगों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

ब्रैण्डिस का मानना था कि वनों की कटाई एवं पशुओं को चराने जैसी गतिविधियों पर पाबन्दी लगाकर ही व्यावसायिक उद्देश्य से लकड़ी की आपूर्ति सम्भव हो सकेगी।

1864 ई० में डाइटरिच ब्रैण्डिस ने भारतीय वन सेवा (Indian Forest Service) की स्थापना की थी। सन् 1906 में प्रथम इम्पीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट (First Imperial Forest Research Institute) की स्थापना देहरादून में हुई। इस संस्थान ने वैज्ञानिक वानिकी (Scientific Forestry) पद्धति की शिक्षा देनी प्रारम्भ की। 1855 ई० में वन अधिनियम लागू किया गया। वैज्ञानिक वानिकी के नाम पर विविध प्रजाति वाले प्राकृतिक वनों को काट दिया गया तथा इनके स्थानों पर एक ही प्रकार के वृक्षों को एक सीधी पंक्ति में लगाया गया, जिसे बागान (Plantation) का नाम दिया गया। उदाहरण के लिए, पोपलर के वृक्ष व्यापक पैमाने पर लगाये गये, जो लकड़ी का एक अच्छा साधन थे। वन विभाग के अधिकारियों ने जंगलों का निरीक्षण किया तथा वन प्रबन्धन के लिए कई योजनाएँ बनाईं। इनके द्वारा यह भी निश्चित किया गया कि प्रतिवर्ष बागान का कितना प्रतिशत क्षेत्र काटा जाएगा।

प्रश्न 6. औपनिवेशिक भारत में जनजातीय आन्दोलनों के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—औपनिवेशिक भारत में वन अधिनियम के लागू होने के बाद घर के लिए लकड़ी काटना, पशुओं को चराना, कंद-मूल फल इकट्ठा करना आदि एक गैर-कानूनी गतिविधि घोषित किया गया। अब वन्य जनजातियों के पास जंगलों से लकड़ी चुराने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग शेष नहीं रहा और पकड़े जाने की स्थिति में वे वन-रक्षकों की दया पर आश्रित होते और उनके उत्पीड़न का शिकार बनते थे। जलाने के लिए लकड़ी एकत्र करने वाली औरतें विशेष तौर से परेशान रहने लगीं। मुफ्त खाने-पीने की माँग करके लोगों को तंग करना पुलिस और वन रक्षकों के लिए सामान्य बात थी। इस प्रकार औपनिवेशिक नीतियों ने भारतीय वन्य समाज एवं जीवन की नैसर्गिकता समाप्त कर दी तथा वहाँ के लोगों का जीवन कष्टप्रद बना दिया। इन सभी कारणों से जनजातीय लोग आन्दोलन के लिए मजबूर हुए।

प्रश्न 7. भारतीय वन अधिनियम कब पारित हुआ था? इस अधिनियम ने आम जनता के लिए किस प्रकार परेशानियाँ उत्पन्न कीं?

उत्तर—1865 ई. में वन अधिनियम पारित हुआ। इसके बनने के बाद इसमें 1878 ई. में पहला तथा 1927 ई. में दूसरा संसोधन हुआ। 1878 में अधिनियम में वनों को आरक्षित, सुरक्षित एवं ग्रामीण तीन श्रेणियों में बाँटा गया। सबसे अच्छे वनों को आरक्षित वन कहा गया।

नोट—जनता किस प्रकार परेशान थी के लिए देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 6 का उत्तर।

प्रश्न 8. सामिनिस्ट आन्दोलन के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—सन् 1890 में रान्दुब्लातुंग गाँव के निवासी सुरोन्तिको सामिन ने सागौन के जंगलों पर राजकीय अधिकार पर विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। उसका तर्क था कि हवा, पानी, भूमि और लकड़ी राज्य द्वारा निर्मित नहीं हैं, इसलिए उन पर राज्य का अधिकार नहीं हो सकता। इस तर्क के कारण शीघ्र ही एक व्यापक आन्दोलन आरम्भ हो गया। इस आन्दोलन को संगठित करने वालों में सामिन का दामाद भी सक्रिय था। सन् 1907 तक 300 परिवार उसके अनुयायी बन चुके थे। डच जब जमीन के अधिग्रहण हेतु सर्वेक्षण करने आए तो कुछ सामिनवादियों ने अपनी जमीन पर लेट कर इसका घोर विरोध किया, जबकि कुछ अन्य लोगों ने लगान या जुर्माना आदि भरने या बेगार करने से भी मना कर दिया।

प्रश्न 9. "इंग्लैण्ड का जहाज उद्योग भारत में वन विनाश के लिए उत्तरदायी था।" समझाइए।

उत्तर—ब्रिटेन का औपनिवेशिक साम्राज्य सर्वाधिक विस्तृत था तथा उसके पास ओक वनों की कमी के कारण जहाज बनाने के लिए लकड़ी की बहुत कमी अनुभव की गई। अतः मजबूत लकड़ी प्राप्त करने के लिए टीक (सागौन) के पेड़ लगाये गये तथा अन्य सभी प्रकार के वृक्षों को साफ कर दिया गया। भारत से बड़े पैमाने पर लकड़ी इंग्लैण्ड भेजी जाने लगी। अतः भारतीय उपमहाद्वीप के वनों से आच्छादित भू-भाग में तेजी से कमी आ गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. किसी भी देश में वनों की क्या उपयोगिता है? समझाइए।

अथवा

वन्य क्षेत्र को बढ़ाना क्यों आवश्यक है?

उत्तर—किसी भी देश की प्रगति में वन संसाधनों का विशेष महत्त्व होता है। वनों से अनेक प्रकार के लाभ होते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(1) वनों का मृदा अपरदन रोकने में महत्त्वपूर्ण योगदान है। वृक्ष बहने वाले पानी के मार्ग में अवरोधक बनकर खड़े हो जाते हैं और पानी के वेग को कम कर देते हैं, जिससे पानी के वेग में इतनी शक्ति नहीं रहती कि वह मृदाकणों को बहाकर ले जा सके।

(2) वर्षा लाने में वनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वृक्ष वातावरण को शीतल बना देते हैं, जिससे वाष्प-कणों से जब तृप्त वायु उनके ऊपर से गुजरती है, तो वह ठण्डी होकर वर्षा का रूप धारण कर लेती है। यह वर्षा कृषि के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होती है।

(3) वनों से मूल्यवान पदार्थ, जैसे लकड़ी, गोंद, रबड़ आदि प्राप्त होते हैं। वनों से प्राप्त कच्ची लकड़ी से कागज की लुगदी व कच्चे रबड़ से मोटरगाड़ियों के लिए टायर आदि निर्मित किए जाते हैं।

(4) वनों से प्राप्त जड़ी-बूटियों से अनेक प्रकार की दवाइयाँ बनती हैं।

(5) वन में उगने वाले घास-फूस पर अनेक पशुओं का जीवन निर्भर करता है।

(6) वन नदियों की बाढ़ रोकने तथा उनकी गति धीमी करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि वन 'राष्ट्र की निधि' हैं। वैज्ञानिक माँग के अनुसार भारत में वनों के अधीन क्षेत्र काफी कम है।

वनों के अधीन क्षेत्र बढ़ाने की आवश्यकता—भारत में वनों के अधीन क्षेत्र बहुत कम है जितना कि वैज्ञानिक माँग के अनुसार होना चाहिए। हमें हर हाल में इस क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए जिसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

1. मृदा का संरक्षण—वनों में पाए जाने वाले अनेक वृक्ष अपनी जड़ों के कारण मृदा को जकड़े रहते हैं और पानी के साथ बहने नहीं देते। इस प्रकार वे मृदा के संरक्षण में सहायक हैं।

2. नदियों के प्रवाह को नियमित करना—वन वर्षा में और शुष्क महीनों में नदियों के पानी के प्रवाह को नियमित करते हैं। वर्षा के दिनों में वे पानी को सोख लेते हैं और शुष्क महीनों में वे पानी को धीरे-धीरे छोड़ देते हैं। इस प्रकार वे बाढ़ और अकाल दोनों की सम्भावनाओं पर अंकुश लगाए रखते हैं।

3. वर्षा लाने में सहायक—वनों का वर्षा लाने में भी बड़ा योगदान होता है। वे जल-कणों को ठण्डा करके उन्हें वर्षा की बूँदों में बदल देते हैं। इस प्रकार वे हमें अकाल से बचाते हैं।

4. वन-जीवन को प्राकृतिक निवास-स्थान प्रदान करना—वन अनेक प्रकार से वन्य जीव-जन्तुओं को प्राकृतिक निवास-स्थान उपलब्ध कराते हैं और इस प्रकार उन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखते हैं।

5. वातावरण के तापमान को बढ़ने से रोकना—वातावरण के तापमान को आवश्यकता से अधिक बढ़ने से रोकने में वन बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। अन्यथा तापमान के बढ़ने से पहाड़ों की सभी बर्फ पिघल जाएगी और परिणामस्वरूप समुद्रों का पानी इतना बढ़ जाएगा कि समुद्र-तट के साथ लगने वाले निचले इलाके पानी में डूब जाएँगे।

6. पारिस्थितिक-तन्त्र को बनाए रखने के लिए—वायु प्रदूषण मानव-जीवन के लिए बड़ा हानिकारक है। इस हानि से बचने में वन हमारी बड़ी सहायता करते हैं। वे पारिस्थितिक-सन्तुलन को बनाए रखते हैं।

उपर्युक्त सभी कारणों से वनों के अधीन क्षेत्र को बढाने की आवश्यकता है।

प्रश्न 2. वनशमन या वन-विनाश से आपका क्या अभिप्राय है? भारत में औपनिवेशिक शासन के अधीन वन-विनाश के मुख्य कारण क्या थे?

उत्तर—वन-विनाश—सामान्यत: वनों के लुप्त होने को वन-विनाश कहते हैं। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ-साथ वन्य-समाज और वनों की स्थिति में भी परिवर्तन आया।

वन-विनाश के मुख्य कारण—वन-विनाश के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(i) वनों के विनाश में रेलवे की भूमिका—औपनिवेशिक शासकों को रेलवे के विस्तार के लिए स्लीपरों की आवश्यकता थी जो कठोर लकड़ी के बनाए जाते थे। एक मील लाइन बिछाने के लिए 1,760 से लेकर 2,000 स्लीपरों की आवश्यकता पड़ती थी। सन् 1946 तक लगभग 7,65,000 किलोमीटर रेलवे लाइनें भारत के विभिन्न भागों में बिछाई गईं जिससे लाखों की संख्या में वृक्ष काटकर रेल की भेंट चढ़ा दिए गए। रेल-इंजनों में भी लकड़ी का कोयला जलने से वनों को भारी क्षति पहुँची।

(ii) जहाज-निर्माण के कारण वनों का विनाश—ब्रिटेन का औपनिवेशिक साम्राज्य सर्वाधिक विस्तृत था तथा उसके पास ओक वनों की कमी के कारण जहाज बनाने के लिए लकड़ी की बहुत कमी अनुभव की गई। अत: मजबूत लकड़ी प्राप्त करने के लिए टीक (सागौन) और साल के पेड़ लगाए जाने लगे। अन्य सभी प्रकार के वृक्षों को साफ कर दिया गया। भारत से बड़े पैमाने पर लकड़ी इंग्लैण्ड भेजी जाने लगी। अत: भारतीय उपमहाद्वीप के वनों से आच्छादित भू-भाग में तेजी से कमी आ गई।

(iii) कृषि के विस्तार से वनों का विनाश—सन् 1600 में भारत का लगभग 1/6 भू-भाग कृषि के अधीन था। परन्तु जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ खाद्यान्नों की माँग बढ़ने लगी। अत: किसान कृषि-क्षेत्र का विस्तार करने लगे। इसके लिए वनों को साफ करके नए खेत बनाए जाने लगे। इसके अतिरिक्त खानाबदोशों और चरवाहों की कार्यविधियों पर प्रतिबन्धों ने भी इन लोगों को कृषि अपनाने के लिए विवश किया। अत: 1880-1920 ई० के बीच कृषि-क्षेत्र में 67 लाख हेक्टेयर का विस्तार हुआ। अत: वन तीव्रता से समाप्त होने लगे।

(iv) व्यावसायिक खेती के कारण वनों का विनाश—व्यावसायिक खेती भी वन-क्षेत्रों की कमी के लिए उत्तरदायी थी। अत: किसानों ने कृषि के व्यावसायीकरण के बाद बाजार में बेचने के लिए फसलों का उत्पादन करना आरम्भ कर दिया जिससे उन्हें अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त हो सके। देश के काफी बड़े भूभाग से वनों को साफ किया गया और वहाँ चाय व कॉफी की खेती की जाने लगी।

(v) चाय-कॉफी के बागान के लिए वनों का विनाश—यूरोप में चाय-कॉफी की माँग अधिक थी। औपनिवेशिक सरकार ने वनों पर नियन्त्रण करके सस्ती दरों पर यूरोपीय खेतिहरों को बड़े क्षेत्र दे दिए। अत: इन क्षेत्रों से वनों को साफ किया गया और चाय व कॉफी के बागान स्थापित कर दिए।

(vi) आदिवासी और किसान भी वन विनाश के लिए उत्तरदायी—आदिवासी व स्थानीय किसान भी वन-क्षेत्रों में कमी के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने व्यावसायी कृषि के लिए वनों को साफ किया। वे ईंधन के लिए पेड़ों को काटते थे जिससे वनों का अत्यधिक विनाश हुआ।

प्रश्न 3. भारत में ब्रिटिश काल में व्यावसायिक कृषि के कारण वनों का ह्रास किस प्रकार हुआ?

उत्तर—ब्रिटिश काल में जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ भोजन की मांग भी बढ़ने लगी, जिसके फलस्वरूप कृषक उत्पादन के लिए वनों को साफ करके खेती करने लगे। औपनिवेशिक काल के दौरान कृषि के व्यवसायीकरण की प्रक्रिया में किसानों को व्यावसायिक फसलें; जैसे—पटसन, गन्ना, गेहूँ व कपास को बड़े स्तर पर विकसित करने और कृषि क्षेत्र का विकास करने के लिए विवश किया गया। जिसके परिणामस्वरूप वन्य क्षेत्र कम हो गये और कृषि क्षेत्र वर्ष 1880 से 1920

के मध्य 6.7 मिलियन हेक्टेयर तक बढ़ गया, अतः कृषि विस्तार हेतु सर्वप्रथम वनों की सफाई की गई एवं भूमि की जुताई की गई।

प्रश्न 4. वनों के उपयोग या लाभों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—वनों की उपयोगिता—वन तापमान में कमी लाकर अधिक वर्षा कराते हैं। ये भूमि के कटाव को भी रोकते हैं। इसके अतिरिक्त वनों का आर्थिक महत्त्व बहुत अधिक है। इनसे इमारती लकड़ी, रेल-स्लीपर एवं फर्नीचर बनाने की लकड़ी मिलती है। बाँस, रस्सी एवं तेंदू पत्तों का प्रयोग विभिन्न प्रयोजनों हेतु होता है। वन पशुओं के लिए चरागाह का भी काम करते हैं। इनसे औषधियुक्त पौधे, जड़ी-बूटियाँ, फल-फूल, शहद, गोंद, लाख जैसी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं । इनकी सहायता से अनेक लघु उद्योग चलाए जाते हैं। ये पशु-पक्षियों को आश्रय भी प्रदान करते हैं। इन सबके साथ ही वनों का धार्मिक महत्त्व भी है। भारत की लगभग 21.2 प्रतिशत भूमि वनों से आच्छादित है। अमेजॉन या पश्चिमी घाट के जंगलों के एक ही टुकड़े में पौधों की 500 अलग-अलग प्रजातियाँ मिल जाती हैं। यह विविधता तेजी से लुप्त होती जा रही है। औद्योगीकरण के दौर में सन् 1700 से 1995 के बीच 139 लाख वर्ग किलोमीटर जंगल यानी दुनिया के कुल क्षेत्रफल का 9.3 प्रतिशत भाग औद्योगिक इस्तेमाल, खेती-बाड़ी, चरागाहों व ईंधन की लकड़ी के लिए साफ कर दिया गया। मानवजीवन अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों पर आश्रित है। आदिवासियों और जनजातियों के लिए तो वन ही उनका सर्वस्व है जहाँ वे जन्म लेते हैं, बड़े होते हैं, सारा क्रियाकलाप करते हैं और अन्ततः वन में ही अन्तिम विश्राम लेते हैं। जनजातीय सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक व्यवस्था में वनों का विशिष्ट स्थान है। भारत में विभिन्न प्रकार के वन हैं तथा सम्पूर्ण भारत में फैले हुए हैं। जनसंख्या में वृद्धि, कृषि के विस्तार और औपनिवेशिक नीतियों के कारण 18वीं शताब्दी से वनों का क्षेत्र संकुचित होने लगा। बड़े स्तर पर जंगलों की कटाई की जाने लगी। इसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे।

प्रश्न 5. औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत में कृषि के तीव्र विकास के लिये उत्तरदायी कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत में कृषि के तीव्र विकास के लिए उत्तरदायी कारण निम्नलिखित थे—

(1) औपनिवेशिक शासन जंगलों को काटकर कृषि का विस्तार करना चाहते थे।

(2) बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि उत्पादों की माँग में तेजी से वृद्धि होने लगी जिससे कृषि का तीव्र गति से विकास हुआ।

(3) कृषि में तेजी से बदलाब आया, खेतों में यन्त्रों का प्रयोग होने लगा। नई किस्म के बीज एवं रासायनिक खादों का प्रयोग होने से उत्पादन में वृद्धि होने लगी जिससे किसान लाभान्वित होने लगे।

(4) अंग्रेजों ने व्यावसायिक फसलों को, जैसे—पटसन, गन्ना, गेहूँ, कपास आदि को प्रोत्साहित किया जिससे कृषि क्षेत्र विकसित होने लगा। व्यावसायिक फसलें अच्छे दामों पर बिक जाती थीं।

(5) औपनिवेशिक सरकारों ने वनों को अनुत्पादक माना। उनका मानना था कि जंगलों, को खेती योग्य बनाकर राजस्व में वृद्धि की जा सकती है। इसी कारण सन् 1880 से 1920 के बीच 67 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि की वृद्धि हुई।

(6) भारत में खेती के विस्तार को विकास का सूचक माना जाता है। अतः अवधारणा के अनुसार जंगलों को काटकर खेती का विकास किया गया।

प्रश्न 6. औपनिवेशिक काल में वन्य प्रबन्ध में आये परिवर्तनों ने किस प्रकार भारत में निम्नलिखित लोगों के समूहों के जीवन को प्रभावित किया—

(क) वृक्षारोपण के मालिक, **(ख) घुमन्तु व चारागाह सम्बन्धी समुदाय,**

(ग) स्थानान्तरित कृषि में संलग्न समूह।

उत्तर—(क) वृक्षारोपण के मालिक—भारत में बड़े-बड़े बागानों के मालिक मुख्यतः अंग्रेज थे। वे चाय, कहवा, कॉफी, नील इत्यादि की खेती करके अधिकतम लाभ कमाते थे। वे भूमिहीन श्रमिकों व स्थानीय लोगों का अत्यधिक शोषण करते थे।

(ख) घुमन्तु व चरागाह सम्बन्धी समुदाय—ब्रिटिश सरकार के नवीन अधिनियम से चरवाहों के समुदाय प्रभावित हुए थे। नए कानूनों के लागू होने से वे हिरण, खरगोश व अन्य छोटे-छोटे पशुओं का शिकार नहीं कर सकते थे। वनों के पास रहने वाले घुमन्तु व चरवाहा समुदायों के लिए जीविका का संकट उत्पन्न हो गया। यदि कोई खानाबदोश (घुमन्तु) शिकार करते हुए पकड़े जाते थे तो उन्हें सरकार द्वारा कारखानों, खानों एवं बागानों में श्रम करने के लिए बाध्य किया जाता था। उन्हें 'अपराधी आदिवासी' कहा जाने लगा।

(ग) स्थानान्तरित कृषि में संलग्न समूह—झूम घुमंतू खेती करने वालों पर यूरोपीय उपनिवेशवाद का विशेष प्रभाव पड़ा। इस कृषि व्यवस्था के अंतर्गत वनों के कुछ भागों को बारी-बारी से काटा जाता और जलाया जाता था। मानसून की पहली बारिश के बाद इस राख में बीज बोने का कार्य किया जाता था और अक्टूबर-नवम्बर में तैयार फसल को काट लिया जाता था। इन खेतों पर दो-तीन साल के लिए कृषि की जाती थी और कृषि करने के बाद इन भू-भागों को 12 से 18 वर्ष तक के लिए परती छोड़ दिया जाता था। जिससे वहाँ फिर से जंगल उग सकें। अंग्रेजी सरकार के लिए झूम खेती करने वालों के करों का हिसाब-किताब रखना मुश्किल होता जा रहा था। फलस्वरूप सरकार ने झूम खेती पर रोक लगाने का फैसला किया, जिससे झूम खेती करने वालों को अपने पैतृक घरों को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। अब खेती न होने के कारण ऐसे लोगों को अपनी आजीविका से हाथ धोना पड़ा। परिणामस्वरूप कुछ लोगों ने अपना पेशा बदल लिया तथा कुछ लोगों ने उनके विरुद्ध विद्रोह किया।

प्रश्न 7. वैज्ञानिक वानिकी से आपका क्या अभिप्राय है? इसकी प्रमुख विशेषतायें क्या थीं?

उत्तर—वैज्ञानिक वानिकी—वैज्ञानिक वानिकी में विभिन्न प्रकार के पेड़ों वाले प्राकृतिक वनों को काट दिया जाता है। उनके स्थान पर सीधी कतारों में एक ही प्रकार के पेड़ लगा दिए जाते हैं। इसे ही वैज्ञानिक वानिकी कहा जाता है। वन अधिकारी वनों का सर्वेक्षण करते हैं, विभिन्न प्रकार के पेड़ों के अन्तर्गत क्षेत्र का अनुमान लगाकर वन-प्रबन्धन के लिए कार्य योजनाएँ बनाते हैं। इन योजनाओं द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि प्रतिवर्ष कितने क्षेत्र काटने हैं। तत्पश्चात् काटे गए क्षेत्र में फिर से पेड़ लगाए जाते हैं, जिससे वे कुछ वर्षों में काटने के लिए तैयार हो जाएँ। इन सभी गतिविधियों का एकमात्र उद्देश्य होता है कि आवश्यकतानुसार टिम्बर (लकड़ी आदि) की आपूर्ति निरन्तर जारी रहे।

वन अधिकारियों ने जंगलों का निरीक्षण किया तथा वन प्रबन्धन के लिए कई योजनाएँ बनाई। फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट की देहरादून में स्थापना की। इस संस्थान ने वैज्ञानिक वानिकी पद्धति के शिक्षा देनी प्रारम्भ की। 1865 में वन अधिनियम लागू किया गया।

प्रश्न 8. सन् 1910 के बस्तर विद्रोह के विषय में आप क्या जानते हैं? इनके प्रमुख कारण तथा महत्व बताइए।

उत्तर—सन् 1905 में औपनिवेशिक सरकार ने दो तिहाई वनों को आरक्षित करने और घुमन्तु कृषि, शिकार एवं अन्य उत्पादों के संग्रह पर रोक लगाने का प्रस्ताव रखा।

गाँव के कुछ लोगों को आरक्षित वनों में रहने की अनुमति इस शर्त के आधार पर दी गई कि वे वन विभाग के लिए कटाई, ढुलाई एवं वनों की आग से रक्षा का काम निःशुल्क करेंगे। कालान्तर में इन्हें **वन ग्राम** (Forest Villages) नाम से जाना जाने लगा। औपनिवेशिक अधिकारियों के कुछ निर्णयों से लोगों का बड़े स्तर पर विस्थापन हुआ और उन्हें कष्ट भी सहने पड़े।

इसके बाद दो भयानक अकाल पड़े—पहला वर्ष 1899-1900 एवं दूसरा वर्ष 1907-08 में पड़ा था। काँगेर वन के धुरवा समुदाय के लोग विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएँ करने में अग्रणी थे, फिर भी यहाँ कोई इनका नेतृत्वकर्ता नहीं था, किन्तु **गुंडाधूर** ने नेथानार गाँव से सम्पूर्ण आन्दोलन का नेतृत्व किया।

सन् 1910 में इन लोगों ने आम की टहनियाँ, मिट्टी के ढेले, मिर्च और तीर लेकर गाँव-गाँव चक्कर काटकर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का सन्देश प्रसारित किया।

बस्तर के लोगों ने स्वयं को सुसंगठित कर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया। इस विद्रोह में बाजार लूटे गए, अफसरों व व्यापारियों के घर, स्कूल और पुलिस थानों को लूटा व जलाया गया तथा अनाज का पुनर्वितरण किया गया।

अंग्रेजों को विद्रोह पर नियन्त्रण स्थापित करने में तीन महीने (फरवरी-मई) लग गए, किन्तु फिर भी ये गुण्डाधूर को नहीं पकड़ पाए। इन विद्रोहियों की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि जंगलों को आरक्षित करने का कार्य कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया। वहीं आरक्षित क्षेत्रों को भी सन् 1910 से पहले की योजना से लगभग आधा कर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि स्वतन्त्रता के बाद भी इन लोगों को वनों से बाहर रखने की नीति कायम रही, क्योंकि वनों को औद्योगिक उपयोग के लिए आरक्षित रखना था।

सन् 1970 में विश्व बैंक ने प्रस्ताव रखा कि कागज उद्योग को लुग्दी उपलब्ध कराने के लिए 4,600 हेक्टेयर प्राकृतिक साल वनों की जगह देवदार के वृक्ष लगाए जाएँ, लेकिन स्थानीय पर्यावरणविदों के विरोध के परिणामस्वरूप इस परियोजना पर रोक लगा दी गई।

प्रश्न 9. बस्तर तथा जावा के औपनिवेशिक प्रबन्ध में क्या समानताएँ थीं?

उत्तर—बस्तर भारत के झारखण्ड राज्य का सुदूर दक्षिणी भाग है, जबकि जावा इंडोनेशिया में स्थित है। भारत अंग्रेजों

का तथा इंडोनेशिया डचों का उपनिवेश रहा। इन शासकों के अधीन बस्तर तथा जावा के वन-प्रबन्धन में निम्न समानताएँ थीं—

(i) दोनों स्थानों पर स्थानीय लोगों को नए वन नियमों के अन्तर्गत लकड़ी काटने तथा वन्य उत्पाद एकत्रित करने से रोक दिया गया।

(ii) दोनों प्रदेशों में स्थानान्तरी कृषि पर रोक लगा दी गई।

(iii) बस्तर में अंग्रेज शासकों ने वनों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया और जावा में डचों ने।

(iv) औपनिवेशिक सरकार ने रेलवे, जहाज निर्माण आदि उद्योगों के विस्तार के लिए वनों को कटवाया। उन्होंने शिकार पर पाबन्दी लगा दी। वन समुदायों को वन प्रबंध के लिए मुफ्त में काम करना पड़ता था और वहाँ रहने के लिए किया भी देना पड़ता था।

(v) दोनों ही प्रदेशों में स्थानीय समुदायों की रोजी-रोटी का साधन छिन जाने से लोगों में असंतोष फैल गया और उन्होंने शासन के विरुद्ध विद्रोह आरम्भ कर दिया।

(vi) बस्तर में विद्रोह का आरम्भ कांगेर वनों के धुरवा समुदाय के लोगों द्वारा हुआ। धीरे-धीरे इसमें और भी समुदाय सम्मिलित हो गए। इस विद्रोह का मुख्य नेता नेथानार गाँव का **गुंडाधूर** था। उन्होंने बाजारों को लूटा, व्यापारियों तथा अंग्रेज अधिकारियों के घरों को जला डाला और सब कुछ लूट लिया। लूटे गए अनाज को लोगों में बाँट दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने विद्रोह को दबाने के लिए पुलिस दल भेजा। विद्रोह पर तो तीन महीने में काबू पा लिया गया, परन्तु गुंडाधूर को पकड़ा न जा सका।

(vii) जावा में विद्रोह का नेतृत्व रांदुब्लातुंग गाँव के **सुरोंतिको सामिन** नामक व्यक्ति ने किया। इस कार्य में उसके दामाद ने उसकी सहायता की। सन् 1907 तक लगभग 3000 परिवार इस आंदोलन में सम्मिलित हो गए थे। जब डच अधिकारी वनों का निरीक्षण करने आते थे, तो सामिन विद्रोही अपनी भूमि पर लेटकर अपना विरोध प्रकट करते थे। कुछ सामिनों ने जुर्माने तथा कर देने से मना कर दिया और डचों के लिए काम करना बन्द कर दिया।

प्रश्न 10. भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान वन्य लोगों के विद्रोह के प्रमुख कारण क्या थे?

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 8 का उत्तर।

प्रश्न 11. सन् 1865, 1878 तथा 1927 से वन अधिनियमों ने लोगों, विशेष रूप से जनजातीय लोगों के लिए किस प्रकार कठिनाईयाँ उत्पन्न कीं?

अथवा

वन अधिनियमों ने किस प्रकार वनवासियों के जीवनों को प्रभावित किया?

उत्तर—सन् 1865, 1878 और 1927 में पारित विभिन्न वन्य कानूनों ने आदिवासियों और अन्य किसान परिवारों के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी थीं। उनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं—

(1) वनों के निकट निवास करने वाले किसान और आदिवासियों के लिए अपनी दैनिक आवश्यकताओं; जैसे—जलाने के लिए लकड़ी, पशुओं के लिए घास, शिकार करना, कन्द-मूल व फल आदि सामग्री प्राप्त करना कठिन हो गया।

(2) आदिवासियों व किसानों को अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चोरी करने के लिए विवश होना पड़ा।

(3) उन्हें चोरी करते हुए पकड़े जाने पर कठोर दण्ड भुगतना पड़ता था।

(4) चूल्हा जलाने के लिए लकड़ी इकट्ठा करने के लिए वन जाने वाली स्त्रियों को अपमान का सामना करना पड़ता था। वन अधिकारी उन पर मनमाने ढंग से अत्याचार करते थे।

प्रश्न 12. प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों ने किस प्रकार वनों को प्रभावित किया?

उत्तर—प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध का जंगलों पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारत में चल रही सभी कार्ययोजनाओं को स्थगित करके वन विभाग ने अंग्रेजों की युद्ध सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए असंख्य पेड़ काटे। जावा पर जापानियों के कब्जे से पहले डचों ने 'भस्म-कर-भागो नीति' (Scorched Earth Policy) अपनायी जिसके तहत आरा-मशीनों और सागौन के विशाल लट्ठों के भण्डारों को जला दिया गया जिससे वे जापानियों को प्राप्त न हो सकें। इसके पश्चात् जापानियों ने जावा की वन्य जनजातियों को जंगल काटने के लिए बाध्य करके अपने युद्ध उद्योग के लिए जंगलों का निर्ममता से विनाश किया। बहुत सारे गाँव वालों ने इस अवसर का लाभ उठा कर जंगल में अपनी खेती का विस्तार किया। युद्ध के बाद इंडोनेशियाई वन सेवा विभाग के लिए इन जमीनों को वापस प्राप्त कर पाना एक कठिन कार्य था। हिन्दुस्तान की ही तरह यहाँ

भी खेती योग्य भूमि के प्रति लोगों की चाह और जमीन को नियन्त्रित करने तथा लोगों को उससे बाहर रखने के वन विभाग के नियम के मध्य टकराव उत्पन्न हो गया।

प्रश्न 13. औपनिवेशिक भारत के जनजातीय आन्दोलन सर्वाधिक सैन्य प्रकृति के, सर्वाधिक एकांकी तथा अनवरत रूप से होने वाले क्यों थे? वर्णन कीजिए।

उत्तर—18वीं और 19वी शताब्दी में भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में वन्य समुदाय पर किए जाने वाले नियंत्रण एवं उत्पीड़न के विरुद्ध वन्य जन जातीय समाज ने एकजुट होकर विद्रोह के रूप में अपना आक्रोश व्यक्त किया। भारत के विभिन्न भागों में अनेक आदिवासी विद्रोह हुए। इनमें से प्रमुख हैं—संथाल परगना में सीधू और कानू, छोटा नागपुर में बिरसा मुंडा और आन्ध्र प्रदेश में अल्लूरी सीताराम राजू द्वारा किए गये विद्रोह लोकगीतों और कथाओं में अंग्रेजों के विरुद्ध उभरे आन्दोलनों के नायकों के रूप में इन्हें आज भी याद किया जाता है। जनजातीय आन्दोलन अधिकतर सैन्य प्रकृति के थे क्योंकि जनजातीय लोग अधिक शिक्षित नहीं थे, उनमें नेतृत्व का अभाव था, उनके ऊपर सरकार द्वारा अत्याचार किए जाते थे, इनके प्रतिकार स्वरूप वे हिंसा में अधिक विश्वास रखते थे। वे एकजुट होकर भीड़ के नियमों के अनुसार कार्य करते थे। उनके आन्दोलन लम्बे समय तक लगातार चलने वाले होते थे। बस्तर के लोगों का मानना था कि सभी गाँव वालों को उनकी भूमि धरती माँ से मिली है। धरती के अतिरिक्त ये लोग नदी, जंगल व पहाड़ों को भी मानते हैं तथा अपनी प्राकृतिक सीमा के अन्तर्गत ही कार्य करते हैं। अतः प्राकृतिक नियमों का पालन करने से उनका स्वभाव विद्रोही हिंसक हो जाता था। भूमि का आत्मीय लगाव भी उन्हें इस भावना के लिए प्रेरित करता था।

●●

5 आधुनिक विश्व में चरवाहे

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. स्पष्ट कीजिए कि घुमंतू समुदायों को बार-बार एक जगह से दूसरी जगह क्यों जाना पड़ता है? इस निरंतर आवागमन से पर्यावरण को क्या लाभ हैं?

उत्तर—सूखों से चरावाही समूहों का जीवन प्राय: प्रभावित होता है। जब वर्षा नहीं होती है, चरागाह सूख जाते हैं तो पशुओं के भूखे मरने की स्थिति आ जाती है। यही कारण है कि घुमंतू जनजातियों को, जो चरावाही से अपनी जीविका प्राप्त करते हैं, एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूमते रहने की आवश्यकता पड़ती है। इस घुमंतू जीवन के कारण उन्हें जीवित रहने तथा संकट से बचने का अवसर प्राप्त होता है।

इस निरन्तर आवागमन से पर्यावरण को निम्नलिखित लाभ हैं—

(i) उनकी गतिशीलता के कारण प्राकृतिक वनस्पति को फिर से वृद्धि करने का अवसर प्राप्त होता है। परिणामस्वरूप वनस्पति संरक्षण के कारण पर्यावरण संतुलित रहता है।

(ii) उनके मवेशियों को हरा-भरा नया चारा प्राप्त होता है तथा वे खेतों में घूम-घूम कर गोबर देते रहते हैं, जिससे कृषि भूमि की उर्वरता बनी रहती है।

प्रश्न 2. इस बारे में चर्चा कीजिये कि औपनिवेशिक सरकार ने निम्नलिखित कानून क्यों बनाए? यह भी बताइये कि इन कानूनों से चरवाहों के जीवन पर क्या असर पड़ा?

- **परती भूमि नियमावली,**
- **वन अधिनियम,**
- **अपराधी जनजाति अधिनियम,**
- **चराई कर।**

उत्तर—परती भूमि नियमावली—पहली भूमि नियमावली का चरवाहों के जीवन पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा—

(i) औपनिवेशिक सरकार के लिए भारत में सभी गैर-कृषि भूमि अनुत्पादक थी जिससे न तो राजस्व प्राप्त होता था और न ही कृषि-उत्पाद।

(ii) इसे 'वर्ज्य भूमि' के रूप में देखा जाता था जिसे कृषि-कार्य के अंतर्गत लाने की आवश्यकता थी।

बाद के भूमि सम्बन्धी नियम ने चरावाही जीवन में व्यापक बदलाव लाया—

(क) गैर-कृषि भूमि चरावाही लोगों से छीनकर खास लोगों को दे दी गई।

(ख) इन खास लोगों को कई प्रकार की छूट दी गई तथा इन्हें प्राप्त भूमि को कृषि-कार्य के अन्तर्गत लाने तथा वहाँ बसने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

(ग) इनमें से कुछ लोगों को नये साफ किये गये क्षेत्रों में गाँवों का मुखिया अथवा प्रधान बना दिया गया।

(घ) जो भूमि छीनी गई वह वास्तव में चरागाह भूमि थी जिसका उपयोग नियमित रूप से चरावाही समुदायों द्वारा अपने मवेशियों को चराने के लिये किया जाता था। कृषि-भूमि के विस्तार का यह अर्थ था कि चरागाहों की कमी होती है तो चरावाही समुदायों का जीवन प्रभावित होता है।

वन अधिनियम—विभिन्न वन अधिनियमों द्वारा वनों, जिनसे अनेक वाणिज्यिक रूप से मूल्यवान लकड़ियाँ तथा देवदार अथवा साल प्राप्त होते थे, को अनारक्षित कर दिया गया। किसी भी चरावाही समुदाय को इन वनों में प्रवेश की अनुमति नहीं थी। वन अधिनियमों ने चरावाही समुदायों के जीवन को निम्न प्रकार से प्रभावित किया—

(i) उन्हें वनों में प्रवेश करने से रोका गया जो उन्हें अपने पशुओं के लिये चारा उपलब्ध कराता था।

(ii) जिन क्षेत्रों में उन्हें प्रवेश करने की अनुमति थी, वहाँ उन्हें केवल सीमित गतिविधि करने की छूट दी गई थी।

(iii) उन्हें वनों में प्रवेश करने के लिये परमिट लेना पड़ता था।

(iv) उनके वनों में प्रवेश करने तथा बाहर निकलने का समय निश्चित कर दिया गया था। साथ ही वनों में बिताये जाने वाले दिनों की संख्या भी निश्चित कर दी गई थी।

अपराधी जनजाति अधिनियम—औपनिवेशिक सरकार द्वारा बनाये गये अपराधी जनजाति अधिनियम का चरवाहों के जीवन पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा—

(i) ब्रिटिश अधिकारी घुमंतू लोगों के प्रति शंकित रहते थे।

(ii) वे घुमंतू हस्तकला कर्मियों तथा गाँवों में फुटकर सामान बेचने वाले घुमंतू व्यापारियों को अविश्वास की नजर से देखते थे। वे उन चरावाही समुदायों पर भी विश्वास नहीं करते थे जो प्रत्येक मौसम में अपने मवेशियों के लिये चारे की खोज में अपना निवास स्थान बदलते रहते थे।

अपराधी जनजाति अधिनियम ने चरावाही समुदायों के जीवन में व्यापक परिवर्तन लाए—

(i) उन्हें जन्म तथा स्वभाव से अपराधी जनजाति घोषित कर दिया गया।

(ii) इस अधिनियम के लागू होने पर उनसे उम्मीद की जाती थी कि वे केवल एक अधिसूचित ग्रामीण क्षेत्र में निवास करेंगे।

(iii) इन क्षेत्रों से बिना अनुमति के उन्हें बाहर निकलने की छूट नहीं थी।

(iv) ग्रामीण पुलिस द्वारा उन पर लगातार नजर रखी जाती थी।

चराई कर—(i) प्रति मवेशी कर की दर में तेजी से वृद्धि हुई तथा इन करों की वसूली की व्यवस्था को और सक्षम बनाया गया।

(ii) ठेकेदारों द्वारा सरकार को दी गई राशि के अनुरूप इन लोगों से अधिक-से-अधिक चराई कर वसूलने की कोशिश की गई ताकि इस अवधि में अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। चराई कर ने चरावाही समुदाय के जीवन को निम्न प्रकार प्रभावित किया—

(क) प्रत्येक व्यक्ति को एक 'पास' दिया गया।

(ख) किसी चरागाह में प्रवेश करने के लिये लोगों को यह 'पास' दिखाना पड़ता था तथा अपेक्षित कर की अदायगी करनी पड़ती थी।

(ग) 'पास' में उनके पशुओं की संख्या तथा उनके द्वारा चुकाये गये कर की राशि दर्ज कर दी जाती थी।

प्रश्न 3. मासाई समुदाय के चरागाह उससे क्यों छिन गए? कारण बताएँ।

उत्तर—मासाई समुदाय के चरागाह छिन जाने के निम्नलिखित कारण थे—

(i) यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियाँ अफ्रीका में अपने क्षेत्रीय अधिकार के लिये परस्पर उलझी हुई थीं। उन्होंने इन क्षेत्रों को विभिन्न 'कॉलोनियों' में विभाजित कर दिया।

(ii) मासाईलैंड को एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा द्वारा ब्रिटिश केन्या तथा जर्मन तंजान्यिका में विभाजित कर दिया गया।

(iii) जो अच्छी गुणवत्ता वाले चरागाह थे उन्हें धीरे-धीरे गोरे लोगों की बस्तियों द्वारा हथिया लिया गया तथा मासाई लोगों को दक्षिणी केन्या तथा उत्तरी तंजानिया के एक छोटे से भाग की ओर धकेल दिया गया।

प्रश्न 4. आधुनिक विश्व ने भारत और पूर्वी अफ्रीकी चरवाहा समुदायों के जीवन में जिन परिवर्तनों को जन्म दिया उनमें कई समानताएँ थीं। ऐसे दो परिवर्तनों के बारे में लिखिए जो भारतीय चरवाहों और मासाई गड़रियों, दोनों के बीच समान रूप से मौजूद थे।

उत्तर—वे परिवर्तन जो भारतीय चरवाहा समुदायों तथा मासाई पशुपालकों के लिये समान थे, वे निम्नलिखित हैं—

(i) भारतीय चरवाहा समुदायों तथा मासाई पशुपालकों दोनों को अपने-अपने चरागाहों से बेदखल कर दिया गया जिसका मतलब था दोनों के लिये चारे की कमी तथा जीवन-यापन की समस्या का उत्पन्न होना।

(ii) भारतीय चरवाहा समुदाय तथा मासाई पशुपालक दोनों को ही समस्याओं का समान रूप से सामना करना पड़ा जब वनों को 'आरक्षित' घोषित कर दिया गया तथा उन्हें इनमें प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर दिया गया।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हिमालय के अधिकांश चरवाहा समुदायों में निम्नलिखित में से कौन-सी समानता पाई जाती है?
(क) ये लोग मूल रूप से घुमंतू होते हैं (ख) ये लोग चक्रीय रूप से स्थान बदलते रहते हैं
(ग) ये लोग चरवाहे समुदाय के लोग हैं (घ) उपर्युक्त सभी।

2. निम्नलिखित में से कौन हिमालय का चरवाहा समुदाय नहीं है?
(क) भोटिया (ख) शेरपा (ग) किन्नौरी (घ) राइका।

3. धंगर कहाँ रहते हैं?
(क) हिमाचल प्रदेश (ख) राजस्थान (ग) महाराष्ट्र (घ) गुजरात।

4. गुज्जर बक्करवाल रहते हैं—
(क) जम्मू और कश्मीर में (ख) अरुणाचल प्रदेश में
(ग) गुजरात में (घ) हिमाचल प्रदेश में।

5. गद्दी रहते हैं—
(क) जम्मू और कश्मीर में (ख) महाराष्ट्र में
(ग) हिमाचल प्रदेश में (घ) कर्नाटक में।

6. गुज्जर चरवाहे कहाँ रहते हैं?
(क) गढ़वाल इलाके में (ख) शिवालिक इलाके में
(ग) कुमायूँ इलाके में (घ) (क) और (ग) दोनों।

7. औपनिवेशिक सरकार ने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए निम्न में से किस वस्तु पर कर नहीं लगाया था?
(क) भूमि पर (ख) नहर के पानी पर (ग) गन्ने पर (घ) नमक पर।

8. निम्नलिखित में अफ्रीकी चरवाहा समुदाय नहीं है—
(क) बेदुईन्स (ख) मासाई (ग) बोराक (घ) कुरुमा।

9. मासाई चरवाहे कहाँ रहते हैं?
(क) कीनिया (ख) सोमालिया (ग) तंजानिया (घ) (क) और (ग) दोनों।

10. मासाई के किन चरागाहों को शिकारगाह बना दिया गया था?
(क) मासाई मारा नेशनल पार्क (ख) साम्बूरू पार्क
(ग) सेरेन्गेटी पार्क (घ) इनमें से सभी।

11. मासाई का कौन-सा सामाजिक समूह शासन-व्यवस्था से सम्बद्ध था?
(क) वरिष्ठ जन (ख) योद्धा (ग) शिक्षक (घ) कामगार।

12. राइका कहाँ रहते हैं?
(क) मध्य प्रदेश में (ख) महाराष्ट्र में
(ग) राजस्थान में (घ) बिहार में।

13. राजस्थान के किस जिले में राइका नहीं रहते हैं?
(क) जोधपुर में (ख) बाड़मेर में (ग) बीकानेर में (घ) जयपुर में।

14. राइका लोग कौन-से मवेशी नहीं पालते हैं?
(क) ऊँट (ख) बकरी (ग) भेड़ (घ) मुर्गी।

15. 'काफिला' क्या है?
(क) चरवाहों का मौसमी भ्रमण (ख) घरों का समूह
(ग) एक कबीलाई न्यायिक प्रणाली (घ) इनमें से कोई नहीं।

16. 'गुज्जरों' के मंडप सम्बद्ध हैं—
(क) विवाहोत्सव से (ख) घी बनाने से
(ग) सामूहिक प्रवास के स्थान (घ) स्थानीय मंदिर का नाम।

17. निम्नलिखित में से कौन-सी बात चरवाहों के जीवन पर नाटकीय प्रभाव नहीं डालती है?
(क) विकासशील रोपण खेती (ख) चरागाहों का खेतों में रूपांतरण
(ग) वन कानून का अधिनियम (घ) नये कर लगाकर आमदनी बढ़ोत्तरी की आवश्यकता।

18. अपराधी जनजाति अधिनियम कब पारित किया गया था?
(क) 1861 (ख) 1871 (ग) 1881 (घ) 1891।

[**उत्तर—1.** (घ), **2.** (घ), **3.** (ग), **4.** (ख), **5.** (ग), **6.** (घ), **7.** (ग), **8.** (घ), **9.** (घ), **10.** (ग), **11.** (क), **12.** (ग), **13.** (घ), **14.** (घ), **15.** (क), **16.** (ख), **17.** (क), **18.** (ग)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. खानाबदोश लोग कौन हैं? खानाबदोश लोगों की एक विशेषता लिखिए।

उत्तर—वे लोग जो एक निश्चित स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रहते, खानाबदोश कहलाते हैं।

विशेषता—खानाबदोश लोग ऋतुओं के अनुसार अपना स्थान बदल लेते हैं।

प्रश्न 2. जम्मू और कश्मीर के भेड़-बकरी पालने वाले एक चलवासी कबीले का नाम लिखिए तथा ये सर्दियों की ऋतु में कहाँ रहते थे?

उत्तर—जम्मू और कश्मीर के भेड़-बकरी पालने वाले एक चलवासी कबीले का नाम गुर्जर बकरवाल है तथा वे सर्दियों की ऋतु में शिवालिक पर्वत श्रेणी के निचले भागों में रहते थे।

प्रश्न 3. औपनिवेशिक सरकार ने अपराधी जनजाति अधिनियम कब बनाया?

उत्तर—औपनिवेशिक सरकार ने अपराधी जनजाति अधिनियम (Criminal Tribes Act) 1871 ई० में बनाया।

प्रश्न 4. औपनिवेशिक सरकार ने भारत में पशुचारणिक कबीलों से चराई कर सीधे वसूल करना कब शुरू किया?

उत्तर—औपनिवेशिक सरकार ने भारत में पशुचारणिक कबीलों से 1880 के दशक में चराई कर सीधे वसूल करना शुरू किया।

प्रश्न 5. सन् 1947 से पहले सिन्ध जाने वाले राइकस अब अपने भेड़ों तथा ऊँटों को चराई के लिए कहाँ लेकर जाते हैं?

उत्तर—सन् 1947 से पहले सिन्ध जाने वाले राइकस अब अपने भेड़ों तथा ऊँटों को चराई के लिए हरियाणा में लेकर जाते हैं।

प्रश्न 6. विश्व के किस महाद्वीप में सर्वाधिक पशुचारणिक कबीले रहते हैं?

उत्तर—विश्व के अफ्रीका महाद्वीप में सर्वाधिक पशुचारणिक कबीले रहते हैं।

प्रश्न 7. मासाई कबीले के लोग सर्वप्रथम अफ्रीका के किस भाग में रहते थे?

उत्तर—मासाई कबीले के लोग सबसे पहले अफ्रीका के पूर्वी भाग में रहते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जम्मू और कश्मीर के गुर्जर बकरवाल अपना जीवनयापन किस प्रकार करते हैं? संक्षेप में बताइए।

उत्तर—पहाड़ी क्षेत्रों के घुमंतू चरवाहे पहाड़ी चरवाहे कहे जाते हैं। 19वीं शताब्दी में जम्मू-कश्मीर का गुज्जर बकरवाल समुदाय अपनी भेड़ बकरियों के लिए चरागाहों की खोज में यहाँ आया। कुछ समय बाद वह यहीं बस गया। सर्दियों में जब ऊँचे पर्वतों पर बर्फ पड़ती है तो इस समुदाय के लोग अपने पशुओं के झुण्ड के साथ शिवालिक की निचली पहाड़ियों में रहने के लिए चले जाते हैं। सर्दियों में यहाँ मिलने वाली सूखी झाड़ियाँ हों उनके पशुओं के लिए मुख्य चारा होती है। ये पीरपंजार के दर्रों को पार करते हुए कश्मीर की घाटी में प्रवेश करते हैं। गर्मियों में बर्फ पिघलने पर तथा हरियाली आने पर ये लोग पुनः ऊँची पहाड़ियों की ओर चले जाते हैं। उस समय उगने वाली अंकुरित घास उनके पशुओं को पौष्टिक आहार प्रदान करती है। गुज्जर गड़रिये बुग्याल में मिलने वाले रिंगल और घास से बने घरों में रहते हैं।

प्रश्न 2. महाराष्ट्र के धंगरों के विषय में संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

उत्तर—चरवाहे पहाड़ों के अतिरिक्त पठारों और मैदानों में भी बहुत बड़ी संख्या में विचरण करते थे। धंगर महाराष्ट्र का

एक प्रसिद्ध चरवाह समुदाय है। 20वीं शताब्दी के आरम्भ में इस समुदाय की आबादी लगभग 4,67,000 थी। उनमें से अधिकांश गड़रिये या चरवाहे थे, यद्यपि कुछ लोग कम्बल और चादरें भी बनाते थे, जबकि कुछ भैंस पालते थे। धंगर गड़रिये वर्षा के दिनों में महाराष्ट्र के मध्य पठारों में रहते थे; क्योंकि यह एक अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र था, जहाँ बारिश बहुत कम होती थी। इस क्षेत्र की मिट्टी भी विशेष उपजाऊ नहीं थी। यहाँ चारों तरफ सिर्फ कँटीली झाड़ियाँ होती थीं, साथ ही बाजरे जैसी सूखी फसलों के अतिरिक्त यहाँ अन्य कोई फसल नहीं होती थी। मानसून में यह भूमि धंगरों के मवेशियों के लिए एक विशाल चरागाह बन जाती थी। अक्टूबर के आस-पास धंगर बाजरे की फसल की कटाई करते थे और चरागाहों की तलाश में पश्चिम की तरफ चल पड़ते थे। एक माह पैदल विचरण करने के बाद वे अपने मवेशियों के साथ कोंकण के क्षेत्रों में जाकर डेरा डाल देते थे। अच्छी बारिश और उपजाऊ मिट्टी के कारण इस क्षेत्र में कृषि बहुत अच्छी होती थी। कोंकण के किसान भी इन चरवाहों का हृदय से सत्कार करते थे। जिस समय धंगर कोंकण पहुँचते थे, उसी समय कोंकण के किसानों को **खरीफ** की फसल काटकर अपने खेतों को **रबी** की फसल के लिए दोबारा उपजाऊ बनाना होता था। धंगरों के मवेशी खरीफ की कटाई के बाद खेतों में बची **ठूँठों** को खाते थे और उनके गोबर से खेतों को खाद मिल जाती थी जिससे भूमि का उपजाऊपन बढ़ जाता था। कोंकणी किसान धंगरों को चावल भी देते थे जिन्हें वे वापस अपने पठारी क्षेत्रों में ले जाते थे; क्योंकि वहाँ इस तरह के अनाज बहुत कम होते थे। मानसून की वर्षा आरम्भ होते ही धंगर कोंकण और तटीय क्षेत्र छोड़कर सूखे पठारों की तरफ लौट जाते थे; क्योंकि भेड़ें वर्षा के मौसम को सहन नहीं कर पातीं।

प्रश्न 3. भारत में औपनिवेशिक शासन ने (कबीलों) खानाबदोशों के जीवन पर क्या प्रभाव डाला?

उत्तर—चरवाहों के जीवन पर प्रभाव—औपनिवेशिक शासन द्वारा बनाए गए नियमों और कानूनों के कारण चरागाहों की गम्भीर कमी हो गई। जैसे-जैसे चरागाहों को सरकारी कब्जे में लेकर उन्हें खेती में परिवर्तित किया जाने लगा, वैसे-वैसे चरागाहों के लिए उपलब्ध क्षेत्र सिमटने लगा। इस प्रकार जंगलों के आरक्षण के परिणामस्वरूप गड़रिये और पशुपालक अपने मवेशियों को जंगलों में पहले जैसी आजादी से नहीं चरा सकते थे।

जब चरागाह खेतों में लगे तो शेष चरागाहों में चरने वाले जानवरों की संख्या बढ़ने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि चरागाह सदा जानवरों से भरे रहने लगे। अब तक तो घुमंतू चरवाहे अपने मवेशियों को कुछ दिन तक ही एक इलाके में चराते थे और उसके बाद किसी और इलाके में चले जाते थे। इस तब्दीली के कारण से पिछले चरागाह भी फिर से हरे-भरे हो जाते थे, लेकिन चरवाहों की आवाजाही पर लगी बंदिशों से चरागाहों का स्तर गिरने लगा तथा जानवरों के लिए चारा कम पड़ने लगा। इसके फलस्वरूप जानवरों की सेहत और संख्या भी घटने लगी। चारे की कमी और यदा-कदा पड़ने वाले अकाल के कारण कमजोर और सूखे जानवर बड़ी संख्या में मरने लगे।

प्रश्न 4. औपनिवेशिक शासन से पहले मासाई लोगों की सामाजिक दशा की जानकारी दीजिए।

उत्तर—अफ्रीका में जहाँ आधी से अधिक चरवाहा आबादी रहती है आज भी लगभग सवा दो करोड़ लोग आजीविका के लिए किसी-न-किसी तरह की चरवाही गतिविधियों पर ही आश्रित हैं। अफ्रीका में मासाई समुदाय चरवाहों का प्रमुख समुदाय है। ये ज्यादातर अर्द्ध शुष्क घास के मैदानों या सूखे रेगिस्तानों में रहते हैं। जहाँ वर्षा आधारित खेती करना बहुत मुश्किल होता है। ये चरवाहे गाय-बैल, ऊँट, बकरी, भेड़ व गधे पालते हैं। ये व्यापार और यातायात सम्बन्धी कार्य भी करते है। ये दूध, माँस, पशुओं की खाल व ऊन आदि बेचते हैं। कुछ मासाई चरवाहे, चरवाही के साथ-साथ खेती भी करते हैं। ये गाँवों में निवास करते हैं। इनका सामाजिक ताना-बाना काफी सुदृढ़ होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जम्मू-कश्मीर के गुर्जर बकरवाल चरवाहों तथा हिमाचल प्रदेश के गद्दी चरवाहों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर—गुज्जर बकरवाल समुदाय के लोग जम्मू और कश्मीर के मूल निवासी हैं। 19वीं शताब्दी में इन्होंने यहाँ स्थायी रूप से बसना आरम्भ कर दिया था। ये लोग भेड़-बकरियों के बड़े-बड़े झुंड पालते थे जिन्हें रेवड़ कहते थे। इस समुदाय के लोग अपने पशुओं के साथ मौसमी स्थानान्तरण करते थे। सर्दियों में जब ऊँची पहाड़ियाँ बर्फ से ढक जातीं थीं तो वे शिवालिक की निचली पहाड़ियों में आकर डेरा डाल लेते थे। सर्दियों में निचले क्षेत्रों में मिलने वाली सूखी झाड़ियाँ ही उनके जानवरों के लिए चारे के रूप में उपयोगी होती थीं। अप्रैल के अन्त तक वे चरागाहों की तलाश में उत्तर दिशा में जाने लगते

थे। इस सफर में कई परिवार काफिला बनाकर साथ-साथ चलते थे। वे पीर पंजाल के दर्रो को पार करते हुए कश्मीर की घाटी में पहुँच जाते। जैसे ही गर्मियाँ शुरू होतीं, जमी हुई बर्फ की मोटी चादर पिघलने लगती और चारों तरफ हरियाली छा जाती, तब इन दिनों में यहाँ उगने वाली तरह-तरह की घास से मवेशियों के लिए भरपूर मात्रा में चारा उपलब्ध हो जाता था और उन्हें सेहतमंद खुराक भी मिल जाती थी। सितम्बर के अन्त में बकरवाल एक बार फिर अपना अस्थायी निवास समेट कर वापस अपने सर्दियों वाले ठिकाने की तरफ नीचे की ओर चल जाते थे।

हिमाचल प्रदेश के चरवाहों के समुदाय को गद्दी कहते हैं। ये लोग भी मौसमी उतार-चढ़ाव का सामना करने के लिए इसी तरह सर्दी-गर्मी के अनुकूल अपनी जगह बदलते रहते थे। वे भी शिवालिक की निचली पहाड़ियों में अपने मवेशियों को झाड़ियों में चराते हुए जाड़ा बिताते थे। अप्रैल आते-आते वे उत्तर की तरफ चल पड़ते और पूरी गर्मियाँ लाहौल और स्पीति में बिता देते। जब बर्फ पिघलती और ऊँचे दर्रे खुल जाते तो उनमें से बहुत सारे ऊपरी पहाड़ों में स्थित घास के मैदानों में जा पहुँचते थे। सितम्बर तक वे दोबारा वापस चल पड़ते। वापसी में वे लाहौल और स्पीति के गाँवों में एक बार फिर कुछ समय के लिए रुकते। इस बीच वे गर्मियों की फसलें काटते और सर्दियों की फसलों की बुवाई करके आगे बढ़ जाते। यहाँ से वे अपने रेवड़ लेकर शिवालिक की पहाड़ियों में सर्दियों वाले चरागाहों में चले जाते और अगली अप्रैल में भेड़-बकरियाँ लेकर वे दोबारा गर्मियों के चरागाहों की तरफ रवाना हो जाते।

पूर्व की ओर गढ़वाल और कुमाऊँ के गुज्जर चरवाहे सर्दियों में **भाबर** के सूखे जंगलों की तरफ और गर्मियों में ऊपरी घास के मैदानों—**बुग्याल** की तरफ चले जाते थे। इनमें से बहुत सारे हरे-भरे चरागाहों की तलाश में उन्नीसवीं सदी में जम्मू से उत्तर प्रदेश की पहाड़ियों में आए थे और बाद में यहीं बस गए।

सर्दी-गर्मी के अनुसार प्रत्येक वर्ष चरागाह बदलते रहने का यह चलन हिमालय के पर्वतों में रहने वाले बहुत सारे चरवाहा समुदायों में दिखाई देता था। यहाँ के भोटिया, शेरपा और किन्नौरी समुदाय के लोग भी इसी तरह के चरवाहे थे। ये सभी समुदाय मौसमी परिवर्तनों के अनुरूप खुद को ढालते थे और अलग-अलग क्षेत्रों में पड़ने वाले चरागाहों का प्रयोग करते थे। जब एक चरागाह की हरियाली समाप्त हो जाती थी या प्रयोग के योग्य नहीं रह जाती थी तो वे किसी और चरागाह की तरफ चले जाते थे। इसके विचरण से चरागाह भी अधिक दोहन से बच जाते थे और उनमें पुनः हरियाली व जिंदगी भी शीघ्र लौट आती थी।

प्रश्न 2. बंजारा तथा गोल्ला जाति के चरवाहों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। यह भी बताइए कि पशुचारणिक कबीले अपने जीवन को बनाए रखने के लिए किन-किन कारकों को ध्यान में रखते थे?

उत्तर—बंजारा—चरवाहों में एक प्रचलित नाम बंजारों का भी है। बंजारे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कई क्षेत्रों में रहते थे। ये लोग बहुत दूर-दूर तक चले जाते थे और रास्ते में अनाज और चारे के बदले गाँव वालों को खेत जोतने वाले जानवर और अन्य चीजें बेच जाते थे। वे जहाँ भी जाते अपने जानवरों के लिए अच्छे चरागाहों की तलाश में रहते थे। ये नई घास-भूमि की तलाश में अपने पशुओं के साथ दूर-दूर इलाकों में निरंतर घूमते रहते हैं।

गोल्ला—गोल्ला चरवाहे आन्ध्र प्रदेश तथा कर्नाटक के पठारी भागों में भैंस तथा भेड़, बकरियाँ पालते हैं। वे कम्बल बुनने तथा खेती का कार्य भी करते हैं। ये लोग वर्ष में दो बार अपना स्थान बदलते हैं। एक बार मानसून में व दूसरी बार शुष्क ऋतु में। ये शुष्क ऋतु में तटीय प्रदेशों में चले जाते हैं। ये वर्षा ऋतु आरम्भ होने पर वहाँ से चले जाते हैं। क्योंकि भेड़, बकरियाँ आर्द्र जलवायु को सहन नहीं कर पातीं।

प्रश्न 3. नई सीमाओं तथा औपनिवेशिक सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने अफ्रीकी चलवासी चरवाहों का जीवन किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर—औपनिवेशिक काल में अफ्रीका के अन्य स्थानों की तरह मासाईलैंड में भी आए परिवर्तनों से सारे चरवाहों पर एक जैसा प्रभाव नहीं पड़ा। उपनिवेश बनने से पहले मासाई समाज दो सामाजिक श्रेणियों में विभक्त था—वरिष्ठजन (एल्डर्स) और योद्धा (वारियर्स)। वरिष्ठजन शासन चलाते थे तथा समुदाय से जुड़े मामलों पर विचार-विमर्श करने और अहम निर्णय लेने के लिए वे समय-समय पर सभा का आयोजन करते थे। योद्धाओं में ज्यादातर नवयुवक होते थे, जिन्हें मुख्य रूप से युद्ध लड़ने और कबीले की रक्षा के लिए तैयार किया जाता था। वे समुदाय की रक्षा करते थे और दूसरे कबीलों के मवेशी छीन कर लाते थे; क्योंकि उनके लिए मवेशी ही उनकी सम्पत्ति होते थे। अलग-अलग चरवाहा समुदायों की शक्ति इन्हीं हमलों से ज्ञात होती थी। युवाओं को योद्धा वर्ग का हिस्सा तभी माना जाता था जब वे दूसरे समूह के मवेशियों को

छीनकर और युद्ध में बहादुरी का प्रदर्शन करके अपना पौरुष सिद्ध कर देते थे, फिर भी वे वरिष्ठजनों के निर्देशन में ही काम करते थे। मासाइयों के मामलों की देखभाल करने के लिए अंग्रेज सरकार ने कई ऐसे निर्णय लिए जिनसे आने वाले वर्षों में बहुत गहरे प्रभाव पड़े। उन्होंने कई मासाई उपसमूहों के मुखिया तय कर दिए और अपने-अपने कबीले के सारे मामलों की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंप दी। इसके बाद उन्होंने हमलों और लड़ाइयों पर रोक लगा दी। इस तरह वरिष्ठजनों और योद्धाओं, दोनों की परम्परागत सत्ता बेहद शिथिल हो गई।

धीरे-धीरे औपनिवेशिक सरकार द्वारा नियुक्त किए गए मुखिया धन-सम्पत्ति एकत्र करने लगे। उनके पास नियमित आय के साधन थे जिससे वे जानवर, सामान और जमीन आदि खरीद सकते थे। वे अपने निर्धन साथियों को लगान चुकाने के लिए कर्ज पर पैसा देते थे। उनमें से ज्यादातर बाद में शहरों में जाकर बस गए और व्यापार करने लगे। हालांकि उनके पत्नी-बच्चे गाँव में ही रहकर जानवरों की देखभाल करते थे। उन्हें चरवाही और गैर-चरवाही, दोनों तरह की आय होती थी। इस प्रकार उनके जानवर किसी कारण यदि घट भी जाएँ तो वे और जानवर खरीद सकते थे।

जो चरवाहे केवल अपने जानवरों के सहारे जिंदगी व्यतीत करते थे, उनकी हालत अलग थी। उनके पास बुरे वक्त का सामना करने के लिए अकसर साधन नहीं होते थे। युद्ध और अकाल के दौरान उनका सब कुछ खत्म हो जाता था, तब उन्हें काम की तलाश में आस-पास के शहरों की शरण लेनी पड़ती थी। कुछ भाग्यशाली लोगों को सड़क या भवन निर्माण कार्यों में काम मिल जाता था।

इस तरह मासाई समाज में दो स्तरों पर परिवर्तन आए—प्रथम, वरिष्ठजनों और योद्धाओं के मध्य आयु पर आधारित परम्परागत परिवर्तन पूरी तरह समाप्त भले न हुआ हो, परन्तु बुरी तरह अस्त-व्यस्त अवश्य हो गया; द्वितीय, अमीर और निर्धन चरवाहों के बीच नया भेदभाव उत्पन्न हो गया।

●●

इकाई–2 : समकालीन भारत–1 (भूगोल)

1 भारत–आकार और स्थिति

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित चार उत्तरों में से उपयुक्त उत्तर चुनिए–

(i) कर्क रेखा किस राज्य से नहीं गुजरती है?

(क) राजस्थान (ख) उड़ीसा (ग) छत्तीसगढ़ (घ) त्रिपुरा।

(ii) भारत का सबसे पूर्वी देशांतर कौन-सा है?

(क) 97° 25' पू० (ख) 77° 6' पू० (ग) 68° 7' पू० (घ) 82° 32' पू०।

(iii) उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और सिक्किम की सीमाएँ किस देश को छूती हैं?

(क) चीन (ख) भूटान (ग) नेपाल (घ) म्यांमार।

(iv) ग्रीष्मावकाश में आप यदि कवरत्ती जाना चाहते हैं तो किस केन्द्र शासित क्षेत्र में जाएँगे?

(क) पांडिचेरी (ख) लक्षद्वीप
(ग) अंडमान और निकोबार (घ) दीव और दमन।

(v) मेरे मित्र एक ऐसे देश के निवासी हैं जिस देश की सीमा भारत के साथ नहीं लगती है। आप बताइए, वह कौन-सा देश है?

(क) भूटान (ख) ताज़िकिस्तान (ग) बांग्लादेश (घ) नेपाल।

उत्तर–(i) (ख) उड़ीसा, (ii) (क) 97° 25' पू०, (iii) (ग) नेपाल, (iv) (ख) लक्षद्वीप, (v) (ख) ताज़िकिस्तान।

प्रश्न 2. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए–

(i) अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह के नाम बताइए। दक्षिण में कौन-कौन से द्वीपीय देश हमारे पड़ोसी हैं?

उत्तर–अरब सागर में स्थित द्वीप समूह-लक्षद्वीप द्वीप समूह।

बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह-अंडमान और निकोबार द्वीप समूह।

दक्षिण में भारत के द्वीपीय पड़ोसी देश हैं–(1) श्रीलंका, (2) मालदीव।

(ii) उन देशों के नाम बताइए जो क्षेत्रफल में भारत से बड़े हैं।

उत्तर–क्षेत्रफल में भारत से बड़े देश हैं–1. रूस, 2. कनाडा, 3. चीन, 4. संयुक्त राज्य अमेरिका, 5. ब्राजील, 6. ऑस्ट्रेलिया।

(iii) हमारे उत्तर-पश्चिमी, उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी पड़ोसी देशों के नाम बताइए।

उत्तर–हमारे उत्तर-पश्चिमी पड़ोसी देश–पाकिस्तान, अफगानिस्तान।

हमारे उत्तरी पड़ोसी देश–चीन, नेपाल, भूटान।

हमारे उत्तर-पूर्वी पड़ोसी देश–म्यांमार, बांग्लादेश।

(iv) भारत में किन-किन राज्यों से कर्क रेखा गुजरती है, उनके नाम बताइए।

उत्तर–भारत के निम्नलिखित राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है–

1. गुजरात, 2. राजस्थान, 3. मध्य प्रदेश, 4. छत्तीसगढ़, 5. झारखंड, 6. पश्चिम बंगाल, 7. त्रिपुरा, 8. मिजोरम।

प्रश्न 3. सूर्योदय अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी भाग में गुजरात के पश्चिमी भाग की अपेक्षा 2 घंटे पहले क्यों होता है, जबकि दोनों राज्यों में घड़ी एक ही समय दर्शाती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–भारत का देशांतरीय विस्तार 68° 7' पूर्व से लेकर 97° 25' पूर्व तक है अर्थात् सर्वाधिक पूर्वी एवं पश्चिमी बिंदुओं का अंतर लगभग 30° का है। जैसा कि हम जानते हैं कि सूरज की किरणें एक देशांतर (1°) को पार करने में 4 मिनट का समय लेती हैं। अतः 30° देशांतरों को पार करने में कुल $30 \times 4 = 120$ मिनट = 2 घंटे लगते हैं। पृथ्वी पश्चिम से पूर्व

की ओर घूमती है इसलिए अरुणाचल प्रदेश में जोकि 97° 25' पूर्व पर स्थित है, सूर्य पहले दिखाई देता है जबकि गुजरात में, जोकि 68°7' पूर्व पर स्थित है, सूर्य दो घंटे बाद दिखाई देता है।

दोनों राज्यों में घड़ी एक ही समय प्रदर्शित करती है क्योंकि 82°30' पूर्व देशांतर रेखा को भारत की मानक याम्योत्तर माना गया है।

प्रश्न 4. हिंद महासागर में भारत की केन्द्रीय स्थिति से इसे किस प्रकार लाभ प्राप्त हुआ है?

उत्तर—हिंद महासागर में भारत की केन्द्रीय स्थिति से इसे निम्नलिखित रूप में लाभ प्राप्त हुआ है—

(i) भारत विशेषकर पुरानी दुनिया के वाणिज्य तथा व्यापार के मार्ग में अनुकूल स्थिति में है। पूर्व एवं पश्चिम को जोड़ने वाले महासागरीय मार्ग एवं वायुमार्ग हिन्द महासागर एवं भारतीय उपमहाद्वीप से होकर गुजरते हैं।

(ii) इस प्रकार, भारत उक्त दो प्रमुख मार्गों के कारण वाणिज्यिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विश्व के अन्य देशों को सेवा प्रदान करता है। ये हैं—पश्चिम में पश्चिमी एशिया, यूरोप और पूर्वी अफ्रीका तथा पूर्व एवं दक्षिण पूर्व में दक्षिण-पूर्वी एशिया, सुदूर पूर्व (जापान, चीन, कोरिया आदि) और ऑस्ट्रेलिया।

ये सभी क्षेत्र अथवा महाद्वीप वायु एवं समुद्री मार्गों द्वारा जुड़े हुए हैं। ये मार्ग भारतीय उपमहाद्वीप और इसे घेरे हुए समुद्रों से होकर गुजरते हैं। इसी कारण भारत इन क्षेत्रों के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध बनाने में सफल हुआ है।

मानचित्र कौशल

निम्नलिखित की मानचित्र की सहायता से पहचान कीजिए—

(i) अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह।

उत्तर—अरब सागर में स्थित द्वीप समूह—लक्षद्वीप।

बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह—अंडमान एवं निकोबार।

(ii) भारतीय उपमहाद्वीप किन देशों से मिलकर बनता है?

उत्तर—भारतीय उपमहाद्वीप में शामिल देश हैं—पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश एवं भारत।

(iii) कर्क रेखा कौन-कौन से राज्यों से गुजरती है?

उत्तर—कर्क रेखा मिजोरम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं गुजरात राज्यों से होकर गुजरती है।

(iv) भारतीय मुख्य भूभाग का दक्षिणी शीर्ष बिंदु।

उत्तर—भारतीय संघ का सबसे दक्षिणी छोर इंदिरा प्वाइंट है जो अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर स्थित है। मुख्य भूमि का सबसे दक्षिणी शीर्ष बिंदु कन्याकुमारी है।

(v) भारत का सबसे उत्तरी अक्षांश।

उत्तर—भारत का सबसे उत्तरी अक्षांश 37° 6' है।

(vi) अंशों में भारत के मुख्य भू-भाग का दक्षिणी अक्षांश।

उत्तर—भारतीय मुख्य भू-भाग का सबसे दक्षिणी अक्षांश अंशों में 8° 4' है।

(vii) भारत का सबसे पूर्वी और पश्चिमी देशांतर।

उत्तर—सबसे पूर्वी और पश्चिमी देशांतर क्रमशः 97° 25' पूर्वी और 68° 7' पूर्वी देशांतर हैं।

(viii) सबसे लंबी तट रेखा वाला राज्य।

उत्तर—गुजरात।

(ix) भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि।

उत्तर—पाक जल संधि।

(x) भारत के केन्द्र शासित क्षेत्र।

उत्तर—भारत के केन्द्र शासित क्षेत्र निम्नलिखित हैं—

(1) चंडीगढ़, (2) दिल्ली, (3) दमन एवं दीव, (4) दादर एवं नगर हवेली, (5) लक्षद्वीप, (6) अंडमान निकोबार द्वीप समूह, (7) पांडिचेरी, (8) जम्मू कश्मीर, (9) लद्दाख।

नोट—मानचित्र कार्य के लिए सी० पी० मैप मास्टर देखें।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भारत का स्थलीय क्षेत्रफल कितना है?
(क) 3.26 मिलियन वर्ग किमी (ख) 3.27 मिलियन वर्ग किमी
(ग) 3.28 मिलियन वर्ग किमी (घ) 3.29 मिलियन वर्ग किमी।

2. भारत का विस्तार क्या है?
(क) 8°4' उत्तर व 37°6' उत्तर (ख) 68°7' पूर्व व 97°25' पूर्व
(ग) दोनों (क) व (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. भारत की मानक मध्याह्न रेखा क्या है?
(क) यह मिर्जापुर से होकर गुजरती है (ख) यह उत्तर प्रदेश में है
(ग) 82°30' पूर्व (घ) उपर्युक्त सभी।

4. भारत का उत्तर से दक्षिण तक विस्तार क्या है?
(क) 3,200 किमी (ख) 3,204 किमी (ग) 3,214 किमी (घ) 3,215 किमी।

5. भारत की स्थलीय सीमा किन देशों से मिलती है?
(क) उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान (ख) उत्तर में चीन, नेपाल व भूटान
(ग) पूर्व में म्यांमार व बांग्लादेश (घ) उपर्युक्त सभी।

6. स्वेज नहर के संबंध में सही कथन का चयन कीजिए—
(क) 1869 में खोली गई
(ख) इसने भारत व यूरोप के मध्य 700 किमी की दूरी कम कर दी
(ग) यह 1889 में खोली गई (घ) दोनों (क) व (ख)।

7. गुजरात व अरुणाचल के मध्य समय का अन्तर कितना है?
(क) 2 घंटे 3 मिनट (ख) 2 घंटे 30 मिनट (ग) 2 घंटे 15 मिनट (घ) 2 घंटे।

8. भारत का सुदूर पूर्वी देशान्तर क्या है?
(क) 99°25' पूर्व (ख) 68°7' पूर्व (ग) 77°6' पूर्व (घ) 82°32' पूर्व।

9. भारत का सुदूर पश्चिमी देशान्तर क्या है?
(क) 97°25' पूर्व (ख) 68°7' पूर्व (ग) 68°34' पूर्व (घ) 82°32' पूर्व।

10. भारत भूमि का सुदूर दक्षिणी छोर किस नाम से जाना जाता है?
(क) केरल (ख) कन्याकुमारी (ग) इन्दिरा पॉइन्ट (घ) पोर्ट ब्लेयर।

11. कर्क रेखा कहाँ से होकर नहीं गुजरती है?
(क) राजस्थान (ख) छत्तीसगढ़ (ग) ओडिशा (घ) त्रिपुरा।

12. भारतीय उपमहाद्वीप को क्या शेष एशिया से पृथक् करता है?
(क) हिन्दुकुश पर्वत (ख) पर्वतीय दर्रे (ग) नदियाँ (घ) हिमालय।

उत्तर—1. (ग), **2.** (ग), **3.** (घ), **4.** (ग), **5.** (घ), **6.** (घ), **7.** (घ), **8.** (क), **9.** (ख), **10.** (ख), **11.** (ग), **12.** (घ)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत की स्थलीय और समुद्र तटीय सीमा की लम्बाई लिखिए।

उत्तर—स्थलीय सीमा की लम्बाई—लगभग 15,200 किमी
समुद्रतटीय सीमा की लम्बाई—लगभग 7,516 किमी.

प्रश्न 2. भारत की उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई किलोमीटर में लिखिए।

उत्तर—उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई—3,214 किमी।
पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई—2,933 किमी।

प्रश्न 3. भारत का अक्षांशीय और देशान्तरीय विस्तार बताइए।

उत्तर—अक्षांशीय विस्तार—8°4' उत्तर 37°6' उत्तरी तथा देशान्तरीय विस्तार भी लगभग समान है।

प्रश्न 4. इन्दिरा पॉइन्ट कब समुद्री जल में समा गया?

उत्तर—सन् 2004 में सुनामी के कारण।

प्रश्न 5. भारत की स्थलीय भूमि का कुल क्षेत्रफल कितना है?

उत्तर—3.28 मिलियन वर्ग किमी।

प्रश्न 6. भारत के पश्चिम में कौन-सा पड़ोसी देश स्थित है?

उत्तर—पाकिस्तान।

प्रश्न 7. उन राज्यों के नाम लिखिए जिनसे होकर कर्क रेखा गुजरती है?

उत्तर—गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम।

प्रश्न 8. किस भारतीय राज्य की सबसे लम्बी समुद्री सीमा है?

उत्तर—गुजरात।

प्रश्न 9. कौन से जल निकाय भारत व श्रीलंका को पृथक् करते हैं?

उत्तर—पाक जलडमरू मध्य एवं मन्नार की खाड़ी।

प्रश्न 10. कन्याकुमारी में दिन व रात की अवधि लगभग समान क्यों होती है?

उत्तर—क्योंकि यह भूमध्य रेखा के निकट स्थित है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत की स्थिति का सामरिक महत्व क्या है?

उत्तर—भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है तथा इसके उत्तर में हिमालय पर्वत शृंखलाएँ स्थित हैं। अतः इन सीमाओं का सामरिक महत्व अत्यधिक है। इसकी सीमाएँ तीन ओर से सुरक्षित हैं।

प्रश्न 2. भारत की मानक मध्याह्न की गणना किस प्रकार की जाती है?

उत्तर—30° 30' पूर्व देशान्तर रेखा को भारत की मानक याम्योत्तर माना गया है। यह उत्तर प्रदेश राज्य में मिर्जापुर से होकर गुजरती है। अक्षांश का प्रभाव दक्षिण की ओर दिन और रात की अवधि पर पड़ता है।

प्रश्न 3. प्राचीन काल में भारत किस प्रकार एक महत्वपूर्ण स्थिति का लाभ उठाता था?

उत्तर—पूर्वी गोलार्द्ध में भारत की केन्द्रीय स्थिति है। ग्रीन विच रेखा के पूर्व में स्थित होने के कारण भारत पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य केन्द्रीय स्थिति लिए हुए है। अपनी महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति के कारण ही प्राचीन काल में भारत ने पश्चिम में स्थित अरब देशों, दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा सुदूर पूर्व के देशों के साथ व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे। केन्द्रीय स्थिति होने के कारण ही पूर्व से पश्चिम तथा पश्चिम से पूर्व जाने वाले सभी जलयान भारत से होकर ही जाते हैं। जिससे पूर्व और पश्चिम के देशों से अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क करने में बड़ी सहायता मिली।

प्रश्न 4. अक्षांशीय विस्तार किस प्रकार किसी स्थान पर दिन व रात की अवधि को प्रभावित करता है?

उत्तर—अक्षांश का प्रभाव दक्षिण से उत्तर की ओर दिन और रात की समयावधि पर पड़ता है। 1° अक्षांश के अन्तर पर 4 मिनट के समय का अन्तर आता है।

प्रश्न 5. भारत एक उप-महाद्वीप क्यों कहलाता है? भारतीय उप-महाद्वीप में कौन-कौन से देश सम्मिलित हैं?

उत्तर—एक बड़ी एवं विशिष्ट भौगोलिक इकाई जो शेष महाद्वीप से एक स्पष्ट भिन्नता रखती हो उसे उपमहाद्वीप कहते हैं। हिमालय पर्वत भारत को शेष एशिया से स्पष्ट भिन्नता प्रदान करता है। इसीलिए भारत को प्रायः उप महाद्वीप कहा जाता है। भारतीय उप महाद्वीप में भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा मालदीव आदि देश सम्मिलित हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत का अक्षांशीय और देशान्तरीय विस्तार लगभग है किन्तु किलोमीटर में लम्बाई में अन्तर है, क्यों?

उत्तर—भारत का उत्तर-दक्षिण अक्षांशीय विस्तार 30° है, लगभग इतना ही इसका पूर्व-पश्चिम देशान्तरीय विस्तार है। परन्तु जब इस विस्तार को किलोमीटर में मापा जाता है तो वह बराबर नहीं होता अर्थात् देश का पूर्व-पश्चिम विस्तार लगभग

2933 किलोमीटर और उत्तर-दक्षिण विस्तार लगभग 3214 किलोमीटर है। इसका कारण यह है कि देशान्तर रेखाएँ अक्षांश रेखाओं की भाँति समान्तर नहीं होती हैं। सभी देशान्तर रेखाएँ ध्रुवों पर आकर परस्पर मिल जाती हैं। जैसे-जैसे विषुवत् रेखा से दूर होते जाते हैं, देशान्तर रेखाओं के बीच की दूरी घटती जाती है। इसीलिए भारत का पूर्व-पश्चिम विस्तार (किलोमीटर में) उत्तर-दक्षिण विस्तार से कम रह जाता है।

प्रश्न 2. भारतीय मानक समय क्या है? अरुणाचल और गुजरात के समय में दो घण्टे का अन्तर क्यों है?

उत्तर—भारत या अन्य किसी भी देश के लिए मानक मध्याह्न रेखा की नितान्त आवश्यकता होती है, इसके निम्नलिखित कारण महत्वपूर्ण हैं—

भारत या अन्य किसी भी देश के लिए एक मानक समय के निर्धारण की आवश्यकता होती है, अन्यथा देश के विभिन्न स्थानों की घड़ी में अलग-अलग समय होगा जिससे अनेक प्रकार की व्यावहारिक समस्याएँ उत्पन्न होंगी। इसलिए प्रत्येक देश में समय निर्धारण (मानक समय) के लिए मानक मध्याह्न रेखा का निर्धारण आवश्यक है।

किसी देश के देशान्तरीय विस्तार के मध्य की रेखा को मानक मध्याह्न रेखा माना जाता है।

भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° देशान्तरों (68°70' से 97°25' पूर्व) के मध्य व्याप्त है। अत: 82°30' देशान्तर रेखा जो इन रेखाओं के मध्य में स्थित है तथा इलाहाबाद जिले से होकर गुजरती है, को भारत की मानक मध्याह्न रेखा माना गया है।

हम जानते हैं कि पृथ्वी अपनी धुरी पर 24 घण्टे (24×60 मिनट) में एक चक्कर लगाती है। जैसा कि हम जानते हैं कि 360° देशान्तर रेखाएँ हैं अत: दो पास-पास स्थित देशान्तर रेखाओं के मध्य 4 मिनट के समय का अन्तर होगा। गुजरात और अरुणाचल प्रदेश के बीच 30° देशान्तर का अन्तर है। अत: दोनों स्थानों के समय में अन्तर होगा—

$30 \times 4 = 120$ मिनट = 2 घण्टे

अत: अरुणाचल एवं गुजरात के समयों में 2 घण्टे का अन्तर होगा।

प्रश्न 3. कन्याकुमारी में दिन व रात की अवधि में अन्तर मुश्किल से ही अनुभव किया जाता है किन्तु कश्मीर में ऐसा नहीं है?

उत्तर—देश का उत्तर-दक्षिण विस्तार भारत के विभिन्न भागों में दिन-रात की लम्बाई में अन्तर डालता है। कन्याकुमारी (लगभग 8° उत्तर अक्षांश) भूमध्य रेखा के निकट है। यहाँ दिन-रात लगभग समान अवधि के होते हैं, इसी कारण कन्याकुमारी में दिन व रात की अवधि में अन्तर मुश्किल से ही अनुभव किया जाता है। परन्तु कश्मीर (लगभग 37° उत्तर अक्षांश) भूमध्य रेखा से दूर स्थित है। यहाँ सारे वर्ष सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं, परिणामस्वरूप यहाँ दिन और रात की अवधि में 5 घण्टे का अन्तर होता है। पृथ्वी के अक्ष के झुकाव के कारण भी भूमध्य रेखा से दूर स्थित भागों में ग्रीष्म काल में दिन की अवधि रात से अधिक होती है।

प्रश्न 4. भारत की समुद्र तटीय सीमा लम्बी है जो कि लाभप्रद है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्राय:द्वीप भारत तीन ओर से सागरों से घिरा हुआ है। इसकी पूर्वी और पश्चिमी तट रेखाएँ न केवल सपाट व विस्तृत हैं। इसकी तट रेखाओं की लम्बाई लगभग 3100 किमी है। इतनी बड़ी लम्बाई पर अनेक महत्वपूर्ण पत्तन भी स्थित हैं। ये पत्तन भारत को अतिरिक्त व्यापारिक लाभ उपलब्ध कराते हैं। भारत का विदेशी व्यापार अधिकतर जल मार्ग द्वारा ही होता है। हिन्द महासागर के शीर्ष पर स्थित होने के कारण इसको पश्चिम में अफ्रीका तथा पश्चिमी एशिया के देशों, पूर्व में दक्षिण पूर्वी देशों तथा आस्ट्रेलिया के साथ जल मार्ग से आवागमन एवं व्यापार करने का लाभ मिला हुआ है। केन्द्रीय स्थिति के कारण ही पूर्व से पश्चिम तथा पश्चिम से पूर्व जाने वाले सभी जलयान भारत से होकर ही जाते हैं।

●●

2 भारत का भौतिक स्वरूप

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

(i) एक स्थलीय भाग जो तीन ओर से समुद्र से घिरा हो—

(क) तट (ख) प्रायद्वीप

(ग) द्वीप (घ) इनमें से कोई नहीं।

(ii) भारत के पूर्वी भाग में म्यांमार की सीमा का निर्धारण करने वाले पर्वतों का संयुक्त नाम—

(क) हिमालय (ख) पूर्वांचल

(ग) उत्तरांचल (घ) इनमें से कोई नहीं।

(iii) गोवा के दक्षिण में स्थित पश्चिम तटीय पट्टी—

(क) कोरोमण्डल (ख) कन्नड़

(ग) कोंकण (घ) उत्तरी सरकार।

(iv) पूर्वी घाट का सर्वोच्च शिखर—

(क) अनाई मुडी (ख) महेंद्रगिरी

(ग) कंचनजंगा (घ) खासी।

उत्तर—(i) (ख), (ii) (ख), (iii) (ख), (iv) (ख)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए—

(i) भूगर्भीय प्लेटें क्या हैं?

उत्तर—भूगर्भीय प्लेट स्थलमंडल का वह भाग है जो सघन अर्धतरल चट्टानों के ऊपर तैरती रहती हैं। इसके दो प्रकार होते हैं—महाद्वीपीय प्लेट एवं महासागरीय प्लेट।

(ii) आज के कौन-से महाद्वीप गोंडवाना लैंड के भाग थे?

उत्तर—आज के निम्नलिखित महाद्वीप गोंडवाना लैंड के भाग थे—

(1) ऑस्ट्रेलिया, (2) अफ्रीका, (3) दक्षिण अमेरिका एवं (4) एशिया।

(iii) 'भाबर' क्या है?

उत्तर—नदियाँ पर्वतों से नीचे उतरते समय शिवालिक की ढाल पर 8 से 16 किमी की चौड़ी पट्टी में गुटिका का निक्षेपण करती हैं। इसे 'भाबर' कहते हैं।

(iv) हिमालय के तीन प्रमुख विभागों के नाम उत्तर से दक्षिण के क्रम में बताइए।

उत्तर—उत्तर से दक्षिण के क्रम में हिमालय के तीन प्रमुख विभाग निम्नलिखित हैं—

1. आंतरिक हिमालय अथवा हिमाद्रि
2. निम्न हिमालय अथवा हिमाचल
3. बाहरी हिमालय अथवा शिवालिक।

(v) अरावली और विंध्याचल की पहाड़ियों में कौन-सा पठार स्थित है?

उत्तर—अरावली और विंध्याचल की पहाड़ियों में मालवा का पठार स्थित है।

(vi) भारत के उन द्वीपों के नाम बताइए जो प्रवाल भित्ति के हैं।

उत्तर—लक्षद्वीप द्वीप समूह प्रवाल भित्ति के हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए—
(i) अपसारी तथा अभिसारी भूगर्भीय प्लेटें
उत्तर—

क्र०सं०	अपसारी भूगर्भीय प्लेटें	अभिसारी भूगर्भीय प्लेटें
1.	प्लेटों का एक-दूसरे से दूर हटना प्लेटों का अपसरण कहलाता है।	प्लेटों का एक-दूसरे के नजदीक आना प्लेटों का अभिसरण कहलाता है।
2.	अपसरण से भ्रंशण होता है।	अभिसरण से प्लेटों में टक्कर होती है और वे टूटती हैं।
3.	यह भूपर्पटी को अलग-अलग टुकड़ों में बाँट देता है।	इसमें एक प्लेट के दूसरी के नीचे घुस जाने से भूपर्पटी में वलन पड़ता है।
4.	उदाहरण—मध्य-अटलांटिक रिज एवं अफ्रीका की भ्रंश घाटी का निर्माण अपसरण के कारण हुआ।	उदाहरण—इंडो-ऑस्ट्रेलियन प्लेट के यूरेशियन प्लेट से टकराने के कारण हिमालय एवं पश्चिम एशिया की पर्वतीय शृंखलाओं का विकास हुआ।

(ii) बांगर और खादर
उत्तर—

क्र०सं०	बांगर	खादर
1.	उत्तरी मैदान के पुरातन जलोढकों को बांगर कहते हैं।	बाढ़ के मैदानों के नवीन जलोढ़ को खादर कहते हैं।
2.	ये नदियों के बाढ़ वाले मैदान के ऊपर स्थित हैं और वेदिका जैसी आकृति प्रदर्शित करते हैं। इस क्षेत्र की मृदा में चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं, जिन्हें कंकड़ कहते हैं।	हर वर्ष इनका पुनर्निर्माण होता है, इसलिए ये उपजाऊ होते हैं और गहन खेती के लिए उपयुक्त होते हैं।

(iii) पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट
उत्तर—

क्र०सं०	पूर्वी घाट	पश्चिमी घाट
1.	पूर्वी घाट की औसत ऊँचाई 600 मी है।	पश्चिमी घाट की औसत ऊँचाई 900-1,600 मी है।
2.	पूर्वी घाट बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों द्वारा खंडित, अनियमित एवं कटा-फटा है।	पश्चिमी तट के समानांतर चलते हुए, पश्चिमी घाट बेहद समानता प्रदर्शित करता है। ये निरंतरता लिए हुए है और इन्हें दर्रों से होकर ही पार किया जा सकता है।
3.	महेंद्रगिरी, (1,500 मी) पूर्वी घाट का सर्वोच्च पर्वत शिखर है।	सबसे ऊँचे शिखरों में अनाईमुडी (2,695 मी) तथा डोडा बेटा (2,633 मी) सम्मिलित हैं।
4.	पूर्वी घाट में वर्षा बहुत कम होती है।	वर्षा वाहक आर्द्र पवनों को रोककर पश्चिमी घाट, पर्वतीय वर्षा का कारण बनता है।

प्रश्न 4. बताइए हिमालय का निर्माण कैसे हुआ था?

उत्तर—संवहनीय धाराओं ने गोंडवाना लैंड की भूपर्पटी को कई टुकड़ों अथवा प्लेटों में तोड़ दिया और इस प्रकार इंडो-ऑस्ट्रेलियन प्लेट गोंडवाना भूमि से अलग होने के पश्चात् उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होने लगी। उत्तर दिशा की ओर प्रवाह के परिणामस्वरूप यह प्लेट अपने से अधिक विशाल प्लेट, यूरेशियन प्लेट से टकरायी। इस टकराव के कारण इन प्लेटों के बीच स्थित 'टेथिस' भू-अभिनति के कारण अवसादी चट्टान वलित होकर हिमालय एवं पश्चिम एशिया की पर्वतीय शृंखलाओं के रूप में विकसित हो गए।

प्रश्न 5. भारत के प्रमुख भू-आकृतिक विभाग कौन-से हैं? हिमालय क्षेत्र तथा प्रायद्वीप पठार के उच्चावच लक्षणों में क्या अंतर है?

उत्तर—भारत के प्रमुख भू-आकृतिक विभाग निम्नलिखित हैं—

(i) हिमालय पर्वत शृंखला, (ii) उत्तरी मैदान,
(iii) प्रायद्वीपीय पठार, (iv) भारतीय मरुस्थल,
(v) तटीय मैदान, (vi) द्वीप समूह।

हिमालय क्षेत्र तथा प्रायद्वीप पठार के उच्चावच लक्षणों में निम्नलिखित अन्तर हैं—

क्र०सं०	हिमालय क्षेत्र	प्रायद्वीप पठार
1.	हिमालय को उत्तर से दक्षिण की ओर तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं— (i) आंतरिक हिमालय अथवा हिमाद्रि, (ii) हिमाचल अथवा निम्न हिमालय, (iii) शिवालिक।	प्रायद्वीपीय पठार के दो मुख्य भाग हैं— (i) मध्य उच्च भूमि, (ii) दक्कन का पठार।
2.	हिमालय में ऊँचे शिखर, गहरी घाटियाँ और तेज बहने वाली नदियाँ हैं।	इस पठारी भाग में चौड़ी एवं छिछली घाटियाँ तथा गोलाकार पहाड़ियाँ हैं।

प्रश्न 6. भारत के उत्तरी मैदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर—उत्तरी मैदान या उत्तरी भारत का विशाल मैदान, उपजाऊ जलोढ़ मैदान का एक अच्छा उदाहरण है। इसका निम्न प्रकार वर्णन कर सकते हैं—

(1) यह मैदान उत्तर में हिमालय और दक्षिण में स्थित प्रायद्वीपीय पठार के मध्य स्थित है।

(2) यह उत्तर में हिमालय से और दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार से आने वाली नदियों द्वारा लाए गए महीन जलोढ़क द्वारा निर्मित है। उच्चावच में बहुत कम विषमताओं वाला यह लगभग समतल भू-भाग है।

(3) इसका विस्तार 7 लाख वर्ग किमी के क्षेत्र में है। यह मैदान लगभग 2,400 किमी लम्बा एवं 240 से 320 किमी चौड़ा है।

(4) यह मैदान तीन प्रमुख नदी प्रणालियों—सिंधु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र तथा इनकी सहायक नदियों से बना है।

(5) इसकी उपजाऊ मृदा, उपयुक्त जलवायु तथा पर्याप्त जलापूर्ति इसे कृषि के लिए आदर्श बनाती है।

(6) आकृतिक भिन्नता के आधार पर उत्तरी मैदान को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—(i) भाबर, (ii) तराई, (iii) बांगर, (iv) खादर।

प्रश्न 7. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए—

(i) मध्य हिमालय

उत्तर—(1) मध्य हिमालय का सर्वाधिक हिस्सा असम में है।

(2) इन शृंखलाओं का निर्माण मुख्यत: अत्यधिक संपीड़ित एवं परिवर्तित शैलों से हुआ है।

(3) इनकी ऊँचाई 3,700 मीटर से 4,500 मीटर के बीच एवं औसत चौड़ाई 50 किलोमीटर है।

(4) पीर पंजाल शृंखला सबसे लम्बी तथा सबसे महत्वपूर्ण शृंखला है। धौलाधार एवं महाभारत शृंखलाएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

(5) इसी शृंखला में कश्मीर की घाटी एवं हिमाचल के कांगड़ा एवं कुल्लू की घाटियाँ स्थित हैं।

(6) धर्मशाला, डलहौजी, शिमला, नैनीताल, मसूरी, दार्जिलिंग आदि कई पर्वतीय नगर भी इसके निचले भागों में स्थित हैं।

(ii) मध्य उच्च भूमि

उत्तर—(1) नर्मदा नदी के उत्तर में प्रायद्वीपीय पठार का वह भाग जो कि मालवा के पठार के अधिकांश भागों पर फैला है, मध्य उच्च भूमि के नाम से जाना जाता है।

(2) इस क्षेत्र में बहने वाली नदियाँ—चम्बल, सिंधु, बेतवा एवं केन दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर बहती हैं।

(3) मध्य उच्च भूमि पश्चिम में चौड़ी परन्तु पूर्व में संकीर्ण है।

(4) इस पठार के पूर्वी विस्तार को स्थानीय रूप से बुंदेलखंड एवं बघेलखंड के नाम से जाना जाता है।

(5) इसके और पूर्व के विस्तार को दामोदर नदी द्वारा अपवाहित छोटा-नागपुर पठार दर्शाता है।

(iii) भारत के द्वीप समूह

उत्तर—लक्षद्वीप—

(1) यह केरल के मालाबार तट के पास स्थित है।

(2) द्वीपों का यह समूह छोटे प्रवाल द्वीपों से बना है।

(3) यह 32 वर्ग किमी के छोटे-से क्षेत्र में फैला है।
(4) कावारत्ती द्वीप लक्षद्वीप का प्रशासनिक मुख्यालय है।
(5) इस द्वीप पर पादप एवं जंतु के बहुत से प्रकार पाए जाते हैं।
(6) पिटली द्वीप, जहाँ मनुष्य का निवास नहीं है, वहाँ एक पक्षी अभयारण्य है।

अंडमान निकोबार द्वीप समूह—

(1) ये द्वीप बंगाल की खाड़ी में उत्तर से दक्षिण की तरफ फैले द्वीप हैं।
(2) ये द्वीप समूह आकार में बड़े, संख्या में बहुल एवं बिखरे हुए हैं।
(3) इन द्वीप समूह को दो भागों में विभाजित किया गया है—उत्तर में अंडमान एवं दक्षिण में निकोबार।
(4) इन द्वीप समूहों में पाए जाने वाले पादप एवं जंतुओं में बहुत अधिक विविधता है।
(5) ये द्वीप विषुवत् वृत्त के समीप स्थित हैं एवं यहाँ की जलवायु विषुवतीय है तथा ये घने जंगलों से आच्छादित हैं।

मानचित्र कार्य

भारत के रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को दिखाइए—

(i) पर्वत शिखर—के 2, कंचनजंगा, नंगा पर्वत, अनाईमुडी।

(ii) पठार—शिलांग, छोटा नागपुर, मालवा एवं बुंदेलखंड।

(iii) थार मरुस्थल, पश्चिमी घाट, लक्षद्वीप समूह, गंगा-यमुना दोआब एवं कोरोमंडल तट।

उत्तर—

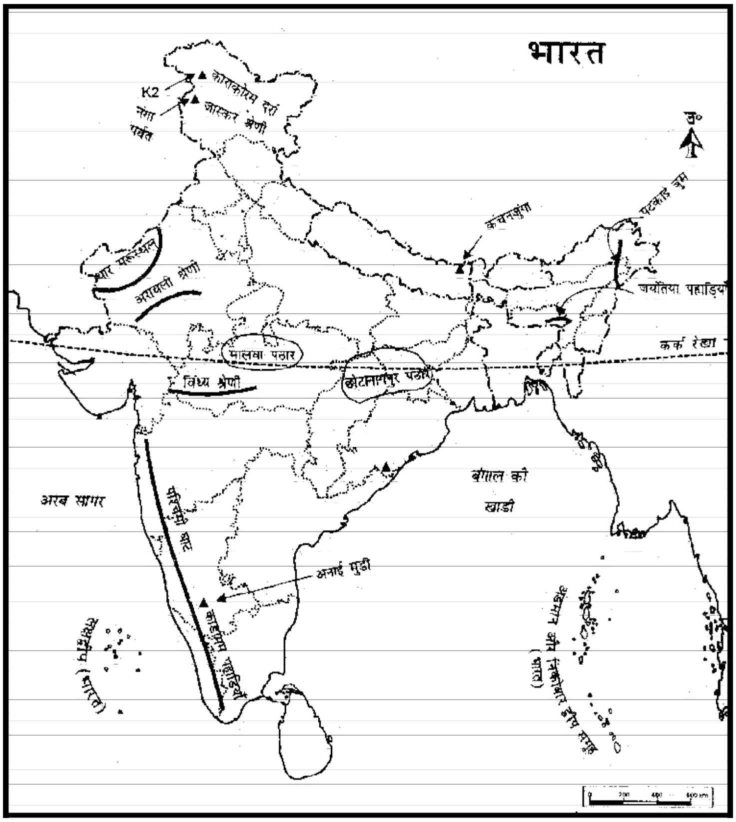

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हिमालय का उत्तर-पूर्वी भाग किस नाम से जाना जाता है?
(क) हिमाचल (ख) हिमाद्रि (ग) शिवालिक (घ) पूर्वांचल।

2. तीन ओर से समुद्र से घिरी भूमि क्या कहलाती है?
(क) द्वीप (ख) प्रायद्वीप (ग) दर्रा (घ) पहाड़ी।

3. निम्न हिमालय व शिवालिक के मध्य स्थित अनुदैर्ध्य घाटियाँ क्या कहलाती हैं?
(क) घाटियाँ (ख) रेत के टीले (ग) पहाड़ियाँ (घ) शृंखला।

4. पूर्वी घाट पर सबसे ऊँचा शिखर कौन सा है?
(क) अनाई मुडी (ख) कंचनजंगा (ग) महेन्द्रगिरी (घ) डोडाबेट्टा।

5. पश्चिमी घाट पर सबसे ऊँचा शिखर कौन सा है?
(क) अनाई मुडी (ख) डोडाबेट्टा (ग) महेन्द्रगिरी (घ) खासी।

6. प्राचीनतम भूमि किसका हिस्सा है?
(क) अंगारालैण्ड (ख) गोंडवानालैण्ड (ग) पैन्जिया (घ) इनमें से कोई नहीं।

7. हिमाचल की सबसे लम्बी शृंखला कौन सी है?
(क) पीर पंजाल (ख) धौलाधार (ग) गोडवानालैण्ड (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. बरकान क्या हैं?
(क) अनुदैर्ध्य रेत के टीले (ख) अनुप्रस्थ रेत के टीले
(ग) अर्द्धचन्द्राकार रेत के टीले (घ) इनमें से कोई नहीं।

9. भांगर क्या है?
(क) उत्तरी मैदान की प्राचीन जलोढ़ मिट्टी जिसमें कंकड़ होते हैं
(ख) बाढ़ के मैदानों की नव जलोढ़ मिट्टी
(ग) उपजाऊ मिट्टी (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. विश्व का सबसे बड़ा नदियों से घिरा आवासीय द्वीप माजुली कहाँ स्थित है?
(क) गंगा पर (ख) ब्रह्मपुत्र पर (ग) महानदी पर (घ) कृष्णा नदी पर।

11. प्रवाल द्वीप क्या हैं?
(क) वर्गाकार भित्तियाँ (ख) त्रिकोणाकार भित्तियाँ
(ग) गोलाकार भित्तियाँ (घ) इनमें से कोई नहीं।

12. निम्न में से कौन-सा पूर्वी समुद्रतटीय मैदान का एक हिस्सा है?
(क) कन्नड़ मैदान (ख) मालाबार (ग) कोरोमंडल (घ) कोंकण।

13. सिन्धु की दो सहायक नदियाँ कौन सी हैं?
(क) रावी व घाघरा (ख) सतलज व यमुना (ग) झेलम व चेनाब (घ) व्यास व दामोदर।

14. लक्षद्वीप द्वीप समूह किससे निर्मित है?
(क) प्रवाल द्वीप समूह (ख) नदीय द्वीप समूह
(ग) अंतः समुद्रीय पर्वतों के उभरे हिस्से (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. थाल, भोर व पाल घाट कहाँ स्थित हैं?
(क) पूर्वी घाट (ख) पश्चिमी घाट (ग) हिमालय (घ) जैन्तिया पहाड़ियाँ।

16. जब कुछ विवर्तनी प्लेट एक-दूसरे से दूर हटती हैं तो प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धान्त के अनुसार क्या बनता है?
(क) केन्द्राभिमुख सीमा (ख) विभिन्न सीमाएँ
(ग) परिवर्तित सीमाएँ (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी की सतह (आवरण) कितनी प्लेटों से निर्मित है?
(क) 3 (ख) 5 (ग) 7 (घ) 10.

18. लूनी नदी अकेली किस क्षेत्र से होकर बहती है?
(क) समुद्र तटीय मैदान (ख) महादेव पहाड़ियाँ
(ग) केन्द्रीय उच्च भूमि (घ) भारत का रेगिस्तानी क्षेत्र।

[**उत्तर—1.** (ख), **2.** (ख), **3.** (ख), **4.** (ग), **5.** (क), **6.** (क), **7.** (ग), **8.** (क), **9.** (ख), **10.** (ग), **11.** (ग), **12.** (ग), **13.** (क), **14.** (ख), **15.** (ख), **16.** (ग), **17.** (घ), **18.** (ख)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय भूमि के प्राचीनतम हिस्से का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रायद्वीपीय पठार भारतीय भूमि का प्राचीनतम हिस्सा है।

प्रश्न 2. आज के कौन से महाद्वीप पहले गोंडवानालैण्ड का हिस्सा थे?

उत्तर—एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया।

प्रश्न 3. हिमालय की कौनसी श्रृंखला सर्वाधिक अनवरत श्रृंखला है?

उत्तर—हिमाद्रि या अन्तः हिमालय।

प्रश्न 4. शिवालिक की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—(i) ये हिमालय की बाह्यतम श्रृंखला है जो उत्तरी मैदान की सीमा बनाते हैं।

(ii) ये श्रृंखलाएँ असमेकित सामग्री एवं नदियों द्वारा लाई गई तलछट से निर्मित हैं।

प्रश्न 5. हिमालय की तीन उप-श्रृंखलाएँ कौन सी हैं?

उत्तर—पीर पंजाल, धौलाधार एवं महाभारत।

प्रश्न 6. ज्वारनदमुख क्या है? स्पष्ट कीजिए। ऐसी दो नदियों के नाम लिखिए जो ज्वारनदमुख बनाती हैं?

उत्तर—जब तीव्र गति से बहकर आती नदी समुद्र में एक संकीर्ण दरार से प्रवेश करती है तथा डेल्टा नहीं बनाती है किन्तु सारा गाद व तलछट समुद्र में बहाकर ले जाती है तब इसे ज्वारनदमुख कहते हैं। नर्मदा व तापी नदी ज्वारनदमुख बनाती हैं।

प्रश्न 7. उत्तरी क्षेत्र की नमी व दलदल युक्त बेल्ट को क्या नाम दिया गया है?

उत्तर—तराई क्षेत्र।

प्रश्न 8. दक्षिणी पठार की पर्वत श्रृंखलाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—सतपुड़ा, महादेव, कैमूर एवं मैकाल।

प्रश्न 9. लक्षद्वीप द्वीप समूह के किस द्वीप में पक्षी अभ्यारण्य है?

उत्तर—पिटी द्वीप में।

प्रश्न 10. भू-अभिनति क्या है?

उत्तर—यह एक ऐसी विशेषता है जो पृथ्वी की सतह के मुड़ने से, सामान्यतया प्लेट विवर्तनिकी के कारण बनती है। मोड़ या विसर्प नीचे की ओर होता है।

प्रश्न 11. दक्कन का पठार क्या है?

उत्तर—प्रायद्वीपीय पठार का काली मिट्टी का क्षेत्र दक्कन का पठार कहलाता है।

प्रश्न 12. तीन प्रकार की प्रवाल भित्तियों के नाम लिखिए।

उत्तर—(i) अवरोधक शैलगिरि, (ii) तटीय प्रवालभित्ति, (iii) प्रवाल द्वीप वलय।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पश्चिम से पूर्व की ओर हिमालय के चार भागों के नाम लिखिए।

उत्तर—पश्चिम से पूर्व की ओर हिमालय के चार भागों के नाम निम्नलिखित हैं—

1. पंजाब हिमालय, 2. कुमाऊँ हिमालय, 3. नेपाल हिमालय, 4. असम हिमालय।

प्रश्न 2. प्लेट विवर्तनी क्या है? इसकी तीन गतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारत के विशाल भूभाग का निर्माण विभिन्न भू-गर्भीय कालों के दौरान हुआ है जिसने इसके उच्चावचों को प्रभावित किया है। कुछ प्रमाणों पर आधारित सिद्धान्तों की सहायता से भू-गर्भ शास्त्रियों ने इन भौतिक आकृतियों के निर्माण की व्याख्या करने की कोशिश की है। इसी तरह का एक सर्वमान्य सिद्धान्त **प्लेट विवर्तनिक का सिद्धान्त** है। इस सिद्धान्त के अनुसार—पृथ्वी की ऊपरी भू-पर्पटी सात बड़ी एवं कुछ छोटी प्लेटों से मिलकर बनी हैं। इन प्लेटों में तीन तरह की गतियाँ पायी जाती हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. अपसारी गतियाँ—जब प्लेटें एक-दूसरे से दूर जाती हैं तो अपसारी परिसीमा का निर्माण करती हैं।

2. अभिसारी गतियाँ—जब कुछ प्लेटें एक-दूसरे के निकट आती हैं तो इससे अभिसारी परिसीमा का निर्माण होता है।

3. रूपान्तरित गतियाँ—जब दो प्लेटें एक-दूसरे के निकट आती हैं तब या तो वे टकराकर टूट जाती हैं या एक प्लेट फँसकर दूसरी के नीचे चली जाती है। ये रूपान्तर परिसीमा का निर्माण करती है।

प्रश्न 3. शिवालिक व महान हिमालय की संरचना व ऊँचाई के आधार पर तुलना कीजिए।

उत्तर—शिवालिक हिमालय की बाह्य शृंखला है। इसका विस्तार 10-15 किमी चौड़ाई में है और इसकी ऊँचाई 900 से 1100 मीटर के बीच है जबकि महान हिमालय, हिमालय पर्वत शृंखला के उत्तर की ओर स्थित है। यह सर्वाधिक सतत् शृंखला है जिसमें 6000 मीटर की औसत ऊँचाई वाले सबसे ज्यादा ऊँचे शिखर विद्यमान हैं।

प्रश्न 4. नदी व ग्लेशियर में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—नदी जमीन पर बहने वाली जलीय धाराओं को कहते हैं। इनके जल की गति तेज होती है जबकि ग्लेशियर पहाड़ों पर बहने वाली बर्फ की धाराएँ होती हैं जिनकी गति बहुत धीमी होती है, इन्हें हिमनदी भी कहते हैं।

प्रश्न 5. भावर व तराई क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत के उत्तरी मैदान को भौगोलिक आकृतियों में विविधता के आधार पर चार भागों में विभाजित किया गया है—

भावर व तराई—शिवालिक की ढाल पर नदियाँ पर्वतों से नीचे उतरते समय 8 से 16 किमी की चौड़ी पट्टी में गुटिका का निक्षेपण करती है। यह भावर कहलाती है। इस भावर पट्टी में सभी सरिताएँ विलुप्त हो जाती हैं। इस पट्टी के दक्षिण में ये सरिताएँ व नदियाँ फिर से निकल आती हैं तथा नम व दलदली क्षेत्र का निर्माण करती हैं। जिसे तराई के नाम से जाना जाता है। यह वन्य प्राणियों से भरा घने जंगलों वाला क्षेत्र है। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय दुधवा पार्क स्थित है।

प्रश्न 6. हिमालय को युवा वलित पर्वत कहा जाता है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हिमालय का निर्माण अन्य पर्वत शृंखलाओं के बाद में हुआ है क्योंकि इसकी ऊँची पर्वत चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और तेज गति वाली नदियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि यह एक युवा वलित पर्वत है जो सिन्धु नदी से ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला है।

प्रश्न 7. पूर्वांचल पर्वत क्या है?

उत्तर—ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय की सर्वाधिक पूर्वी सीमा का निर्माण करती है। दिहांग महाखड्ड के पश्चात् हिमालय दक्षिण दिशा की ओर एक तीखे मोड़ का निर्माण करता है जिसके परिणामस्वरूप यह भारत की पूर्वी सीमा के साथ फैल जाती है। इसको पूर्वांचल या पूर्वी पहाड़ियों या पर्वत शृंखलाओं के नाम से जानते हैं। ये पहाड़ियाँ बलुआ पत्थर की होती हैं तथा ये पहाड़ियाँ उत्तर-पूर्वी राज्यों से होकर गुजरती हैं। ये सघन वन के क्षेत्र हैं जो समानान्तर शृंखलाओं एवं घाटियों के रूप में विस्तृत हैं। पूर्वांचल में नागा, पटकाई, मणिपुर एवं मिजो पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं।

प्रश्न 8. रेगिस्तानी क्षेत्र की स्थलाकृति के बारे में लिखिए। इस क्षेत्र से प्रवाहित होने वाली एकमात्र नदी का नाम लिखिए।

उत्तर—अरावली पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर थार का मरुस्थल स्थित है। थार मरुस्थल का विस्तार लगभग 1,03,04 वर्ग किमी है। भारत का यह पश्चिमोत्तर भाग 644 किमी लम्बा और 160 किमी चौड़ा है। यह बालू के टिब्बों से ढका एक तरंगित मैदान है। इस क्षेत्र में प्रति वर्ष 150 मिमी से भी कम वर्षा होती है। इस शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र में वनस्पति बहुत कम है। वर्षा ऋतु में ही कुछ सरिताएँ दिखती हैं और उसके बाद वे बालू में ही विलीन हो जाती हैं। पर्याप्त जल नहीं मिलने से वे समुद्र तक नहीं पहुँच पाती हैं। केवल 'लूनी' ही इस क्षेत्र की सबसे बड़ी नदी है।

बरखान (अर्द्धचन्द्राकार बालू का टीला) का विस्तार बहुत अधिक क्षेत्र पर होता है, लेकिन लम्बवत् टीले भारत-पाकिस्तान सीमा के समीप प्रमुखता से पाए जाते हैं। जैसलमेर में बरखान के समूह देखे जा सकते हैं।

प्रश्न 9. सुन्दर वन एवं दक्कन के पठार की रचना कैसे हुई?

उत्तर—सुन्दर वन डेल्टा का निर्माण गंगा द्वारा लाई मिट्टी से हुआ है। यह गंगा के मुहाने पर स्थित है। दक्कन के पठार का निर्माण पुराने क्रिस्टलीय आग्नेय तथा रूपान्तरित शैलों से बना है। यह गोंडवाना भूमि के टूटने एवं अपवाह के कारण बना था तथा यही कारण है कि यह प्राचीनतम् भू-भाग का हिस्सा है। इस पठारी भाग में चौड़ी तथा तिरछी घाटियाँ एवं गोलाकार पहाड़ियाँ हैं।

प्रश्न 10. अरावली एवं विन्ध्य पर्वत शृंखला के मध्य स्थित पठार का नाम लिखिए। इसकी कोई दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—अरावली एवं विन्ध्य पर्वत शृंखला के मध्य दक्कन का पठार स्थित है। इसकी दो विशेषताएँ निम्न हैं—(1) यहाँ काली मिट्टी पायी जाती है जो कपास आदि की फसलों के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

(2) इन पठारों में प्राकृतिक सम्पदाओं का भण्डार है।

प्रश्न 11. हम उत्तरी मैदान में बहने वाली नदियों को महत्व देते हैं। क्यों?

उत्तर—उत्तरी मैदान में बहने वाली नदियाँ उत्तर भारत में सिंचाई का मुख्य साधन हैं। नदियों से नहरें निकल कर सिंचाई की जाती हैं। ये नदियाँ पेय जल का प्रमुख स्रोत हैं। कई नदियाँ जल यातायात का भी प्रमुख साधन हैं। इसी कारण मैदान में बहने वाली नदियों को विशेष महत्व दिया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पृथ्वी की प्रमुख स्थलाकृतियों की संरचना के लिए उत्तरदायी किसी एक कारण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्लेट विवर्तन सिद्धान्त—कुछ प्रमाणों पर आधारित सिद्धान्तों की सहायता से भूगर्भशास्त्रियों ने इन भौतिक आकृतियों के निर्माण की व्याख्या का प्रयास किया है। इसी प्रकार का एक सर्वमान्य सिद्धान्त, प्लेट विवर्तनिक का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार, पृथ्वी की ऊपरी पर्पटी का निर्माण सात बड़ी और कुछ छोटी प्लेटों से हुआ है।

प्लेटों की गति के कारण प्लेटों के अन्दर एवं ऊपर की ओर स्थित महाद्वीपीय शैलों में दबाव उत्पन्न होता है। इसके परिणामस्वरूप वलन, भ्रंशीकरण तथा ज्वालामुखीय क्रियाएँ होती हैं। सामान्य तौर पर इन प्लेटों की गतियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है। कुछ प्लेटें एक-दूसरे के पास आकर अभिसारित परिसीमा का निर्माण करती हैं, जबकि कुछ प्लेटें एक-दूसरे से दूर जाकर अपसरित परिसीमा का निर्माण करती हैं। जब दो प्लेटें एक-दूसरे के निकट आती हैं तब या तो वे टकराकर टूट सकती हैं अथवा एक प्लेट फिसलकर दूसरी प्लेट के नीचे जा सकती हैं। कभी-कभी वे एक-दूसरे के साथ क्षैतिज दिशा में भी गति कर सकती हैं तथा रूपान्तर परिसीमा बनाती हैं। इन प्लेटों में लाखों वर्षों से हो रही गति के परिणामस्वरूप महाद्वीपों की स्थिति और आकार में परिवर्तन हुआ है। भारत की वर्तमान स्थलाकृति का विकास भी इस प्रकार की गतियों से प्रभावित हुआ है।

सबसे पुराना भू-भाग (अर्थात् प्रायद्वीपीय भाग) **गोंडवाना भूमि** का एक हिस्सा था। गोंडवाना भू-भाग के विशाल क्षेत्र के अन्तर्गत भारत, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका एवं अंटार्कटिक के क्षेत्र सम्मिलित थे। भू-पर्पटी को संवहनीय धाराओं के अनेक टुकड़ों में विभक्त कर दिया। जिसके कारण भारत-ऑस्ट्रेलिया की प्लेट गोंडवाना भूमि से पृथक् होने के बाद उत्तर दिशा की तरफ प्रवाहित होने लगी। उत्तर दिशा की तरफ प्रवाह के कारण ये प्लेट अपने से अधिक विशाल प्लेट, यूरेशियन प्लेट से टकरायी। इस टकराव के कारण इन दोनों प्लेटों के मध्य स्थित 'टेथिस-भू-अभिनति के अवसादी चट्टान, वलित होकर हिमालय और पश्चिम एशिया की पर्वतीय शृंखला के रूप में विकसित हो गए।

'टेथिस' के हिमालय के रूप में ऊपर उठने और प्रायद्वीपीय पठार के उत्तरीय किनारे के नीचे धँसने के परिणामस्वरूप एक विशाल द्रोणी बन गई। समय के साथ-साथ यह बेसिन उत्तर के पर्वतों तथा दक्षिण के प्रायद्वीपीय पठारों से प्रवाहित होने वाली नदियों के अवसादी निक्षेपों द्वारा भर गया। इस तरह जलोढ़ निक्षेपों से बना एक विस्तृत समतल-भू भाग भारत के उत्तरी मैदान के रूप में विकसित हो गया।

हमारे देश की भूमि अत्यधिक भौतिक विभिन्नताएँ प्रदर्शित करती है। भूगर्भीय तौर पर प्रायद्वीपीय पठार पृथ्वी की सतह का प्राचीनतम भाग है। यह भाग भूमि का काफी स्थिर भाग माना जाता था, किन्तु हाल ही में आए भूकम्पों ने इससे गलत सिद्ध कर दिया है। हिमालय और उत्तरी मैदान काफी बाद में निर्मित स्थलाकृतियाँ हैं। भूगर्भ वैज्ञानिकों के अनुसार हिमालय पर्वत एक अस्थिर भाग है। हिमालय की पूरी पर्वत शृंखला एक युवा स्थलाकृति को दिखाती है जिसके अन्तर्गत तेज बहने वाली नदियाँ गहरी घाटियों और ऊँचे शिखर सम्मिलित हैं। उत्तरी मैदानों का निर्माण जलोढ़ निक्षेपों से हुआ है। प्रायद्वीपीय पठार का निर्माण रूपान्तरित एवं आग्नेय शैलों वाली कम ऊँची पहाड़ियाँ तथा चौड़ी घाटियों से हुआ है।

प्रश्न 2. हिमालय के तीन अनुदैर्ध्य विभाजनों को समझाइए।

उत्तर—भारत के उत्तर में लगभग 2,500 किमी की लम्बाई तथा 150 से 400 किमी की चौड़ाई में हिमालय पर्वतीय

प्रदेश का विस्तार है। यह विशाल पर्वतों की प्राचीर पूर्व से पश्चिम दिशा के चाप के आकार में फैली हुई है। इस पर्वतीय प्रदेश का विस्तार लगभग 5 लाख वर्ग किमी के क्षेत्रफल में है। यह वलित पर्वतमाला तीन समानान्तर श्रेणियों में विभाजित की जाती है—(i) महान हिमालय अथवा हिमाद्रि हिमालय, (ii) लघु हिमालय या हिमाचल हिमालय तथा (iii) बाह्य हिमालय या शिवालिक हिमालय।

महान हिमालय—हिमालय की यह पर्वतश्रेणी सबसे ऊँची है, जिसे **हिमाद्रि** या **वृहत्तर हिमालय** भी कहा जाता है। इस पर्वत-श्रेणी की औसत ऊँचाई 6,000 मीटर से अधिक होने के कारण यह वर्ष-भर हिम से आच्छादित रहती है। इस श्रेणी की लम्बाई सिन्धु नदी के मोड़ से ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक 2,400 किमी तथा औसत चौड़ाई 25 किमी है। इस क्षेत्र में **गंगोत्री, जेमू** तथा **मिलाम** जैसे विशाल **हिमनाद** (Glaciers) पाए जाते हैं, जिनकी लम्बाई 20 किमी से भी अधिक है। **माउण्ड एवरेस्ट, कंचनजंघा, मैकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत, गॉडविन-ऑस्टिन, त्रिशूल, बद्रीनाथ, नीलकण्ठ, केदारनाथ** आदि इस क्षेत्र के प्रमुख पर्वत-शिखर हैं। ये सभी पर्वतश्रेणियाँ वर्ष के अधिकांश भाग में हिम से ढकी रहती हैं। इन पर्वतश्रेणियों का निर्माण ग्रेनाइट, नीस, शिस्त आदि कठोर और प्राचीन शैलों से हुआ है। **माउण्ट एवरेस्ट** विश्व की सर्वोच्च पर्वतश्रेणी है, जिसकी ऊँचाई 8,848 मीटर है (नेपाल देश में स्थित)। महान हिमालय में अनेक पर्वत-शिखर 7,500 मीटर से अधिक ऊँचे हैं। यहाँ अनेक दर्रे पाए जाते हैं जिनमें **शिपकिला, थांगला, नीति, लिपूलेख, बुर्जिल, माना, नाथुला** तथा **जैलपला** आदि मुख्य हैं। इन्हीं दर्रों के द्वारा भारत की सीमा के पार जाया जा सकता है। महान हिमालय की पूर्वी सीमा पर ब्रह्मपुत्र तथा पश्चिमी सीमा पर सिन्धु नदियाँ गहरी एवं सँकरी घाटियों से होकर प्रवाहित होती हैं।

(ii) मध्य उच्चभूमि—प्रायद्वीपीय पठार का उत्तरी भाग मध्यवर्ती उच्चभूमि के नाम से प्रसिद्ध है। यह भाग अनेक पठारों, अनाच्छादित पर्वतश्रेणियों तथा कम ऊँची पहाड़ियों द्वारा निर्मित है। यह भाग कठोर आग्नेय शैलों से बना है। मध्य उच्चभूमि का उत्तर-पश्चिमी भाग अरावली पहाड़ियों द्वारा घिरा है। अरावली पहाड़ियाँ प्राचीन वलित पर्वतों के अवशिष्ट हैं जिनका विस्तार उत्तर-पूर्व में दिल्ली तक तथा दक्षिण-पश्चिम में गुजरात तक मिलता है।

मध्यवर्ती उच्चभूमि की दक्षिणी सीमा विन्ध्याचल पर्वतों तथा पूर्वी विस्तार कैमूर पहाड़ियों से निर्धारित होता है। अरावली तथा विन्ध्याचल पर्वतों के बीच में मालवा पठार स्थित है। यह पठार अत्यन्त विस्तृत है। यहाँ चम्बल एवं बेतवा नदियों ने इसे काटकर समतल रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। मध्यवर्ती उच्चभूमि के इस उत्तर-पूर्वी भाग को बुन्देलखण्ड कहते हैं। यहाँ सोन नदी के पूर्व में झारखण्ड का छोटा नागपुर पठार स्थित है जो लावा की क्षैतिज परतों से बना है। इस पठार में भारत के सर्वाधिक खनिज पदार्थ विद्यमान हैं। उच्च भूमि के मध्य भाग में नर्मदा-ताप्ती प्रसिद्ध नदियाँ हैं।

(iii) बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणियाँ—हिमालय की सबसे निचली तथा दक्षिणी पर्वत श्रेणियाँ इसके अन्तर्गत आती हैं, जिन्हें **बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणियाँ** या **उपहिमालय** के नाम से जाना जाता है। यह हिमालय का नवनिर्मित भाग है, जो पंजाब में पोटवार बेसिन से आरम्भ होकर पूर्व में कोसी नदी अर्थात् 87° पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत है। इन पर्वतश्रेणियों का निर्माण-काल बीस लाख वर्ष से 2 करोड़ वर्ष के मध्य माना जाता है। शिवालिक श्रेणियों का निर्माण नदियों द्वारा लाई गई अवसाद में मोड़ पड़ने से हुआ है, इसलिए इन पर अपरदन की क्रियाओं का विशेष प्रभाव पड़ा है। तिस्ता और रायडॉक के निकट 50 किमी की चौड़ाई में इन पहाड़ियों का लोप हो जाता है। इनकी औसत चौड़ाई पश्चिम से 50 किमी और पूरब में मात्र 15 किमी है। ये पर्वत औसत रूप से 600 से 1,500 मीटर तक ऊँचे हैं। इस क्षेत्र में अनेक उपजाऊ तथा समतल विस्तृत घाटियाँ हैं, जिन्हें **दून** कहते हैं; जैसे—देहरादून, पाटलीदून, पूर्वादून, कोटलीदून आदि।

प्रश्न 3. कौन-सी विशेषताएँ प्रायद्वीपीय पठार को हिमालय से पृथक् करती हैं?

उत्तर—विशाल प्रायद्वीपीय पठार भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे प्राचीन भू-भाग है। यह प्रायद्वीपीय पठार प्राचीन एवं कठोर चट्टानों से निर्मित त्रिभुजाकार रूप में स्थित है। यह पठार प्राचीन गोंडवाना लैण्ड का ही एक अंग है। जिसे अपरदन के अनेक कारकों ने काट छाँट दिया है। इस पठार पर अनेके छोटे-छोटे पठार एवं पर्वत दिखाई देते हैं। अनेक नदियों ने इन पठारों को काट-छाँट दिया है। जिससे तंग एवं चौड़ी घाटियों का निर्माण हुआ है। इस पठार के उत्तर-पश्चिमी भाग पर लावा मिट्टी के निक्षेप पाये जाते हैं। इन पठारों पर प्रवाहित होने वाली तीव्रगामी नदियाँ जल-विद्युत उत्पादन के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ रखती हैं। ये पठारी क्षेत्र खनिजों का विपुल भण्डार समेटे हुए हैं। यहाँ कोयला, ताँबा, अभ्रक, बॉक्साइट, क्रोमाइट, चूना, टंगस्टन, क्वार्टज, फेल्सपार, लोहा, सोना, मैंगनीज, पन्ना, जस्ता आदि खनिजों के विपुल भण्डार पाये जाते हैं। ये सभी विशेषताएँ प्रायद्वीपीय पठार को हिमालय से पृथक् करती हैं।

प्रश्न 4. भारत की केन्द्रीय उच्च भूमि (Central Highland) की किन्हीं पाँच विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—केन्द्रीय उच्च भूमि की विशेषताएँ—1. यह विश्व का सबसे पुराना वलित पर्वत माना जाता है। यह हिमालय से भी पुराना पर्वत है।

2. चम्बल, बेतवा और सोन इस भाग की प्रमुख नदियाँ हैं जो उत्तर की ओर (गंगा के मैदान की ओर) बहती हैं। बुन्देल खण्ड पठार को यमुना पार का मैदान कहते हैं।

3. यह ग्रेनाइटी चट्टान की उच्च भूमि है जिसकी ऊँचाई 350 मीटर है। इसमें कई सुन्दर जल-प्रपात मिलते हैं। यहाँ चम्बल, बेतवा और केन नदियों के ग्रेनाइटी सतह पर मिट्टी का निक्षेप कर रखा है।

4. यह भाग ऊँची-ऊँची पर्वत श्रेणियों वाला भू-भाग नहीं है। इस पठार की अधिकतम ऊँचाई 600 मीटर तक है।

5. यह भाग असीमित खनिजों से भरा है। यह भारतीय खनिजों का भण्डार घर कहलाता है। मध्य उच्च भूमि को भारत का मध्यवर्ती पठार भी कहा जाता है।

प्रश्न 5. भारत के दो प्रायद्वीपीय पठार की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रायद्वीपीय पठार—प्रायद्वीपीय पठार एक मेज की आकृति वाला स्थल है जो पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय तथा रूपान्तरित शैलों से बना है। यह गोंडवाना भूमि के टूटने एवं अपवाह के कारण बना था यही कारण है कि यह प्राचीनतम भू-भाग का एक हिस्सा है। इस पठारी भाग में चौड़ी तथा छिछली घाटियाँ एवं गोलाकार पहाड़ियाँ हैं। इस पठार के दो मुख्य भाग हैं—'मध्य उच्चभूमि' तथा 'दक्कन का पठार'।

(i) मध्य उच्चभूमि—दक्षिण भारत के पश्चिमोत्तर (राजस्थान) में अरावली श्रेणी मिलती है। यह अवशिष्ट पर्वत है जिसकी एक शाखा दिल्ली की ओर चली गई है (Delhi Ridge)। अरावली की अधिकतम ऊँचाई अब केवल 1,722 मीटर रह गई है। (आबू-स्थित गुरुशिखर)। यह हिमालय से भी पुराना पहाड़ है तथा इसे विश्व का सबसे पुराना वलित पर्वत माना जाता है। इससे सटे पूर्व भाग में पूर्वी राजस्थान की उच्चभूमि है, जो 500 मीटर तक ऊँची है। इससे पूर्व की ओर बढ़ने पर क्रमशः **बुन्देलखण्ड पठार, बघेलखण्ड पठार** और **छोटानागपुर पठार** मिलते हैं। चम्बल, बेतवा और सोन इस भाग की प्रमुख नदियाँ हैं, जो उत्तर की ओर (गंगा के मैदान की ओर) बहती हैं। बुन्देलखण्ड पठार को यमुना-पार का मैदान भी कहा जाता है, किन्तु यह ग्रेनाइटी चट्टान की उच्चभूमि है जिसकी ऊँचाई 350 मीटर तक है। इसमें कई सुन्दर जलप्रपात मिलते हैं। यहाँ चम्बल, बेतवा और केन नदियों ने ग्रेनाइट सतह पर मिट्टी का निक्षेप कर रखा है। अरावली के दक्षिण से पूर्व की ओर बढ़ने पर **मालवा पठार** मिलता है, जो लावानिर्मित है। इससे पूर्व की ओर बढ़ने पर सीढ़ीनुमा उच्चभूमि मिलती है। यह क्षेत्र **विंध्याचल की पाटभूमि** है जिसमें बालूपत्थरों की प्रधानता है। **विंध्य पर्वत** मध्य प्रदेश के आर-पार चला गया है जिसमें कोई शिखर नहीं मिलता। इसके दक्षिण में उससे सटी नर्मदा घाटी है जिसके बाद **सतपुड़ा** की श्रेणी मिलती है। सतपुड़ा के पूर्वी भाग में महादेव पहाड़ी (1,117 मीटर) है जिससे पूर्व बढ़ने पर मैकाल की पहाडियाँ मिलती हैं इनमें सर्वोच्च चोटी अमरकंटक है जिसकी ऊँचाई 1,036 मीटर है। महादेव पहाड़ी पर ही पंचमढ़ी नगर (1,062 मीटर) स्थित है। मैकाल से पूर्व बढ़ने पर 'छोटानागपुर पठार' आ जाता है। यह पठार रिहन्द नदी से लेकर **राजमहल** की पहाड़ियों तक विस्तृत है। राजमहल पर जुरासिक काल के लावा निक्षेप मिलते हैं। छोटानागपुर पठार के अन्तर्गत राँची, हजारीबाग और कोडरमा के उपपठार सम्मिलित हैं, जहाँ ग्रेनाइट-नाइस चट्टानें मिलती हैं। सबसे ऊँचे राँची पठार की ऊँचाई 600 मीटर है। इसके पश्चिमी भाग में ऊँचाई 1,100 मीटर तक है और यह पात क्षेत्र कहलाता है। छोटानागपुर पठार की प्रमुख नदियाँ सोन, कोयल, दामोदर, बराकर, स्वर्णरेखा और शंख हैं। दामोदर की भ्रंशघाटी इसी में है, जहाँ गोंडवाना काल का कोयला भण्डार उपलब्ध है। कोडरमा की रूपान्तरित चट्टानों में अभ्रक का भण्डार है। छोटानागपुर पठार असीमित खनिजों से भरा है और **भारतीय खनिजों का भण्डारघर** (storehouse of Indian minerals) कहलाता है। सुदूर पूर्व में **मेघालय पठार** है, जहाँ गारो, खाँसी और जयंतिया पहाड़ियाँ मिलती हैं। खासी पहाड़ी का आन्तरिक भाग **शिलांग पठार** के नाम से प्रसिद्ध है। मेघालय की उत्तरी सीमा पर ब्रह्मपुत्र नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। मध्य उच्च भूमि को **भारत का मध्यवर्ती पठार** (the central highlands or plateau of India) भी कहा जाता है।

(ii) दक्कन का पठार—दक्षिण भारत का यह भाग उत्तरी उच्च भूमि की अपेक्षा अधिक ऊँचा और अधिक विस्तृत है। यह अत्यन्त पुरानी, कड़ी और रवेदार परिवर्तित चट्टानों से बना है। उत्तर-पश्चिमी भाग ज्वालामुखी उद्गार से निर्मित लावा प्रदेश (lava region or Deccan Trap) है, जहाँ अनेक चपटे पहाड़ मिलते हैं; जैसे—सतपुड़ा, अजन्ता। **सतपुड़ा** से ही

दक्कन पठार आरम्भ होता है। सतपुड़ा का सबसे ऊँचा भाग धूपगढ़ चोटी (1,350 मीटर) है। **अजंता** पहाड़ ताप्ती के दक्षिण में है, यहाँ बैसाल्ट चट्टानों से बने लावा प्रदेश में रेगड़ या काली मिट्टी (regur of black soil) मिलती है, जो कपास की उपज के लिए बहुत प्रसिद्ध है। अजंता पहाड़ी ताप्ती नदी के भ्रंशक्षेत्र में है जिसके दक्षिण में बालाघाट है। इन दोनों के बीच गोदावरी घाटी है। बालाघाट के दक्षिण में भीमाघाटी है जिसके दक्षिण में कृष्णा का उद्गम क्षेत्र है। यहाँ ताप्ती को छोड़कर सभी नदियाँ दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। दक्कन के पठार का पश्चिमी किनारा भ्रंशन (faulting) के कारण सीधी और खड़ी ढालवाला है, जो **पश्चिमी घाट** बनाता है। पश्चिमी घाट के कई नाम हैं (विभिन्न क्षेत्रों में); यथा—सह्याद्रि पर्वत, नीलगिरी और कार्डेमम पहाड़ियाँ। पश्चिमी घाट का विस्तार ताप्ती नदी से लेकर कन्याकुमारी तक है। दक्षिण की ओर इसकी ऊँचाई बढ़ती जाती है। सबसे अधिक ऊँचाई अनाईमुदी चोटी की है (2.695 मीटर) और यह अनयमलय पहाड़ी में है (केरल राज्यान्तर्गत)। अनाईमुदी ही दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है, जबकि नीलगिरी की सबसे ऊँची चोटी दोदाबेटा की ऊँचाई अपेक्षाकृत कम है (2,670 मीटर)। दक्षिण भारत का सबसे सुन्दर पर्वतीय नगर **ऊटी** (ऊटकमंड या उद्गमंडलम) यहीं स्थित है। पश्चिमी घाट की शिखर रेखा के लिए स्थानीय नाम **घाटमाथा** है। पश्चिमी घाट में तीन महत्वपूर्ण दर्रे (gaps) मिलते हैं—**थालघाट, भोरघाट** और **पालघाट।** इनमें से प्रथम दो महाराष्ट्र राज्य में पड़ते हैं और अन्तिम केरल को तमिलनाडु से मिलाता है।

दक्कन के पठार का दक्षिण-पूर्वी भाग **मुख्य दक्कन प्रदेश** (main Deccan region) कहलाता है, जहाँ **पूर्वी घाट** की पहाड़ियाँ मिलती हैं। पश्चिमी घाट की तरह पूर्वी घाट, शृंखलाबद्ध या अविच्छिन्न नहीं है और इसकी ऊँचाई भी उतनी अधिक नहीं है। पूर्वी घाट का सर्वोच्च शिखर महेंद्रगिरि 1,500 मीटर ऊँचा है। यह ओडिशा राज्य में स्थित है। आन्ध्र प्रदेश के नलामलय, पालकोंडा, वेलीकोंडा तथा तमिलनाडु के पचामलय और शिवराय पूर्वी घाट के ही अंग हैं। पूर्वी घाट के दक्षिण-पश्चिम में ऊटी (उद्गमंडलम) स्थित है जो भव्य पहाड़ी नगर है। प्राचीन नाइस और ग्रेनाइट चट्टानों से बने इस पठार में लाल मिट्टी (red soil) मिलती है, जो अधिक उपजाऊ नहीं होती। यहाँ भूमि की ढाल पूर्व की ओर है जो महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के मार्गों से ज्ञात होती है। दक्षिणी पठार के इस भाग को **तेलंगाना और कर्नाटक या मैसूर पठार** के नाम से भी जाना जाता है। प्रसिद्ध **बाबाबूदन पहाड़ी** (Iron Hill) यहीं पर स्थित है।

प्रायद्वीपीय पठार रत्नगर्भा है। यहाँ लोहा, कोयला, ताँबा, मैंगनीज, अभ्रक, चूनापत्थर, सोना, हीरा इत्यादि खनिज द्रव्य के भण्डार हैं। पहाड़ी भूमि होने के कारण यहाँ वन-वैभव भी मिलता है, किन्तु वनों का विस्तार सीमित क्षेत्र में है। अधिकतर भाग वनविहीन है जिस कारण भूमि भी अनुर्वर है, परन्तु जलविद्युत-उत्पादन में यह अग्रणी रहा है। यहाँ पहाड़ी नदियों से और अधिक जलशक्ति का विकास किया जा सकता है। लावा के विखण्डन से प्राप्त काली मिट्टी के क्षेत्र कपास-उत्पादन के लिए अत्युत्तम सिद्ध हुए हैं। पूर्व और पश्चिम में तटीय मैदान हैं तथा सुदूर दक्षिणी छोर **कन्याकुमारी अन्तरीप** बनाता है।

प्रश्न 6. भारत के दो समुद्र-तटीय मैदानों के नाम लिखिए। इनकी प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—तटीय मैदान—प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व और पश्चिम में (दोनों ओर) समुद्रतटीय मैदान मिलते हैं। ये मैदान बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के किनारे स्थित हैं। स्थिति के अनुसार इनके दो उपविभाग किए जा सकते हैं—(i) पश्चिमतटीय मैदान और (ii) पूर्वतटीय मैदान। भारत की समस्त तटरेखा लगभग 7.5 हजार किमी लम्बी है।

(i) पश्चिमतटीय मैदान—यह पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच में स्थित है। इसका फैलाव उत्तर में खम्भात की खाड़ी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी अन्तरीप तक है (लगभग (1,600 किमी लम्बा और 60 किमी चौड़ा)। कच्छ पहले समुद्र से घिरा हुआ द्वीप था, जो अब आसपास की नदियों द्वारा लाई मिट्टी आदि से जुड़कर प्रायद्वीप बन गया है। उत्तरी खारी मिट्टी वाली दलदल भूमि **बड़ा रन** (Great Rann) और उसके निकट की भूमि **छोटा रन** (Little Rann) के नाम से प्रसिद्ध है। काठियावाड़ के मैदानी क्षेत्र में गिरनार पहाड़ी (1,117 मी) मिलती है। पश्चिमतटीय मैदान का सबसे चौड़ा भाग **गुजरात का मैदान** कहलाता है। उत्तर से गोवा तक यह तटीय मैदान **कोंकण तट** (Konkan Coast) कहलाता है। गोवा से मंगलूर तक के तटीय मैदान को कन्नड़ या कर्नाटक तट और मंगलूर से कुमारी अन्तरीप तक को केरल तट कहते हैं। कर्नाटक तट और केरल तट का संयुक्त नाम **मालाबार तट** (Malabar Coast) है।

पश्चिमतटीय मैदान में नर्मदा और ताप्ती (तापी) दो बड़ी नदियों के मुहाने मिलते हैं, किन्तु वहाँ डेल्टा नहीं बनता (जलोढ़ की कमी और ज्वार-भाटे के प्रभाव के कारण)। यहाँ **ज्वारनदमुख** (estuaries) मिलते हैं। साबरमती, मांडवी,

जुआरी, कालिंदी, सरस्वती, नेत्रवती, पेरियार आदि यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं, जो बहुत छोटी हैं। अधिकतर नदियाँ सागरमग्न घाटियाँ हैं। इस तट पर कांडला, मुम्बई, मार्मागाओ, मंगलूर और कोचीन (कोच्चि) उत्तम प्राकृतिक पत्तन हैं। दक्षिण में खारे पानी की छोटी-छोटी झीलों (लैगून या कयाल) की अधिकता है जिनमें कोचीन की निकटवर्ती **वेम्बानद झील** (Lake Vembanad) उल्लेखनीय है। मालाबार तट पर बालू के ढेर मिला करते हैं।

(ii) पूर्वतटीय मैदान—यह पूर्वी घाट और बंगाल की खाड़ी के बीच में स्थित है। इसका फैलाव उत्तर में महानदीघाटी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक लगभग 1,500 किमी है। इसकी चौड़ाई 150-350 किमी है, विशेषकर महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी के डेल्टाओं में (क्रमशः ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु राज्यों के अन्तर्गत)। इस तटीय मैदान का आधा उत्तरी भाग **गोलकुण्डा तट** या **उत्तरी और दक्षिणी सरकार तट** और आधा दक्षिणी भाग (नेलोर से कन्याकुमारी तक) **कोरोमण्डल तट** (Coromondal coast) कहलाता है।

पूर्वतटीय मैदान से महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी चार बड़ी नदियाँ गुजरती हैं। इस तट पर लैगूनों का विकास भी पाया जाता है। चिल्का और पुलिकट दो प्रमुख झीलें हैं जिनका जल खारा है। भारत में खारे पानी की सबसे बड़ी झील चिल्का है जिसका क्षेत्रफल 780 वर्ग किमी और 1,114 वर्ग किमी के बीच घटता-बढ़ता रहता है। यह ओडिशा में महानदी डेल्टा के दक्षिणी में है। गोदावरी-कृष्णा के डेल्टाओं के बीच कोलेरू झील मिलती है, जो मीठे पानी की झील है। इस तट पर पारादीप, विशाखापट्टनम और चेन्नई पत्तन हैं जिसमें चेन्नई का पोताश्रय कृत्रिम है। दक्षिण में तूतीकोरिन पत्तन भी कृत्रिम पोताश्रय है।

तटीय मैदान ने विदेशी व्यापार में अपार मदद पहुँचाई है। कोलकाता को छोड़कर सभी छोटे-बड़े पत्तन समुद्री तट पर ही स्थित हैं, जो व्यापार के केन्द्र बन गए हैं। देश के भीतरी भागों से वे रेलमार्ग या सड़कमार्ग द्वारा जुड़े हुए हैं। समुद्र की समीपता ने इस प्रदेश के लोगों को साहसी नाविक बनने को प्रेरित किया है। यहाँ समुद्री मछुआरे बहुत मिलते हैं, जो मछली पकड़ने जैसे आर्थिक क्रियाशीलन में लगे हुए हैं। नारियल, गरम मसाले, धान आदि की खेती के लिये ये महत्वपूर्ण स्थल हैं। कई स्थलों पर समुद्री जल से नमक तैयार किया जाता है। पर्यटकों के लिए समुद्रतट बड़े ही आकर्षक रहे हैं और बड़ी संख्या में लोग सैर-सपाटे के लिए यहाँ पहुँचते रहते हैं।

प्रश्न 7. अण्डमान निकोबार द्वीप व लक्षद्वीप समूह की स्थिति व संरचना की तुलना कीजिए।

उत्तर—भारत की मुख्य भूमि से हटकर दो द्वीपसमूह **अंडमान** और **निकोबार द्वीपसमूह** तथा **लक्षद्वीप** भारत के ही अंग हैं। **अंडमान** और **निकोबार** बंगाल की खाड़ी में स्थित हैं। इसके अन्तर्गत 572 द्वीप हैं, जो सागरमग्न पर्वतश्रेणी पर स्थित हैं। इनमें कुछ ज्वालामुखी के उद्गार से बने हैं। भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के बैरेन द्वीप पर स्थित है। इन द्वीपों का फैलाव 350 किमी से भी अधिक दूरी तक है, पर इनमें कुछ की ही लम्बाई 60 से 100 किमी है। उत्तरी द्वीपों को अण्डमान और दक्षिणी द्वीपों को निकोबार कहा गया है। पोर्ट ब्लेयर इनका प्रशासनिक मुख्यालय है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह घने वनों से आच्छादित हैं। ये वन विषुवतीय प्रकार के हैं तथा इनमें वन्य जातियों का आवास मिलता है। निकोबार की अपेक्षा अंडमान में पाँच गुना अधिक द्वीप हैं। केरल के मालाबार तट के पास **लक्षद्वीप** के अन्तर्गत 27 द्वीप हैं जिनमें से 11 द्वीपों पर आबादी है। पहले इनको लकादीव, निमीकॉय तथा अमीनदीव के नाम से जाना जाता था। वर्ष 1973 में इनका नाम लक्षद्वीप रखा गया। यह 32 वर्ग किमी के छोटे-छोटे क्षेत्र में फैला है। ये द्वीप समुद्री जीव मूँगे (प्रवाल coral) के निक्षेप से बने हैं। इनमें कुछ द्वीपों की आकृति घोड़े की नाल जैसी है जिन्हें **प्रवालद्वीपवलय** (atoll) कहते हैं। स्पष्ट है कि दोनों द्वीपसमूहों की रचना दो भिन्न तरीकों से हुई है। लक्षद्वीप केरल के निकट अरब सागर में स्थित है। पिटली द्वीप प्रसिद्ध पक्षी-अभयारण्य है। यहाँ मनुष्यों का निवास नहीं है अर्थात् यह स्थल निर्जन है। लक्षद्वीप का प्रशासनिक मुख्यालय कवारत्ती है। लक्षद्वीप सबसे दक्षिणी द्वीप मालदीव के बहुत निकट है। **मालदीव** (Maldives) दक्षिण में हमारा पड़ोसी द्वीपीय देश है।

भारतीय द्वीप भारत की प्राकृतिक छटा ही नहीं बढ़ाते, बल्कि काष्ठ उद्योग, मत्स्योद्यम, पर्यटन और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नौसैनिक अड्डे की स्थापना को भी बढ़ाया देते हैं। एक द्वीप (पेम्बन) भारत और श्रीलंका के बीच मन्नार की खाड़ी में स्थित है।

भारत के सभी प्राकृतिक विभाग अपने प्राकृतिक संसाधनों से भारत को धनी बनाते हैं। भारत के विकास में से एक-दूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न 8. भारत के उत्तरी मैदानों का विवरण दीजिए।

उत्तर—उत्तर का विशाल मैदान—यह विशाल मैदान एक नवीनतम भूखण्ड है, जो हिमालय पर्वत की उत्पत्ति के बाद निर्मित हुआ है। इस मैदान का निर्माण उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार से निकलने वाली नदियों द्वारा जमा किए गए अवसाद से हुआ है। सिन्धु की सहायक सतलज, झेलम, रावी, चिनाब और व्यास, गंगा व उसकी सहायक तथा ब्रह्मपुत्र एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा बहाकर लाए गए अवसाद के भरने से इस मैदान के निर्माण में विशेष योगदान मिला है। इसे 'जलोढ़ मैदान' के नाम से भी पुकारते हैं। यह विशाल मैदान विश्व का सबसे उर्वर एवं सघन जनसंख्या रखने वाला प्रदेश है, जहाँ भारत की लगभग 45% जनसंख्या निवास करती है। इसका क्षेत्रफल 7 लाख वर्ग किमी है। इस मैदान की लम्बाई पश्चिम से पूर्व तक 2,414 किमी है। चौड़ाई पश्चिम से पूर्व की ओर कम होती जाती है। पश्चिम की ओर इसकी चौड़ाई 480 किमी है जबकि पूर्व में घटकर केवल 145 किमी रह जाती है। इसका ढाल अत्यन्त मन्द है। इसका अधिकांश भाग समुद्र तल से 150 मीटर से अधिक ऊँचा नहीं है। इस मैदान का विस्तार उत्तरी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल तथा असम राज्यों में है। पश्चिम की ओर यह राजस्थान में थार मरुस्थल से मिल गया है।

प्रश्न 9. पश्चिमी घाट किस प्रकार पूर्वी घाटों से भिन्न हैं?

उत्तर— **पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट में अन्तर**

क्र. सं.	पूर्वी घाट	पश्चिमी घाट
1.	पूर्वी घाट दक्षिण के पठार पर उत्तर-पूर्व दिशा से दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर बंगाल की खाड़ी के समानान्तर फैले हुए हैं।	पश्चिमी घाट दक्षिण के पठार पर उत्तर से दक्षिण में अरब सागर के समानान्तर फैले हुए हैं।
2.	पूर्वी घाट उत्तर में महानदी से लेकर दक्षिण में नीलगिरी की पहाड़ियों तक 1,300 किमी की लम्बाई में विस्तृत हैं।	पश्चिमी घाट उत्तर में ताप्ती नदी की घाटी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक 1,600 किमी की लम्बाई में विस्तृत है।
3.	इस पर्वतीय भाग की औसत ऊँचाई 615 मीटर तथा औसत चौड़ाई उत्तर में 190 किमी जबकि दक्षिण में 75 किमी है।	इस पर्वतीय भाग की औसत ऊँचाई 1,600 मीटर तथा औसत चौड़ाई 50 किमी है।
4.	पूर्वी घाट का सर्वोच्च शिखर 1,680 मीटर ऊँचा है। अत: इस पर्वत-श्रेणी की ऊँचाई कम है।	पश्चिमी घाट का सर्वोच्च शिखर 2,695 मीटर ऊँचा है। अत: इस पर्वत-श्रेणी की औसत ऊँचाई अधिक है।
5.	पूर्वी घाट उत्तर में अधिक चौड़े, जबकि दक्षिण में कम चौड़े हैं। नदियों ने इस पर्वत-श्रेणी को अनेक स्थानों पर काट-छाँट दिया है।	पश्चिमी घाट उत्तर में कम चौड़े हैं, जबकि दक्षिण में इनकी चौड़ाई बढ़ गई है। समुद्र तट की ओर इसका ढाल बड़ा ही तीव्र है।

प्रश्न 10. प्लेट-विवर्तनिकी के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर।

3 अपवाह

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. दिए गए चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा वृक्ष की शाखाओं के समान अपवाह प्रतिरूप प्रणाली को दर्शाता है?

(क) अरीय (ख) केन्द्राभिमुख (ग) द्रुमाकृतिक (घ) जालीनुमा।

(ii) वूलर झील निम्नलिखित में से किस राज्य में स्थित है?

(क) राजस्थान (ख) पंजाब (ग) उत्तर प्रदेश (घ) जम्मू-कश्मीर।

(iii) नर्मदा नदी का उद्गम कहाँ से है?

(क) सतपुड़ा (ख) अमरकंटक (ग) ब्रह्मागिरी (घ) पश्चिमी घाट के ढाल।

(iv) निम्नलिखित में से कौन-सी लवणीय जल वाली झील है?

(क) सांभर (ख) वूलर (ग) डल (घ) गोविंद सागर।

(v) निम्नलिखित में से कौन-सी नदी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी नदी है?

(क) नर्मदा (ख) गोदावरी (ग) कृष्णा (घ) महानदी।

(vi) निम्नलिखित नदियों में से कौन-सी नदी भ्रंश घाटी से होकर बहती है?

(क) दामोदर (ख) कृष्णा (ग) तुंगभद्रा (घ) तापी।

उत्तर—**(i)** (ग), **(ii)** (घ), **(iii)** (ख), **(iv)** (क), **(v)** (ख), **(vi)** (घ)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए—

(i) जलविभाजक का क्या कार्य है? एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—जल विभाजक वह उच्च भूमि है, जो दो पड़ोसी अपवाह द्रोणियों को एक-दूसरे से पृथक करती है। इस प्रकार की उच्च भूमि को जलविभाजक कहते हैं। उदाहरण के लिए अंबाला, सिंधु एवं गंगा नदी प्रणाली के बीच जलविभाजक पर स्थित है।

(ii) भारत में सबसे विशाल नदी द्रोणी कौन-सी है?

उत्तर—गंगा द्रोणी भारत में सबसे विशाल नदी द्रोणी है।

(iii) सिंधु एवं गंगा नदियाँ कहाँ से निकलती हैं?

उत्तर—सिंधु नदी तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट से निकलती है। गंगा नदी हिमालय में गंगोत्री हिमानी से निकलती है।

(iv) गंगा की दो मुख्य धाराओं के नाम लिखिए। ये कहाँ पर एक-दूसरे से मिलकर गंगा नदी का निर्माण करती हैं?

उत्तर—गंगा की दो मुख्य धाराएँ भागीरथी तथा अलकनंदा हैं। ये उत्तरांचल राज्य के देवप्रयाग नामक स्थान पर मिलती हैं।

(v) लम्बी धारा होने के बावजूद तिब्बत के क्षेत्रों में ब्रह्मपुत्र में कम गाद (सिल्ट) क्यों है?

उत्तर—लम्बी धारा होने के बावजूद तिब्बत के क्षेत्रों में ब्रह्मपुत्र में कम गाद (सिल्ट) है क्योंकि यह एक शीत एवं शुष्क क्षेत्र है तथा जल की मात्रा बहुत कम है, जिसके परिणामस्वरूप अपरदन अत्यधिक कम एवं धीमी गति से होता है।

(vi) कौन-सी दो प्रायद्वीपीय नदियाँ गर्त से होकर बहती हैं? समुद्र में प्रवेश करने से पहले वे किस प्रकार की आकृतियों का निर्माण करती हैं?

उत्तर—नर्मदा तथा तापी दो प्रायद्वीपीय नदियाँ हैं जो गर्त से होकर बहती हैं। समुद्र में प्रवेश करने से पहले वे एश्चुरी का निर्माण करती हैं।

(vii) नदियों और झीलों के कुछ आर्थिक महत्व को बताएँ।

उत्तर—नदियों के आर्थिक महत्व—(i) घरेलू कार्यों और फसलों के लिए नदियाँ जल उपलब्ध करवाती हैं, विशेषकर भारत जैसे देश में जहाँ फसल मानसून पर निर्भर होती है।

(ii) ये गाद एवं तलछट बहाकर लाती हैं, जो बाढ़ के मैदानों को उपजाऊ बनाते हैं और देश को उपजाऊ कृषि भूमि प्रदान करते हैं।

(iii) नदियाँ अपशिष्ट को गला देती हैं अथवा बहाकर ले जाती हैं।

(iv) नदियों के साथ-साथ औद्योगिक विकास होता है क्योंकि अनेक औद्योगिक प्रक्रियाओं में जल की आवश्यकता होती है, जैसे शीतलक में तथा जलविद्युत उत्पादन में।

(v) नदियाँ परिवहन के साधन तथा अंतर्देशीय जलमार्ग उपलब्ध करवाती हैं।

(vi) तटीय नगरों के साथ-साथ मनोरंजन, पर्यटन प्रोत्साहन एवं मत्स्य संग्रहण भी विकसित होते हैं।

झीलों के आर्थिक महत्त्व—(i) झीलें नदी के बहाव को सुचारु बनाने में सहायक होती हैं।

(ii) अत्यधिक वर्षा के समय ये बाढ़ को रोकती हैं।

(iii) सूखे के मौसम में ये पानी के बहाव को संतुलित करने में सहायता करती हैं।

(iv) झीलों का प्रयोग जलविद्युत उत्पन्न करने में भी किया जा सकता है।

(v) ये आस-पास के क्षेत्रों की जलवायु को सामान्य बनाती हैं।

(vi) जलीय पारितंत्र को संतुलित रखती हैं।

(vii) झीलें प्राकृतिक सुंदरता एवं पर्यटन में वृद्धि करती हैं।

प्रश्न 3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

(i) नीचे भारत की कुछ झीलों के नाम दिए गए हैं। इन्हें प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वर्गों में बाँटिए।

(क) वूलर, (ख) डल, (ग) नैनीताल, (घ) भीमताल, (ङ) गोविन्द सागर, (च) लोकताक, (छ) बारापानी, (ज) चिल्का, (झ) सांभर, (य) राणा प्रताप सागर, (ट) निजाम सागर, (ठ) पुलीकट, (ड) नागार्जुन सागर, (ढ) हीराकुड।

उत्तर—

झीलें	**प्राकृतिक/मानव निर्मित**
(क) वूलर	प्राकृतिक
(ख) डल	प्राकृतिक
(ग) नैनीताल	प्राकृतिक
(घ) भीमताल	प्राकृतिक
(ङ) गोविंद सागर	मानव निर्मित
(च) लोकताक	प्राकृतिक
(छ) बारापानी	प्राकृतिक
(ज) चिल्का	प्राकृतिक
(झ) सांभर	प्राकृतिक
(च) राणा प्रताप सागर	मानव निर्मित
(ट) निजाम सागर	मानव निर्मित
(ठ) पुलीकट	प्राकृतिक
(ड) नागार्जुन सागर	मानव निर्मित
(ढ) हीराकुड	मानव निर्मित

प्रश्न 4. हिमालय तथा प्रायद्वीपीय नदियों के मुख्य अंतरों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हिमालय तथा प्रायद्वीपीय नदियों में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं—

क्र०सं०	हिमालयी नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
1.	ये अधिकतर बारहमासी नदियाँ हैं। इनमें पूरे साल पानी बना रहता है क्योंकि इन्हें वर्षा के साथ-साथ पिघलती बर्फ से भी जल मिलता रहता है।	ये मौसमी नदियाँ होती हैं। इनका प्रवाह वर्षा पर निर्भर करता है।
2.	अपने उद्गम से समुद्र में मिलने तक इनका अपवाह क्षेत्र बहुत लम्बा होता है।	प्रायद्वीपीय नदियों का अपवाह क्षेत्र छोटा और ये अपेक्षाकृत उथली होती हैं।
3.	अपने ऊपरी मार्ग में ये अपरदन कार्य सक्रियता से करती हैं, परिणामस्वरूप अपने साथ बड़ी मात्रा में गाद एवं तलछट बहाकर लाती हैं।	धीमे ढलानों के कारण इनकी अपरदन क्षमता अपेक्षाकृत धीमी होती है।
4.	मध्य तथा निचले प्रवाह मार्ग में नदियाँ गुँथी हुई धाराएँ और टेढ़े-मेढ़े आकार के साथ अपने बाढ़ मैदानों में विसर्प जैसे कई अन्य निक्षेपित भू-लक्षणों का निर्माण करती है।	ठोस चट्टानी तल तथा गाद और तलछट के अभाव के कारण किसी महत्त्वपूर्ण टेढ़ी-मेढ़ी स्थालाकृति को नहीं दर्शाती हैं।
5.	ये विस्तृत डेल्टा बनाती हैं।	इन नदियों द्वारा बनाए गए डेल्टा अपेक्षाकृत छोटे होते हैं।

प्रश्न 5. प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व एवं पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों की तुलना कीजिए।

उत्तर—पूर्व एवं पश्चिम की तुलना निम्न प्रकार कर सकते हैं—

क्र०सं०	पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ	पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ
1.	गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी नदियाँ पश्चिमी घाट से निकलती हैं और पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में समाप्त हो जाती हैं।	नर्मदा एवं तापी ही दो लम्बी नदियाँ हैं जो अरब सागर में गिरती हैं।
2.	समुद्र में प्रवेश करते समय ये सभी नदियाँ डेल्टा बनाती हैं।	ये नदियाँ ज्वारनदमुख बनाती हैं।

प्रश्न 6. किसी देश की अर्थव्यवस्था के लिए नदियाँ महत्वपूर्ण क्यों हैं?

उत्तर—किसी देश की अर्थव्यवस्था के लिए नदियाँ महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि—

(i) घरेलू कार्यों एवं फसलों के लिए नदियाँ जल उपलब्ध करवाती हैं, विशेषकर भारत जैसे देश में जहाँ फसल मानसून पर निर्भर होती है।

(ii) ये गाद एवं तलछट बहाकर लाती हैं जो बाढ़ के मैदानों को उपजाऊ बनाते हैं।

(iii) नदियाँ अपशिष्ट को गला देती हैं या बहाकर ले जाती हैं।

(iv) नदियों के साथ-साथ औद्योगिक विकास होता है क्योंकि अनेक औद्योगिक प्रक्रियाओं में जल की आवश्यकता होती है, जैसे शीतलक में तथा जलविद्युत उत्पादन में।

(v) नदियाँ परिवहन के साधन एवं अंतर्देशीय जलमार्ग उपलब्ध करवाती हैं।

(vi) तटीय नगरों के साथ-साथ मनोरंजन, पर्यटन प्रोत्साहन एवं मत्स्य संग्रहण भी विकसित होते हैं।

मानचित्र कौशल

(i) भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित नदियों को चिह्नित कीजिए तथा उनके नाम लिखिए—
गंगा, सतलुज, दामोदर, कृष्णा, नर्मदा, तापी, महानदी, दिहांग।

(ii) भारत के रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित झीलों को चिह्नित कीजिए तथा उनके नाम लिखिए—
चिल्का, सांभर, वूलर, पुलीकट तथा कोलेरू।

उत्तर—मानचित्र देखें।

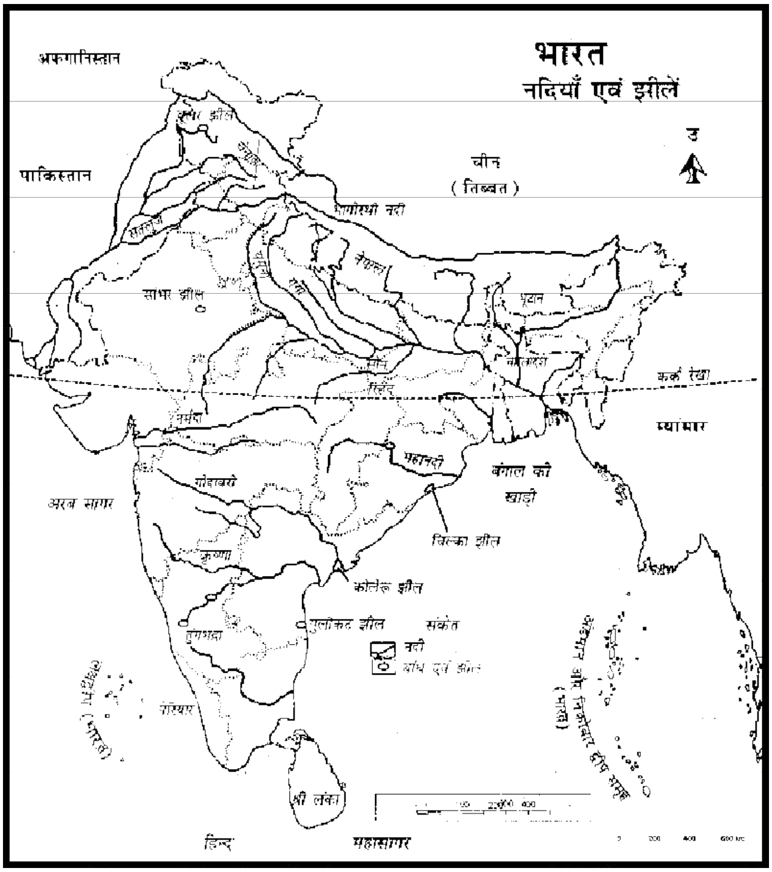

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हिमालय की नदियों के द्वारा अपने मध्य मार्ग व निम्न मार्ग में क्या बनाया जाता है?
(क) विसर्प (ख) ऑक्सबो मोड़ (बैल व धनुष के आकार का मोड़)
(ग) बाढ़ का मैदान (घ) उपर्युक्त सभी।

2. सिन्धु व गंगा के मध्य जल विभाजन कहाँ स्थित है?
(क) अम्बाला (ख) जालन्धर (ग) लुधियाना (घ) पठानकोट।

3. नदी के द्वारा जल-निकासी की कौन-सी आकृति बनाई जाती है जबकि इसकी सहायक नदियाँ सही कोण पर आकर मिलती हैं?
(क) वृक्षाकार (ख) जालीनुमा (ग) रेडियल (घ) आयताकार।

4. कौनसी नदी भारत में दूसरा सबसे बड़ा झरना बनाती है?
(क) नर्मदा (ख) तापी (ग) कावेरी (घ) तुंगभद्रा।

5. निम्न में से कौन सी नदी ज्वारनदमुख बनाती है?
(क) तापी (ख) महानदी (ग) कृष्णा (घ) गंगा।

6. निम्न में से कौन सी झील नमक के पानी की झील है?
(क) डल (ख) सांभर (ग) वूलर (घ) बारापानी।

7. किस प्रायद्वीपीय नदी का सबसे अपवाही (निकासी) बेसिन है?
(क) महानदी (ख) गोदावरी (ग) कृष्णा (घ) कावेरी।

8. राजस्थान में कौन सी नमक के पानी की झील है?
(क) वूलर (ख) लोकताक (ग) साँभर (घ) गोविन्द सागर।

9. कौन-सी नदी दक्षिण गंगा के नाम से जानी जाती है?
(क) साबरमती (ख) नर्मदा (ग) तापी (घ) गोदावरी।

10. 'स्पिट एवं बार' (भू-जिव्हा व सलाखें) क्या बनाती हैं?
(क) समुद्र (ख) नदियाँ (ग) लैगून (घ) झीलें।

11. वूलर झील किस राज्य में है?
(क) आंध्र प्रदेश (ख) हिमाचल प्रदेश (ग) उत्तराखण्ड (घ) जम्मू-कश्मीर।

12. चिल्का झील किस राज्य में है?
(क) बिहार (ख) ओडिशा (ग) आन्ध्र प्रदेश (घ) तमिलनाडु।

13. दरार घाटी से होकर कौन सी नदियाँ बहती हैं?
(क) नर्मदा (ख) महानदी (ग) गोदावरी (घ) सिन्धु।

14. मणिपुर में कौन सी झील है?
(क) कोलेरु (ख) लोकताक (ग) गोविन्द सागर (घ) पुलिकट।

15. अप्रवासी पक्षियों के लिए कौनसी झील महत्वपूर्ण आवास है?
(क) चिल्का झील (ख) वूलर झील (ग) साँभर झील (घ) कोलेरु झील।

[उत्तर—1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग), **5.** (क), **6.** (ख), **7.** (ग), **8.** (ग), **9.** (घ), **10.** (ग), **11.** (घ), **12.** (ख), **13.** (क), **14.** (ख), **15.** (क)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हिमालय नदियों की तीन प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—(i) अधिकांश हिमालय नदियाँ स्थायी हैं।
(ii) वे लम्बी दूरी तय करती हैं।
(iii) वे भारी मात्रा में गाद (silt) व तलछ्ट (Sediment) बहाकर लाती हैं।

प्रश्न 2. कौन सी अपवाही प्रणाली वृक्ष की शाखाओं के समान है?

उत्तर—वृक्षाकार (Denditic) अपवाह प्रणाली।

प्रश्न 3. स्थायी नदियों का क्या अर्थ है?

उत्तर—जिन नदियों में पूरे वर्ष जल रहता है, वे स्थायी नदियाँ कहलाती हैं।

प्रश्न 4. सबसे बड़ा डेल्टा कौन-सा है? इसकी कोई दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—सुन्दरवन डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है। यह तेजी से वृद्धि करता डेल्टा है। यह रॉयल बंगाली चीते का निवास स्थल है।

प्रश्न 5. भारत की किन तीन नदियों की उत्पत्ति हिमालय के पार से होती है?

उत्तर—सिन्धु, सतलज एवं ब्रह्मपुत्र।

प्रश्न 6. जल-विभाजक का क्या अर्थ है? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर—कई बार कोई पर्वत या उठी हुई भूमि दो अपवाह प्रणालियों को पृथक कर देती है। इसे ही जल विभाजक कहते हैं। उदाहरणार्थ—अंबाला सिन्धु व गंगा के मध्य जल-विभाजक है।

प्रश्न 7. सुन्दरवन किसलिए प्रसिद्ध है?

उत्तर—सुन्दरवन रॉयल बंगाली चीते का घर कहलाता है।

प्रश्न 8. नर्मदा और तापी बेसिन की कौन-सी समान विशेषताएँ हैं?

उत्तर—दोनों नदी बेसिन मध्य प्रदेश राज्य में हैं। ये दोनों नदियाँ दरार घाटी से होकर बहती हैं।

प्रश्न 9. राजस्थान की नमक की झील का नाम लिखिए।
उत्तर—सांभर झील।
प्रश्न 10. कौन-सी नदी 'दक्षिण गंगा' कहलाती है?
उत्तर—गोदावरी नदी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सिन्धु नदी प्रणाली पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर—सिंधु नदी का उद्‌गम स्थल मानसरोवर झील के निकट तिब्बत में है। पश्चिम की तरफ बहती हुई सिंधु नदी भारत में जम्मू-कश्मीर के लद्दाख जिले में प्रवेश करती है। यहाँ एक अत्यन्त सुन्दर दर्शनीय गार्ज बनाती है। इस क्षेत्र की अनेक नदियाँ; जैसे—हुंजा, श्योक, जास्कर तथा नूबरा इस नदी में मिलती हैं। सिंधु नदी ब्लूचिस्तान एवं गिलगित से प्रवाहित होती हुई अटक में पर्वतीय क्षेत्र से बाहर निकल जाती है। रावी, झेलम, चेनाब, व्यास तथा सतलुज नदियाँ आपस में मिलकर पाकिस्तान में मिठानकोट के पास सिंधु नदी में मिल जाती हैं। इसके पश्चात् यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई अन्त में कराची से पूर्व की तरफ अरब सागर में मिलती है। सिन्धु नदी के मैदान का ढाल काफी धीमा है। सिंधु द्रोणी का एक-तिहाई से कुछ अधिक भाग भारत के पंजाब, हिमाचल तथा जम्मू-कश्मीर में और शेष भाग पाकिस्तान में स्थित है। सिंधु नदी 2900 किलोमीटर लम्बी है तथा यह विश्व की लम्बी नदियों में से एक है।

प्रश्न 2. नदियों को मानव सभ्यता की जीवन रेखा क्यों माना जाता है?

उत्तर—प्राचीन काल में मानव सभ्यता का उदय नदियों के किनारे ही हुआ है। सिन्धु नदी घाटी सभ्यता मानव जाति की अति प्राचीन सभ्यता है। नदियों के पास रहने से मानव को विभिन्न सुविधाएँ प्राप्त थीं। वह जब कृषि करने लगा तो सिंचाई के लिए पानी उसे नदियों से आसानी से प्राप्त हो जाता था। यातायात के लिए नदियों में नाव की व्यवस्था थी। नदियों से मछलियों के रूप में उसे भोजन भी प्राप्त होता था। अतः प्राचीनकाल में कई सभ्यताएँ नदियों के पास खूब फली फूली। वर्तमान में भी नदियों पर बाँध बनाकर विद्युत निर्माण किया जाता है तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। इसी कारण नदियों को मानव सभ्यता की जीवन रेखा माना जाता है।

प्रश्न 2. पश्चिमी समुद्र-तटीय मैदानों की नदियाँ छोटी क्यों हैं?

उत्तर—पश्चिमी समुद्र तटीय मैदानों की नदियाँ छोटी हैं। पश्चिमी घाट द्वारा प्रायद्वीपीय भारत में मुख्य जल विभाजक का निर्माण होता है जो पश्चिमी तट के निकट उत्तर से दक्षिण की ओर स्थित है। ये नदियाँ अपने मुहाने पर डेल्टा का निर्माण करती है। पश्चिमी घाट से पश्चिम की ओर बहने वाली अनेक छोटी धाराएँ हैं। नर्मदा एवं ताप्ती दो बड़ी नदियाँ हैं जो पश्चिम की ओर बहती हैं और ज्वारनद मुख का निर्माण करती हैं।

प्रश्न 3. जल प्रदूषण के क्या कारण हैं?

उत्तर—प्राकृतिक जल में किसी बाह्य अवांछित पदार्थ का प्रवेश जिससे जल की गुणवत्ता में कमी हो जाय जल प्रदूषण कहलाता है।

जल प्रदूषण के निम्नलिखित कारण या स्रोत होते हैं—

(1) नदियों के जल का सर्वाधिक प्रदूषण नगरीय सीवर द्वारा होता है। औद्योगिक एवं नगरीय सीवर के मिश्रण से गंगा-यमुना तथा उनकी सहायक नदियाँ गन्दे नालों में परिणत होती जा रही हैं। दिल्ली के निकट यमुना का जल सीवर द्वारा प्रदूषित होता है।

(2) कृषि फसलों के उत्पादन में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों द्वारा भी जल प्रदूषित होता है। खेतों से जल बहकर नदियों, झीलों एवं अन्य जलाशयों में मिलकर उन्हें प्रदूषित कर देता है। खेतों से बहकर आने वाले तत्वों द्वारा झीलों एवं जलाशयों का जल शैवालों से भर जाता है, जिससे जल में घुली ऑक्सीजन कम हो जाती है और मछलियों व अन्य जलीय जीवों की मृत्यु हो जाती है, जो जल प्रदूषण में वृद्धि करता है।

(3) सागरों एवं महासागरों का जल भी कई प्रकार से प्रदूषित होता है। तटों पर स्थित नगरों के सीवर तथा कल-कारखानों का कूड़ा-कचरा प्रत्यक्ष रूप से सागरों में गिराया जाता है। तटीय भागों में स्थित दलदली भूमि एवं लैगून झीलों में सुपोषण से समुद्री जीवन प्रभावित होता है। महासागरों में तेलवाहक टैंकरों से तेल के रिसाव से भी जल प्रदूषण होता है। लहरें एवं धाराएँ इस तेल को दूर-दूर तक फैलाकर जल प्रदूषण में वृद्धि कर देती हैं।

प्रश्न 5. वृक्षाकार तथा जालीनुमा अपवाह प्रणालियों के मध्य अन्तर उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जब धाराएँ उस स्थान के भूस्थल के ढाल के अनुसार बहती हैं। इस प्रतिरूप में मुख्य धारा तथा उसकी सहायक नदियाँ एक वृक्ष की शाखाओं की भाँति प्रतीत होती हैं। जब सहायक नदियाँ मुख्य नदी से समकोण पर मिलती हैं, तब जालीनुमा प्रतिरूप का निर्माण करती हैं। जालीनुमा प्रतिरूप वहाँ विकसित होता है जहाँ कठोर एवं मुलायम चट्टानें समान्तर पायी जाती हैं। वृक्षाकार प्रतिरूप गंगानदी की द्रोण में पाया जाता है जो एक मैदानी नदी है जबकि जालीनुमा अपवाह नर्मदा नदी के द्रोण में पाया जाता है।

प्रश्न 6. गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—लगभग तिकोने आकार का जलोढ़ मिट्टी से बना समतल भूभाग जो नदी के मुहाने पर बनता है डेल्टा कहलाता है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) सुन्दर वन डेल्टा विश्व का सबसे विशाल डेल्टा है।

(2) यह तेजी से बढ़ने वाला डेल्टा है।

(3) इसकी भूमि बहुत उपजाऊ है अतः सुन्दरवन डेल्टा में घने जंगल हैं।

(4) यह रॉयल बंगाल टाइगर का आवास है।

प्रश्न 7. निम्न की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए—

(क) ब्रह्मपुत्र अपवाह प्रणाली **(ख) गंगा अपवाह प्रणाली**

(ग) हिमालय नदियाँ **(घ) प्रायद्वीपीय नदियाँ।**

उत्तर—(क) ब्रह्मपुत्र अपवाह प्रणाली—(1) दिवांग, लोहित, केनुला एवं दूसरी सहायक नदियाँ ब्रह्मपुत्र की अपवाह प्रणाली का निर्माण करती है।

(2) यह नदी अपनी बाढ़ तथा प्रवाह मार्ग में परिवर्तन के लिए प्रसिद्ध है।

(3) इसकी बाढ़ से प्रतिवर्ष धन-जन की बहुत हानि होती है। ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लम्बाई 2880 किमी है।

(ख) गंगा अपवाह प्रणाली—(1) यह हिमालय के गंगोत्री मुख से निकलती है।

(2) गंगा की कुल लम्बाई 2510 किमी है जिसमें यह 2415 किमी की यात्रा भारत में पूरा करती है।

(3) यमुना, रामगंगा, घाघरा, घाघमती, महानन्दा, गोमती, गण्डक, जलंगी, भैरव, कोसी, ठोस, केन, बेतवा तथा चम्बल आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

(4) गंगा एवं ब्रह्मपुत्र संसार के सबसे बड़े सुन्दर वन डेल्टा का निर्माण करती हैं।

(ग) हिमालयीय नदियाँ—(1) हिमालय से निकलने वाली नदियाँ सदानीरा हैं तथा वर्षा ऋतु में इनमें जल की मात्रा अधिक हो जाती है।

(2) मैदानी भागों में ये नदियाँ काँप मिट्टी का संचयन करती हैं। जिससे इनके द्वारा निर्मित मैदान हमेशा उपजाऊ बने रहते हैं।

(3) हिमालय से निकलीं नदियाँ सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन की दृष्टि से उपयोगी हैं।

(4) हिमालय से निकलने वाली मुख्य नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। सिन्धु नदी एक मात्र ऐसी नदी है जो अरब सागर में गिरती है।

(घ) प्रायद्वीपीय नदियाँ—(1) इनके मार्ग सीधे तथा रैखिक होते हैं।

(2) मंद ढाल के कारण इनमें अपरदन कार्य न्यूनतम होता है।

(3) ये नदियाँ विसर्प नहीं बनाती हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. गंगा-ब्रह्मपुत्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर— **गंगा-ब्रह्मपुत्र की प्रमुख विशेषताएँ**

गंगा नदी तन्त्र—गंगा भारत की प्रसिद्ध एवं धार्मिक नदी है, जो हिमालय के गंगोत्री/गोमुख हिमानी से निकलती है। इस नदी की मैदानी यात्रा हरिद्वार से आरम्भ होती है। प्रयाग (इलाहाबाद) में यमुना व अदृश्य सरस्वती नदियाँ इसमें आकर मिलती हैं। गंगा की कुल लम्बाई 2,510 किमी है, जिसमें यह 2,415 किमी की यात्रा भारत में पूरी करती है। इसकी मुख्य सहायक नदियों में यमुना, रामगंगा, घाघरा, घाघमती, महानन्दा, गोमती, गण्डक, जलांगी, भैरव, कोसी, टोंस, केन, बेतवा

तथा चम्बल आदि हैं। गंगा नदी ब्रह्मपुत्र के साथ मिलकर विश्व के सबसे बड़े डेल्टा का निर्माण करते हुए बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

ब्रह्मपुत्र नदी क्रम—ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत में स्थित मानसरोवर झील के निकट कैलाश पर्वत श्रेणी से निकलती है। यह नदी दक्षिणी तिब्बत में बहती हुई पूर्वी हिमालय के नामचा बरुआ शिखर के समीप अचानक दक्षिण की ओर मुड़कर भारत में प्रवेश करती है। तिब्बत में इसे **साँगपो** नदी के नाम से जाना जाता है। असम में इसे **दिहांग** कहा जाता है। दिवांग तथा लोहित इसकी सहायक नदियाँ हैं जो विपरीत दिशाओं से आकर इसमें मिल जाती हैं। **ब्रह्मपुत्र** नदी असम राज्य में प्रवाहित होती हुई गंगा नदी से मिल जाती है। यह नदी अपनी बाढ़ तथा प्रवाह-मार्ग में परिवर्तन के लिए विख्यात है। इसकी बाढ़ से प्रतिवर्ष धन-जन की बहुत अधिक हानि होती है। ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लम्बाई 2,880 किमी है।

प्रश्न 2. बैल-धनुषाकार (Ox-bow) झील कौन सी है और यह कैसे बनी? चित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत में विभिन्न प्रकार की झीलें हैं जिनका आकार एवं लक्षण एक दूसरे से भिन्न हैं। अधिकांश झीलें स्थाई होती हैं। जबकि कुछ में केवल वर्षा ऋतु में ही पानी होता है। कुछ झीलें ऐसी भी हैं जिनका निर्माण हिमानियों तथा बर्फ चादर की क्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है जबकि कुछ झीलों का निर्माण मानवीय क्रिया कलापों के परिणामस्वरूप हआ है।

एक विसर्प नदी बाढ़ वाले क्षेत्रों में कटकर गो-खुर झील (बैल-धनुषाकार झील) का निर्माण करती है। बार (रोधिका) एवं स्पिट तटीय क्षेत्रों में लैगून का निर्माण करती है। बैल-धनुषाकार झील का निर्माण नदी के वक्र बहाव के कारण होता है नदी की धारा वक्र मार्ग द्वारा अर्द्धवृत्ताकार रूप में परिवर्तित हो जाती है तथा उसके दोनों वक्र सिरे आपस में मिलकर नई धारा का निर्माण करते हैं जिससे बैल धनुषाकार झील का निर्माण हो जाता है। ये झीलें तटीय क्षेत्रों में निर्मित होती है।

प्रश्न 3. नदियों की विभिन्न प्रकार की प्रणालियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—हिमालय की नदियाँ—उत्तर के विशाल मैदान में दो नदी तन्त्र प्रमुख स्थान रखते हैं—

(1) पश्चिम में सिन्धु नदी तन्त्र तथा (2) पूर्व में गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी तन्त्र।

(1) सिन्धु नदी तन्त्र—सिन्धु नदी तिब्बत के पठार से निकलकर 2900 किमी की दूरी तक प्रवाहित होती हुई अरब सागर में मिल जाती है। हमारे देश में यह नदी मात्र 709 किमी की दूरी तय करती है। इसकी मुख्य सहायक नदियाँ सतलज, ब्यास, झेलम, चिनाब एवं रावी हैं। भारत-विभाजन के फलस्वरूप सिन्धु नदी तन्त्र के अगले भाग पाकिस्तान में चले गए। सिन्धु की सहायक नदियों में सतलज नदी भारत में सबसे अधिक जल प्रदान करती है।

सतलज नदी कैलाश पर्वत से निकलकर लगभग 1,440 किमी की दूरी में प्रवाहित होती हुई सिन्धु नदी से मिल जाती है। झेलम कश्मीर राज्य की प्रमुख नदी है। पर्वतीय प्रदेश से मैदान की ओर मुड़ने पर इसका जल प्रवाह मन्द हो जाता है। कश्मीर की हरी-भरी सुखद घाटी झेलम नदी के इसी मोड़ के समीप स्थित है।

(2) गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी तन्त्र—इस विशाल नदी तन्त्र को निम्नलिखित उपनदी तन्त्रों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) गंगा नदी तन्त्र—गंगा भारत की प्रसिद्ध एवं धार्मिक महत्व वाली नदी है जो हिमालय के गोमुख हिमनद से निकलती है। हरिद्वार से गंगा नदी की मैदानी यात्रा आरम्भ होती है तथा इसकी गति भी मन्द पड़ जाती है। यह नदी भारत की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है, जिसकी लम्बाई 2,510 किमी है। गंगा नदी का अपवाह क्षेत्र, भारत का सबसे बड़ा अपवाह क्षेत्र है। सोन, घाघरा एवं गण्डक इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

(ii) यमुना नदी तन्त्र—यमुना नदी हिमालय पर्वत के यमुनोत्री हिमनद से निकलकर प्रायः गंगा नदी के समानान्तर प्रवाहित होती हुई प्रयोग में गंगा नदी से मिल जाती है। प्रयाग तक इसकी लम्बाई 1,380 किमी है। सिन्ध, बेतवा, केन एवं चम्बल इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। ये सभी दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई यमुना नदी में मिल जाती हैं।

(iii) ब्रह्मपुत्र नदी तन्त्र—ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत में स्थित मानसरोवर झील के निकट कैलाश पर्वत-श्रेणी से निकलती है। यह नदी तिब्बत के दक्षिण में बहती हुई पूर्वी हिमालय के समीप अचानक दक्षिण की ओर मुड़कर भारत में प्रवेश करती है। तिब्बत में इसे साँगपो नदी के नाम से जाना जाता है तथा असम में इसे दिहांग कहा जाता है। दिबांग एवं लोहित इसकी

सहायक नदियाँ हैं जो विपरीत दिशाओं से प्रवाहित होती हुई इससे मिलती हैं। ब्रह्मपुत्र नदी असम राज्य से प्रवाहित हुई गंगा में मिल जाती है।

प्रायद्वीपीय नदियाँ—प्रायद्वीपीय भारत में पश्चिमी घाट मुख्य जल विभाजक का कार्य करता है, जो कि पश्चिमी तट के समीप उत्तर से दक्षिण की तरफ स्थित है। प्रायद्वीपीय भाग की अधिकांश प्रमुख नदियाँ; जैसे—कावेरी, कृष्णा, गोदावरी तथा महानदी पूर्व की तरफ प्रवाहित होकर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती हैं। ये नदियाँ अपने मुहाने पर डेल्टा का निर्माण करती हैं। पश्चिमी घाट से पश्चिम में बहने वाली अनेक छोटी धाराएँ हैं। तापी एवं नर्मदा दो ही बड़ी नदियाँ हैं जो कि पश्चिम की ओर बहते हुए ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं। प्रायद्वीपीय नदियों की अपवाह द्रोणियाँ आकार में अपेक्षाकृत छोटे आकार की हैं।

तापी द्रोणी—तापी नदी का उद्‌गम स्थल मध्य प्रदेश के बेतूल जिले में सतपुड़ा की शृंखलाओं में स्थित है। यह नदी नर्मदा के समानांतर एक भ्रंश घाटी में बहती है, परन्तु इसकी लम्बाई काफी कम है। इसकी द्रोणी मध्य प्रदेश, गुजरात तथा महाराष्ट्र राज्य में है। पश्चिमी घाट एवं अरब सागर के मध्य का तटीय मैदान काफी ज्यादा संकीर्ण है जिसके कारण तटीय नदियों की लम्बाई काफी कम है। पश्चिम की तरफ बहने वाली मुख्य नदियों में पेरियार, साबरमती, माही एवं भारत-पुजा शामिल हैं। उन राज्यों के नाम बताइए जिनसे होकर ये नदियाँ बहती हैं।

नर्मदा द्रोणी—नर्मदा नदी का उद्‌गम स्थल मध्य प्रदेश में अमरकंटक पहाड़ी के निकट स्थित है। यह पश्चिम की तरफ एक भ्रंश घाटी में बहती है। समुद्र तक पहुँचने के मार्ग में यह नदी कई दर्शनीय स्थलों का निर्माण करती है। जबलपुर के निकट संगमरमर के शैलों में यह नदी गहरे गार्ज से बहती है और जहाँ पर यह तीव्र ढाल से गिरती है, वहाँ 'धुआँधार प्रपात' का निर्माण करती है। इसकी सभी सहायक नदियाँ काफी छोटी हैं, इनमें से ज्यादातर समकोण पर मुख्य धारा से मिलती हैं। नर्मदा द्रोणी मध्य प्रदेश एवं गुजरात राज्य के कुछ भागों में विस्तृत है।

कावेरी द्रोणी—कावेरी का उद्‌गम स्थल पश्चिमी घाट की ब्रह्मगिरी शृंखला में स्थित है। यह नदी तमिलनाडु में कुडलूर के दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। कावेरी की लम्बाई लगभग 760 किलोमीटर है तथा अमरावती, हेमावती, भवानी और काबिनि इसकी सहायक नदियाँ हैं। इसकी द्रोणी तमिलनाडु, कर्नाटक एवं केरल में विस्तृत है।

कृष्णा द्रोणी—कृष्णा नदी महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट में महाबलेश्वर के समीप एक स्रोत से निकलती है। यह 1400 किलोमीटर प्रवाहित होती हुई अन्ततः बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। इसकी कुछ प्रमुख सहायक नदियाँ हैं—कोयना, घाटप्रभा, तुंगभद्रा, भीमा तथा मुसी। इसकी द्रोणी आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक तक विस्तृत है।

महानदी द्रोणी—महानदी का उद्‌गम स्थल छत्तीसगढ़ की उच्च भूमि है। महानदी ओडिशा से प्रवाहित होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है। महानदी की लम्बाई 860 किलोमीटर है। महानदी की अपवाह द्रोणी ओडिशा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं महाराष्ट्र में है।

गोदावरी द्रोणी—गोदावरी नदी का उद्‌गम महाराष्ट्र के नासिक जिले में पश्चिमी घाट के ढालों में है। यह सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी है तथा इसकी लम्बाई लगभग 1500 किलोमीटर है। अंत में यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है। प्रायद्वीपीय नदियों में इसका अपवाह तंत्र सबसे बड़ा है। गोदावरी में बहुत-सी सहायक नदियाँ मिलती हैं; जैसे—वर्धा, मांजरा, पूर्णा, प्रान्हिता, पेनगंगा एवं वेनगंगा। इनमें मांजरा, वेनगंगा तथा पेनगंगा तीनों सहायक नदियाँ बहुत बड़ी हैं। बड़े आकार एवं विस्तार के कारण गोदावरी नदी को 'दक्षिण गंगा' के नाम से भी जाना जाता है। इसकी द्रोणी महाराष्ट्र (नदी द्रोणी का 50 प्रतिशत भाग), ओडिशा, आंध्र प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में स्थित है।

प्रश्न 4. गंगा एक्शन प्लान या 'राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना' की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना—गंगा कार्य योजना के क्रियाकलापों का पहला चरण 1985 में आरम्भ किया गया एवं इसे 31 मार्च, 2000 को बन्द किया गया था। राष्ट्रीय नदी संरक्षण प्राधिकरण की कार्यवाही समिति ने गंगा कार्य योजना के प्रथम चरण की प्रगति की समीक्षा की तथा गंगा कार्य योजना के प्रथम चरण से प्राप्त अनुभवों के आधार पर आवश्यक सुझाव दिए। इस कार्य योजना को देश की प्रमुख प्रदूषित नदियों में राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के अन्तर्गत लागू

किया गया है। गंगा कार्य योजना के दूसरे चरण को राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के अन्तर्गत शामिल कर लिया गया है। विस्तृत राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना में 16 राज्यों की 27 नदियों के किनारे बसे 152 शहर शामिल किए गए। इस कार्य योजना के तहत 57 जिलों में प्रदूषण को कम करने के लिए कार्य किया गया। प्रदूषण को कम करने वाली कुल 215 योजनाओं को स्वीकृति दी गई। अभी तक 69 योजनाएँ इस कार्य योजना के तहत पूरी हो चुकी हैं। इसके अन्तर्गत, लाखों लीटर प्रदूषित जल को रोककर उसकी दिशा में परिवर्तन करके परिष्करण करने का लक्ष्य रखा गया है।

प्रश्न 5. जल प्रदूषण के प्रमुख कारण क्या हैं? गंगा प्रदूषण के प्रमुख कारण लिखिए। नदी के आत्म-शुद्धिकरण के गुण को समझाइए।

उत्तर—नदी जल की कृषि, घरेलू एवं औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ती माँग के कारण, इसकी गुणवत्ता प्रभावित हुई है। नदी जल की बढ़ती माँग के कारण, नदियों से पर्याप्त मात्रा में जल की निकासी होती है, जिससे इसका अत्यन्त आयतन घट जाता है। दूसरी तरफ, उद्योगों का प्रदूषण एवं अपरिष्कृत कचरा नदी में जाकर मिलता रहता है। इसके द्वारा केवल जल की गुणवत्ता ही नहीं अपितु नदी के स्वतः स्वच्छीकरण की क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ—समुचित जलप्रवाह में गंगा का जल लगभग 20 किलोमीटर क्षेत्र में फैले बड़े शहरों की गन्दगी को तनु करके समाहित कर सकता है; किन्तु बढ़ते हुए शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो पाता और अनेक नदियों में प्रदूषण के स्तर में वृद्धि होती जा रही है। नदियों में बढ़ते प्रदूषण के कारण इनको स्वच्छ बनाने हेतु अनेक कार्य योजनाएँ भी चलाई जा रही हैं। नदियों में स्वयं में ये क्षमता होती है कि अशुद्ध जल को शुद्ध कर देती है। लगभग 20 किमी जल के प्रवाह के बाद जल स्वयं शुद्ध हो जाता है। नदियों के इस गुण को आत्म-शुद्धीकरण कहते हैं। परन्तु भारी मात्रा में औद्योगिक अपशिष्टों के मिलने के कारण नदियों का आत्म-शुद्धिकरण का गुण भी धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है।

प्रश्न 6. बाँधों का निर्माण हमारे पर्यावरण के लिए चुनौती क्यों माना जाता है?

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के अनुसार 'बड़े बाँध' वे हैं जिनकी ऊँचाई नींव से शीर्ष तक 15 मीटर या उससे अधिक है। आज बड़े बाँधों को पर्यावरण के लिए खतरा माना जाता है। इसीलिए बड़े बाँधों के विरुद्ध विभिन्न तर्क दिए जाते हैं। ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण तर्क निम्नलिखित हैं—

(1) बड़े बाँध धरातल पर असन्तुलन उत्पन्न करते हैं, अतः इनसे भूकम्प आने के खतरे में वृद्धि होती है।

(2) बड़े बाँधों का विस्तार अधिक बड़े भू-भाग में होता है; अतः आस-पास के क्षेत्र जल-मग्न हो जाते हैं जिससे जन-धन की हानि होती है।

(3) निकटवर्ती क्षेत्र में सदा ही बाढ़ का खतरा बना रहता है।

(4) इनसे अत्यधिक मात्रा में वनस्पति क्षेत्र नष्ट हो जाता है, अतः जैव विविधता, जिसे पारिस्थितिक सन्तुलन का मुख्य कारक कहा जाता है, नष्ट हो जाती है।

(5) बड़े बाँधों के निर्माण से मानव बस्तियों के लिए पुनर्वास की समस्या उत्पन्न होती है।

(6) जो लोग बाँध क्षेत्र में रहते हैं तथा जब उन्हें अन्यत्र बसाया जाता है तो उन्हें भावात्मक रूप से कष्ट पहुँचता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने जन्म एवं निवास स्थान को छोड़ना नहीं चाहता।

बड़े बाँधों से पर्यावरण को खतरा न पैदा होने के उपाय—निःसन्देह यह बहुत महत्वपूर्ण है कि बड़े बाँध अनेक प्रकार से खतरा उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु सभी बड़ी योजनाओं या बाँधों को खतरे का सूचक मानना भी न्यायसंगत नहीं है। विकास के लिए इनकी भी आवश्यकता है। किन्तु इनके निर्माण के पूर्व पर्यावरण से सम्बन्धित प्रभावों का मूल्यांकन तथा पर्यावरण की सुरक्षा अवश्य ही सुनिश्चित की जानी चाहिए। अतः बड़े बाँधों के निर्माण से पूर्व सभी प्रकार के सुरक्षात्मक उपायों को क्रियात्मक करते हुए ही विकास के लिए इनका निर्माण विवेकपूर्ण ढंग से करना चाहिए।

प्रश्न 7. जम्मू-कश्मीर में अधिकांश झीलें किस प्रकार बनी हैं? झीलें हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं?

उत्तर—जम्मू एवं कश्मीर में डल झील, वूलर झील और नागिन झील आदि झीलें विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। वूलर झील मीठे पानी की भारत की सबसे बड़ी झीलों में से एक है। हिमनदों के पिघलने से जम्मू-कश्मीर में झीलों का निर्माण हुआ है। इन्हें हिमानी झील कहते हैं।

झीलों की उपयोगिता—झीलों का महत्व कई कारणों से है। कुछ झीलें नदियों को जन्म देती हैं तो कुछ नमक, सुहागा आदि प्रदान करती हैं। नदियों के बहाव को सन्तुलित रखने में भी झीलें सहायक होती हैं। निःसन्देह झीलें जल निकास में काफी उपयोगी सिद्ध होती हैं। वे प्रकृति की सुन्दरता को बढ़ाती हैं और पर्यटकों को अपनी ओर लुभाती भी हैं। ये झीलें मनुष्यों के लिए ही नहीं वरन् पक्षियों के लिए विशेष आकर्षण रखती हैं। सर्दी ऋतु में साइबेरिया जैसे सुदूर स्थानों से भी पक्षी इनकी ओर खिंचे चले आते हैं। सांभर झील जैसी कुछ नमकीन पानी की झीलें तो अपना विशेष आर्थिक महत्व रखती हैं। उनके पानी से नमक भी तैयार किया जाता है।

प्रश्न 8. निम्न में अन्तर कीजिए—

(क) हिमालयी नदियाँ तथा प्रायद्वीपीय नदियाँ।

(ख) पूर्व की ओर प्रवाहित नदियाँ तथा पश्चिम की ओर प्रवाहित नदियाँ।

उत्तर—(क) **हिमालय से निकलने वाली नदियों की प्रायद्वीपीय भारत की नदियों से तुलना**

तुलना का आधार	हिमालय से निकलने वाली नदियाँ	प्रायद्वीपीय भारत की नदियाँ
1. उत्पत्ति	इन नदियों की उत्पत्ति हिमानियों से हुई है।	इनकी उत्पत्ति वर्षा या भूमिगम जल से हुई है।
2. जल उपलब्धता	हिमालय से निकली नदियाँ सदानीरा हैं, इनमें वर्ष-भर जल रहता है।	ये नदियाँ पहाड़ियों एवं पठारों से निकलती हैं, इनमें वर्षा का जल प्राप्त होने के कारण पूरे वर्ष जल उपलब्ध नहीं होता है।
3. परिवहन	हिमालय से निकलने वाली नदियाँ समतल मैदानी क्षेत्रों में बहुत ही मन्द गति से प्रवाहित होती हैं। ये नदियाँ जल-परिवहन की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी हैं।	प्रायद्वीपीय भारत की नदियाँ, ऊबड़-खाबड़ और पथरीले भागों में तीव्र गति से प्रवाहित होती हैं। अतः प्रवाह-क्षेत्र की विषमता के कारण जल-परिवहन की दृष्टि से अनुपयोगी हैं।
4. अपवाह क्षेत्र	हिमालय से निकलने वाली नदियों का अपवाह क्षेत्र विशाल है।	प्रायद्वीपीय भारत की नदियों के अपवाह क्षेत्र बहुत ही छोटे हैं।
5. जल विद्युत व्यय	इन नदियों में प्राकृतिक जल-प्रपातों का अभाव पाया जाता है जिस कारण कृत्रिम प्रपात बनाकर जल-विद्युत शक्ति उत्पादन में भारी व्यय करना पड़ता है।	ये नदियाँ प्राकृतिक प्रपातों का निर्माण करती हैं जिससे जल-विद्युत शक्ति का उत्पादन सुगम एवं सस्ता पड़ता है।
6. सिंचाई क्षमता	हिमालय से निकलने वाली नदियों के प्रवाह क्षेत्र समतल हैं। अतः इनसे नहरें निकालना बहुत सरल है।	सदानीरा न होने के कारण इन नदियों से नहरें नहीं निकाली जा सकती हैं। अतः इनसे सीमित क्षेत्रों में ही सिंचन कार्य सम्भव हो पाया है।
7. जल-विद्युत क्षमता	देश की कुल सम्भावित जल-विद्युत शक्ति का 60% भाग इन नदियों में निहित है।	इन नदियों में देश की सम्भावित जल-विद्युत क्षमता का 40% भाग विद्यमान है।
8. उद्योग	हिमालय से निकलने वाली नदियों के किनारों पर महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं औद्योगिक नगरों का विकास हुआ है।	प्रायद्वीपीय भारत की नदियों के किनारों पर प्रायः महत्वपूर्ण नगरों का अभाव पाया जाता है।
9. उपजाऊ भूमि	इन नदियों ने विशाल मैदान में उपजाऊ काँप मिट्टी बिछाकर भारत के विस्तृत उत्तरी क्षेत्र को एक प्रमुख कृषि-प्रधान प्रदेश बना दिया है।	इन नदियों के तीव्र ढालों से प्रवाहित होने के कारण केवल तटीय भागों में ही छोटे-छोटे उपजाऊ डेल्टाई मैदानों का निर्माण किया जा सका है।

(ख) प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व एवं पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों में पर्याप्त अन्तर मिलता है। इन नदियों में मुख्य तुलनात्मक अन्तर को निम्नलिखित रूप में प्रकट किया जा सकता है—

क्र. सं.	प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ	प्रायद्वीपीय पठार के पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ
1.	प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व में बहने वाली मुख्य नदियाँ कृष्णा, गोदावरी, महानदी और कावेरी हैं।	प्रायद्वीपीय पठार के पश्चिम की ओर बहने वाली मुख्य नदियाँ नर्मदा व तापी हैं।
2.	ये नदियाँ डेल्टा बनाती हैं।	ये नदियाँ डेल्टा न बनाकर ज्वारनमुख बनाती हैं।
3.	इन नदियों की लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक है।	इन नदियों की लम्बाई कम है।
4.	ये नदियाँ पश्चिमी घाट के पर्वतों से निकलकर पूर्व की ओर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।	पश्चिमी घाट के पश्चिम की ओर बहने वाली ये नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं।
5.	ये नदियाँ कम गहरी एवं तंग घाटी मार्ग से बहती हैं।	ये नदियाँ बड़ी तंग और गहरी घाटियों से होकर बहती हैं।

●●

4 जलवायु

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर चुनें।

(i) नीचे दिए गए स्थानों में किस स्थान पर विश्व में सबसे अधिक वर्षा होती है?

(क) सिलचर (ख) चेरापूँजी

(ग) मासिनराम (घ) गुवाहाटी।

(ii) ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी मैदानों में बहने वाली पवन को निम्नलिखित में से क्या कहा जाता है?

(क) काल वैशाखी (ख) व्यापारिक पवनें

(ग) लू (घ) इनमें से कोई नहीं।

(iii) निम्नलिखित में से कौन-सा कारण भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में शीत ऋतु में होने वाली वर्षा के लिए उत्तरदायी है?

(क) चक्रवातीय अवदाब (ख) पश्चिमी विक्षोभ

(ग) मानसून की वापसी (घ) दक्षिण-पश्चिम मानसून।

(iv) भारत में मानूसन का आगमन निम्नलिखित में से कब होता है?

(क) मई के प्रारंभ में (ख) जून के प्रारंभ में

(ग) जुलाई के प्रारंभ में (घ) अगस्त के प्रारंभ में।

(v) निम्नलिखित में से कौन-सी भारत में शीत ऋतु की विशेषता है?

(क) गर्म दिन एवं गर्म रातें (ख) गर्म दिन एवं ठंडी रातें

(ग) ठंडा दिन एवं ठंडी रातें (घ) ठंडा दिन एवं गर्म रातें।

उत्तर—**(i)** (ग), **(ii)** (ग), **(iii)** (ख), **(iv)** (ख), **(v)** (ख)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए—

(i) भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कौन-कौन से कारक हैं?

उत्तर—भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

(a) अक्षांश, (b) ऊँचाई, (c) वायुदाब एवं पवन तंत्र।

(ii) भारत में मानसूनी प्रकार की जलवायु क्यों है?

उत्तर—स्थल तथा जल के गर्म एवं ठंडे होने की विभेदी प्रक्रिया के कारण भारत के स्थल भाग पर निम्न दाब का क्षेत्र उत्पन्न होता है, जबकि इसके आस-पास समुद्रों के ऊपर उच्च दाब का क्षेत्र बनता है। इसके परिणामस्वरूप पवन तंत्र की दिशा उलट जाती है। समुद्र (हिन्द महासागर) के ऊपर उच्च दाब क्षेत्र से आर्द्रता युक्त पवनें निम्न दाब क्षेत्र, स्थल भाग (भारतीय उपमहाद्वीप) की ओर चलने लगती हैं, जो भारत में भारी वर्षा प्रदान करती हैं।

(iii) भारत के किस भाग में दैनिक तापमान अधिक होता है एवं क्यों?

उत्तर—भारत के थार मरुस्थल में दैनिक तापमान अधिक होता है क्योंकि यहाँ जल की मात्रा बहुत कम है। रेतीली मिट्टी, नमी एवं ताप को ग्रहण (सोख) नहीं कर सकती। वायुमंडल में भी जलवाष्प की कमी होती है। यही कारण है कि दिन में तापमान बहुत बढ़ जाता है और रातें जल्दी ठंडी हो जाती हैं।

(iv) किन पवनों के कारण मालाबार तट पर वर्षा होती है?

उत्तर—दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा मालाबार तट पर भारी वर्षा करती है।

(v) जेट धाराएँ क्या हैं तथा वे किस प्रकार भारत की जलवायु को प्रभावित करती हैं?

उत्तर—जेट धारा एक संकरी पट्टी में स्थित क्षोभमंडल में अत्यधिक ऊँचाई (12,000 मीटर से अधिक) वाली पश्चिमी हवाएँ होती हैं। भारत में जेट धाराएँ ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर पूरे वर्ष हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होती हैं। इस पश्चिमी प्रवाह के द्वारा देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ आते हैं।

(vi) मानसून को परिभाषित करें। मानसून में विराम से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द 'मौसिम' से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है—मौसम। मानसून का अर्थ, एक वर्ष के दौरान वायु की दिशा में ऋतु के अनुसार परिवर्तन है।

मानसून में विराम, मानसून से सम्बन्धित एक परिघटना है। इसमें आर्द्र एवं शुष्क दोनों तरह के अंतराल होते हैं। दूसरे शब्दों में, मानसूनी वर्षा एक समय में कुछ दिनों तक ही होती है। इसमें वर्षा रहित अंतराल भी होते हैं। इसे ही 'मानसून में विराम' कहते हैं।

(vii) मानसून को एक सूत्र में बाँधने वाला क्यों समझा जाता है?

उत्तर—भारतीय उपमहाद्वीप पर मानसून का एक जैसा प्रभाव बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ता है। पवन प्रणालियों का मौसमी परिवर्तन और सम्बद्ध मौसमी स्थितियाँ एक नियमित मौसम चक्र बनाती हैं। वर्षा की अनिश्चितता और इसका असमान वितरण मानसून की विशेषताएँ हैं। भारतीय भू-परिदृश्य इसका वन्य और वनस्पति जीवन, पूरा कृषि कार्यक्रम, लोगों की जीवन शैली और उनके त्योहार; सभी कुछ मानसून के इर्द-गिर्द घूमते हैं। लोग आतुरता से मानसून की प्रतीक्षा करते हैं। यही कारण है कि मानसून को एक सूत्र में बाँधने वाला समझा जाता है।

प्रश्न 3. उत्तर भारत में पूर्व से पश्चिम की ओर वर्षा की मात्रा क्यों घटती जाती है?

उत्तर—प्रायद्वीपीय भारत की त्रिभुजाकार आकृति के कारण दक्षिण-पश्चिम मानसून दो भागों में बँट जाता है—(i) अरब सागर शाखा, (ii) बंगाल की खाड़ी शाखा। आर्द्रता से युक्त बंगाल की खाड़ी शाखा तीव्र गति से उत्तर-पूर्व में प्रवेश करती है और वहाँ पर स्थित पहाड़ियों से टकराकर घनघोर वर्षा प्रदान करती है। यहाँ ऊँचे पर्वतों के कारण मानसूनी पवनें पश्चिम में गंगा के मैदान की ओर मुड़ जाती हैं। जैसे-जैसे ये पवनें पश्चिम की ओर बढ़ती हैं, धीरे-धीरे इनकी आर्द्रता कम होती जाती है। इसलिए उत्तर भारत में पूर्व से पश्चिम की ओर वर्षा की मात्रा कम होती जाती है।

प्रश्न 4. कारण बताएँ।

(i) भारतीय उपमहाद्वीप में वायु की दिशा में मौसमी परिवर्तन क्यों होता है?

उत्तर—सर्दी के मौसम के दौरान हिमालय के उत्तर में उच्च दाब का क्षेत्र बन जाता है। ठंडी शुष्क पवनें उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। गर्मी के मौसम में, भूमि जल की तुलना में अधिक गर्मी ग्रहण करती है, जिसके कारण भीतरी भू-भाग के ऊपर एक निम्न दाब का क्षेत्र बन जाता है। इस प्रकार पवनें उच्च दाब के क्षेत्र से, जो दक्षिण में हिंद महासागर के ऊपर अवस्थित होती हैं, उत्तर में निम्न दाब वाले क्षेत्र की ओर बहने लगती हैं। परिणामस्वरूप पवन की दिशा पूर्णतः उलट जाती है।

(ii) भारत में अधिकतर वर्षा कुछ ही महीनों में होती है।

उत्तर—मानसूनी पवनें नियमित नहीं हैं। ये स्पंदमान प्रकृति की होती हैं। उष्णकटिबंधीय स्थल एवं समुद्रों के ऊपर प्रवाह के दौरान ये विभिन्न वायुमंडलीय अवस्थाओं से प्रभावित होती हैं। मानसून का समय जून से लेकर मध्य सितंबर तक होता है। इन चार महीनों में आर्द्रता से भरपूर पवनें, जिन्हें दक्षिण-पश्चिमी मानसून भी कहते हैं, भारत में प्रवेश करती हैं और भारी वर्षा प्रदान करती हैं। यही कारण है कि भारत में अधिकांश वर्षा इन्हीं कुछ महीनों में होती है।

(iii) तमिलनाडु तट पर शीत ऋतु में वर्षा होती है।

उत्तर—सर्दी के मौसम में देश में उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनें स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं। इसलिए देश के अधिकांश भाग में शुष्क मौसम होता है। तमिलनाडु का तट अपनी अधिकतम वर्षा इन्हीं पवनों से प्राप्त करता है, क्योंकि वहाँ ये पवनें समुद्र से स्थल की ओर चलती हैं।

(iv) पूर्वी तट के डेल्टा वाले क्षेत्र में प्रायः चक्रवात आते हैं।

उत्तर—उत्तर-पश्चिमी भारत के ऊपर बना कम दाब का क्षेत्र नवंबर के प्रारम्भ में बंगाल की खाड़ी में स्थानांतरित हो जाता है। यह स्थानांतरण चक्रवाती दबाव से जुड़ा होता है जो अंडमान सागर के ऊपर उत्पन्न होता है। यह चक्रवात जब भारत

के पूर्वी तट से गुजरता है तो भारी वर्षा होती है। ये उष्णकटिबंधीय चक्रवात अक्सर बहुत विध्वंसक होते हैं। परिणामस्वरूप गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियों के सघन आबादी वाले डेल्टा प्रदेश चक्रवातों द्वारा प्रभावित होते हैं।

(v) राजस्थान, गुजरात के कुछ भाग तथा पश्चिमी घाट का वृष्टि छाया क्षेत्र सूखा प्रभावित क्षेत्र है।

उत्तर—राजस्थान और गुजरात के कुछ भाग, जो पश्चिमी छोर पर स्थित हैं, सूखा प्रभावित हैं क्योंकि जब मानसूनी पवनें इन क्षेत्रों में पहुँचती हैं, उनकी आर्द्रता समाप्त हो चुकी होती है। पश्चिमी घाट का वृष्टि छाया क्षेत्र पवनविमुख ढाल पर स्थित है। यहाँ वर्षा न्यूनतम होती है। चूँकि पश्चिमी घाट के पवनविमुख स्थल, अल्प वर्षा वाले क्षेत्र में पड़ते हैं। अतः ये सूखा प्रभावित हैं।

प्रश्न 5. भारत की जलवायु अवस्थाओं की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को उदाहरण सहित समझाएँ।

उत्तर—भारत में जलवायु स्थितियों में स्पष्ट प्रादेशिक परिवर्तन देश-भर में दिखाई पड़ता है—

(i) गर्मी के मौसम में, राजस्थान के कुछ रेगिस्तानी भागों में तापमान 50° से० तक हो सकता है, वहीं पहलगाम और जम्मू और कश्मीर में 20° से० के आसपास हो सकता है। सर्दी की रात में जम्मू और कश्मीर के द्रास में तापमान न्यूनतम –45° से० तक हो सकता है, जबकि तिरुअनंतपुरम में तापमान 20° से० हो सकता है।

(ii) स्थान विशेष पर दिन एवं रात के तापमानों में बहुत अंतर होता है। थार रेगिस्तान में दिन का तापमान 50° से. हो सकता है, और उसी रात को तापमान गिरकर हिमांक तक पहुँच सकता है। दूसरी ओर, अंडमान अथवा निकोबार द्वीप समूह एवं केरल के दिन और रात के तापमान के बीच मुश्किल से ही अंतर होता है।

(iii) जबकि हिमालय क्षेत्र में अधिकांश वर्षण हिमपात के रूप में होता है, केवल देश के शेष भाग में यह वर्षा के रूप में होता है।

(iv) वार्षिक वर्षण में विभिन्नता 400 सेमी मेघालय में से लद्दाख और पश्चिमी राजस्थान में 10 सेमी तक न्यूनतम के रूप में देखने को मिलती है।

(v) देश के अधिकांश भागों में वर्षा जून से सितंबर के बीच होती है, परन्तु तमिलनाडु तट पर वर्षा शरद् ऋतु और सर्दी मौसम के शुरुआती दिनों में होती है।

प्रश्न 6. मानसून अभिक्रिया की व्याख्या करें।

उत्तर—मानसून की अभिक्रिया को समझने के लिए निम्नलिखित तथ्य आवश्यक हैं—

(i) स्थल एवं जल के गर्म एवं ठंडे होने की विभ्रेदी प्रक्रिया के कारण भारत के स्थल भाग पर निम्न दाब का क्षेत्र उत्पन्न होता है, जबकि इसके आसपास के समुद्रों के ऊपर उच्च दाब का क्षेत्र बनता है।

(ii) ग्रीष्म ऋतु में अंतः उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र की स्थिति गंगा के मैदान की ओर खिसक जाती है। यह विषुवतीय द्रोण होता है जो सामान्यतया भू-मध्य रेखा (विषुवत्) के लगभग 5° उत्तर में स्थित होता है। इसे मानसून के मौसम में मानसून द्रोण कहते हैं।

(iii) हिंद महासागर में मेडागास्कर के पूर्व में ऊपर लगभग 20° दक्षिण में उच्च दबाब क्षेत्र की उपस्थिति इस दबाब क्षेत्र की तीव्रता और स्थिति भारतीय मानसून को प्रभावित करती है।

(iv) ग्रीष्म ऋतु में तिब्बत का पठार भीषण रूप से गर्म हो जाता है। परिणामस्वरूप पठार पर समुद्र तल से लगभग 9 किमी० ऊपर शक्तिशाली ऊर्ध्वाधर वायु धाराओं और उच्च दाब का निर्माण होता है।

(v) ग्रीष्म ऋतु में हिमालय के ऊपर उत्तर-पश्चिमी जेट धाराओं का तथा भारतीय प्रायद्वीप के ऊपर उष्ण कटिबंधीय पूर्वी जेट धाराओं का प्रभाव होता है।

इसके अलावा, यह भी दर्ज किया गया है कि दक्षिणी महासागरों के ऊपर दाब की अवस्थाओं में परिवर्तन भी मानसून को प्रभावित करता है।

प्रश्न 7. शीत ऋतु की अवस्था एवं उसकी विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर—शीत ऋतु में मौसमी स्थितियाँ निम्न प्रकार हैं—

(i) अवधि—उत्तरी भारत में सर्दी का मौसम मध्य नवम्बर से शुरू होकर फरवरी तक रहता है। दिसंबर और जनवरी सबसे ठंडे महीने होते हैं।

(ii) तापमान—तापमान दक्षिण से उत्तर की ओर घटता जाता है। पूर्वी तट पर चेन्नई में औसत तापमान 24°-25° से० के

बीच होता है, जबकि उत्तरी मैदानों में यह 10°-15° से० के बीच होता है। दिन गर्म होते हैं और रातें ठंडी। उत्तर में तुषारपात सामान्य होता है और हिमालय के उच्च ढलानों में वर्षा होती है।

(iii) पवनें—इस मौसम के दौरान, उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनें प्रवाहित होती हैं। ये स्थल से समुद्र की ओर बहती हैं। अत: देश के अधिकांश भागों के लिए यह शुष्क मौसम होता है।

(iv) वर्षा—तमिलनाडु तट पर उत्तर-पूर्वी पवनों से कुछ वर्षा होती है, चूँकि यहाँ ये समुद्र से स्थल की ओर बहती हैं।

(v) वायुदाब—देश के उत्तरी भाग में एक कमजोर उच्च दाब का क्षेत्र बन जाता है, जिसमें हल्की पवनें इस क्षेत्र से बाहर की ओर प्रवाहित होती हैं। मौसम सुखद होता है, साफ आसमान, कम तापमान, कम आर्द्रता और पवनें धीरे-धीरे चलती हैं।

शीत ऋतु में उत्तरी मैदानों में पश्चिम एवं उत्तर-पश्चिम से चक्रवाती विक्षोभ का अंतर्वाह विशेष लक्षण है। यह कम दाब वाली प्रणाली भूमध्यसागर एवं पश्चिमी एशिया के ऊपर उत्पन्न होती है तथा पश्चिमी पवनों के साथ भारत में प्रवेश करती है। इसके कारण शीतकाल में मैदानों में वर्षा एवं पर्वतों पर हिमपात होता है।

प्रश्न 8. भारत में होने वाली मानसूनी वर्षा एवं उसकी विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर—भारत में मानसूनी वर्षा एवं उसकी विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) अनियमितता—मानसून का आगमन एवं वापसी बहुत ही अनियमित होती है।

(ii) मात्रा में अंतर—भारत के विभिन्न स्थानों में वर्ष-प्रतिवर्ष प्राप्त होने वाली वर्षा की मात्रा में बहुत परिवर्तनशीलता पाई जाती है। ये 15% से 80% तक होती है।

(iii) क्षेत्रानुसार मात्रा में अंतर—भारत के सभी भागों में मानसून से एक समान वर्षा नहीं होती है। अलग-अलग क्षेत्रों में प्राप्त होने वाली वर्षा की मात्रा में अंतर पाया जाता है। थार मरुस्थल में 10 सेमी से लेकर चेरापूँजी में 1000 सेमी तक वर्षा में परिवर्तन मिलता है।

(iv) अवधि में अंतर—ग्रीष्मकालीन मानसून की अवधि में भी अंतर पाया जाता है। ये पश्चिमी राजस्थान में दो महीने से कम तथा केरल एवं अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में छः महीने से अधिक अवधि का होता है।

(v) लंबे शुष्क अंतराल—लगातार भारी वर्षा के अंतराल के बाद बिना वर्षा वाला लंबा शुष्क अंतराल आता है।

(vi) बाढ़ और सूखा—बाढ़ और सूखे की समस्या मानसूनी जलवायु का एक और प्रमुख लक्षण है। एक ओर लगातार भारी वर्षा से बाढ़ आती है, वहीं दूसरी ओर मानसून की विफलता से देश के कुछ भागों में सूखा पड़ता है।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से क्या किसी स्थान की जलवायु को प्रभावित नहीं करता है?
(क) अक्षांश (ख) समुद्र से दूरी (ग) राहत (घ) वर्षा।

2. जलवायु शब्द का क्या अर्थ है?
(क) किसी निश्चित समय पर वातावरण की स्थिति
(ख) दीर्घकाल के लिए एक विशाल क्षेत्र के मौसम की स्थितियों का कुल योग
(ग) तापमान तथा वायुमण्डलीय दाब
(घ) आर्द्रता एवं वर्षा।

3. उन हवाओं के नाम बताइए जो गर्म समुद्र के ऊपर से बहती हैं तथा उपमहाद्वीप के लिए पर्याप्त नमी लाती हैं—
(क) व्यापारिक हवायें (ख) दक्षिण-पश्चिम व्यापारिक हवायें
(ग) उत्तर-पूर्वी व्यापारिक हवायें (घ) महावत।

4. अंतर उष्ण-कटिबन्धीय कॉन्ग्रीव क्षेत्र क्या है?
(क) भूमध्यरेखीय क्षेत्र में कम दबाव का व्यापक गर्त
(ख) पश्चिमी जल धारा समूह की हिमालय के उत्तर की ओर गति
(ग) वह स्थिति जबकि तिब्बत का पठार अत्यधिक गर्म हो जाता है
(घ) दक्षिणी कम्पन की स्थिति।

5. 'अक्टूबर हीट' क्या है?
(क) दिन का तापमान उच्च, रातें ठण्डी व आरामदायक/दिन का तापमान कष्टप्रद हो जाता है
(ख) अक्टूबर एक गर्म महीना है
(ग) गर्मी असहनीय हो जाती है
(घ) पारा बढ़ने लगता है।

6. अलनीनो शब्द किससे सम्बन्धित है?
(क) गर्म धारायें (ख) ठंडी धारायें
(ग) ठंडी पेरूबियन धारा को अस्थायी रूप से स्थानान्तरित करती पेरू के तट पर एक गर्म धारा
(घ) स्पेनिश शब्द जिसका अर्थ है बाल-यीशू।

7. निम्न में से कौनसा क्षेत्र विश्व में सर्वाधिक वर्षा का क्षेत्र है?
(क) सिल्चर (ख) मॉसिनराम (ग) चेरापूँजी (घ) गुवाहाटी।

8. ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी मैदानों में चलने वाली हवाओं को क्या नाम दिया गया है?
(क) काल बैसाखी (ख) लू (ग) व्यापारिक हवायें (घ) इनमें से कोई नहीं।

9. भारत के किस भाग में दिन का तापमान सर्वाधिक होता है?
(क) भारत का पश्चिमी हिस्सा (ख) लद्दाख
(ग) तमिलनाडु का समुद्र तट (घ) राजस्थान के रेगिस्तान।

10. सर्दियों में भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों में निम्न में से किसके कारण वर्षा आती है?
(क) चक्रवातीय दबाव (ख) पीछे हटता मानसून
(ग) पश्चिमी उथल-पुथल (घ) दक्षिण-पश्चिम मानसून।

11. वृष्टि छाया प्रदेश कहाँ है?
(क) हवा के रुख की तरफ (ख) पवनविमुख दिशा में
(ग) पूर्व की ओर (घ) पश्चिम की ओर।

[**उत्तर—1.** (घ), **2.** (ख), **3.** (ख), **4.** (क), **5.** (क), **6.** (ग), **7.** (ख), **8.** (ख), **9.** (घ), **10.** (ग)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. उन कारकों का उल्लेख कीजिए जो एक स्थान की जलवायु का निर्धारण करते हैं।

उत्तर—ये कारक हैं—अक्षांश, ऊँचाई, दबाव, वायु की व्यवस्था, समुद्र से दूरी, समुद्री धारायें एवं राहत सुविधायें।

प्रश्न 2. कौन-सा कारक वायु के सामान्य पथ से विचलित होने के लिए उत्तरदायी है?

उत्तर—कोरियोलिस बल (Coriolis force)।

प्रश्न 3. जेट धारायें क्या हैं?

उत्तर—जेट धारायें तीव्र गति से बहने वाली, सापेक्ष रूप से महीन वायु धारायें हैं जो ट्रोपोस्फेयर व स्ट्रेटोस्फेयर के मध्य क्षोभ सीमा (Tropopause) में पाई जाती हैं।

प्रश्न 4. शीत ऋतु में कौन-सा समुद्र पश्चिमी चक्रवातीय उथल-पुथल लाता है?

उत्तर—भूमध्यसागर।

प्रश्न 5. मानसून-विस्फोट से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—मानसून विस्फोट का अर्थ है अचानक भयानक तूफान व बिजली की कड़क के साथ नमीयुक्त तीव्र हवायें चलना।

प्रश्न 6. 'आम की बौछार' क्या है?

उत्तर—केरल व कर्नाटक में मानसून से पहले की बौछारें आम बात हैं। ये बौछारें आम के शीघ्र पकने में सहायक होती हैं तथा इन्हीं को 'आम की बौछार' कहा जाता है।

प्रश्न 7. पश्चिम राजस्थान में मानसून की समय-सीमा क्या है?

उत्तर—1 जुलाई से 15 सितम्बर।

प्रश्न 8. मालाबार समुद्रतट तथा कोरोमंडल समुद्रतट पर वर्षा किन हवाओं के कारण होती है?

उत्तर—मालाबार समुद्रतट—दक्षिण पश्चिमी मानसून हवायें। ये हवायें अरब सागर शाखा से जून/जुलाई में उठती हैं। कोरोमंडल समुद्रतट—दक्षिण पश्चिमी मानसून हवायें (अक्टूबर-दिसम्बर में)। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ हल्की वर्षा होती है।

प्रश्न 9. विश्व के किस क्षेत्र में सर्वाधिक वर्षा होती है?

उत्तर—मेघालय की खासी पहाड़ियों के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित मॉसिनराम में।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में अक्षांश व ऊँचाई किस प्रकार जलवायु को प्रभावित करते हैं?

उत्तर—भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

अक्षांश—कर्क वृत्त भारत के मध्य भाग अर्थात् पश्चिम में कच्छ के रन से पूर्व में मिजोरम से होकर गुजरती है। भारत का लगभग 50% भाग कर्क वृत्त के दक्षिण में स्थित है, जो उष्णकटिबन्धीय क्षेत्र कहलाता है। कर्क वृत्त के उत्तर में स्थित शेष भाग उपोष्ण कटिबंधीय है, इसलिए हमारे देश की जलवायु में उष्णकटिबन्धीय जलवायु व उपोष्ण कटिबन्धीय जलवायु दोनों की विशेषताएँ विद्यमान हैं।

ऊँचाई—हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित है, जिसकी औसत ऊँचाई लगभग 6000 मीटर है। इसी प्रकार भारत के विस्तृत तटीय क्षेत्र की अधिकतम ऊँचाई लगभग 30 मीटर है। हिमालय मध्य एशिया की ओर से आने वाली ठण्डी हवाओं को भारत में प्रवेश करने से रोकता है। यही कारण है कि भारत में मध्य एशिया की तुलना में कम ठण्ड पड़ती है।

प्रश्न 2. मौसम व जलवायु में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—एक विस्तृत क्षेत्र में लम्बी समयावधि, अर्थात् 30 वर्ष से अधिक में मौसम की विविधताओं व अवस्थाओं का सम्पूर्ण योग ही जलवायु है। मौसम व जलवायु के तत्त्व; जैसे—वायुमण्डलीय दाब, तापमान, आर्द्रता, वर्षण तथा पवन समान होते हैं। मौसम की अवस्था प्रायः एक ही दिन में कई बार बदलती है, किन्तु जलवायु कुछ सप्ताह अथवा महीनों तक एकसमान बनी रहती है; जैसे—दिन का तापमान गर्म या ठण्डा, हवादार या शांत, आकाश में बादल छाये रहना या साफ हो सकता है।

प्रश्न 3. भारत की जलवायु किस प्रकार वायुमंडलीय स्थितियों से निर्देशित होती है?

उत्तर—भारत में जलवायु सम्बन्धित मौसमी अवस्थाएँ निम्नांकित वायुमण्डलीय अवस्थाओं द्वारा प्रभावित होती हैं—

- वायुदाब व धरातलीय पवनें
- ऊपरी वायु परिसंचरण
- उष्णकटिबंधीय चक्रवात तथा पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ

भारत देश उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनों (Trade Winds) वाले क्षेत्र में स्थित है। व्यापारिक पवनों की उत्पत्ति उत्तरी गोलार्द्ध के उपोष्ण कटिबंधीय उच्च दाब पट्टियों से होती है। ये पवनें दक्षिण की ओर बहती हुई कोरिऑलिस बल के कारण दाईं ओर विक्षेपित हो जाती हैं तथा विषुवतीय निम्न दाब वाले क्षेत्रों की ओर प्रवाहित होती हैं। व्यापारिक पवनों में नमी की मात्रा कम होती है, क्योंकि ये स्थालीय क्षेत्रों में उत्पन्न होती व बहती हैं। परिणामस्वरूप वनों के द्वारा वर्षा कम अथवा नहीं भी होती है। इस प्रकार तो भारत को शुष्क क्षेत्र होना चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं है।

भारत का वायुदाब तथा पवन तंत्र अद्वितीय है। शीतकाल में हिमालय पर्वत के उत्तर में उच्च दाब की ठण्डी शुष्क हवाएँ दक्षिण की ओर निम्न दाब वाले महासागरीय क्षेत्र के ऊपर बहती हैं। ग्रीष्मकाल में आन्तरिक एशिया तथा उत्तर-पूर्वी भारत के ऊपर निम्न दाब का क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है। इससे ग्रीष्मकाल में वायु की दिशा पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाती है। वायु दक्षिण में हिन्द महासागर के उच्च दाब वाले क्षेत्र से दक्षिण-पूर्वी दिशा में बहती है तथा विषुवत् वृत्त को पार करके दाईं ओर मुड़ते हुए भारत में स्थित निम्न दाब की ओर बहने लगती है। इसलिए इन्हें दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों के नाम से जाना जाता है। प्रायः ये पवनें कोष्ण महासागरों के ऊपर बहती हैं और नमी ग्रहण करने के बाद भारत की मुख्य भूमि पर वर्षा करती हैं। इस क्षेत्र में ऊपरी वायु परिसंचरण पश्चिमी प्रवाह के प्रभाव में रहता है। इस प्रवाह का मुख्य घटक **जेट धारा** है। जेट

धाराएँ 27° से 30° उत्तर अक्षांशों के मध्य स्थित होती हैं। इसी कारण ये उपोष्ण कटिबंधीय पश्चिमी जेट धाराएँ कहलाती हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में जेट धाराएँ ग्रीष्मकाल को छोड़कर लगभग पूरे वर्ष हिमालय पर्वत के दक्षिण में प्रवाहित होती हैं। पश्चिमी प्रवाह के कारण भारत के उत्तर व उत्तर-पश्चिमी भाग में पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ आते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की आभासी गति के साथ उपोष्ण कटिबन्धीय पश्चिमी जेट धारा हिमालय के उत्तर में चली जाती है।

प्रश्न 4. मानसूनी वर्षा की चार प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—भारतीय मानसूनी वर्षा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) मानसूनी वर्षा—भारत में अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिमी ग्रीष्मकालीन मानसूनी पवनों से होती है। शीतकालीन मानसूनों से यहाँ बहुत ही कम (मात्र 2%) वर्षा होती है।

(2) वर्षा की निश्चित अवधि—भारत की 75 से 90% वर्षा 15 जून से 15 सितम्बर के मध्य एक निश्चित अवधि में ही होती है।

(3) मूसलाधार वर्षा—भारत में तेज गति से अर्थात् मूसलाधार वर्षा होती है। यहाँ एक ही दिन में 50 सेमी तक वर्षा हो जाती है।

(4) वर्षा की अनियमितता—भारतीय वर्षा बहुत ही अनियमित होती है। कभी अधिक एवं मूसलाधार वर्षा हो जाने से बाढ़ आ जाती है और कभी वर्षा की कमी के कारण सूखा भी पड़ जाता है।

(5) वर्षा की अनिश्चितता—भारतीय वर्षा बहुत ही अनिश्चित होती है। कभी मानसून शीघ्र आ जाता है और कभी देर से। कभी-कभी मानसूनी वर्षा के बीच में एक लम्बा अन्तराल भी आ जाता है।

(6) वितरण की असमानता—भारतीय वर्षा का वितरण सभी स्थानों पर एकसमान नहीं है। एक ओर मौसिमराम में 1,354 सेमी से अधिक वर्षा होती है, वहीं दूसरी ओर राजस्थान में केवल 10 सेमी से भी कम वर्षा होती है।

(7) पर्वतीय वर्षा—भारत में 95% वर्षा पर्वतीय है। केवल 5% वर्षा ही चक्रवातों द्वारा होती है।

प्रश्न 5. कारण स्पष्ट कीजिए कि क्यों शीत ऋतु में चेन्नई में अधिक वर्षा होती है?

उत्तर—भारत का पूर्वी तट विशेषकर तमिलनाडु ग्रीष्म ऋतु में शुष्क रहता है, जबकि भारत के अन्य भागों में इन दिनों पर्याप्त वर्षा होती है। तमिलनाडु तट पर जाड़े में वर्षा होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(1) तमिलनाडु तट दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दृष्टिछाया क्षेत्र में पड़ने के कारण गर्मी में वर्षा प्राप्त नहीं करता है।

(2) जाड़े में तमिलनाडु तट उत्तर-पूर्वी पवनों के प्रभाव के क्षेत्र में पड़ता है। ये पवनें शुष्क होती हैं।

(3) अब उत्तर-पूर्वी पवनें बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरती हैं तो ये नमी ग्रहण कर लेती हैं, अतः जब ये पवनें तमिलनाडु तट पर पहुँचती हैं तो ऊपर उठकर संघनित हो जाती हैं तथा यहाँ खूब वर्षा करती है।

इस प्रकार दक्षिणी भारत के तमिलनाडु राज्य के पूर्वी तट पर गर्मियों की अपेक्षा सर्दियों में अधिक वर्षा होती है।

प्रश्न 6. स्पष्ट कीजिए कि क्यों भारतीय उपमहाद्वीप में मौसमी हवायें अपनी दिशाएँ बदल लेती हैं?

उत्तर—भारतीय उपमहाद्वीप में शरद ऋतु में (नवम्बर से अप्रैल तक) उत्तर-पूर्वी मानसून हवाएँ उत्तर-पूर्व से समुद्र की ओर चलने लगती हैं, परन्तु ग्रीष्म ऋतु के आते ही वे अपनी दिशा बदल देती हैं और समुद्र से धरातल की ओर चलने लगती हैं। पवनों की दिशा में ऋतुवत् परिवर्तन होने के निम्नलिखित कारण हैं—

(1) शरद ऋतु में पूरे उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप में उच्च वायुदाब का केन्द्र बन जाता है। इसके विपरीत जल भाग पर इस समय निम्न वायुदाब रहता है। अतः पवनें स्थल से जल की ओर चलती हैं।

(2) इसके विपरीत ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप अत्यधिक गर्म रहता है। इससे यहाँ की वायु गर्म होकर ऊपर उठ जाती है और यहाँ निम्न वायुदाब का केन्द्र बन जाता है। अतः यहाँ इस समय उच्च वायुदाब रहता है इसलिए पवनें सागर से स्थल की ओर चलती हैं।

प्रश्न 7. भारत में अधिकांश वर्षा कुछ ही महीनों में क्यों होती है?

उत्तर—भारत में अधिकांश वर्षा (लगभग 75% से अधिक) जून से सितम्बर के मध्य में होती है, इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(1) ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की उत्तरायण स्थिति के कारण उत्तर-पश्चिमी भारत में भीषण गर्मी पड़ती है।

(2) अत्यधिक गर्मी पड़ने के कारण उत्तर-पश्चिमी भारत में न्यून वायुदाब केन्द्र स्थापित हो जाता है।

(3) न्यून वायुदाब के फलस्वरूप पवनें हिन्द महासागर के उच्च वायुदाब क्षेत्रों से उत्तर-पश्चिमी भारत के निम्न वायुदाब क्षेत्रों की ओर आकर्षित होती हैं।

(4) जल-क्षेत्रों से चलने के कारण ये पवनें आर्द्रता से परिपूर्ण होती हैं।

(5) इन पवनों से जून से सितम्बर के मध्य व्यापक एवं मूसलाधार वर्षा होती है।

(6) वायुदाब का यह क्रम ग्रीष्म ऋतु में ही उत्पन्न होता है। अतः भारत में 75 से 90% वर्षा ग्रीष्म ऋतु के चार महीनों में होती है।

प्रश्न 8. जोधपुर में गर्म रेगिस्तानी जलवायु क्यों है?

उत्तर—राजस्थान के कुछ भाग तथा पश्चिमी घाट का वृष्टिछाया क्षेत्र सूखा प्रभावित क्षेत्र है, इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(1) पश्चिमी राजस्थान या थार मरुस्थल में इसलिए कम वर्षा होती है क्योंकि यहाँ स्थित अरावली पर्वत-श्रेणी पवनों के समानान्तर स्थित है इसलिए यह श्रेणी अरब सागर से उठने वाली पवनों को नहीं रोकती है और पवनें बिना वर्षा किए आगे निकल जाती हैं।

(2) ग्रीष्म ऋतु में पश्चिमी राजस्थान या थार मरुस्थल का तापमान अधिक रहता है, इसलिए हवाएँ स्वयं शुष्क हो जाती हैं जो वर्षा करने में असमर्थ रहती हैं।

(3) थार मरुस्थल में वनस्पति का अभाव है जिसके कारण हवाओं में आर्द्रता नहीं रहती इसलिए वर्षा नहीं हो पाती। जोधपुर थार मरुस्थल में स्थित है अतः यहाँ गर्म रेगिस्तानी जलवायु है।

प्रश्न 9. दक्षिण-पश्चिम मानसून एवं उत्तर-पूर्वी मानसून में अन्तर स्पष्ट कीजिए। कोई तीन अन्तर दीजिए।

उत्तर—दक्षिण-पश्चिम मानसून जून माह में आरम्भ होता है। जब भारत में कर्क रेखा पर सूर्य की किरणें लम्बवत् पड़ती हैं जिससे उत्तरी भारत का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है जिसके परिणामस्वरूप निम्न वायुदाब क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है। इसके विपरीत हिन्द महासागर में तापमान निम्न होने कारण वायुदाब अधिक होता है अतः पवनें महासागरों से स्थल खण्डों की ओर चलने लगती हैं। सागर के ऊपर से चलने के कारण ये आपदा से परपूर्ण होती हैं तथा दक्षिण से उत्तर की ओर चलना आरम्भ करती हैं परन्तु जैसे ही ये विषुवत रेखा को पार करती हैं तो पृथ्वी की दैनिक गति के कारण इनकी दिशा दक्षिण पश्चिम हो जाती है, इसे दक्षिण-पश्चिमी मानसून कहते हैं। इसके विपरीत उत्तर-पूर्वी मानसून पवनें पृथ्वी से समुद्र की ओर चलती हैं, अतः इनमें वर्षा करने की क्षमता नहीं होती है। बंगाल की खाड़ी से गुजरते समय ये पवनें कुछ आर्द्रता अवश्य ग्रहण कर लेती हैं, फलतः तमिलनाडु में इससे वर्षा हो जाती है।

प्रश्न 10. भारत के पूर्वी समुद्र तट के डेल्टा क्षेत्र में निरन्तर रूप से चक्रवात क्यों आते रहते हैं?

उत्तर—अक्टूबर और नवम्बर माह ग्रीष्म ऋतु से शरद ऋतु में परिवर्तित होने वाला समय होता है। इस समय वातावरण में मौसम सम्बन्धी विषमताएँ अधिक उत्पन्न होती हैं। अक्टूबर में उत्तरी भारत के बहुत-से भागों में तापमान गिरने लगता है, इसलिए कम दाब का केन्द्र अब बंगाल की खाड़ी की ओर बढ़ने लगता है। इसी परिवर्तन के परिणामस्वरूप चक्रवात उत्पन्न होने की परिस्थितियाँ बनने लगती हैं। गोदावरी, कृष्णा व कावेरी डेल्टा में इस चक्रवात के प्रभाव एवं उत्पन्न होने के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं—

(1) नवम्बर माह में अण्डमान व निकोबार द्वीपसमूह में उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात उत्पन्न होते हैं। ये उत्तर-पूर्वी पवनों के प्रभाव में आकर दक्षिण-पश्चिम में चलते हैं।

(2) इसके कारण उत्तर-पश्चिम भारत का निम्न वायुदाब क्षेत्र बंगाल की खाड़ी में स्थानान्तरित हो जाता है। इनकी दिशा पूर्वी तट की ओर होती है।

(3) जो चक्रवात पूर्वी तट को पार करते हैं वे बहुत तीव्र गति वाले होते हैं तथा विनाशकारी वर्षा करते हैं। अतः इन चक्रवातों के प्रभाव से यहाँ जन-धन की भारी हानि होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मानसून क्या हैं? ये कैसे आते हैं?

उत्तर—मानसून का अर्थ—'मानसून' शब्द की व्युत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' तथा मलायन शब्दद 'मोनसिन' से हुई है। इस प्रकार की वायुधाराएँ उच्च वायुधारा से निम्न वायुभार की ओर वर्ष में क्रमशः दो बार परिवर्तित होती हैं। वे शीत ऋतु में स्थलखण्ड में जलखण्ड की ओर तथा ग्रीष्म ऋतु में जलखण्ड से स्थलखण्ड की ओर चला करती हैं। भारत में

मानसूनी पवनों के उत्पन्न होने का कारण विस्तृत स्थल एवं जल भागों पर बारी-बारी से निम्न एवं उच्च वायुदाबों का उत्पन्न होना है।

मानसून अभिक्रिया—मानसून के विषय में प्राचीन मत यही था कि इसका सम्बन्ध केवल धरातलीय पवनों से ही है। परन्तु आधुनिक अनुसन्धानों से ज्ञात हुआ है कि ऊपरी जेट पवनें मानसून की अभिक्रिया (रचना तन्त्र) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मौसम वैज्ञानिकों को प्रशान्त महासागर तथा हिन्द महासागर के ऊपर होने वाले मौसम सम्बन्धी परिवर्तनों के पारस्परिक सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त हुई है। उत्तरी गोलार्द्ध में प्रशान्त महासागर के उपोष्ण कटिबन्धीय प्रदेश में जिस समय वायुभार अधिक होता है, उस समय हिन्द महासागर के दक्षिणी भाग में वायुभार कम रहता है। ऋतुओं के अनुसार इन महासागरों में वायुभार की यह स्थिति उलट जाती है। इसी कारण विभिन्न ऋतुओं में विषुवत् वृत्त के आर-पार पवनों की स्थिति भी बदलती रहती है। विषुवत् वृत्त के आर-पार पवन पेटियों के खिसकने तथा इनकी तीव्रता से मानसून प्रभावित होता है। 20° उत्तरी अक्षांश से लेकर 20° दक्षिणी अक्षांश के मध्य में स्थित उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों पर मानसून का प्रसार रहता है परन्तु भारतीय उपमहाद्वीपीय में इन पर हिमालय पर्वतश्रेणियों का बहुत प्रभाव पड़ता है। इनके प्रभाव से पूरा भारतीय उपमहाद्वीप विषुवतीय आर्द्र पवनों के प्रभाव से आ जाता है। मानसूनों का यह प्रभाव 2 से 5 माह तक बना रहता है। यहाँ जून से सितम्बर तक 75% से 90% तक वर्षा इसी मानसून अभिक्रिया के कारण होती है।

अतः भारत में मानसून अभिक्रिया में अरब सागर के चारों ओर तापमान की उच्च स्थिति, गर्मियों में अन्तःउष्ण कटिबन्धीय अभिसरण क्षेत्र की उत्तरी स्थिति, हिन्द महासागर में उच्चदाब, तिब्बत के पठार पर गर्मियों में उच्च तापमान की उपस्थिति एवं गर्मियों में हिमालय के उत्तर में पश्चिमी जेट वायुधारा की गतिविधि तथा प्रायद्वीप पर उष्ण कटिबन्धीय पूर्वी वायुधारा की उपस्थिति का महत्वपूर्ण हाथ रहता है।

प्रश्न 2. शक्तिशाली हिमालय किस प्रकार भारत की जलवायु को प्रभावित करते हैं?

उत्तर—हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित है जिसकी औसत ऊँचाई लगभग 6000 मीटर है। हिमालय पर्वत मध्य एशिया की ओर से आने वाली ठण्डी हवाओं को भारत में प्रवेश करने से रोकता है। यही कारण है कि भारत में मध्य एशिया की तुलना में कम ठण्ड पड़ती है। मानसूनी पवनों पर पर्वतों की दिशा और ऊँचाई का प्रभाव पड़ता है। भारत में हिमालय पर्वत इसका प्रमुख उदाहरण है। यह मानसूनी पवनों को रोककर भारत में मानसूनी वर्षा कराने में सहायक होता है। इस प्रकार हिमालय भारत की जलवायु को निर्धारित करता है।

प्रश्न 3. दक्षिण पश्चिम मानसून एवं उत्तर-पूर्वी मानसून में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 9 का उत्तर।

प्रश्न 4. अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(i) मौसम व जलवायु तथा (ii) मानसून व मानसून की वापसी।

उत्तर—(i) मौसम व जलवायु में अन्तर—किसी विशाल क्षेत्र में दीर्घकालीन (30 वर्ष से अधिक) मौसम की अवस्थाओं तथा विविधताओं का योग ही जलवायु ही मौसम एक विशेष समय में एक क्षेत्र के वायुमण्डल की अवस्था को बताता है। मौसम तथा जलवायु के तन्त्र, जैसे—तापमान, वायुमण्डलीय दाब, पवन, आर्द्रता तथा वर्षण एक ही होते हैं। मौसम की अवस्था प्रायः एक दिन में ही कई बार बदलती है, लेकिन फिर भी कुछ सप्ताह, महीनों तथा वायुमण्डलीय अवस्था लगभग एकसमान ही बनी रहती है। जैसे—दिन गर्म या ठण्डे, हवादार या शान्त, आसमान बादलों से घिरा या साफ तथा आर्द्र या शुष्क हो सकते हैं। महीनों को औसत वायुमण्डलीय अवस्था के आधार पर वर्ष को ग्रीष्म, शीत या वर्षा ऋतुओं में विभाजित किया जाता है।

(ii) मानसून व मानसून की वापसी में अन्तर—भारत में मानसून रचनातन्त्र में जेट वायुधाराओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है; क्योंकि इन्हीं के आध्धार पर मौसम के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है। भारत में व्यापारिक पवनों के विपरीत मानसूनी पवनें नियमित नहीं हैं, लेकिन ये स्पंदमान प्रकृति की होती हैं। उष्ण कटिबन्धीय समुद्रों के ऊपर प्रवाह के दौरान ये विभिन्न वायुमण्डलीय अवस्थाओं से प्रभावित होती हैं। भारत में मानसून का आगमन एवं वापसी का कालक्रम निम्नलिखित है—

1. मानसून का समय जून के आरम्भ से लेकर मध्य सितम्बर तक, 100 से 120 दिनों तक के बीच होता है। इसके आगमन के समय सामान्य वर्षा में अचानक वृद्धि हो जाती है तथा लगातार कई दिनों तक यह जारी रहता है। इसे मानसून प्रस्फोट (फटना) कहते हैं तथा इसे मानसून-पूर्व बौछारों से पृथक् किया जा सकता है।

2. सामान्यतः जून के प्रथम सप्ताह में मानसून भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर से प्रवेश करता है। इसके बाद यह दो भागों में बँट जाता है—अरब सागर शाखा एवं बंगाल की खाड़ी शाखा। अरब सागर शाखा लगभग दस दिन बाद, 10 जून के आस-पास मुम्बई पहुँचती है। यह एक तीव्र प्रगति है। बंगाल की खाड़ी शाखा भी तीव्रता से आगे की ओर बढ़ती है तथा जून के प्रथम सप्ताह में असम पहुँच जाती है। ऊँचे पर्वतों के कारण माानसून पवनें पश्चिम में गंगा के मैदान की ओर मुड़ जाती हैं तथा मध्य जून तक अरब सागर शाखा सौराष्ट्र, कच्छ एवं देश के मध्य भागों में पहुँच जाती है। इसके पश्चात् अरब सागर शाखा एवं बंगाल की खाड़ी शाखा, दोनों गंगा के मैदान के उत्तर-पश्चिम भाग में आपस में मिल जाती हैं।

3. दिल्ली में सामान्यतः मानसूनी वर्षा बंगाल की खाड़ी शाखा से जून के अन्तिम सप्ताह में (लगभग 29 जून तक) होती है। जुलाई के प्रथम सप्ताह तक मानसून पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा पूर्वी राजस्थान में पहुँच जाता है। मध्य जुलाई तक मानसून हिमाचल प्रदेश एवं देश के शेष हिस्सों में भी पहुँच जाता है।

4. मानसून की वापसी भी अपेक्षाकृत एक क्रमिक प्रक्रिया है। जो भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों से सितम्बर में प्रारम्भ हो जाती है। मध्य अक्टूबर तक मानसून प्रायद्वीप के उत्तरी भाग से पूरी तरह पीछे हट जाता है। प्रायद्वीप के दक्षिणी आधे भाग में वापसी की गति तीव्र होती है। दिसम्बर के प्रारम्भ तक देश के शेष भाग से मानसून की वापसी हो जाती है।

5. द्वीपों पर मानसून की सबसे पहली वर्षा होती है। यह क्रमशः दक्षिण से उत्तर की ओर अप्रैल के अन्तिम सप्ताह से लेकर मई के प्रथम सप्ताह तक होती है। मानसून की वापसी भी क्रमशः दिसम्बर के प्रथम सप्ताह से जनवरी के प्रथम सप्ताह तक उत्तर से दक्षिण की ओर होती है। इस समय देश का शेष भाग शीत ऋतु के प्रभाव में होता है।

प्रश्न 5. भारत में जलवायु की परिस्थितियों को नियन्त्रित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक—भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

अक्षांश—कर्क रेखा भारत के मध्य भाग अर्थात् पश्चिम में कच्छ के रन से पूर्व में मिजोरम से होकर गुजरती है। भारत का लगभग 50% भाग कर्क वृत्त के दक्षिण में स्थित है, जो उष्णकटिबन्धीय क्षेत्र कहलाता है। कर्क वृत्त के उत्तर में स्थित शेष भाग उपोष्ण कटिबंधीय है, इसलिए हमारे देश की जलवायु में उष्णकटिबन्धीय जलवायु व उपोष्ण कटिबन्धीय जलवायु दोनों की विशेषताएँ विद्यमान हैं।

ऊँचाई—हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित है, जिसकी औसत ऊँचाई लगभग 6000 मीटर है। इसी प्रकार भारत के विस्तृत तटीय क्षेत्र की अधिकतम ऊँचाई लगभग 30 मीटर है। हिमालय मध्य एशिया की ओर से आने वाली ठण्डी हवाओं को भारत में प्रवेश करने से रोकता है। यही कारण है कि भारत में मध्य एशिया की तुलना में कम ठण्ड पड़ती है।

शेष प्रश्न के उत्तर के लिए देखें लघु उत्तरीय प्रश्न 3 का उत्तर।

प्रश्न 6. भारत की जलवायु की स्थितियों में क्षेत्रीय विभिन्नताओं के आधार पर अन्तर को उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत में जलवायु की विविधता—भारत की विलक्षण जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है। एशिया में इस प्रकार की जलवायु मुख्यतः दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में पाई जाती है। सामान्य प्रतिरूप में लगभग एकरूपता होते हुए भी देश की जलवायु-अवस्था में स्पष्ट प्रादेशिक भिन्नताएँ हैं। यदि हम अपने देश की जलवायु, मौसम, तापमान एवं वर्षण को देखें तो ज्ञात होता है कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर तथा मौसम से दूसरे मौसम में अत्यधिक विविधता है। यहाँ गर्मियों में, राजस्थान के मरुस्थल में कुछ स्थानों पर तापमान लगभग 50° से. तक पहुँच जाता है, जबकि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में तापमान लगभग 20° से. तक ही रहता है। सर्दी की रात में, जम्मू-कश्मीर का तापमान – 45° से. तक हो सकता है, जबकि थिरुवंनथपुरम् (त्रिवेन्द्रम) में यह 22° से. हो सकता है।

वर्षण के रूप तथा प्रकार के साथ-साथ इसकी मात्रा एवं ऋतु के अनुसार वितरण में भी भिन्नता दिखाई देती है। हिमालय में वर्षण अधिकतर हिमपात के रूप में होता है, जबकि देश के शेष भाग में यह वर्षा के रूप में होता है। वार्षिक वर्षण में भिन्नता मेघालय में 400 सेमी से लेकर लद्दाख एवं पश्चिमी राजस्थान में यह 10 सेमी से भी कम होती है। देश के अधिकतर भागों में जून से सितम्बर तक वर्षा होती है, लेकिन कुछ क्षेत्रों; जैसे—तमिलनाडु तट पर अधिकतर वर्षा अक्टूबर एवं नवम्बर में होती है। भारत में मुख्यतः सर्दी और गर्मी की दो स्पष्ट ऋतुएँ हैं तथा वर्षा मुख्यतः गर्मी में हुआ करती है। यह दोनों तथ्य भारत की जलवायु और मानसून की विशेषताओं को प्रकट करते हैं।

सामान्यतः तटीय क्षेत्रों के तापमान में कम अन्तर होता है। भारत के आन्तरिक क्षेत्रों में मौसमी या ऋतु आधारित अन्तर अधिक होता है। वर्षा की मात्रा उत्तरी मैदान में सामान्यतः पूर्व से पश्चिम की ओर घटती जाती है। ये सभी भिन्नताएँ लोगों के जीवन में विविधता लाती हैं तथा उनके भोजन, वस्त्र तथा आवास आदि में देखने को मिलती हैं।

प्रश्न 7. निम्न को परिभाषित कीजिए—

(क) आम की बौछारें, (ख) जेट धाराएँ, (ग) अल-नीनो, (घ) लू।

उत्तर—(क) आम की बौछारें—तटीय कर्नाटक एवं केरल में पूर्व मानसूनी वर्षा होती है जिसके कारण आम जल्दी पक जाते हैं। इसी कारण इस वर्षा को आम की बौछारें कहते हैं।

(ख) जेट धाराएँ—ये धाराएँ ऊपरी वायुमण्डल, अर्थात् क्षोभमण्डल में अत्यधिक ऊँचाई (12000 मीटर से अधिक) पर तेज गति से प्रवाहित होती हैं। इनके प्रवाह की दिशा जलधाराओं की तरह ही निश्चित होती है, इसलिए इसे 'जेट स्ट्रीम' भी कहा जाता है। इनकी गति ग्रीष्मकाल में 110 किमी/घण्टा तथा शीतकाल में 184 किमी/घण्टा होती है। मौसम वैज्ञानिकों ने बहुत-सी अलग-अलग जेट धाराओं की पहचान की है, किन्तु उनमें सबसे स्थिर मध्य अक्षांशीय तथा उपोष्ण कटिबन्धीय जेट धाराएँ हैं।

(ग) अल-नीनो—यह एक गर्म समुद्री जल धारा है। समुद्र में दो प्रकार की जलधाराएँ प्रवाहित होती हैं। (1) गर्म जल धारायें (2) ठण्डी जल धाराएँ।

(घ) लू—भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में मई एवं जून महीनों में निम्न वायुदाब गर्त के क्षेत्र में दोपहर बाद चलने वाली गर्म एवं शुष्क पवनों को लू कहते हैं। इन पवनों में बहुत कम आर्द्रता पायी जाती है। इन पवनों के कारण इस क्षेत्र में रहने वाले लोग बीमार हो जाते हैं।

●●

5 प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) रबड़ का सम्बन्ध किस प्रकार की वनस्पति से है?

(क) टुंड्रा (ख) हिमालय
(ग) मैंग्रोव (घ) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन।

(ii) सिनकोना के वृक्ष कितनी वर्षा वाले क्षेत्र में पाए जाते हैं?

(क) 100 सेमी (ख) 70 सेमी
(ग) 50 सेमी (घ) 50 सेमी से कम वर्षा।

(iii) सिमलीपाल जीव मंडल निचय कौन-से राज्य में स्थित है?

(क) पंजाब (ख) दिल्ली
(ग) उड़ीसा (घ) पश्चिम बंगाल।

(iv) भारत के कौन-से जीव मंडल निचय विश्व के जीव मंडल निचयों में लिए गए हैं?

(क) मानस (ख) मन्नार की खाड़ी
(ग) दिहांग-दिबांग (घ) नंदा देवी।

उत्तर—(i) (घ), **(ii)** (क), **(iii)** (ग), **(iv)** (ख)।

प्रश्न 2. संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्न—

(i) पारिस्थितिक तंत्र किसे कहते हैं?

उत्तर—एक पारिस्थितिक तंत्र में किसी भी क्षेत्र के पादप एवं प्राणी आपस में तथा अपने भौतिक पर्यावरण से अंतर्सम्बन्धित होते हैं। मनुष्य भी इस पारिस्थितिक तंत्र का अविच्छिन्न भाग है।

(ii) भारत में पादपों तथा जीवों का वितरण किन तत्वों द्वारा निर्धारित होता है?

उत्तर—(क) तापमान, (ख) सूर्य का प्रकाश,
(ग) वर्षण, (घ) मृदा,
(ङ) भू-आकृति।

(iii) जीव मंडल निचय से क्या अभिप्राय है? कोई दो उदाहरण दो।

उत्तर—जीव मंडल निचय एक बहु-उद्देशीय संरक्षित क्षेत्र होता है, जहाँ प्रत्येक पादप एवं जीव-प्रजाति को प्राकृतिक वातावरण में संरक्षण प्रदान किया जाता है। इसके दो उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

(1) नंदा देवी (उत्तरांचल),
(2) नीलगिरी (केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु)।

(iv) कोई दो वन्य प्राणियों के नाम बताइए जो कि उष्ण कटिबंधीय वर्षा और पर्वतीय वनस्पति से मिलते हैं।

उत्तर—

वन	जीव-जंतु
1. उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन	हाथी, लंगूर, लेमूर, स्लॉथ तथा एक शृंगी गैंडा।
2. पर्वतीय वन	कश्मीरी, महामृग, चितरा हिरण, जंगली भेड़, खरगोश, तिब्बती, बारहसिंघा, याक, हिम तेंदुआ, आइबेक्स, लाल पांडा, रीछ, गिलहरी, घने बालों वाली भेड़ एवं बकरियाँ।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में अंतर कीजिए—

(i) वनस्पति जगत तथा प्राणी जगत

उत्तर—वनस्पति जगत—किसी प्रदेश अथवा समय विशेष के पेड़-पौधों के लिए वनस्पति जगत शब्द का प्रयोग किया जाता है।

प्राणी जगत—जीव-जंतुओं की प्रजातियों के लिए जंतु अथवा प्राणी जगत शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(ii) सदाबहार और पर्णपाती वन

उत्तर—

क्र०सं०	सदाबहार वन	पर्णपाती वन
1.	सदाबहार वन भारी वर्षा वाले प्रदेशों में पाए जाते हैं, जहाँ अल्पकालिक शुष्क मौसम के साथ 200 सेमी से अधिक वर्षा होती है।	ये वन 70 सेमी और 200 सेमी के बीच होने वाली वर्षा वाले स्थानों पर पाए जाते हैं।
2.	यहाँ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे—वृक्ष, झाड़; लताएँ आदि क्योंकि यहाँ जलवायु गर्म एवं आर्द्र होती है।	ये वन दो भागों में विभाजित होते हैं—**आर्द्र पर्णपाती—**ये वन 100 से 200 सेमी के बीच वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। **शुष्क पर्णपाती—**ये वन 70 से 100 सेमी के बीच वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं।
3.	यहाँ पतझड़ का समय निर्धारित नहीं होता है। अतः वन पूरे वर्ष हरा-भरा दिखाई पड़ता है।	यहाँ शुष्क मौसम में लगभग 6 से 8 सप्ताह के लिए पतझड़ का समय होता है। प्रत्येक वृक्ष, प्रजाति का पतझड़ का एक निश्चित समय होता है। अतः वन उजड़ा हुआ नहीं लगता है।
4.	ये पश्चिमी घाट, असम और तमिलनाडु के कुछ भागों, लक्षद्वीप एवं अंडमान-निकोबार द्वीप समूहों में पाए जाते हैं।	**आर्द्र पर्णपाती वन—**उत्तर-पूर्वी राज्यों, हिमालय के गिरिपदों में, झारखंड, पश्चिमी उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और पश्चिमी घाट के पूर्वी ढालों पर पाए जाते हैं। **शुष्क पर्णपाती वन** प्रायद्वीपीय पठार, बिहार एवं उत्तर प्रदेश के मैदानों के छोटे-छोटे भागों में पाये जाते हैं।
5.	मुख्य वृक्ष हैं—एबोनी, महोगनी एवं रोजवुड।	सागोन काष्ठ इस वन की सबसे विशिष्ट प्रजातियों में से एक है। अन्य हैं—बाँस, साल, शीशम, चंदन, खैर, अर्जुन एवं गुलबेरी।

प्रश्न 4. भारत में विभिन्न प्रकार की पाई जाने वाली वनस्पति के नाम बताएँ और अधिक ऊँचाई पर पाई जाने वाली वनस्पति का ब्यौरा दीजिए।

उत्तर—(i) भारत में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पति हैं—

(1) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन
(2) उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन
(3) कंटीले वन एवं झाड़ियाँ
(4) पर्वतीय वन
(5) मैंग्रोव वन।

(ii) अधिक ऊँचाई वाली वनस्पति सामान्यतया 3,600 मी० से अधिक ऊँचाई पर पाई जाती है, जिसमें अल्पाइन वनस्पति सम्मिलित होती है। सिल्वर-फर, जुनीपर, पाइन और बर्च इन वनों के सामान्य पेड़-पौधे हैं। जैसे-जैसे हिम रेखा की ओर बढ़ते हैं, उत्तरोत्तर ये पेड़-पौधे छोटे होते जाते हैं। अंततः झाड़-झंखाड़ में बदलकर ये अल्पाइन घास के मैदानों में धूमिल हो जाते हैं। अत्यधिक ऊँचाइयों पर मॉस, लिचन आदि घास मिलती हैं।

प्रश्न 5. भारत में बहुत संख्या के जीव और पादप प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं—उदाहरण सहित कारण दीजिए।

उत्तर—(1) भारत में बहुत संख्या में जीव-जंतुओं की प्रजातियों के संकटग्रस्त होने के निम्नलिखित कारण हैं—

(i) वनोन्मूलन के कारण प्राकृतिक आश्रय का छिनना।

(ii) शिकार एवं अतिक्रमण।

(iii) फर, खाल, चिकित्सा उद्देश्य, अलंकार का सामान बनाने और ऊनी वस्त्रों आदि के लिए जंतुओं का वध किया जाता है।

(iv) रासायनिक और औद्योगिक अपशिष्टों ने जलीय जीवन को अव्यवस्थित कर दिया है।

(2) भारत में बहुत संख्या में पादप प्रजातियाँ निम्नलिखित कारण से संकटग्रस्त हैं—

(i) नगरीय विकास, सड़कें और बाँध निर्माण एवं अधिक कृषि क्षेत्र उपलब्ध कराने के लिए जंगलों की कटाई।

(ii) जलावन की लकड़ी के लिए स्थानीय लोगों द्वारा पेड़ों की कटाई।

प्रश्न 6. भारत वनस्पति जगत तथा प्राणी जगत की धरोहर में धनी क्यों है?

उत्तर—भारत में वनस्पति और वन्य जीवन की समृद्ध धरोहर पाई जाती है, क्योंकि—

(i) पर्वतीय प्रदेश से लेकर पूर्वी और पश्चिमी पार्श्व में लम्बी तट रेखा तक, भारत का विस्तार बहुत अधिक है।

(ii) रेगिस्तानी जलवायु से लेकर ठंडे हिमालय प्रदेश तक भारत की जलवायु की स्थिति बहुत विविधतापूर्ण है।

(iii) भारत में एक ओर अल्पतम वर्षा वाले क्षेत्र हैं तथा दूसरी ओर संसार का सबसे अधिक वर्षाबहुल क्षेत्र भी है।

अतः देश की समृद्ध वनस्पति और वन्य जीवन परिसंपदा के लिए जलवायु तथा भू-लक्षणों की विविधतापूर्ण स्थितियाँ जिम्मेदार हैं।

मानचित्र कौशल

भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित दिखाएँ और अंकित करें—

(i) उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन।

उत्तर—पश्चिमी घाट, लक्षद्वीप, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, असम के ऊपरी भाग, तमिलनाडु के तट।

(ii) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन।

उत्तर—प्रायद्वीपीय पठार के वर्षा वाले क्षेत्र, उत्तर प्रदेश और बिहार के मैदान।

(iii) दो जीवमण्डल निचय भारत के उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी भागों में।

उत्तर—(क) उत्तरी भाग में—1. कॉरबेट, 2. दुदवा। (ख) दक्षिणी भाग में—1. बाँदीपुर, 2. पेरियार।

(ग) पूर्वी भाग में—1. राजदेबरा, 2. सिमलीपाल। (घ) पश्चिमी भाग में—1. गिर, 2. कन्हेरी।

उत्तर—नीचे दिया गया मानचित्र देखें।

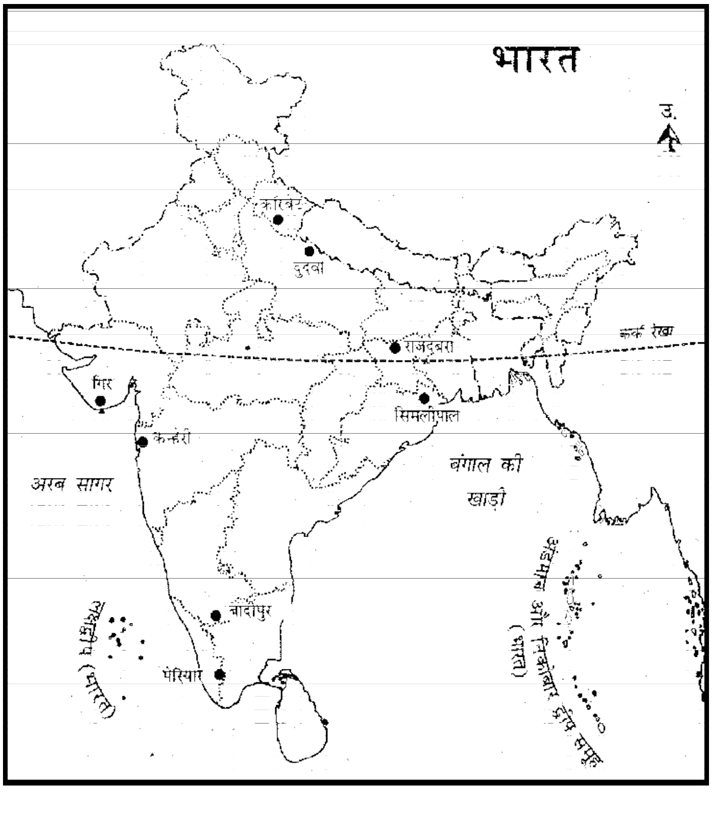

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. उन वनों के नाम बताइए जो मानसून वन भी कहलाते हैं तथा सूखे मौसम में 6 से 8 सप्ताह तक अपनी पत्तियाँ गिराते हैं–
(क) उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वन (ख) उष्णकटिबन्धीय पतझड़ वन
(ग) पर्वतीय वन (घ) सदाबहार वन।

2. सूर्य के प्रकाश के लम्बे समय तक रहने पर पौधे किस गति से वृद्धि करते हैं?
(क) ग्रीष्म ऋतु में धीमी गति से (ख) ग्रीष्म ऋतु में वृद्धि नहीं करते हैं
(ग) ग्रीष्म ऋतु में तीव्र गति से वृद्धि करते हैं (घ) ग्रीष्म ऋतु में झुक जाते हैं।

3. पृथ्वी पर एक विशाल पारिस्थितिकीय तन्त्र जिसमें विभिन्न प्रकार की वनस्पति और वन्य जीव होते हैं, कहलाता है–
(क) जैव विविधता (ख) प्राकृतिक वनस्पति (ग) प्राकृतिक वनस्पति (घ) जीवोम।

4. प्राकृतिक वनस्पति जो पूर्णतया भारतीय है, किस नाम से जानी जाती है?
(क) स्थानिक (ख) विदेशी (ग) वनस्पति (पुष्प) (घ) कृषि फसल।

5. बबूल, ताड़, यूफोर्बिया तथा नागफनी के पौधों के लिए वर्षा का अनुकूल स्तर क्या है?
(क) 70 सेमी (ख) 80 सेमी (ग) 100 सेमी (घ) 50 सेमी से कम।

6. भारत का कौन सा संरक्षित जैवमंडल विश्व के संरक्षित जैवमण्डलों में सम्मिलित नहीं है?
(क) मानस (ख) मन्नार की खाड़ी (ग) सुन्दर वन (घ) नन्दा देवी।

7. एक सींग वाले गेंडे कहाँ पाये जाते हैं?
(क) असम व प० बंगाल की दलदली व धंसी भूमि
(ख) कच्छ के रन की शुष्क भूमि का क्षेत्र
(ग) थार रेगिस्तान (घ) गुजरात का गिर फॉरेस्ट

8. समुद्र-तटीय क्षेत्रों की ज्वार-भाटा से प्रभावित वनस्पति से युक्त वन क्या कहलाते हैं?
(क) पर्वतीय वन (ख) उष्णकटिबन्धीय शुष्क पर्णपाती वन
(ग) सदाबहार वन (घ) आर्द्र उष्णकटिबन्धीय वन।

9. वन किस प्रकार किसी भी स्थान की जलवायु को प्रभावित करते हैं?
(क) स्थानीय जलवायु में परिवर्तन करके (ख) वर्षा लाकर
(ग) वायु के वेग तथा ताप को नियन्त्रित करके (घ) उपर्युक्त सभी।

10. केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के ट्राइ-जंक्शन पर कौन सा संरक्षित जैवमण्डल स्थित है?
(क) पचमढ़ी (ख) नॉकरेक
(ग) अचनकमर-अमरकंटक (घ) नीलगिरि।

11. दीप्तिकाल का क्या अर्थ है?
(क) पानी की उपलब्धता (ख) वर्षा की मात्रा
(ग) उपजाऊ मिट्टी (घ) सूर्य के प्रकाश की अवधि।

12. कौन सा प्राणी अत्यधिक ठण्ड (लद्दाख के अत्यधिक ऊँचाई के हिमबिन्दु) में जीवित रह सकता है?
(क) पोलर भालू (ख) पांडा (ग) भारल (नीली भेड़) (घ) तेंदुआ।

13. किसके लिए गिर फॉरेस्ट अंतिम शेष आवास है?
(क) नीलगाय (ख) जीवोम (ग) जैव विविधता (घ) पारिस्थितिकी तंत्र।

14. पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की वनस्पति एवं वन्य जीवों से युक्त पारिस्थितिकीय तन्त्र कहलाता है–
(क) जैव क्षेत्र (ख) जीवोम (ग) जैव विविधता (घ) पारिस्थितिकी तन्त्र।

15. कौन सी वनस्पति अत्यधिक ऊँचाई सामान्यतया समुद्र तल से 3,600 मीटर की ऊँचाई पर उगती है?
(क) शीतोष्ण घास का मैदान (ख) अल्पाइन घास का मैदान
(ग) टुण्ड्रा वनस्पति (घ) अल्पाइन वनस्पति।

[**उत्तर—1.** (ख), **2.** (ग), **3.** (घ), **4.** (क), **5.** (क), **6.** (क), **7.** (क), **8.** (ग), **9.** (घ), **10.** (घ), **11.** (घ), **12.** (ग), **13.** (घ), **14.** (ख), **15.** (घ)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्राकृतिक वनस्पति को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—प्राकृतिक वनस्पति पौधों के एक समुदाय को व्यक्त करती है जो बिना किसी मानवीय सहायता के प्राकृतिक कारकों की सहायता से उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 2. विश्व में मैगा (अत्यधिक) जैव विविधता से युक्त कितने देश हैं?

उत्तर—विश्व में 12 देश मैगा जैव विविधता से युक्त हैं। इनके नाम हैं—भारत, मैक्सिको, पेरू, कोलम्बिया, इक्वाडोर, ब्राजील, जैरे, मैडागास्कर, चीन, इण्डोनेशिया, मलेशिया एवं ऑस्ट्रेलिया।

प्रश्न 3. जीवोम या जैव क्षेत्र क्या है?

उत्तर—पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की वनस्पति एवं जीवों से युक्त विशाल पारिस्थितिकीय तंत्र जीवोम कहलाता है।

प्रश्न 4. भारत की कौन सी आर्द्र भूमि मरालो (फ्लेमिंगो) के लिए प्रसिद्ध है?

उत्तर—कच्छ का रन।

प्रश्न 5. भारत के उन चार संरक्षित जैव क्षेत्रों के नाम बताइए जिन्हें विश्व के संरक्षित जैव क्षेत्रों में स्थान दिया गया है?

उत्तर—(i) प० बंगाल में सुन्दरवन, (ii) उत्तराखण्ड में नन्दा देवी, (iii) तमिलनाडु में मन्नार की खाड़ी, (iv) केरल, कर्नाटक व तमिलनाडु में त्रि-जंक्शन पर नीलगिरि।

प्रश्न 6. उन स्थानों के नाम लिखिए जहाँ निम्नलिखित प्राणी पाये जाते हैं—

(क) चीते (ख) हाथी (ग) एक सींग वाला गेंडा।

उत्तर—(क) असम, केरल और कर्नाटक के उष्ण-आर्द्र वन।

(ख) असम में दलदल युक्त व धँसे क्षेत्र।

(ग) कच्छ का रन तथा थार रेगिस्तान।

प्रश्न 7. किस संघ शासित क्षेत्र का अधिकांश प्रतिशत क्षेत्र वनों के आधीन है?

उत्तर—अण्डमान व निकोबार।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में जैव विविधता का विवरण दीजिए।

उत्तर—भारत में जैव विविधता—पेड़-पौधों एवं प्राणि जगत में जो विभिन्न प्रकार की प्रजातियाँ हैं। जैव विविधता कहलाती है। यह प्रकृति की धरोहर है अतः इनका संरक्षण और सुरक्षा प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

भारत में वनस्पति एवं जीव जन्तुओं में बहुत अधिक विविधता एवं सम्पन्नता पायी जाती है। यहाँ जीव जन्तुओं की लगभग 90,000 प्रजातियाँ हैं तथा ताजे व खारे जल में 2546 किस्म की मछलियाँ मिलती हैं। इसी प्रकार पक्षियों की लगभग 200 से अधिक प्रजातियाँ पायी जाती हैं। इनके अतिरिक्त उभयचर, सरीसृप स्तनपायी तथा सूक्ष्म जीवाणु, कीट एवं कृमि भी पाये जाते हैं। इतना ही नहीं यह देश वनस्पति की दृष्टि से भी विविधता युक्त है। इसीलिए भारत को वनस्पति जगत एवं प्राणि जगत की धरोहर की दृष्टि से धनी देश माना जाता है।

प्रश्न 2. उन कारकों के नाम लिखिए जो किसी स्थान की वनस्पतियों व प्राणियों का निर्धारण करते हैं?

उत्तर—निम्न कारक किसी स्थान की वनस्पतियों व प्राणियों का निर्धारण करते हैं—(1) धरातल का स्वभाव, (2) मृदा की प्रकृति, (3) तापमान, (4) सूर्य का प्रकाश, (5) तापमान, (6) वर्षा।

प्रश्न 3. प्राकृतिक वनस्पति एवं पारिस्थितिक तन्त्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्राकृतिक वनस्पति से तात्पर्य उस वनस्पति से है जो मानव की सहायता के बिना स्वतः पैदा होती है एवं लम्बे

समयान्तराल तक उसके ऊपर किसी भी प्रकार का मानवीय प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकार की वनस्पति को अक्षत वनस्पति कहा जाता है। जबकि पृथ्वी पर पादपों एवं प्राणियों के भौतिक पर्यावरण से अन्तर्सम्बन्ध को पारिस्थितिक तन्त्र कहते हैं। मनुष्य भी इस पारिस्थितिक तन्त्र का एक भाग है।

प्रश्न 4. वन मानव जीवन के लिए किस प्रकार से अत्यन्त उपयोगी हैं?

उत्तर—वन निम्न प्रकार से मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं—

(1) वनों के वृक्ष कार्बन डाई ऑक्साइड नामक दूषित गैस को ग्रहण कर हमें प्राणदायिनी ऑक्सीजन गैस प्रदान करते हैं। इस प्रकार वन पर्यावरण की प्रदूषण से रक्षा करते हैं।

(2) वनों से मकान अनेक प्रकार की उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं—जैसे—इमारती लकड़ी, बाँस, अनेक प्रकार की जड़ी बूटियाँ, गोंद, रबर, मेवा, फल इत्यादि।

(3) वन मनोरम दृश्य उत्पन्न करते हैं। अतः कई पर्यटन स्थल वनों में स्थित हैं।

प्रश्न 5. विलुप्त तथा संकटग्रस्त प्रजातियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—विलुप्त प्रजातियाँ—जैव विविधुता की वे प्रजातियाँ जो दिखाई नहीं देती हैं तथा जिन्हें समाप्त हुआ मान लिया जाता है। विलुप्त प्रजातियाँ कहलाती हैं।

संकटग्रस्त प्रजातियाँ—जैव विविधता की ऐसी प्रजातियाँ जिनके समाप्त होने की सम्भावनायें अधिक प्रबल हो गई हैं तथा जो लगातार कम हो रही हैं संकटग्रस्त प्रजातियाँ कहलाती हैं।

प्रश्न 6. उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वनों एवं उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वनों की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—उष्णकटिबन्धीय सदाबहार वन—(1) सदाबहार वनों के वृक्ष अत्यन्त सघन, लम्बे तथा सदैव हरे भरे बने रहते हैं।

(2) इन वनों के वृक्षों के नीचे दलदल पायी जाती है। अतः इनमें प्रवेश करना कठिन होता है।

(3) इन वनों के वृक्षों के नीचे विषैले जीव-जन्तु पाये जाते हैं।

(4) ये वन महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, त्रिपुरा, असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर आदि राज्यों में पाये जाते हैं।

उष्णकटिबन्धीय पर्णपाती वन—(1) पर्णपाती वनों से वृक्ष कम घने, अपेक्षाकृत छोटे तथा ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में पत्तियाँ गिरा देते हैं।

(2) इन वनों के वृक्षों के नीचे दल-दल भूमि नहीं पायी जाती है अतः इन वनों में सरलता से प्रवेश किया जा सकता है।

(3) इन वनों के वृक्षों के नीचे जंगली पशु स्वतन्त्र रूप से विचरण करते हैं।

(4) ये वन मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश तथा पूर्वी राजस्थान आदि राज्यों में पाये जाते हैं।

प्रश्न 7. राष्ट्रीय उद्यान, संरक्षित जैव क्षेत्र एवं वन्यजीव अभ्यारणय में अन्तर बताइए।

उत्तर—राष्ट्रीय उद्यान—राष्ट्रीय उद्यान ऐसे संरक्षित क्षेत्र होते हैं, जिनका निर्धारण वन्य प्राणी एवं पादप प्रजातियों को संरक्षण प्रदान करने के लिए किया जाता है। उदाहरण—(1) कार्बेट नेशनल पार्क व (2) काजीरंगा नेशनल पार्क।

संरक्षित जैव क्षेत्र—जैव विविधता को संरक्षित रखने के लिए जिन क्षेत्रों को सुरक्षित कर दिया जाता है उन्हें संरक्षित जैव क्षेत्र कहते हैं।

वन्य जीव अभयारण्य—वह क्षेत्र जिसमें वन्य जीव सुरक्षित निवास कर सकें ऐसे क्षेत्र को वन्य जीव अभ्यारण्य कहते हैं।

प्रश्न 8. कंटीले वनों तथा झाड़ियों की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—इसके अन्तर्गत ऐसे क्षेत्र आते हैं जहाँ 70 सेमी से कम वर्षा होती है जिस कारण यहाँ प्राकृतिक वनस्पति में कँटीले वन तथा झाड़ियाँ पाई जाती हैं। इस प्रकार की वनस्पति देश के उत्तरी-पश्चिमी भागों में पाई जाती है जिनमें गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र सम्मिलित हैं। एकेशिया, खजूर (पाम), यूफोर्बिया तथा नागफनी (कैक्टाई) यहाँ की मुख्य पादप प्रजातियाँ हैं। इन वनों के वृक्ष बिखरे हुए होते हैं। इनकी जड़ें लम्बी तथा जल की तलाश में चारों ओर फैली होती हैं। इनकी पत्तियाँ प्रायः छोटी होती हैं जिनसे वाष्पीकरण कम-से-कम हो सके। शुष्क भागों में झाड़ियाँ और कँटीले पादप पाए जाते हैं। वर्षा की कमी और जलवायु की विषमता के कारण यहाँ ऊँचे पेड़ों का अभाव होता है अर्थात् प्रायः छोटे पेड़ तथा झाड़ियाँ ही उगती हैं। इस क्षेत्र में पाए जाने वाले कीकर, बबूल, खैर, खजूर, झाऊ, नागफनी इत्यादि के पेड़ों के साथ-साथ जहाँ-तहाँ शीशम, आँवला आदि के भी पेड़ उगे हुए देखे जाते हैं। इनमें से चमड़ा कमानो तथा विविध उपयोग में आने के कारण बबूल का आर्थिक महत्व उल्लेखनीय है। ये जंगल प्रायः चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िए, शेर, सिंह, जंगली गधा, घोड़े तथा ऊँट आदि का भी निवास स्थान है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निर्धन लोगों के लिए वन क्यों महत्वपूर्ण हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तर—वन निर्धन लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, उन्हें जीवनयापन के लिए अनेक आवश्यक वस्तुएँ वनों से प्राप्त होती हैं—

(1) निर्धनों को आवास निर्माण सम्बन्धी सामग्री इमारती लकड़ी, घास फूस (झोपड़ी बनाने के लिए) वनों से प्राप्त होती है।

(2) भोजन बनाने के लिए ईंधन के रूप में सूखी लकड़ियाँ इन लोगों को वनों के वृक्षों से प्राप्त होती हैं।

(3) भोजन के रूप में कन्द मूल एवं फल आदि गरीब वन वासियों को वनों से प्राप्त होता है जिससे उनका जीवनयापन होता है।

(4) वनवासी गरीब लोग वनों से सूखे मेवे, जड़ी बूटियाँ, शहद आदि एकत्रित कर शहरों में बेचते हैं जिससे उन्हें आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

(5) वनवासी लोग छोटे वन्य जीवों का शिकार कर उन्हें भोजन के रूप में उपयोग करते हैं।

(6) गरीब वनवासी लोग वनों में खाली जमीन पर खेती कर खाद्यान्न का उत्पादन करते हैं जिससे उनकी आजीविका चलती है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि वन वनवासी निर्धन लोगों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, वनों के द्वारा ही उनका पूरा जीवन संचालित होता है।

प्रश्न 2. "भारत वनस्पति व जीवों में समृद्ध हैं।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत में वनस्पति एवं जीव-जन्तुओं में बहुत अधिक विविधता एवं सम्पन्नता पायी जाती है। यहाँ जीव-जन्तुओं की लगभग 90,000 प्रजातियाँ हैं तथा ताजे व खारे जल में 2,546 किस्म की मछलियाँ मिलती हैं। इसी प्रकार पक्षियों की लगभग 2,000 से अधिक प्रजातियाँ पायी जाती हैं। इनके अतिरिक्त उभयचर, सरीसृप, स्तनपायी तथा सूक्ष्म जीवाणु, कीट एवं कृमि भी पाए जाते हैं।

इतना ही नहीं, यह देश वनस्पति की दृष्टि से भी विविधता-युक्त है। इसीलिए भारत को वनस्पति जगत एवं प्राणि जगत की धरोहर की दृष्टि से धनी देश माना जाता है। भारत में जैव विविधता की दृष्टि से सम्पन्नता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(1) जलवायु विभिन्नता—भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु पायी जाती है। जलवायु विभिन्नता के कारण यहाँ सभी प्रकार के पादप और जीवों का विकास हुआ है। देश में वर्ष-भर सूर्य प्रकाश की उपलब्धता ने विभिन्न प्रकार के वृक्षों को उत्पन्न करने और जीवों के विकास हेतु उत्तम भौगोलिक दशाएँ दी हैं इसलिए भारत जैव विविधता में धनी देश है।

(2) उच्चावच एवं मृदा—भारत में पर्वत, पठार, मैदान, मरुस्थल, दलदल और तटीय क्षेत्र जैसे विभिन्न प्रकार के धरातल हैं। अतः यहाँ सभी प्रकार की वनस्पति और विभिन्न प्रकार के जीवों का उद्‌भव एवं विकास हुआ है।

अतः उपर्युक्त कारणों से भारत वनस्पति और प्राणि जगत में विश्व का धनी देश बन गया है। यहाँ कहीं सदाबहार वन मिलते हैं तो कहीं झाड़ियाँ व घास के मैदान हैं। यहाँ मरुस्थल में रहने वाले ऊँट हैं तो जल में रहने वाली मछलियों की लगभग 2546 प्रजातियों के दर्शन हो जाते हैं। हिमालय के उच्च भागों में बारहसिंघा और कस्तूरी मृग भी मिल जाते हैं। अतः भारत को वास्तव में प्रकृति ने जैव विविधता में धनी देश बनाया है, परन्तु वर्तमान मानवीय गतिविधियों के कारण इस जैव विविधता में अल्पता अनुभव की जाने लगी है।

प्रश्न 3. सदाबहार वन या ज्वारीय वन कहाँ हैं? सदाबहार वनों की प्रमुख विशेषताएँ तथा उपयोग बताइए।

उत्तर—ये वन उष्ण एवं अधिक वर्षा वाले (200 सेंटीमीटर या इससे अधिक) क्षेत्रों में हैं। पश्चिमी घाट, अंडमान द्वीप, हिमालय की तराई, पूर्वी हिमालय के उपप्रदेश तथा असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा ऐसे ही क्षेत्र हैं। पश्चिमी घाट में सदाबहार वन के क्षेत्र 450 से 1,350 मीटर की ऊँचाई के बीच और असम में 1,000 मीटर की ऊँचाई तक मिलते हैं। ऐसे क्षेत्रों में जहाँ 250 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा होती है, ये वन विशेष रूप से सघन हैं। जहाँ अपेक्षाकृत कम वर्षा होती है, ये वन चिरहरित (सदाबहार) से अर्द्धचिरहरित में बदल जाते हैं। उच्च तापमान एवं अधिक वर्षा के कारण ही ये वन अत्यन्त घने होते हैं और इनमें पेड़ों की ऊँचाई 60 मीटर तक चली जाती है। पेड़ों के ऊपरी सिरों पर इतनी शाखाएँ होती हैं कि पेड़ छाते का आकार ले लेते हैं। विषुवतीय वनों की तरह ही इनकी लड़की कड़ी होती है। इन वनों में विविध प्रकार के पेड़ मिले होते हैं। इन वनों के प्रमुख वृक्ष **महोगनी, आबनूस, एबोनी, रोजवुड, बेंत, बाँस, जारूल, ताड़, सिनकोना** और **रबड़** हैं। बाँस मुख्यतः नदियों के किनारे और रबड़ पश्चिमी घाट तथा अडंमान में मिलते हैं। इन वनों में प्रवेश कर

लकड़ी काटना कठिन कार्य है; क्योंकि एक तो लकड़ी कड़ी और भारी होती है और दूसरे, एक स्थान पर एक ही किस्म के पेड़ न मिलकर अनेक प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं। इन वनों में बन्दर, लंगूर और तरह-तरह के पक्षी बहुतायत से मिलते हैं। एक सींगवाला गैंडा इसी वन का जंगली पशु है जो मुख्य रूप से असम क्षेत्र में मिलता है। विशाल जंगली पशु हाथी भी यहीं पर मिलते हैं।

प्रश्न 4. भारत में पाये जाने वाले छः औषधियुक्त पौधों के नाम लिखिए।

उत्तर—औषधीय पादप—ऐसे पौधे जिनके किसी भी भाग से औषधि का निर्माण किया जाता है, औषधीय पौधे कहलाते हैं। भारत प्राचीन समय से अपने मसालों तथा जड़ी-बूटियों के लिए विख्यात रहा है। आयुर्वेद में लगभग 2,000 पादपों का वर्णन है और कम-से-कम 500 तो निरन्तर प्रयोग में आते रहे हैं। 'विश्व संरक्षण संघ' ने लाल सूची के अन्तर्गत 352 पादपों की गणना की है जिसमें से 52 पादप अति संकटग्रस्त हैं और 49 पादपों को विनष्ट होने का खतरा है। भारत में प्रायः औषधि के लिए प्रयोग होने वाले कुछ निम्नलिखित पादप हैं—

आँवला—आँवला एक औषधीय फल है। यह अनगिनत आरोग्य लाभों से परिपूर्ण है। यह बुद्धिवर्धक, बलवर्धक एवं उत्तम रक्तशोधक रसायन है। आयुर्वेद में इसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

सर्पगंधा—यह रक्तचाप के निदान के लिए प्रयोग होता है और केवल भारत में ही पाया जाता है।

जामुन—पके हुए फल से सिरका बनाया जाता है जो कि वायुसारी और मूत्रवर्धक है और इसमें पाचन शक्ति के भी गुण हैं। बीज का बनाया हुआ पाउडर मधुमेह (Diabetes) रोग में सहायता करता है।

अर्जुन—ताजे पत्तों का निकाला हुआ रस कान के दर्द के इलाज में सहायता करता है। यह रक्तचाप की नियमितता के लिए भी लाभदायक है।

हल्दी—यह चमत्कारिक औषधीय गुण से भरपूर है। यह चोट, पीड़ा, कफ-खाँसी, सहित अनेक बीमारियों के उपचार में लाभदायक होती है। इसके अतिरिक्त हल्दी भोजन बनाने एवं सौन्दर्य प्रसाधनों (उबटन) के निर्माण में भी प्रयुक्त की जाती है।

बबूल—इसके पत्ते आँख की फुंसी के लिए लाभदायक हैं। इससे प्राप्त गोंद का प्रयोग शारीरिक शक्ति की वृद्धि के लिए होता है।

नीम—जैव और जीवाणु प्रतिरोधक है।

तुलसी पादप—जुकाम और खाँसी की दवा में इनका प्रयोग होता है।

कचनार—फोड़ा (अल्सर) व दमा रोगों के लिए प्रयोग होता है। इस पौधे की जड़ और कली पाचन शक्ति में सहायता करती हैं।

यष्टिमधु (मुलेठी)—यष्टिमधु (मुलेठी) औषधीय लाभ के लिए सबसे व्यापक रूप में प्रयोग की जाने वाली एक बूटी है। यह स्वाद में मधुर, दृष्टि के लिए लाभदायक, बल और वर्ण को बढ़ाने वाली है। यह पित्त, वात और कफ दोनों को नष्ट करने वाली औषधि है।

अपने क्षेत्र के औषधीय पादपों की पहचान कीजिए। कौन-से पौधे औषधि के लिए प्रयोग होते हैं और उस स्थान के लोग उनका कौन-सी बीमारियों के लिए प्रयोग करते हैं। प्राकृतिक पारिस्थितिक तन्त्र मनुष्य के जीवन के लिए अनिवार्य है। क्या यह सम्भव है कि प्राकृतिक पर्यावरण का निरन्तर होता जा रहा विनाश रोका जा सके?

प्रश्न 5. पर्वतीय वनस्पति में ऊँचाई परिवर्तन के साथ किस प्रकार परिवर्तन आता है?

उत्तर—भारत में पायी जाने वाली वनस्पति—भारत में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पति को निम्नलिखित पाँच वर्गों में रखा जाता है—

(1) उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र वन। (2) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन (मानसूनी वन)। (3) कँटीले वन व झाड़ियाँ (मरुस्थलीय वन)। (4) ज्वारीय वन (डेल्टाई वन) तथा (5) अल्पाइन तथा टुण्ड्रा वन।

अधिक ऊँचाई पर पायी जाने वाली वनस्पति—अधिक ऊँचाई पर पायी जाने वाली वनस्पति को 'पर्वतीय वन' या 'पर्वतीय वनस्पति' कहते हैं। ऊँचाई के बढ़ते रहने के कारण सामान्यतः तापमान में भी अन्तर पाया जाता है जो वनस्पति में भी विविधता उत्पन्न करता है, अतः ऊँचाई के आधार पर पर्वतीय भाग में निम्नलिखित प्रकार की वनस्पतियाँ पायी जाती हैं—

(1) 1000 से 2000 मीटर की ऊँचाई पर आर्द्र पर्वतीय वन पाए जाते हैं। इन वनों में सदारहित चौड़ी पत्ती वाले ओक, चेस्टनट तथा सेब के वृक्ष सामान्य रूप से पाए जाते हैं।

(2) 1500 से 3000 मीटर की ऊँचाई पर पाए जाने वाले वनों में चीड़, सीडर, सिल्वर, फर तथा स्प्रूस के वृक्ष मुख्य रूप से पाए जाते हैं। ये 'शीतोष्ण कटिबन्ध के शंकुधारी वन' कहलाते हैं।

(3) 3600 मीटर की ऊँचाई पर अल्पाइन वन पाए जाते हैं। इनमें सिल्वर, फर तथा बर्च के वृक्ष मुख्य रूप से मिलते हैं। अल्पाइन वन और अधिक ऊँचाई पर घास भूमियों के रूप में मिलते हैं।

प्रश्न 6. भारत की सरकार के द्वारा देश की वनस्पति व जीवों को बचाने के लिए क्या कदम उठाये जाते रहे हैं?

उत्तर—

जैव सुरक्षा एवं संरक्षण

विभिन्न परियोजनाएँ एवं राष्ट्रीय उद्यान—भारत में संरक्षित वन क्षेत्र नेटवर्क के अन्तर्गत 730 संरक्षित क्षेत्र (103 राष्ट्रीय उद्यान, 535 वन्यजीव अभयारण्य, 66 सुरक्षित संरक्षण क्षेत्र और 26 सामुदायिक क्षेत्र) शामिल हैं। इस योजना के अन्तर्गत शामिल अन्य घटक हैं—'संरक्षित क्षेत्रों से बाहर वन्य जीवों का संरक्षण' और 'चिन्ताजनक ढंग से खतरे में पड़ी प्रजातियों और परिवासों को बचाने के लिए जीर्णोद्धार कार्यक्रम'।

लक्ष्य—इसके लक्ष्यों में निम्नांकित शामिल हैं—संरक्षित क्षेत्र नेटवर्कों का विकास और प्रबन्धन, संरक्षित क्षेत्रों के भीतर और उनसे बाहर वन्यजीव संरक्षण में राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों की सहायता करना; संरक्षित क्षेत्रों/उच्च गुणवत्तापूर्ण जैव विविधता संरचनाओं के बेहतर संरक्षण और प्रबन्धन के लिए सुविधाएँ जुटाना; पारिस्थितिकी विकास, प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और अनुसन्धान अध्ययन के लिए धन एवं अन्य सहायता प्रदान करना; और सुरक्षित क्षेत्रों के अन्तर्गत आने वाले गाँवों का उनकी इच्छा के अनुसार सुरक्षित क्षेत्र के बाहर पुनर्स्थापना और उनके अधिकारों का निपटारा।

वन्य जीव अपराध नियन्त्रण ब्यूरो—वन्य जीव अपराध नियन्त्रण ब्यूरो (डब्ल्यूसीसीबी) एक बहु-विषयी सांविधिक निकाय है। इसका लक्ष्य देश में संगठित वन्य जीव अपराधों से निपटना है। ब्यूरो का मुख्यालय नई दिल्ली में है और इसके पाँच क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई और जबलपुर में स्थित हैं; जबकि तीन उपक्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी, अमृतसर और कोच्चि में हैं। इसकी पाँच सीमावर्ती यूनिटें रासनाथपुरम, गोरखपुर, मोतिहारी, नाथु ला और मोरेह में स्थित हैं। वन्य जीव (संरक्षण अधिनियम) 1972 की धारा 38 (जेड) के अन्तर्गत यह अनिवार्य है कि संगठित वन्य जीव अपराध गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी एकत्र की जाए और परिकल्पन किया जाए तथा उसे राज्यों एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों को भेजा जाए ताकि वे अपराधियों को पकड़ने के लिए तत्काल कार्यवाही कर सकें।

प्रश्न 7. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार वर्षा व राहत किसी क्षेत्र की वनस्पति को प्रभावित करते हैं?

उत्तर—भारत में लगभग सारी वर्षा आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिम मानसून (जून से सितम्बर तक) एवं पीछे हटते उत्तर-पूर्वी मानसून से होती है। भारत में जिन क्षेत्रों में अधिक वर्षा होती है वहाँ सघन वन पाये जाते हैं, जबकि कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम सघन वन पाये जाते हैं तथा जिन स्थानों पर वर्षा काफी कम मात्रा में होती है वहाँ रेगिस्तानी वन पाये जाते हैं। इनमें झाड़ियाँ तथा काँटेदार वृक्ष होते हैं, ये वन ज्यादातर थार के रेगिस्तान राजस्थान प्रान्त में पाये जाते हैं। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सदाबहार वन पाये जाते हैं। इनके पेड़ लम्बे तथा हरे भरे होते हैं। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पर्णपाती वन पाये जाते हैं। इस प्रकार वर्षा द्वारा वनस्पति को प्रभावित किया जाता है।

●●

6 जनसंख्या

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में सही विकल्प चुनिए—

(i) निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में प्रवास, आबादी की संख्या, वितरण एवं संरचना में परिवर्तन लाता है?

(क) प्रस्थान करने वाले क्षेत्र में (ख) आगमन वाले क्षेत्र में
(ग) प्रस्थान एवं आगमन दोनों क्षेत्रों में (घ) इनमें से कोई नहीं।

(ii) जनसंख्या में बच्चों का एक बहुत बड़ा अनुपात निम्नलिखित में से किसका परिणाम है?

(क) उच्च जन्म दर (ख) उच्च मृत्यु दर
(ग) उच्च जीवन दर (घ) अधिक विवाहित जोड़े।

(iii) निम्नलिखित में से कौन-सा एक जनसंख्या वृद्धि का परिमाण दर्शाता है?

(क) एक क्षेत्र की कुल जनसंख्या
(ख) प्रत्येक वर्ष लोगों की संख्या में होने वाली वृद्धि
(ग) जनसंख्या वृद्धि की दर
(घ) प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।

(iv) 2001 की जनगणना के अनुसार एक 'साक्षर' व्यक्ति वह है—

(क) जो अपने नाम को पढ़ एवं लिख सकता है।
(ख) जो किसी भी भाषा में पढ़ एवं लिख सकता है।
(ग) जिसकी उम्र 7 वर्ष है तथा वह किसी भी भाषा को समझ के साथ पढ़ एवं लिख सकता है।
(घ) जो पढ़ना-लिखना एवं अंकगणित, तीनों जानता है।

उत्तर—**(i)** (ग), **(ii)** (क), **(iii)** (ख), **(iv)** (ग)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित के उत्तर संक्षेप में दें।

(i) जनसंख्या वृद्धि के महत्वपूर्ण घटकों की व्याख्या करें।

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख घटक—जनसंख्या वृद्धि के तीन प्रमुख घटक हैं—जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास।

(i) एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में जितने जीवित बच्चों का जन्म होता है, उसे 'जन्म दर' कहते हैं। यह वृद्धि का एक प्रमुख घटक है, क्योंकि भारत में सदैव जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक होती है।

(ii) एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या को 'मृत्यु दर' कहते हैं। मृत्यु दर में तेज गिरावट भारत की जनसंख्या में वृद्धि की दर का मुख्य कारण है।

(iii) लोगों के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाने को प्रवास कहते हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास, जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करता है।

(ii) 1981 से भारत में जनसंख्या की वृद्धि दर क्यों घट रही है?

उत्तर—1981 से जनसंख्या वृद्धि की दर निम्नलिखित कारणों से घट रही है—

(i) परिवार नियोजन, (ii) जन्म दर नियंत्रण, (iii) साक्षरता।

(iii) आयु संरचना, जन्म दर एवं मृत्यु दर को परिभाषित करें।

उत्तर—आयु संरचना—आयु संरचना से आशय किसी देश के लोगों के विभिन्न वर्गों के अनुसार जनसंख्या को कई आयु समूहों में विभाजित करना। किसी देश की आबादी को सामान्यत: तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है—

(i) बच्चे (15 वर्ष से नीचे)

(ii) वयस्क (15 से 59 वर्ष के बीच)

(iii) वृद्ध (59 वर्ष से ऊपर)।

जन्म दर—प्रति वर्ष प्रति 1000 व्यक्तियों पर जीवित शिशुओं की संख्या।

मृत्यु दर—प्रति वर्ष प्रति 1000 व्यक्तियों पर मरने वालों की संख्या।

(iv) प्रवास, जनसंख्या परिवर्तन का एक कारक है।

उत्तर—प्रवास का आशय है लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाना। प्रवास आंतरिक एवं अंतर्देशीय हो सकता है। आंतरिक प्रवास से जनसंख्या के आकार में तो परिवर्तन नहीं होता परन्तु जनसंख्या का वितरण अवश्य प्रभावित होता है। अंतर्देशीय प्रवास में जनसंख्या का आकार प्रभावित होता है। प्रवास के कारण भारत के नगरों एवं शहरों की जनसंख्या स्थायी रूप से बढ़ती रहती है। भारत में लोग रोजगार के अवसरों और बेहतर सुविधा की खोज में शहर की ओर स्थानांतरित होते हैं। प्रवास जनसंख्या परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण घटक है। ये केवल जनसंख्या के आकार को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि उम्र एवं लिंग के दृष्टिकोण से भी नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या की संरचना को परिवर्तित करता है।

प्रश्न 3. जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन के बीच अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन के बीच अन्तर

जनसंख्या वृद्धि	जनसंख्या परिवर्तन
जनसंख्या वृद्धि का आशय होता है, किसी विशेष समय के अंतराल में, जैसे 10 वर्षों के भीतर, किसी देश/राज्य के निवासियों की संख्या में परिवर्तन। इस प्रकार के परिवर्तन को दो प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है—(i) सापेक्ष वृद्धि, (ii) प्रति वर्ष होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के द्वारा।	जनसंख्या परिवर्तन को तीन कारक निर्धारित करते हैं—जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवसन।

प्रश्न 4. व्यावसायिक संरचना एवं विकास के बीच क्या सम्बन्ध है?

उत्तर—व्यावसायिक संरचना एवं विकास के बीच एक निश्चित सम्बन्ध होता है। द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों में जनसंख्या के उच्च अनुपात का आशय है आय के स्तर में उच्चता। प्राथमिक अथवा कृषि कार्यकलापों पर जनसंख्या की अधिक निर्भरता का आशय है, आय के स्तर में निम्नता। इसलिए वे देश जहाँ अधिकांश लोग द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलापों में कार्यरत हैं, विकसित देश कहलाते हैं। उदाहरणार्थ, जापान, अमेरिका आदि। इसके विपरीत, वे देश जहाँ अधिकांश लोग प्राथमिक क्रियाकलापों में कार्यरत हैं, विकासशील देश कहलाते हैं। उदाहरणार्थ, भारत आदि।

प्रश्न 5. स्वस्थ जनसंख्या कैसे लाभकारी है?

उत्तर—स्वस्थ जनसंख्या होने के निम्नलिखित लाभ हैं—

(i) एक स्वस्थ व्यक्ति अधिक घंटों तक कार्य कर सकता है।

(ii) स्वस्थ जनसंख्या उत्पादन को बढ़ाने में सहायता कर सकती है, जिससे राष्ट्रीय आय में स्वतः बढ़ोत्तरी हो जाएगी।

(iii) स्वस्थ जनसंख्या अधिक सकारात्मक सोच रख सकती है। वह अच्छे एवं गुणात्मक पहलुओं को ध्यान में रखकर नेताओं का चुनाव कर सकती है, जो देश को अधिक सुचारु रूप से चला सकते हैं।

(iv) स्वस्थ जनसंख्या राष्ट्रीय आय में बढ़ोत्तरी के द्वारा लोगों के जीवन-स्तर में सुधार ला सकती है।

(v) स्वस्थ जनसंख्या सरकार के उस खर्चों को बचा सकती है जो अस्वस्थ लोगों पर किया जाता है। वही धन दूसरे विकास कार्यों में लगाया जा सकता है।

(vi) स्वस्थ जनसंख्या निश्चित रूप से देश के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

प्रश्न 6. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना।

(ii) शिशु मृत्यु दर को प्रति 1,000 में 30 से कम करना।

(iii) व्यापक स्तर पर टीकारोधी बीमारियों से बच्चों को मुक्ति दिलाना।

(iv) लड़कियों की शादी की उम्र को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना।

(v) परिवार नियोजन को एक जन केन्द्रित कार्यक्रम बनाने के लिए नीतिगत ढाँचा प्रदान करना।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मार्च 2011 में भारत की जनसंख्या कितनी थी?
(क) 102.6 करोड़ (ख) 102.7 करोड़ (ग) 121 करोड़ (घ) 102.9 करोड़।
2. भारत में सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य कौन सा है?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) मध्य प्रदेश (ग) महाराष्ट्र (घ) पंजाब।
3. सन् 2011 में भारत का जनसंख्या घनत्व कितना था?
(क) 320 व्यक्ति/वर्ग किमी (ख) 321 व्यक्ति/वर्ग किमी
(ग) 323 व्यक्ति/वर्ग किमी (घ) 382 व्यक्ति/वर्ग किमी।
4. वृद्धि दर का क्या अर्थ है?
(क) जन्म-दर मृत्यु-दर (ख) एक वर्ष में व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि
(ग) एक वर्ष में स्त्रियों व पुरुषों की संख्या में वृद्धि
(घ) विदेश जाने वाले लोगों की कुल संख्या।
5. लिंग-अनुपात क्या है?
(क) तीनों क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण (ख) तीन वर्ग समूहों की जनसंख्या का वितरण
(ग) 100 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या (घ) देश के शिक्षित लोग।
6. किस आयु वर्ग के लोग आर्थिक दृष्टि से उत्पादनशील तथा जैविक दृष्टि से प्रजननशील होते हैं?
(क)15 से 59 वर्ष (ख) 20 से 40 वर्ष (ग) 20 वर्ष से ऊपर (घ) 10 वर्ष से ऊपर।
7. जनसंख्या वृद्धि के परिमाण से क्या अर्थ है?
(क) वार्षिक वृद्धि दर (ख) प्रतिवर्ष या दशक में जनसंख्या वृद्धि
(ग) देश की कुल जनसंख्या (घ) 1951 से 2001 के मध्य जनसंख्या वृद्धि।
8. 'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2005' का उद्देश्य क्या है?
(क) 14 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को अनिवार्य व निशुल्क शिक्षा देना
(ख) शिशु मृत्यु दर कम करना
(ग) टीकारोधी बीमारियों के प्रति बच्चों में सार्वभौमिक प्रतिरक्षण
(घ) उपर्युक्त सभी।
9. सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता दर क्या है?
(क) 55.30% (ख) 66.25% (ग) 74.04% (घ) 58.65%।
10. उत्तर के मैदानी क्षेत्र तथा केरल में जनसंख्या घनत्व अधिक क्यों है?
(क) समतल मैदान (ख) उपजाऊ मिट्टी (ग) पर्याप्त वर्षा (घ) उपर्युक्त सभी।
11. भारत में प्रथम जनगणना कब की गई?
(क) 1872 (ख) 1882 (ग) 1884 (घ) 1886।
12. अरुणाचल प्रदेश में जनसंख्या घनत्व कितना है?
(क) 15 व्यक्ति/वर्ग किमी (ख) 13 व्यक्ति/वर्ग किमी
(ग) 17 व्यक्ति/वर्ग किमी (घ) 19 व्यक्ति/वर्ग किमी
[**उत्तर—1.** (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (क), **5.** (ग), **6.** (क), **7.** (ख), **8.** (घ), **9.** (ग), **10.** (घ), **11.** (क), **12.** (ख)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनगणना का क्या अर्थ है?
उत्तर—जनगणना प्रति दस वर्ष पर सरकार द्वारा जनसंख्या की कराई गई गिनती है।

प्रश्न 2. जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर का अर्थ समझाइए।

उत्तर—जनसंख्या की प्रति वर्ष हुई प्रतिशत वृद्धि दर वार्षिक वृद्धि दर कहलाती है।

प्रश्न 3. भारत के किस राज्य में न्यूनतम लिंग अनुपात है?

उत्तर—हरियाणा।

प्रश्न 4. भारत के उन पाँच राज्यों के नाम लिखिए जहाँ जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है?

उत्तर—उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, प. बंगाल व आन्ध्र प्रदेश।

प्रश्न 5. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—(i) देर से विवाह को लोकप्रिय बनाना तथा गर्भनिरोधक सेवाएँ उपलब्ध कराना।

(ii) विलम्ब से गर्भधारण को प्रोत्साहित करना तथा असुरक्षित यौन सम्बन्धों के खतरों को कम करना।

(iii) पूरक आहार व पोषण प्रदान करना।

(iv) बाल-विवाह को रोकने हेतु कानूनों में सुदृढ़ता लाना।

प्रश्न 6. लिंग अनुपात का क्या अर्थ है? सन् 2001 की जनगणना के अनुसार लिंग अनुपात क्या था?

उत्तर—जनसंख्या में 1000 पुरुषों पर महिलाओं की कुल संख्या लिंग अनुपात कहलाती है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में लिंग अनुपात प्रति हजार पुरुषों पर 933 महिलाएँ थीं।

प्रश्न 7. भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य कौन सा है?

उत्तर—उत्तर प्रदेश।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी किन्हीं तीन कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि का अर्थ होता है, किसी विशेष समय-अन्तराल में किसी देश या राज्य के निवासियों की संख्या में परिवर्तन। इस जनसंख्या परिवर्तन के लिए निम्नलिखित तीन घटक उत्तरदायी होते हैं—

(1) जन्म-दर—एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर जन्म लेने वाले जीवित बच्चों की संख्या 'जन्म-दर' कहलाती है। जन्म-दर जितनी अधिक होगी जनसंख्या में उतनी ही अधिक वृद्धि होगी।

(2) मृत्यु-दर—एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर मरने वाले लोगों की संख्या को 'मृत्यु-दर' कहते हैं। यदि मृत्यु-दर जन्म-दर से अधिक होगी तो जनसंख्या में वृद्धि-दर कम होगी किन्तु इसकी विपरीत स्थिति में जनसंख्या में वृद्धि अंकित होगी।

(3) प्रवसन—व्यक्ति का एक स्थान या प्रदेश से दूसरे प्रदेश में चले जाना 'प्रवसन' कहलाता है। इसके अन्तर्गत जिस प्रदेश से लोग जाते हैं उस प्रदेश की जनसंख्या में कमी आ जाती है तथा जिस प्रदेश में पहुँचते हैं तो उस प्रदेश की जनसंख्या में वृद्धि होने लगती है।

प्रश्न 2. जनसंख्या परिवर्तन के लिए प्रवास किस प्रकार एक महत्वपूर्ण कारक हैं?

उत्तर—लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर निवास करने के लिए चला जाना प्रवास कहलाता है। इससे जिस प्रदेश को छोड़ कर लोग चले जाते हैं, वहाँ जनसंख्या कम हो जाती है तथा जिस प्रदेश में जाकर बस जाते हैं वहाँ की जनसंख्या अधिक हो जाती है। इस प्रकार प्रवास जनसंख्या परिवर्तन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

प्रश्न 3. भारत में एक शिक्षित व्यक्ति के लिए कौन-सी अनिवार्य विशेषताएँ हैं?

उत्तर—साक्षरता किसी जनसंख्या का महत्वपूर्ण गुण है। स्पष्टत: एक शिक्षित एवं जागरुक व्यक्ति ही बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय ले सकता है, अत: एक शिक्षित व्यक्ति में बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। शिक्षित व्यक्ति को शोध एवं विकास के कार्यों में निपुण होना चाहिए। देश के प्रति समर्पित होना चाहिए तथा देश के कानूनों का पालन करने वाला होना चाहिए। जिस देश के नागरिक शिक्षित होते हैं वही देश प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता है।

प्रश्न 4. ऐसे दो तरीके बताइए जिनकी सहायता से देश में जनसंख्या वृद्धि को व्यक्त किया जा सकता है।

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि से अभिप्राय किसी विशेष समयांतराल में किसी देश या राज्य के निवासियों की संख्या में होने वाले परिवर्तन से है। जनसंख्या वृद्धि को दो तरीकों से व्यक्त किया जा सकता है—

(i) निरपेक्ष वृद्धि—प्रतिवर्ष या 10 वर्षों में बढ़ी जनसंख्या में वृद्धि होने का परिणाम है। पहले की जनसंख्या को बाद की जनसंख्या से घटाकर इसे प्राप्त किया जा सकता है, इसे निरपेक्ष वृद्धि कहते हैं। जैसे 2011 में जनसंख्या से 2001 की जनसंख्या को घटाकर जनसंख्या वृद्धि की गणना की जा सकती है।

(ii) सापेक्ष वृद्धि (जनसंख्या वृद्धि दर)—इसका दूसरा महत्वपूर्ण पहलू जनसंख्या वृद्धि दर है। जिसका अर्थ प्रत्येक वर्ष प्रतिशत परिवर्तन से है। जैसे प्रतिवर्ष 2% वृद्धि दर का अर्थ है कि किसी दिये हुए किसी वर्ष की मूल जनसंख्या में प्रत्येक 100 व्यक्तियों पर 2 व्यक्तियों की वृद्धि। इसे वार्षिक वृद्धि दर भी कहते हैं। भारत की जनसंख्या वर्ष 1951 में 360 लाख से बढ़कर वर्ष 2011 में 1 अरब 21 करोड़ हो गई। इसमें लगभग 2% वृद्धि दर रही।

प्रश्न 5. निम्न को परिभाषित कीजिए—

(क) मृत्यु दर (ख) जन्म दर।

उत्तर—(क) मृत्यु दर—एक वर्ष के अन्तर्गत प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या को मृत्यु दर कहते हैं। मृत्यु दर में तीव्र गति से गिरावट का होना भारत की जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण है।

(ख) जन्म दर—एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में जितने जन्म बच्चे जीवित रहते हैं उसे जन्म दर कहा जाता है। यह जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख घटक है। क्योंकि भारत में जन्म दर, मृत्यु दर से हमेशा अधिक रही है।

प्रश्न 6. मानव व्यवसायों को किन तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है? अनुकूल उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर—मानव व्यवसाय को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है—

(1) प्राथमिक श्रेणी—इसके अन्तर्गत किसान, पशुपालक, खनिक, जंगल में कार्य करने वाले लोग, मछली पालन आदि व्यवसाय आते हैं। इस श्रेणी में कार्य करने वालों की संख्या सबसे अधिक है।

(2) द्वितीय श्रेणी—इस श्रेणी के अन्तर्गत निर्माता, उद्योग, भवन-निर्माण आदि व्यवसाय आते हैं। इनमें कार्यरत लोगों की संख्या प्रथम श्रेणी से कम है।

(3) तृतीय श्रेणी—इस श्रेणी के अन्तर्गत संचार (कम्युनिकेशन), यातायात, वाणिज्य, प्रशासन और अन्य सेवायें आती हैं, इनकी संख्या सबसे कम है। तीनों विभिन्न श्रेणियों में संलग्न व्यवसायों में लगे व्यक्तियों द्वारा किसी देश के विकास को प्रदर्शित किया जाता है। विकसित देशों में द्वितीय श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी के व्यवसायों में लोगों की संख्या अधिक होती है। भारत में लगभग 64% लोग प्रथम श्रेणी के व्यवसाय में लगे हुए हैं तथा 13% द्वितीय श्रेणी और लगभग 20% लोग तृतीय श्रेणी के व्यवसाय में लगे हुए हैं।

प्रश्न 7. किशोर जनसंख्या क्या है? राष्ट्र के विकास के लिए यह वर्ग किस प्रकार अत्यन्त महत्वपूर्ण है?

उत्तर—राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने किशोर/किशोरियों की पहचान जनसंख्या के उस मुख्य भाग के रूप में की, जिस पर बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। पौषणिक जरूरतों के अलावा इस नीति में अवांछित गर्भधारण एवं यौन-सम्बन्धों से प्रसारित बीमारियों से किशोर/किशोरियों की संरक्षा जैसी अन्य महत्त्वपूर्ण बातों पर भी बल दिया गया है। इसके द्वारा ऐसे कार्यक्रम कार्यान्वित किए गए जिनका मुख्य उद्देश्य अधिक आयु में विवाह करना एवं विलम्ब से संतानोत्पत्ति को प्रोत्साहित करना, किशोर/किशोरियों को असुरक्षित यौन सम्बन्ध के कुप्रभावों के बारे में शिक्षित करना, गर्भ-निरोधक सेवाओं की पहुँच एवं खरीद को संभव बनाना, खाद्य सम्पूरक एवं पौषणिक सेवाएँ उपलब्ध कराना तथा बाल विवाह की रोकथाम के कानूनों को सुदृढ़ बनाना है।

किसी भी देश के लिए सर्वाधिक बहुमूल्य संसाधन वहाँ के लोग होते हैं। स्वस्थ और शिक्षित जनसंख्या ही कार्यश्रम शक्ति प्रदान कर सकती है।

प्रश्न 8. एक राष्ट्र के विकास के लिए स्वास्थ्य की उचित व्यवस्था देखभाल महत्वपूर्ण क्यों है?

उत्तर—स्वास्थ्य जनसंख्या की संरचना का एक अन्य महत्वपूर्ण घटक है। यह घटक भी विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। भारत की जनसंख्या के स्वास्थ्य स्तर में सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। मृत्यु दर जो सन् 1951 में प्रति हजार 25 थी, सन् 2011 में घटकर प्रति हजार 7.2 रह गई है। सन् 1951 में औसत आयु 36.7 वर्ष थी, सन् 2012 में बढ़कर 67.9 वर्ष हो गई है।

यह महत्त्वपूर्ण सुधार बहुत-से कारकों; जैसे—जन-स्वास्थ्य, रोगों के इलाज में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग तथा संक्रामक रोगों से बचाव के परिणामस्वरूप हुआ है। महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के बावजूद भारत के लिए स्वास्थ्य का स्तर एक मुख्य चिंता का विषय है। देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अभी भी कुपोषण से प्रभावित है। मूल स्वास्थ्य रक्षा सुविधाएँ एवं शुद्ध पीने का पानी ग्रामीण जनसंख्या के केवल एक-तिहाई लोगों को उपलब्ध हैं। इन सभी समस्याओं का एक उचित जनसंख्या नीति के द्वारा समाधान निकालना आवश्यक हो गया है।

प्रश्न 9. कुल जनसंख्या एवं जनसंख्या के औसत घनत्व में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—किसी देश में निवास करने वाले कुल लोगों की संख्या को उस देश की कुल जनसंख्या कहते हैं जबकि जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य एक वर्ग किलोमीटर में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या से है। भारत में जनसंख्या घनत्व बढ़ता जा रहा है। यह देश में हो रही निरन्तर जनसंख्या वृद्धि का सूचक है। सन् 1951 में भारत में जनसंख्या घनत्व 117 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था जो सन् 2011 में बढ़कर 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। जनसंख्या में वृद्धि के साथ ही जनसंख्या घनत्व में वृद्धि होती है।

प्रश्न 10. भारत के तीन भिन्न जनसंख्या घनत्व देशों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में जनसंख्या का वितरण—भारत में धरातलीय संरचना, तापमान, वर्षा की मात्रा, मिट्टी की संरचना, आर्थिक विकास का स्तर आदि तथ्यों में असमानता के कारण जनसंख्या का वितरण भी असमान है; इसीलिए कहीं अधिक जनसंख्या निवास करती है तो कहीं कम। जनसंख्या वितरण एवं उसके घनत्व में भिन्नता के आधार पर भारत को निम्नलिखित चार जनसंख्या-क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र—इन क्षेत्रों के अन्तर्गत देश के वे भाग सम्मिलित हैं, जहाँ जनसंख्या का घनत्व 751 से अधिक व्यक्ति प्रति वर्ग किमी पाया जाता है। दिल्ली, चण्डीगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, केरल, लक्षद्वीप, पुदुचेरी, दमन एवं दीव, दादरा व नगर हवेली राज्य इसी वर्ग में सम्मिलित हैं।

(2) मध्यम जनसंख्या वाले क्षेत्र—इन क्षेत्रों के अन्तर्गत भारत के वे भाग सम्मिलित हैं जहाँ जनसंख्या का घनत्व 501 से 750 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी के मध्य पाया जाता है। पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु इसी वर्ग में सम्मिलित हैं।

(3) सामान्य जनसंख्या वाले क्षेत्र—इन क्षेत्रों के अन्तर्गत देश के वे भाग सम्मिलित हैं, जहाँ जनसंख्या का घनत्व 251 से 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी के मध्य पाया जाता है। इसमें गुजरात, महाराष्ट्र, झारखण्ड, ओडिशा, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, असम तथा त्रिपुरा राज्य सम्मिलित हैं।

(4) कम जनसंख्या वाले क्षेत्र—भारत में कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों के अन्तर्गत वे राज्य सम्मिलित हैं, जहाँ जनघनत्व 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से भी कम पाया जाता है। इसमें जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सभी पूर्वोत्तम राज्य, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह सम्मिलित हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में अन्दर प्रवास किस प्रकार विभिन्नता में एकता को बढ़ाता है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर—व्यक्तियों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानान्तरण प्रवास कहलाता है। प्रवास दो प्रकार का होता है—आन्तरिक प्रवास (देश के अन्दर) तथा अन्तर्राष्ट्रीय हो सकता है। आन्तरिक प्रवास से जनसंख्या में कोई परिवर्तन नहीं होता है। परन्तु यह एक देश के अन्दर जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करता है। जनसंख्या वितरण एवं उसके घटकों को परिवर्तित करने में प्रवास की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। हमारे देश में प्रवास ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है। इसका कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अपकर्षण कारक प्रभावी होता है। ये ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता तथा बेरोजगारी की प्रतिकूल अवस्थाएँ हैं। जबकि शहर का अभिकर्षण प्रभाव रोजगार में वृद्धि और अच्छे जीवन स्तर को प्रदर्शित करता है। भारत विविधताओं से भरा देश है अत: प्रवास के द्वारा एक स्थान की संस्कृति दूसरे स्थानों पर स्थानान्तरित होती है। एक क्षेत्र के लोग दूसरे क्षेत्र के लोगों से मिलते हैं, उनमें विचारों एवं संस्कृति का आदान प्रदान होता है जिससे राष्ट्रीय एकता में वृद्धि होती है। इसी कारण भारत में विभिन्नताएँ होते हुए भी एकता स्थापित है। इसमें लोगों का प्रवास महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

प्रश्न 2. जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन की प्रक्रिया—जनसंख्या एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। इसकी संख्या, वितरण व संघटन में सतत् रूप से परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन तीन प्रक्रियाओं (जन्म, मृत्यु व प्रवास) के आपस में संयोजन के परिणामस्वरूप होता है।

जनसंख्या वृद्धि—जनसंख्या वृद्धि से अभिप्राय किसी विशेष समयान्तराल में (दस वर्षों के अन्तराल में किसी देश या राज्य के निवासियों की संख्या में होने वाले परिवर्तन से है। इस प्रकार का परिवर्तन दो प्रकार से होता है—(i) सापेक्ष वृद्धि,

(ii) प्रतिवर्ष होने वाले प्रतिशत परिवर्तन द्वारा। प्रतिवर्ष या 10 वर्षों में बढ़ी जनसंख्या, कुल संख्या में वृद्धि होने का परिणाम है। पहले की जनसंख्या (जैसे—2001 की जनसंख्या) को बाद की जनसंख्या (जैसे—2011 की जनसंख्या) से घटाकर इसे प्राप्त किया जा सकता है। इसे 'निरपेक्ष वृद्धि' कहते हैं। इसका दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू 'जनसंख्या वृद्धि दर' है, जिसका अर्थ प्रत्येक वर्ष प्रतिशत परिवर्तन से है; जैसे—

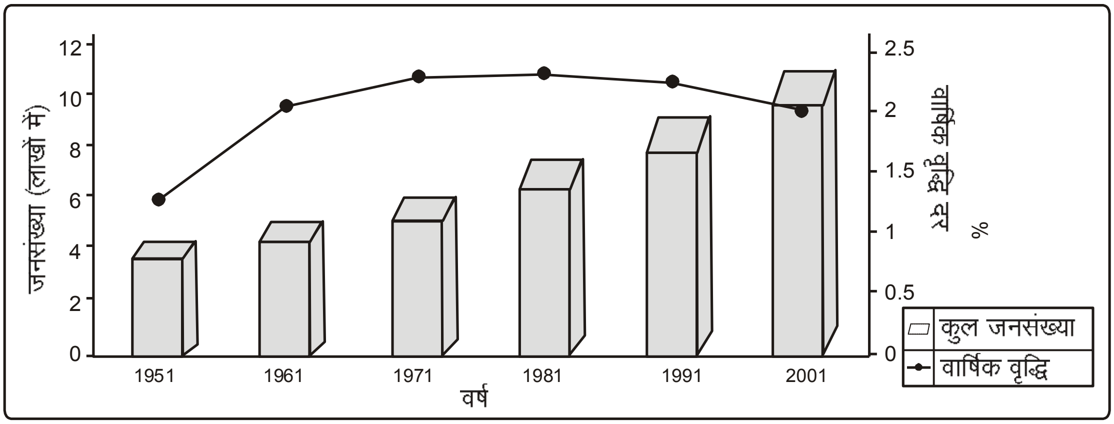

चित्र : भारत जनसंख्या वृद्धि दर

प्रतिवर्ष 2% वृद्धि दर का अर्थ है कि दिए हुए किसी वर्ष की मूल जनसंख्या में प्रत्येक 100 व्यक्तियों पर 2 व्यक्तियों की वृद्धि। इसे 'वार्षिक वृद्धि दर' कहते हैं। भारत की जनसंख्या वर्ष 1951 में 3610 लाख से बढ़कर वर्ष 2011 में 12100 लाख हो गई।

तालिका : भारत की जनसंख्या वृद्धि का परिमाण एवं दर

वर्ष	कुल जनसंख्या (दस लाख में)	एक दशक में सापेक्ष वृद्धि (लाख में)	वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1951	361.0	42.43	1.25
1961	439.2	78.15	1.96
1971	548.2	108.92	2.20
1981	683.3	135.17	2.22
1991	846.4	163.09	2.16
2001	1028.7	182.32	1.97
2011	1210.6	181.46	1.64

दिये हुए चित्र तथा तालिका प्रदर्शित करते हैं कि वर्ष 1951 से 1981 तक भारत की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर क्रमानुसार बढ़ रही थी। इसके द्वारा जनसंख्या में तीव्र वृद्धि को दर्शाया गया है, जो वर्ष 1951 में 3610 लाख से बढ़कर वर्ष 1981 में 6830 लाख हो गई।

किन्तु वर्ष 1981 से जनसंख्या वृद्धि दर धीरे-धीरे कम होने लगी। इस दौरान भारत की जन्म दर में तेजी से कमी आई, फिर भी केवल वर्ष 1900 में भारत की कुल जनसंख्या में 1820 लाख की तीव्र वृद्धि हुई थी।

भारत की जनसंख्या अत्यधिक है। जब विशाल जनसंख्या में कम वार्षिक दर लगाई जाती है, तब इसमें सापेक्ष वृद्धि अत्यधिक होती है। जब लगभग 10 करोड़ जनसंख्या में न्यूनतम दर से भी वृद्धि होती है, तब भी जुड़ने वाले लोगों की कुल संख्या अत्यधिक होती है। हमारे देश की वर्तमान जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि पर्यावरण के संरक्षण व संसाधनों को निष्क्रिय करने के लिए पर्याप्त है।

जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी, जन्म दर को नियन्त्रित करने हेतु किए जा रहे सफल प्रयासों को दर्शाती है। इसके बाद भी भारत की जनसंख्या तीव्रता से बढ़ रही है और वर्ष 2045 तक भारत, चीन को पीछे छोड़कर विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन सकता है।

जनसंख्या वृद्धि/परिवर्तन की प्रक्रिया—जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन के अन्तर्गत तीन प्रमुख प्रक्रियाएँ आती हैं—जन्म दर, मृत्यु दर तथा प्रवास। जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि कहलाता है।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में जितने जन्मे बच्चे जीवित रहते हैं, उसे 'जन्म दर' कहा जाता है। यह जनसंख्या वृद्धि का एक मुख्य घटक है क्योंकि भारत में सदैव ही जन्म दर, मृत्यु दर से ज्यादा रही है। एक वर्ष के अन्तर्गत प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या को 'मृत्य दर' कहते हैं। मृत्यु दर में तीव्र रूप से गिरावट का होना भारत की जनसंख्या में वृद्धि की दर का प्रमुख कारण है।

सन् 1980 तक उच्च जन्म दर तथा मृत्यु दर में निरन्तर गिरावट के कारण जन्म दर और मृत्यु दर में बहुत अधिक अंतर आ गया और इसके कारण जनसंख्या वृद्धि दर अधिक हो गई। सन् 1981 से धीरे-धीरे जन्म दर में भी गिरावट आई। इसका क्या कारण है?

जनसंख्या वृद्धि का तीसरा प्रमुख घटक है प्रवास। व्यक्तियों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानान्तरण 'प्रवास' कहलाता है। प्रवास आंतरिक (देश के अन्दर) अथवा अंतर्राष्ट्रीय (देशों के मध्य) हो सकता है।

आंतरिक प्रवास से जनसंख्या के आकार में कोई परिवर्तन नहीं होता, परन्तु यह एक देश के अन्दर जनसंख्या के वितरण पर प्रभाव डालता है। जनसंख्या वितरण एवं उसके घटकों को परिवर्तित करने में प्रवास की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

हमारे देश में अधिकतर प्रवास ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की तरफ होता है, इसका कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 'अपकर्षण' (Push) कारक प्रभावी होते हैं। ये ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता तथा बेरोजगारी की प्रतिकूल अवस्थाएँ हैं, जबकि शहर का 'अभिकर्षण' (Pull) प्रभाव रोजगार में वृद्धि और अच्छे जीवन-स्तर को प्रदर्शित करता है।

प्रवास जनसंख्या परिवर्तन का एक अति महत्त्वपूर्ण घटक है। यह जनसंख्या के आकार उम्र तथा लिंग के दृष्टिकोण को सीधे प्रभावित कर ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है। हमारे देश में, ग्रामीण-नगरीय प्रवास के कारण शहरों एवं नगरों की जनसंख्या में नियमित वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 1951 में कुल जनसंख्या की 17.29 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी, जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 31.80 प्रतिशत हो गई। एक दशक (2001 से 2011) के दौरान दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की संख्या 35 से बढ़कर 53 हो गई है।

प्रश्न 3. भारत में जनसंख्या के असमान वितरण के कारण बताइए।

उत्तर—भारत में जनसंख्या का भौगोलिक वितरण असमान है। सबसे घनी आबादी मध्यवर्ती मैदान (गंगा के मैदान) तथा तटीय मैदान में मिलती है और सबसे विरल आबादी पर्वतीय भाग तथा राजस्थान के मरुस्थल में मिलती है। जल एवं वर्षा की कमी के कारण यहाँ जनसंख्या घनत्व भी कम है। गंगा के मैदान में पश्चिम की ओर बढ़ने पर जनसंख्या का घनत्व क्रमशः घटता जाता है। परन्तु असम में वर्षा अधिक होने पर भी जनसंख्या घनत्व कम है। इसका मुख्य कारण वहाँ का अधिकांश भाग वन्य एवं पहाड़ी है तथा वहाँ के आर्द्र क्षेत्रों में जलवायु अस्वास्थ्य कर है। पंजाब तथा हरियाणा में वर्षा कम होते हुए भी जनसंख्या अधिक मिलती है। क्योंकि वहाँ सिंचाई के साधनों का विकास हुआ है और जलवायु स्वास्थ्यकर है।

भारत की दो तिहाई जनसंख्या मध्यवर्ती मैदान में मिलती है। जबकि उसका क्षेत्रफल सम्पूर्ण देश के क्षेत्रफल का एक तिहाई है। इसका कारण मैदानी भाग का उपजाऊ होना है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल ऐसे ही राज्य हैं। मैदानी भाग में खेती की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसके अलावा समतल भूमि है और हल्की मिट्टी होने के कारण जुताई, खुदाई में भी कोई परेशानी नहीं होती है। यहाँ वर्ष में दो फसलें पैदा होती हैं। इसके विपरीत दक्षिणी पठारीय भाग में कृषि कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न नहीं हो पाता, वहाँ जमीन ऊँची नीची है, वर्षा भी कम होती है। साथ ही सिंचाई की सन्तोषजनक व्यवस्था नहीं है। मिट्टी भी अर्नुवर है। यहाँ यातायात के साधनों की भी कमी है, इस कारण जनसंख्या कम है। महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि राज्य मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले राज्य हैं, परन्तु पठारी भागों में भी यत्र-तत्र सघन जनसंख्या देखी जा सकती है। इसके कई कारण हैं—खनिज द्रव्यों का बाहुल्य और उनकी खुदाई, तापीय शक्ति और जल शक्ति का विकास, यातायात की सुविधाएँ, उद्योग-धन्धों का विकास, आदि। दिल्ली सघन बसी हुई है क्योंकि यह केन्द्रीय राजधानी है तथा यहाँ सम्पूर्ण सुविधाएँ मानव जीवन के लिए उपलब्ध हैं। केरल में शिक्षा के विकास के परिणामस्वरूप सघन जनसंख्या है। गंगा के मैदान एवं तटीय मैदानों में चावल एवं गेहूँ का उत्पादन अधिक होता है। अतः यहाँ जनसंख्या अधिक है।

प्रश्न 4. लिंग अनुपात क्या है? लिंग अनुपात सदैव महिलाओं के प्रतिकूल क्यों रहा है? समझाइए।

उत्तर—लिंग अनुपात—प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को लिंग अनुपात कहते हैं। किसी दिये गये समय में समाज में पुरुषों तथा महिलाओं के बीच समानता की सीमा मापने के लिए यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है।

देश में लिंग अनुपात प्रायः महिलाओं के पक्ष में नहीं रहता है। सन् 1951 से 2011 के मध्य के लिंग अनुपात का मान लगभग 940 रहा है। भारत में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है। कुछ क्षेत्रों जैसे केरल एवं पुदुचेरी में पुरुषों की

तुलना में स्त्रियाँ अधिक हैं। यह संख्या लगभग 1084 और 1038 है। महिलाओं के प्रतिकूल रहने के कारण निम्नलिखित हैं—

(1) भारतीय समाज में लड़कों को अधिक महत्व दिया जाता है। पुत्र के बिना पिता का जीवन अधूरा है। वही पिता का उत्तराधिकारी होता है लड़कियाँ नहीं।

(2) भारत में दहेज प्रथा इतनी अधिक प्रचलित है कि लड़कियों के जन्म को अभिशाप माना जाता है। अत: लड़के के जन्म के पश्चात् लोग आगे बच्चे पैदा नहीं करते।

(3) प्राचीनकाल में कुछ स्थानों पर लड़कियों के जन्म के साथ ही उन्हें मार दिया जाता था। यह जघन्य अपराध है।

(4) लड़कियाँ शादी के बाद दूसरे घर ससुराल चली जाती हैं, अत: उन्हें विशेष महत्व नहीं दिया जाता है।

प्रश्न 5. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (NPP 2000) क्या है? यह सरकार के द्वारा क्यों आरम्भ की गई?

उत्तर—राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की विशेषताएँ—भारत में जनसंख्या वृद्धि तथा अनियोजित मानव संसाधन विकास से उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के लिए एक सशक्त जनसंख्या नीति की आवश्यकता अनुभव की गई। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए देश में सन् 1952 से जनसंख्या नीति कार्यान्वित की जा रही है। गत वर्षों से इस नीति का प्रमुख ध्येय जन्म-दर पर नियन्त्रण तथा परिवार नियोजन (कल्याण) का विकास रहा है। नवीनतम जनसंख्या नीति 2000 का लक्ष्य सन् 2045 तक जनसंख्या को स्थिर करना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं या विशेषताओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया जा रहा है—

(1) विवाह आयु में वृद्धि करना तथा ऐसे कार्यक्रम का विकास करना जो देर से विवाह करने में सहायक हो।

(2) 14 वर्ष तक की आयु के लिए स्कूली शिक्षा नि:शुल्क तथा अनिवार्य करना।

(3) प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर तक शिक्षा छोड़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या कम करना।

(4) लोगों के जीवन-स्तर व गुणवत्ता में सुधार करना।

(5) देश की विकास दर में वृद्धि करना।

(6) किशोर/किशोरियों को असुरक्षित यौन सम्बन्धों के कुप्रभावों के बारे में शिक्षित करना।

(7) गर्भ निरोधक साधनों को पहुँच तथा खरीद के भीतर लाना और खाद्य सम्पूरक और पोषण सम्बन्धी सेवाएँ उपलब्ध करवाना।

प्रश्न 6. व्यवसायों को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है? इनमें से प्रत्येक के बारे में लिखिए।

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 6 का उत्तर।

प्रश्न 7. जनगणना से हम क्या सूचना पाते हैं? किन्हीं पाँच को लिखिए।

उत्तर—जनगणना से हमें निम्नलिखित सूचनायें प्राप्त होती हैं—

(1) जनगणना से हमें सम्पूर्ण देश में व्यक्तियों की संख्या के बारे में जानकारी प्राप्त होती जिसके आधार पर हम अपने देश के विकास की भावी योजनाएँ बना सकते हैं।

(2) जनगणना से हमें लिंगानुपात ज्ञात होता है जो एक सामाजिक सूचक है।

(3) जनसंख्या एक सन्दर्भ बिन्दु है जिससे दूसरे तत्वों का अवलोकन किया जाता है तथा उसके अर्थ एवं महत्व ज्ञात किए जाते हैं।

(4) जनगणना से हमें कार्यकारी व्यक्तियों की संख्या के बारे में जानकारी होती है जो योजनाएँ बनाने में सहायक होता है।

(5) जनगणना द्वारा हमें जनाधिक्य या जनसंख्या वृद्धि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जिसे रोकने के उपाय किए जा सकते हैं।

(6) जनगणना द्वारा जनसंख्या घनत्व ज्ञात किया जा सकता है।

(7) जनगणना द्वारा देश में ब्याप्त बेरोजगारी की भी जानकारी होती है। संख्या के आधार पर बेरोजगारी का समाधान किया जा सकता है।

प्रश्न 8. भारत में उत्तरी मैदानों का एक विवरण दीजिए।

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 3 का उत्तर।

प्रश्न 9. पश्चिमी घाट किस प्रकार पूर्वी घाट से अलग है?

उत्तर—देखिए अध्याय 'जलवायु'।

प्रश्न 10. प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धान्त को समझाइए।

उत्तर—देखिए अध्याय 'भारत का भौतिक स्वरूप'।

1 लोकतन्त्र क्या? लोकतन्त्र क्यों?

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. यहाँ चार देशों के बारे में कुछ सूचनाएँ हैं। इन सूचनाओं के आधार पर आप इन देशों का वर्गीकरण किस तरह करेंगे? इनके सामने 'लोकतांत्रिक', 'अलोकतांत्रिक' या 'पक्का नहीं' लिखें।

उत्तर—

देश	सूचना	वर्गीकरण
(क)	जो लोग देश के आधिकारिक धर्म को नहीं मानते, उन्हें वोट डालने का अधिकार नहीं है।	गैर-लोकतांत्रिक
(ख)	एक ही पार्टी बीते बीस वर्षों से चुनाव जीतती आ रही है।	पक्का नहीं
(ग)	पिछले तीन चुनावों में शासक दल को पराजय का मुँह देखना पड़ा।	लोकतांत्रिक
(घ)	यहाँ स्वतंत्र चुनाव आयोग नहीं है।	गैर-लोकतांत्रिक

प्रश्न 2. यहाँ चार अन्य देशों के बारे में कुछ सूचनाएँ दी गई हैं, इन सूचनाओं के आधार पर इन देशों का वर्गीकरण आप किस तरह करेंगे? इनके आगे 'लोकतांत्रिक', 'अलोकतांत्रिक' या 'पक्का नहीं' लिखें।

उत्तर—

देश	सूचना	वर्गीकरण
(क)	संसद सेना प्रमुख की मंजूरी के बिना सेना के बारे में कोई कानून नहीं बना सकती।	गैर-लोकतांत्रिक
(ख)	संसद न्यायपालिका के अधिकारों में कटौती का कानून नहीं बना सकती।	गैर-लोकतांत्रिक
(ग)	देश के नेता, बिना पड़ोसी देश की अनुमति के किसी और देश से संधि नहीं कर सकते।	पक्का नहीं
(घ)	देश के सारे आर्थिक फैसले केंद्रीय बैंक के अधिकारी करते हैं, जिसे मंत्री भी नहीं बदल सकते।	गैर-लोकतांत्रिक

प्रश्न 3. इनमें से कौन-सा तर्क लोकतंत्र के पक्ष में अच्छा नहीं है, और क्यों?

(क) लोकतंत्र में लोग खुद को स्वतंत्र और समान मानते हैं।

(ख) लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ दूसरों की तुलना में टकरावों को ज्यादा अच्छी तरह सुलझाती हैं।

(ग) लोकतांत्रिक सरकारें लोगों के प्रति ज्यादा उत्तरदायी होती हैं।

(घ) लोकतांत्रिक देश दूसरों की तुलना में ज्यादा समृद्ध होते हैं।

उत्तर—(क), (ख) एवं (ग) लोकतंत्र के पक्ष में अच्छे तर्क माने जाएँगे। क्योंकि ये लोकतंत्र की विशेषताओं से सम्बन्धित हैं, लेकिन तर्क (घ) लोकतंत्र के पक्ष में सही तर्क नहीं है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) किसी देश की समृद्धि उसके आर्थिक संसाधन एवं नीतियों पर निर्भर करती है। हाँ, नीतियों का लोकतांत्रिक होना जन सामान्य तथा देश के आर्थिक विकास में तो सहायक हो सकता है, लेकिन संसाधन के अभाव में केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था से समृद्धि नहीं आ सकती।

(ii) एक गैर-लोकतांत्रिक देश भी समृद्ध हो सकता है। उदाहरण के लिए, चीन एक गैर-लोकतांत्रिक देश है, लेकिन अपने संसाधन एवं नीतियों के बल पर उसकी गिनती विश्व के समृद्ध देशों में होने लगी है।

(iii) दूसरी तरफ, लोकतांत्रिक देश भी गरीब हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, बांग्लादेश।

यहाँ संसाधन की कमी तथा गलत नीति आर्थिक समृद्धि की राह में रुकावट है।

प्रश्न 4. इन सभी कथनों में कुछ चीजें लोकतांत्रिक हैं तो कुछ अलोकतांत्रिक। हर कथन में इन चीजों को अलग-अलग करके लिखें।

(क) एक मंत्री ने कहा कि संसद को कुछ कानून पास करने होंगे जिससे विश्व व्यापार संगठन (WTO) द्वारा तय नियमों की पुष्टि हो सके।

उत्तर—लोकतांत्रिक तत्व—ससंद द्वारा नियम पारित किया जाना।

गैर-लोकतांत्रिक तत्व—विश्व-व्यापार संगठन द्वारा निर्धारित विनियमों के अनुसार नियम पारित किया जाना।

(ख) चुनाव आयोग ने एक चुनाव क्षेत्र के सभी मतदान केन्द्रों पर दोबारा मतदान का आदेश दिया जहाँ बड़े पैमाने पर मतदान में गड़बड़ की गई थी।

उत्तर—लोकतांत्रिक तत्व—धाँधली की स्थिति में निष्पक्ष चुनाव के लिए पुर्नमतदान की व्यवस्था।

गैर-लोकतांत्रिक तत्व—चुनाव के दौरान धाँधली किया जाना।

(ग) संसद में औरतों का प्रतिनिधित्व कभी भी 10 प्रतिशत तक नहीं पहुँचा है। इसी के कारण महिला संगठनों ने संसद में एक-तिहाई आरक्षण की माँग की है।

उत्तर—लोकतांत्रिक तत्व—महिलाओं द्वारा संसद में एक-तिहाई आरक्षण की माँग।

गैर-लोकतांत्रिक तत्व—संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 10 प्रतिशत तक भी नहीं पहुँच पाता।

प्रश्न 5. लोकतंत्र में अकाल और भुखमरी की संभावना कम होती है। यह तर्क देने का इनमें से कौन-सा कारण सही नहीं है ?

(क) विपक्षी दल भूख और भूखमरी की ओर सरकार का ध्यान दिला सकते हैं।

(ख) स्वतंत्र अखबार देश के विभिन्न हिस्सों में अकाल की स्थिति के बारे में खबरें दे सकते हैं।

(ग) सरकार को अगले चुनाव में अपनी पराजय का डर होता है।

(घ) लोगों को कोई भी तर्क मानने और उस पर आचरण करने की स्वतंत्रता है।

उत्तर—(घ) लोगों को कोई भी तर्क मानने और उस पर आचरण करने की स्वतंत्रता है।

प्रश्न 6. किसी जिले में 40 ऐसे गाँव हैं जहाँ सरकार ने पेयजल उपलब्ध कराने का कोई इंतजाम नहीं किया है। इन गाँवों के लोगों ने एक बैठक की और अपनी जरूरतों की ओर सरकार का ध्यान दिलाने के लिए कई तरीकों पर विचार किया। इनमें से कौन-सा तरीका लोकतांत्रिक नहीं है ?

(क) अदालत में पानी को अपने जीवन के अधिकार का हिस्सा बताते हुए मुकदमा दायर करना।

(ख) अगले चुनाव का बहिष्कार करके सभी पार्टियों को सन्देश देना।

(ग) सरकारी नीतियों के खिलाफ जन सभाएँ करना।

(घ) सरकारी अधिकारियों को पानी के लिए रिश्वत देना।

उत्तर—(घ) सरकारी अधिकारियों को पानी के लिए रिश्वत देना।

प्रश्न 7. लोकतंत्र के खिलाफ दिए जाने वाले इन तर्कों का जवाब दीजिए।

(क) सेना देश का सबसे अनुशासित और भ्रष्टाचार मुक्त संगठन है। इसलिए सेना को देश का शासन करना चाहिए।

जवाब : अनुशासित और भ्रष्टाचार मुक्त होने के बावजूद सेना को देश पर शासन नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह देश की जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती।

(ख) बहुमत के शासन का मतलब है मूर्खों और अशिक्षितों का राज। हमें तो होशियारों के शासन की जरूरत है, भले ही उनकी संख्या कम क्यों न हो।

जवाब : लोकतंत्र का सम्बन्ध केवल बुद्धिमानों से नहीं होता। शासन में उन लोगों को भाग लेना चाहिए जो जनता की इच्छा का ईमानदारी से प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुमत के शासन की इसीलिए आवश्यकता है कि वे अधिक-से-अधिक लोगों के हितों एवं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नीतिगत फैसला ले सकेंगे।

(ग) अगर आध्यात्मिक मामलों में मार्गदर्शन के लिए हमें धर्म-गुरुओं की जरूरत होती है तो उन्हीं को राजनैतिक मामलों में मार्गदर्शन का काम क्यों नहीं सौंपा जाए। देश पर धर्म-गुरुओं का शासन होना चाहिए।

जवाब : धर्म लोगों का व्यक्तिगत विषय है। इसे राजनीति से जोड़ना अनुचित है। लोकतंत्र का हमारी भौतिक समस्याओं

से सम्बन्ध है जो सभी लोगों की लगभग एक जैसी होती हैं। धार्मिक नेता पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकते हैं। अत: वे किसी वर्ग के साथ न्याय नहीं कर पाएँगे। साथ ही, उनके बीच सदैव एक वैचारिक संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी जो धर्म तथा आस्था से अनुप्रेरित होगा।

प्रश्न 8. इनमें से किन कथनों को आप लोकतांत्रिक समझते हैं? क्यों ?

(क) बेटी से बाप—मैं शादी के बारे में तुम्हारी राय सुनना नहीं चाहता। हमारे परिवार में बच्चे वहीं शादी करते हैं जहाँ उनके माँ-बाप तय कर देते हैं।

उत्तर—उपरोक्त कथन लोकतांत्रिक मूल्यों का विरोधी है। क्योंकि, इसमें दूसरों के विचारों की अभिव्यक्ति नहीं है जो लोकतंत्र की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

(ख) छात्र से शिक्षक—कक्षा में सवाल पूछकर मेरा ध्यान मत बँटाओ।

उत्तर—शिक्षक का ऐसा कहना लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध है। क्योंकि छात्रों का यह अधिकार है कि वे अपनी समस्याओं को शिक्षकों के सामने रखें एवं शिक्षकों का यह कर्त्तव्य है कि वे छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी समस्याओं का समाधान करें।

(ग) अधिकारियों से कर्मचारी—हमारे काम करने के घंटे कानून के अनुसार कम किए जाने चाहिए।

उत्तर—हाँ, यह माँग लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप है। निर्धारित सीमा से अधिक घंटों तक काम लेना कानून का उल्लंघन एवं शोषण है। शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना लोकतांत्रिक मौलिक अधिकार है।

प्रश्न 9. एक देश के बारे में निम्नलिखित तथ्यों पर गौर करें और फैसला करें कि आप इसे लोकतंत्र कहेंगे या नहीं। अपने फैसले के पीछे के तर्क भी बताएँ।

(क) देश के सभी नागरिकों को वोट देने का अधिकार है और चुनाव नियमित रूप से होते हैं।

(ख) देश ने एक अंतर्राष्ट्रीय ऐजेन्सी से ऋण लिया। ऋण के साथ यह एक शर्त जुड़ी थी कि सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य पर अपने खर्चों में कमी करेगी।

(ग) लोग सात से ज्यादा भाषाएँ बोलते हैं पर शिक्षा का माध्यम सिर्फ एक भाषा है, जिसे देश के 52 फीसदी लोग बोलते हैं।

(घ) सरकारी नीतियों का विरोध करने के लिए अनेक संगठनों ने संयुक्त रूप से प्रदर्शन करने और देश भर में हड़ताल करने का आह्वान किया है। सरकार ने उनके नेताओं को गिरफ्तार कर लिया है।

(ङ) देश के रेडियो और टेलीविजन चैनल सरकारी नीतियों और विरोध के बारे में खबर छापने के लिए अखबारों को सरकार से अनुमति लेनी होती है।

उत्तर—तथ्य (घ) तथा (ङ) सरकार के गैर-लोकतांत्रिक व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं। तथ्य (ख) सरकार की आर्थिक कमजोरी के कारण मजबूरी में उठाए गए एक गलत फैसले की ओर इंगित करता है। लेकिन, तथ्य (क) एवं (ग) सरकार के मौलिक रूप से लोकतांत्रिक होने को प्रदर्शित करते हैं। ये विशेषताएँ लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास की प्रतीक हैं। अत: कहा जा सकता है कि यह देश एक लोकतांत्रिक देश है।

प्रश्न 10. अमेरिका में 2004 में आई एक रिपोर्ट के अनुसार वहाँ के समाज में असमानता बढ़ती जा रही है। आमदनी की असमानता लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विभिन्न वर्गों की भागीदारी घटने-बढ़ने के रूप में भी सामने आई। इन समूहों की सरकार के फैसलों पर असर डालने की क्षमता भी इससे प्रभावित हुई है। इस रिपोर्ट की मुख्य बातें थीं—

- **सन् 2004 में एक औसत अश्वेत परिवार की आमदनी 100 डॉलर थी जबकि गोरे परिवार की आमदनी 162 डॉलर। औसत गोरे परिवार के पास अश्वेत परिवार से 12 गुना ज्यादा सम्पत्ति थी।**
- **राष्ट्रपति चुनाव में 75,000 डॉलर से ज्यादा आमदनी वाले परिवारों के प्रत्येक 10 में से 9 लोगों ने वोट डाले थे। यही लोग आमदनी के हिसाब से समाज के ऊपरी 20 फीसदी में आते हैं। दूसरी ओर 15,000 डॉलर से कम आमदनी वाले प्रत्येक 10 में से सिर्फ 5 लोगों ने ही वोट डाले। आमदनी के हिसाब से ये लोग सबसे निचले 20 फीसदी हिस्से में आते हैं।**
- **राजनैतिक दलों का करीब 95 फीसदी चंदा अमीर परिवारों से ही आता है। इससे उन्हें अपनी राय और चिंताओं से नेताओं को अवगत कराने का अवसर मिलता है। यह सुविधा देश के अधिकांश नागरिकों को उपलब्ध नहीं है।**
- **जब गरीब लोग राजनीति में कम भागीदारी करते हैं। तो सरकार भी उनकी चिंताओं पर कम ध्यान देती है—गरीबी दूर करना, रोजगार देना, उनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास की व्यवस्था करने पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना दिया जाना चाहिए। राजनेता अक्सर अमीरों और व्यापारियों की चिंताओं पर ही नियमित रूप से गौर करते हैं।**

इस रिपोर्ट की सूचनाओं को आधार बनाकर और भारत के उदाहरण देते हुए 'लोकतंत्र और गरीबी' पर एक लेख लिखें।

उत्तर—लोकतंत्र और गरीबी—सामान्य लोगों के हित के लिए लोकतंत्र बहुमत का शासन है। लेकिन, आजकल इसका उपयोग उन चन्द लोगों के लाभ के लिए हो रहा है जिनके पास धन, संसाधन एवं शिक्षा है। भारत में अमीरों और गरीबों के बीच का अंतर और तेजी से बढ़ता जा रहा है। गरीब और गरीब हुए हैं जबकि अमीरों की अमीरी में तेजी से वृद्धि हुई है। येन-केन प्रकारेण सक्षम लोगों द्वारा सभी प्रकार की सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाया जा रहा है और गरीब इनसे वंचित रह रहे हैं।

हमारे देश में लोकतांत्रिक मूल्यों में तेजी से ह्रास होता दिखाई दे रहा है। लोगों ने राजनीति को व्यवसाय बना लिया है। लोग अब जनता की समस्याओं का हल निकालने के लिए राजनीति में नहीं जाना चाहते, बल्कि अपने व्यक्तिगत और वर्गीय लाभ के लिए इसे पेशा बना रहे हैं।

राजनीति में धन एवं बल के उपयोग ने इसके लोकतांत्रिक स्वरूप को नुकसान पहुँचाया है। यह ऊपर से लोकतांत्रिक दिखते हुए भी व्यवहार में स्वेच्छाचारी है। भारत की आबादी गाँवों में बसती है। उनके लिए कागज पर बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई जाती हैं और आए दिन होने वाले घोटालों के द्वारा विकास की राशि को नेताओं, व्यापारियों, ठेकेदारों तथा अन्य सक्षम वर्गों द्वारा आपस में बाँट लिया जाता है। परिणामस्वरूप गरीबी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

वास्तव में, जनप्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाने की आवश्यकता है। जनता के पास यह शक्ति होनी चाहिए कि वह जब चाहे अपने प्रतिनिधि को वापस बुला सकती है। यह उन्हें जवाबदेह बना देगा। साथ ही चुनावों में धन के प्रयोग पर रोक लगानी चाहिए। तभी लोकतंत्र का सही रूप सामने आएगा और आम जनता की समस्या की ओर ध्यान दिया जा सकेगा।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से कौन-सी लोकतन्त्र की प्रमुख विशेषता नहीं है?
(क) स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव (ख) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
(ग) केन्द्रीयकरण (घ) कानून का शासन व अधिकारों के प्रति सम्मान।

2. निम्न में से किसके कारण लोकतन्त्र का संचालन कठिन हो जाता है?
(क) प्रेस की स्वतन्त्रता (ख) स्वतन्त्र न्यायपालिका
(ग) अज्ञानता व जनता में शिक्षा का अभाव (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. निम्न में से कौन-सा सच्चे लोकतन्त्र का एक लक्षण नहीं है?
(क) जवाबदेहिता (ख) सामूहिक तरीके या प्रयास
(ग) प्रेस पर प्रतिबन्ध (घ) अधिकार व स्वतन्त्रता।

4. एक लोकतान्त्रिक निर्णय में निम्न में से क्या नहीं आता?
(क) सलाह मशविरा (ख) विचार-विमर्श (ग) आम सहमति (घ) आरोपण।

5. निम्न में से कौन सा कारण सही नहीं है कि एक लोकतान्त्रिक देश में क्यों अकाल की सम्भावना कम होती है?
(क) विरोधी दल भुखमरी की ओर ध्यान आकर्षित कर सकते हैं
(ख) स्वतन्त्र प्रेस देश के विभिन्न हिस्सों के अकालों की रिपोर्ट दे सकता है
(ग) सरकार आगामी चुनावों में पराजय को लेकर भयभीत रहती है
(घ) लोग किसी भी धर्म का पालन करने के लिये स्वतन्त्र रहते हैं।

6. हम किस आधार पर कह सकते हैं कि लोकतन्त्र निर्णय प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार लाता है?
(क) लोकतन्त्र में केवल शिक्षित लोग ही निर्णय लेते हैं
(ख) निर्णय दीर्घ काल के बाद लिये जाते हैं
(ग) निर्णय विचार-विमर्श व सलाह-मशविरा के बाद नहीं लिये जाते हैं
(घ) लोकतन्त्र में निर्णय न्यायपालिका द्वारा प्रमाणित होते हैं।

7. निम्न में से कौन सा लोकतन्त्र के विरुद्ध तर्क नहीं हैं?
(क) विलम्ब (ख) भ्रष्टाचार
(ग) गलत उम्मीदवार का चुनाव (घ) व्यापक विचार विमर्श एवं सलाह मशविरा।

8. निम्न में से कौन-सा निकाय अपने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिये उत्तरदायी है?
(क) कार्यपालिका (ख) स्वतन्त्र न्यायपालिका
(ग) व्यवस्थापिका (घ) पुलिस।

9. धर्मतन्त्र क्या है?
(क) अल्पसंख्यक समुदायों की सरकार (ख) कुलीनों की सरकार
(ग) धार्मिक शिक्षाओं की सरकार (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. लोकतन्त्र किस प्रकार अपनी गलतियों को सुधारने की प्रक्रिया अपनाता है?
(क) लोकतन्त्र में गलतियाँ सम्भव नही है (ख) अवसर की समानता प्रदान करके
(ग) निर्वाचन के द्वारा शासकों में परिवर्तन करके (घ) एक सशक्त प्रधानमंत्री की नियुक्ति करके।

11. निम्न में से क्या लोकतन्त्र का लक्षण नहीं है?
(क) चुनाव (ख) अधिकार (ग) स्वतन्त्रता (घ) प्रेस सेन्सरशिप।

12. निम्न में से क्या लोकतन्त्र के विरोध में है?
(क) एकदलीय शासन (ख) द्विदलीय व्यवस्था
(ग) बहुदलीय व्यवस्था (घ) समय-समय पर चुनाव।

13. निम्न में से क्या प्रत्यक्ष लोकतन्त्र का सही अर्थ है?
(क) शासक का प्रत्यक्ष चुनाव (ख) लोग सभी मुद्दों पर प्रत्यक्ष वोट देते हैं
(ग) सरकार व जनता में प्रत्यक्ष सम्पर्क रहता है (घ) उपर्युक्त सभी।

14. निम्न में से कौन-सा संवैधानिक राजतन्त्र का उदाहरण है?
(क) यू. एस. ए. (ख) फ्रांस (ग) पाकिस्तान (घ) ब्रिटेन।

15. वास्तविक लोकतन्त्र बुनियादी स्तर से आरम्भ होता है। बुनियादी या आधारभूत स्तर से क्या अभिप्राय है?
(क) उच्चतम स्तर से प्रारम्भ (ख) निम्नतम स्तर से प्रारम्भ
(ग) मध्य स्तर से प्रारम्भ (घ) इनमें से कोई नहीं।

16. 'लोकतन्त्र' शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है?
(क) फ्रांसीसी शब्द 'Democratus' (ख) ग्रीक शब्द 'Democratia'
(ग) लेटिन शब्द 'Demons' (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. शब्द Democratic जिससे Democracy शब्द की उत्पत्ति हुई है, का अर्थ है—
(क) सरकार का शासन (ख) राजा का शासन
(ग) जनता का शासन (घ) गणतन्त्र का शासन।

18. निम्न में से कहाँ लोकतन्त्र का प्रारम्भिक उदाहरण पाया जा सकता है?
(क) फ्रांस (ख) एथेन्स (ग) जर्मनी (घ) इंग्लैण्ड।

19. राजतन्त्र व कुलीनतन्त्र में शक्ति का स्रोत क्या है?
(क) आनुवांशिकता एवं सामाजिक स्थिति (ख) जनता एवं सेना
(ग) धन व स्तर (घ) इनमें से कोई नहीं।

20. किस देश में प्रत्यक्ष लोकतन्त्र को सफलतापूर्वक लागू किया जा चुका है?
(क) स्विटरलैण्ड (ख) फ्रांस (ग) यू. एस. ए. (घ) भारत।

21. स्विटजरलैण्ड में प्रत्यक्ष लोकतन्त्र का प्रयोग सफल क्यों हो सका है?
(क) उच्चतम साक्षरता दर के कारण (ख) इसके छोटे आकार के कारण
(ग) इसके बुद्धिमान लोगों के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं।

22. लोकतन्त्र के विषय में क्या सत्य नहीं है?
(क) प्रत्येक निर्वाचित प्रतिनिधि का मत निगमित या मिश्रित किया जा सकता है
(ख) यह जनमत के बहुमत की अभिव्यक्ति होता है
(ग) यह जनता के प्रतिनिधियों पर आधारित होता है
(घ) इनमें से कोई नहीं।

23. निम्न में से क्या भारत को लोकतान्त्रिक बनाता है?
(क) कानून का शासन (ख) निश्चित समयावधि पर चुनाव
(ग) मौलिक अधिकार (घ) उपर्युक्त सभी।

24. निम्न में से किसके बिना लोकतन्त्र का अस्तित्व नहीं हो सकता?
(क) प्रेस की स्वतन्त्रता (ख) न्यायपालिका की स्वतन्त्रता
(ग) कानून का शासन (घ) उपर्युक्त सभी।

25. लोकतन्त्र की सफलता को सीमित करने के लिए कौन से तत्व उत्तरदायी होते हैं?
(क) विस्तृत भ्रष्टाचार (ख) चुनाव में कदाचार
(ग) आर्थिक असमानता (घ) उपर्युक्त सभी।

26. निम्न में से कौन सा देश 'लोकतन्त्र' एवं 'संवैधानिक राजतन्त्र' का आदर्श उदाहरण है?
(क) ब्रिटेन (ख) फ्रांस (ग) नेपाल (घ) सऊदी अरब।

27. 'धर्मतन्त्र' का क्या अर्थ है?
(क) धार्मिक सरकार (ख) लोकप्रिय सरकार
(ग) कुलीन तन्त्र की सरकार (घ) इनमें से कोई नहीं।

[**उत्तर—1.** (ग), **2.** (ग), **3.** (ग), **4.** (घ), **5.** (घ), **6.** (ग), **7.** (घ), **8.** (ख), **9.** (ग), **10.** (ग), **11.** (घ), **12.** (क), **13.** (ख), **14.** (घ), **15.** (ख), **16.** (ख), **17.** (ग), **18.** (ख), **19.** (क), **20.** (क), **21.** (ख), **22.** (क), **23.** (घ), **24.** (घ), **25.** (घ), **26.** (क), **27.** (क)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पाकिस्तान का राष्ट्रपति कौन है?

उत्तर—आरिफ अल्वी (9 सितम्बर, 2018 से वर्तमान तक)।

प्रश्न 2. 'कानूनी ढाँचा आदेश' (Legal Framework Order) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—राष्ट्रपति राष्ट्रीय सभा तथा प्रान्तीय सभाओं को विघटित कर सकता है। राष्ट्रीय कैबिनेट के कार्यों का निरीक्षण 'राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद' के द्वारा किया जाता है जिसमें सैन्य अधिकारियों का बहुमत होता है।

प्रश्न 3. जिम्बाब्वे कब स्वतन्त्र हुआ? इस पर किस राज्य ने शासन किया?

उत्तर—जिम्बाब्वे 1980 में स्वतन्त्र हुआ और इस पर तभी से ZANU-PF का शासन है और इसके नेता रॉबर्ट मुगाबे रहे हैं।

प्रश्न 4. रॉबर्ट मुगाबे कौन था?

उत्तर—जिम्बाब्वे का राष्ट्रपति।

प्रश्न 5. कौन सा तत्व लोकतन्त्र को अन्य प्रकार की सरकारों से पृथक करता है?

उत्तर—अन्य प्रकार की सरकारों के विपरीत लोकतान्त्रिक सरकार राजनीतिक प्रक्रिया में विश्वास करती है तथा इसमें लोग अन्य सरकारों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 6. एक निश्चित समयान्तराल पर चुनाव होने के बावजूद चीन को एक लोकतान्त्रिक देश क्यों नहीं माना जाता है?

उत्तर—इसका कारण यह है कि चीन में चुनाव मतदाताओं को चयन का कोई अधिकार नहीं देते हैं। उन्हें सत्तारूढ़ साम्यवादी दल एवं इससे सम्बद्ध नेताओं को ही मत देने का अधिकार होता है।

प्रश्न 7. हम सऊदी अरब को एक लोकतान्त्रिक देश क्यों नहीं मानते हैं?

उत्तर—क्योंकि यहाँ राजतन्त्र है तथा लोग अपने शासकों का चुनाव नहीं करते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. क्या आप म्यांमार को एक लोकतान्त्रिक देश मानते हैं? अपने उत्तर के पक्ष में कोई तर्क दीजिए।

उत्तर—म्यांमार एक लोकतान्त्रिक देश नहीं है। वहाँ सत्ता सेना के पास है। आये दिन लोकतन्त्र के लिए आन्दोलन होते हैं जिनमें कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ती है। म्यांमार में सान सू ची लोकतान्त्रिक आन्दोलन की प्रमुख नेता एवं

राजनैतिक सुधारक हैं। उन्होंने चुनाव में जीत भी हासिल की थी परन्तु सैन्य शासकों ने उन्हें अपदस्थ कर जेल में डाल दिया था। वहाँ नागरिक अधिकारों का हनन होता है अत: हम कह सकते हैं कि म्यांमार में लोकतन्त्र नहीं है।

प्रश्न 2. हम लोकतन्त्र के सिद्धान्तों को जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू कर सकते हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तर—लोकतन्त्र के सिद्धान्तों को हम जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू कर सकते हैं। लोकतन्त्र समानता तथा सह अस्तित्व के सिद्धान्त पर आधारित व्यवस्था है जहाँ सम्पूर्ण शक्ति जनता के हाथों में निहित रहती है। हम अपने परिवार में भी लोकतन्त्र के सिद्धान्तों को लागू कर सकते हैं जैसे—परिवार के अधिकतम सदस्य चाहें वही परिवार का मुखिया हो। परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपनी बात सभी के समक्ष रखने का अधिकार हो। इस व्यवस्था को हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू कर सकते हैं।

प्रश्न 3. लोकतान्त्रिक सरकार की तीन प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—(1) समानता पर आधारित सरकार—लोकतान्त्रिक सरकार राज्य के प्रत्येक नागरिक को उन्नति के समान अवसर प्रदान करती है। यह सबके लिए समान कानूनों का निर्माण करती है तथा सबको सरकार के कार्यों में भाग लेने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक समानता इस व्यवस्था की आधारशिला है।

(2) लोकहित पर आधारित—लोकतान्त्रिक सरकारें लोक हितकारी होती हैं। क्योंकि ये सरकारें जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों द्वारा संचालित होती हैं। इसलिए शासक लोग साधारण जनता के हितों का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं।

(3) सम्पूर्ण जनता का विकास—लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच किसी प्रकार का जाति, लिंग, वंश, वर्ण एवं धर्म पर आधारित भेद-भाव नहीं किया जाता है। इस प्रकार लोकतन्त्र में प्रत्येक नागरिक को उन्नति के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं जिससे सबका विकास होता है।

प्रश्न 4. लोकतन्त्र को सर्वोत्तम सरकार क्यों माना जाता है?

उत्तर—वर्तमान में विश्व के अधिकांश देशों में लोकतन्त्र है। लोकतन्त्र को स्वतन्त्र, कुलीनतन्त्र, तानाशाही इत्यादि शासन-प्रणालियों से निम्नलिखित कारणों से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि—

1. लोगों के हितों की रक्षा—लोकतन्त्र अन्य शासन-प्रणालियों से श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। लोकतन्त्र में किसी विशेष वर्ग के हितों की रक्षा न करके समस्त जनता के हितों की रक्षा की जाती है।

2. जनमत पर आधारित—लोकतन्त्र ही एक ऐसी शासन-प्रणाली है जो जनमत पर आधारित है। शासन जनता की इच्छानुसार चलाया जाता है।

3. उत्तरदायी शासन—लोकतन्त्र सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि लोकतन्त्र में सरकार अपने समस्त कार्यों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। जो सरकार लोगों के हितों की रक्षा नहीं करती उसे बदल दिया जाता है।

4. नागरिकों के गौरव में वृद्धि—लोकतन्त्र ही एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें नागरिकों के गौरव में वृद्धि होती है। सभी नागरिकों को समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं।

5. समानता पर आधारित—सभी नागरिकों को शासन में भाग लेने का समान अधिकार प्राप्त हुआ है और कानून के समक्ष भी समक्ष नागरिकों को समान पाया जाता है।

6. विचार-विमर्श एवं वाद-विवाद—लोकतन्त्र में अच्छे निर्णय लिये जाते हैं क्योंकि सभी निर्णय विचार-विमर्श और वाद-विवाद से लिए जाते हैं।

7. आलोचना का अधिकार—प्रजातन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को सरकार की आलोचना करने का अधिकार प्राप्त हुआ है।

8. निर्णयों पर पुनर्विचार—लोकतन्त्र अन्य शासन प्रणालियों से उत्तम है क्योंकि इसमें गलत निर्णयों का बदलना आसान है। लोकतन्त्र में भी गलत निर्णय हो सकते हैं पर सार्वजनिक वाद-विवाद के बाद उन्हें बदला जा सकता है।

प्रश्न 5. जिम्बाब्वे को एक लोकतान्त्रिक देश नहीं माना जा सकता है। समझाइए।

उत्तर—जिम्बाब्वे वर्ष 1980 में स्वतन्त्र हुआ। तब से ही देश पर जानु-पी एफ दल का शासन है और इसको नेता रॉबर्ट मुगाबे आजादी प्राप्ति से ही देश पर शासन कर रहा है।

चुनाव नियमित रूप से कराए जा रहे हैं और हर बार चुनाव में जानु-पी एफ दल ही विजयी होता है। राष्ट्रपति मुगाबे लोकप्रिय हैं, किन्तु जानु-पी एफ चुनाव में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है। राष्ट्रपति की शक्तियाँ बढ़ाने और उसे कम जवाबदेह बनाने के लिए संविधान में कई बार संशोधन किए जा चुके हैं। विपक्षी दल के कार्यकर्त्ताओं को सताया जाता है और उनकी सभाओं को तितर-बितर किया जाता है। सरकार विरोधी प्रदर्शनों एवं आन्दोलनों को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया है। राष्ट्रपति की आलोचना का अधिकार सीमित है। मीडिया पूरी तरह सरकार के नियन्त्रण में है और जो केवल सत्ताधारी दल की विचारधारा का प्रसार करते हैं। स्वतन्त्र अखबारों को सत्ताधारी दल के विरुद्ध कुछ भी लिखने पर सताया जाता है। सरकार न्यायालय के ऐसे-निर्णयों की परवाह नहीं करती, जो विरुद्ध जा रहे हों और जजों पर दबाव डाला जाता है। यह

दर्शाता है कि लोकतन्त्र में शासकों का लोकप्रिय अनुमोदन करें, किन्तु यह पर्याप्त नहीं है। लोकप्रिय सरकारें अलोकतान्त्रिक हो सकती हैं और लोकप्रिय नेता स्वेच्छाचारी हो सकते हैं। एक लोकतान्त्रिक सरकार सब कुछ अपनी मर्जी से नहीं कर सकती वो भी इसलिए कि उसने चुनाव जीता है, परन्तु जिम्बाव्वे में ऐसा ही हुआ है। अतः जिम्बाव्वे को एक लोकतान्त्रिक देश नहीं माना जा सकता है।

प्रश्न 6. आज विश्व में किस प्रकार की लोकतान्त्रिक व्यवस्था सर्वाधिक प्रचलित है और क्यों?

उत्तर—लोकतन्त्र आज के युग की पुकार बन चुका है। लोकतन्त्र के विस्तार का वर्तमान चरण अभी अस्तित्व में है। जिन देशों में लोकतन्त्र की स्थापना नहीं हो पाई है। वहाँ के लोग इसके लिए प्रयत्नशील हैं। पूरी दुनिया में लोकतान्त्रिक देशों की संख्या बढ़ने से देशों के बीच आपसी सम्बन्ध भी स्वतः लोकतान्त्रिक बन जायेंगे। वैश्विक स्तर पर भी सरकार की रूप रेखाएँ उपस्थित हैं। कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जो वैश्विक सरकार की तरह कार्य कर रही है। यद्यपि ये संगठन विभिन्न देशों और लोगों पर उस तरह का नियन्त्रण नहीं रख सकते जैसा कि कोई सरकार रखती है। संयुक्त राष्ट्र संघ एक ऐसी ही संस्था है। इसने अनेक नियम बनाए हैं जो सभी देशों पर लागू होते हैं। यह भी लोकतान्त्रिक तरीके से कार्य करता है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद्, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक आदि संस्थान ऐसे ही हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विकासशील देशों के लिए लोकतन्त्र क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर—ज्यादातर विकासशील देश उपनिवेशवाद से ग्रस्त रहे हैं, उन्हें भारत के साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। अतः देश के आर्थिक सामाजिक, औद्योगिक विकास की दृष्टि से लोकहितकारी लोकतान्त्रिक सरकार ही इस कार्य को ईमानदारीपूर्वक सम्पन्न कर सकती है। लोकतान्त्रिक सरकारें जनता के प्रति जबाव देह होती हैं। वे जनकल्याण के मूल सिद्धान्त पर आधारित होती है। प्रत्येक नागरिक को अपनी बात कहने का अधिकार होता है।

अतः विकासशील देशों के विकसित राष्ट्र बनने के लिए जनता द्वारा चुनी गई लोकतान्त्रिक सरकारें ही उपयुक्त हैं, उन्हें निर्देशन में विकास की सतत धारा प्रवाहित हो सकती है।

प्रश्न 2. विश्व में लोकतन्त्र के प्रसार के लिए कोई तीन कारण दीजिए।

उत्तर—देखिये लघु उत्तरीय प्रश्न 4 का उत्तर।

प्रश्न 3. आप लोकतन्त्र को सर्वोत्तम प्रकार की सरकार क्यों मानते हैं?

उत्तर—देखिये लघु उत्तरीय प्रश्न 4 का उत्तर।

प्रश्न 4. लोकतन्त्र से क्या अभिव्यक्त होता है?

उत्तर—लोकतन्त्र का अर्थ तथा परिभाषा—'लोकतन्त्र' (जनतन्त्र/प्रजातन्त्र) को अंग्रेजी में 'डेमोक्रेसी' (Democracy) कहते हैं। यह शब्द यूनानी (Greek) भाषा के दो शब्दों 'डेमोस' (Demos) तथा 'क्रेशिया' (Kratia) से मिलकर बना है। प्रथम शब्द का अर्थ 'जनता' तथा दूसरे का अर्थ 'शक्ति' अथवा 'सत्ता' है। अतः इसका शाब्दिक अर्थ 'जनता का शासन' है। अतः लोकतन्त्र शासन प्रणाली का वह स्वरूप है, जिसमें शासन की सम्पूर्ण शक्ति जनता में निहित होती है।

लोकतन्त्र की प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

डायसी के अनुसार, "लोकतन्त्र शासन का वह रूप है, जिसमें शासक वर्ग सम्पूर्ण राष्ट्र का अपेक्षाकृत बड़ा भाग हो।"

ब्राइस के अनुसार, "लोकतन्त्र शब्द का प्रयोग शासन के उस प्रकार का बोध कराने के लिए किया जाता है जिसमें शासन सत्ता वर्ग-विशेष अथवा वर्गों में नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज के सदस्यों में निहित होती है।"

अब्राहम लिंकन के अनुसार, "लोकतन्त्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन है।"

डॉ. बेनीप्रसाद के अनुसार, "लोकतन्त्र जीवन-निर्वाह का एक सिद्धान्त है। इस समाज में एक व्यक्ति को दूसरे की प्रसन्नता के लिए साधन नहीं बनाया जा सकता है।"

प्रश्न 5. किस प्रकार की सरकार को लोकतन्त्र से सम्बद्ध किया जा सकता है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर—लोकतन्त्र से लोकतान्त्रिक सरकार को ही सम्बद्ध किया जा सकता है। लोकतन्त्र में जनप्रतिनिधि जनता के द्वारा मतदान द्वारा निर्वाचित किए जाते हैं। उन जन प्रतिनिधियों द्वारा देश के प्रधानमन्त्री का चुनाव होता है। प्रधानमन्त्री सरकार का मुखिया होता है तथा संसद के प्रति जबाव देह होता है। अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली द्वारा लोकतन्त्र में शासन किया जाता है।

प्रश्न 6. आर्थिक लोकतन्त्र क्यों आवश्यक है?

उत्तर—लोकतन्त्र व्यवस्था विश्व की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था है। यह विकास के लिए अच्छी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है। परन्तु इसमें आर्थिक लोकतन्त्र का अभाव होता है। समाज से गरीबी दूर करने के लिए आर्थिक लोकतन्त्र अति आवश्यक है जिससे समाज में पूँजी के असमान वितरण को रोका जा सके तथा लोगों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हो सके जिससे लोगों का जीवन स्तर सुधारा जा सके।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. लोकतन्त्र को परिभाषित कीजिए। लोकतान्त्रिक सरकार की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लोकतन्त्र की एक सरल परिभाषा—'लोकतन्त्र' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'डेमोक्रेसी' का हिन्दी रूपान्तर है। 'डेमोक्रेसी' दो यूनानी शब्दों से बना है—**डेमोस** (demos) और **क्रेशिया** (cratia), जिनका अर्थ क्रमशः है—'जनता' और 'शासन'। इस प्रकार, व्युत्पत्ति की दृष्टि से लोकतन्त्र का अर्थ 'जनता का शासन' है। लोकतन्त्र का अर्थ ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें जनता स्वयं भाग लेती है। लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में सम्प्रभुता जनता में ही निहित रहती है। इस व्यवस्था में जनता ही सरकारों को बनाती और गिरती है। उसके ही मत से विधायिका के सदस्य चुने जाते हैं। लोकतंत्र में राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता होने पर भी आर्थिक लोकतंत्र का अभाव होता है। यह उसी प्रकार है जैसे कि किसी भी व्यक्ति को पर्यटन का अवसर प्राप्त हो किन्तु उसकी जेब में पैसे नहीं हों। कई बार ये भी देखने को मिलता है कि प्रत्येक व्यक्ति को चुनाव लड़ने का अधिकार है परन्तु उसके पास साधन नहीं है। भारत के संविधान में भी नीति निर्देशक तत्त्वों के माध्यम से ऐसा प्रयास किया जा रहा है जिससे आर्थिक लोकतंत्र बहाल हो सके। लोकतंत्र की सार्थकता तभी है जब वह समता और अवसर की बराबरी में निहित हो।

अमेरिकी राष्ट्रपति **अब्राहम लिंकन** ने लोकतन्त्र की परिभाषा देते हुए कहा है, **"लोकतन्त्र जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए शासन है।"** प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से लोकतन्त्र को एक आदर्श शासन व्यवस्था माना जाने लगा। स्पष्ट रूप से यह घोषणा की गई कि विश्व में लोकतन्त्र की रक्षा के लिए ही यह युद्ध लड़ा जा रहा है। सन् 1921 में **लॉर्ड ब्राइस** की एक पुस्तक। ***मॉडर्न डेमोक्रेसी*** (Modern Democracy) प्रकाशित हुई जिसमें ब्राइस ने लिखा था—**"70 वर्ष पूर्व लोकतन्त्र शब्द नापसंद था और दहशत से भरा था। अब इस शब्द का गुणगान किया जा रहा है।"** धीरे-धीरे लोकतन्त्र विकास के मार्ग पर आगे बढ़ा और लोकतन्त्र समानता के आदर्श पर आधारित हो गया। समानता का प्रवेश सामाजिक और आर्थिक जीवन में आने से इस सिद्धान्त को प्रोत्साहन मिला कि आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतन्त्रता निरर्थक है।

साम्यवादी सरकारों यथा जैसे चीन, सोवियत संघ जैसे देशों में नागरिकों को वास्तविक आर्थिक सुरक्षा रोटी, कपड़ा और मकान के अधिकार दिये गये थे। लोकतंत्रीय व्यवस्था में भी मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत इनका समावेश करके एक सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के प्रयास किये गये।

लोकतन्त्र की विशेषताएँ—साधारण शब्दों में, **लोकतन्त्र शासन का वह रूप है जिसमें जनता शासकों का चुनाव करती है।** शासक एक निश्चित कार्यकाल के बाद पुनः जनता के सामने होते हैं। उन्हें चुनना या न चुनना जनता की इच्छा पर निर्भर करता है। अधिकांश देशों में जनता के समक्ष दो या तीन मुख्य राजनीतिक दल होते हैं अतः जनता के पास भी कम ही विकल्प होते हैं। लोकतंत्र के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न उभर कर सामने आते हैं—

- **लोकतंत्र में शासक** कौन हैं? किसी सरकार को लोकतान्त्रिक कहे जाने के लिए उसके किन अधिकारियों का निर्वाचित होना आवश्यक है? लोकतन्त्र में ऐसे कौन-से निर्णय हैं जो बिना चुने हुए अधिकारी भी ले सकते हैं?
- लोकतांत्रिक चुनावों से क्या तात्पर्य है। इसके लिए कौन-सी शर्तें पूरी करना अनिवार्य है?
- लोकतंत्र में शासकों का चुनाव कौन करते हैं? क्या इसमें प्रत्येक नागरिक को बराबरी की हैसियत से भाग लेने का अधिकार है? क्या कोई लोकतान्त्रिक व्यवस्था अपने कुछ नागरिकों को इस अधिकार से वंचित कर सकती है? क्या प्रत्येक नागरिक को मताधिकार प्राप्त होता है? क्या कोई लोकतांत्रिक व्यवस्था अपने कुछ नागरिकों को मताधिकार से वंचित कर सकती है?
- सरकार का कौन-सा स्वरूप लोकतांत्रिक कहलायेगा तथा उसकी क्या मर्यादाएँ हैं ? उसे किस प्रकार के अधिकार अपने नागरिकों को देने चाहिए?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये लोकतन्त्र की विशेषताएँ व प्रक्रिया स्पष्ट रूप से ज्ञात होनी चाहिये। लोकतन्त्र की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) लोकतन्त्र की **पद्धति में अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में रहता है।** यद्यपि बहुत-से देश ऐसे हैं, जहाँ प्रतिनिधियों को तो निर्वाचित किया जाता है, किन्तु अन्तिम निर्णय लेने की शक्ति निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में नहीं रह पाती। ऐसे देश स्वयं को लोकतान्त्रिक होने का दावा तो अवश्य करते हैं, किन्तु यह दावा

खोखला रहता है। पाकिस्तान में सैनिक तानाशाहों (भुट्टो या जनरल जिया या मुशर्रफ) के काल में अन्तिम शक्ति निर्वाचित प्रतिनिधियों के पास न रहकर तानाशाहों के पास रही। ऐसी शासन पद्धतियों को लोकतन्त्र की श्रेणी में कदापि नहीं रखा जा सकता।

(ii) लोकतन्त्र की दूसरी विशेषता है—**इसका निष्पक्ष और स्वतन्त्र निर्वाचन पर आधारित होना।** कई देशों में निर्वाचन की प्रणाली अपनाने पर भी जनभागीदारी नहीं होती। केवल साम्यवादी विचारधारा और पार्टी के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं और चुने जा सकते हैं। इसका उद्देश्य पूँजीवादी खुली अर्थव्यवस्था को लाने से रोकना है। विघटन के पूर्व सोवियत संघ में भी इसी प्रकार का निर्वाचन होता था, किन्तु साम्यवादी दल के अधिनायकत्व के कारण सिर्फ साम्यवादी दल के सदस्य अथवा साम्यवादी दल के समर्थक ही निर्वाचन में भाग लेते थे। वर्तमान में चीन में भी यही व्यवस्था है। यहाँ भी संसद, अर्थात् राष्ट्रीय जन संसद के सदस्यों का निर्वाचन अवश्य होता है, किन्तु निर्वाचन में भाग लेने के लिए उम्मीदवारों को चीन के साम्यवादी दल से स्वीकृति प्राप्त करनी पड़ती है। परिणामस्वरूप चीन में साम्यवादी दल के समर्थक उम्मीदवार ही निर्वाचन में खड़े होते हैं तथा साम्यवादी दल की ही सरकार गठित होती है। मैक्सिको में भी सन् 2000 तक यही स्थिति थी और वहाँ पी०आर०आई० (इंस्टीट्यूशनल रिवोल्यूशनरी पार्टी) की ही सरकार बनती थी। निर्वाचन का वास्तविक अर्थ स्वतन्त्रतापूर्वक राजनीतिक विकल्पों के बीच चयन करने का अवसर दिया जाना होना चाहिए। इस प्रकार स्पष्ट है कि एक दल की तानाशाही वाले राज्यों को लोकतान्त्रिक राज्य नहीं कहा जा सकता। क्योंकि ये तानाशाह जनता के द्वारा सीधे मतों से हटाये नहीं जा सकते।

(iii) लोकतन्त्र की तीसरी विशेषता है—**लोकतन्त्र का 'एक व्यक्ति-एक वोट-एक मोल' के सिद्धान्त पर आधारित होना।** ऐसे देशों को भी लोकतान्त्रिक शासन पद्धतियों वाले देशों में नहीं गिना जा सकता, जहाँ बिना किसी भेदभाव के लोगों को सार्वजनिक वयस्क मताधिकार प्राप्त नहीं है। मतदान के अधिकार के सम्बन्ध में स्त्री-पुरुष, बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक, मूल निवासी तथा विदेशी मूल निवासी का भेदभाव कई देशों में अभी भी विद्यमान है। इसी प्रकार सऊदी अरब में 2015 तक महिलाओं को मताधिकार से वंचित रखा गया, फिजी में भारतीय मूल निवासी के मत का मूल्य फिजी के मूल निवासी के मत की तुलना में कम रखा गया है। लोकतन्त्र के लिए यह आवश्यक है कि मत का एकसमान मूल्य हो।

(iv) लोकतन्त्र की अन्तिम, किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि **इसमें विधि के शासन और नागरिक अधिकारों को संरक्षण प्राप्त रहता है।** लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार प्रदान किए जाते हैं तथा उनके संरक्षण की भी व्यवस्था की जाती है। इनमें विचार और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, संघ अथवा संगठन बनाने की स्वतन्त्रता, राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता की स्वतन्त्रता, कानून की दृष्टि में सभी को समानता का अधिकार, अवसर की समानता आदि मुख्य अधिकार हैं। मौलिक अधिकारों के संरक्षण के लिए लोकतान्त्रिक शासन में स्वतन्त्र न्यायपालिका की व्यवस्था की जाती है। अनुच्छेद 32 के तहत भारत की न्यायपालिका को मौलिक अधिकारों का संरक्षक कहा गया है। सरकार को भी सांविधानिक कानूनों के अनुसार ही आचरण करना होता है। निर्वाचित सरकार को भी मनमाने ढंग से कानून बनाने एवं अपना कार्य करने का अधिकार नहीं होता है। निर्वाचित सरकार अपने क्रियाकलापों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। निर्वाचन के समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि नागरिक मतदान के समय अपने मताधिकार का सही ढंग से प्रयोग कर सकें, जिससे कि उनकी पसंद के प्रतिनिधि निर्वाचित हो सकें, साथ ही निर्वाचन में अनुचित तरीके नहीं अपनाए जा सकें। अधिकांश लोकतान्त्रिक सरकारें ऐसे ही प्रयत्न करती हैं, किन्तु कुछ देश ऐसे भी हैं जहाँ लोकतन्त्र के नाम पर मतदान में गलत हथकंडों का प्रयोग कर शासक अपने दल की जीत सुनिश्चित कर लेते हैं। अनेक देशों में ऐसे आरोप विपक्षी दल लगाते रहे हैं कि चुनाव प्रणाली में धांधली हुई या सत्ता के अभिकरणों ने चुनाव को प्रभावित किया। उदाहरणार्थ जिंबाब्वे को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है जिसे सन् 1980 में अल्पसंख्यक गोरों के शासन से मुक्ति मिली एवं जिंबाब्वे लोकतान्त्रिक राज्य बना। जिंबाब्वे अफ्रीकी नेशनल यूनियन देशभक्त मोर्चे (जानु—पी०एफ०) के नेता रॉबर्ट मुगाबे को देश का प्रधानमन्त्री नियुक्त किया गया। तब से वर्ष 2017 तक देश के शासन की बागडोर मुगाबे ने सँभाले रखी। निर्वाचन नियमित रूप से होते रहे और जानु-पी०एफ० को ही बहुमत मिलता रहा किन्तु निर्वाचन के सम्पन्न होने मात्र से ही लोकतान्त्रिक राज्य की शर्तें पूरी नहीं हो जातीं। जिंबाब्वे में मुगाबे की लोकप्रियता में कमी नहीं थी, फिर भी निर्वाचन में गलत तरीके अपनाए जाते थे। मुगाबे सरकार ने कई बार संविधान में परिवर्तन करके राष्ट्रपति के अधिकारों में वृद्धि की थी और उसकी जवाबदेही (Accountability) को कम किया। सरकार के विरोधियों को कुचला जाता था तथा मीडिया की स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाया गया था। सरकार न्यायपालिका के ऐसे निर्णयों से भी नहीं डरती थी जो उसके विरुद्ध होते थे। उसने जजों पर भी दबाव डाला। 2017 में मुगाबे को राष्ट्रपति पद से हटा दिया गया। इससे स्पष्ट है कि लोकतान्त्रिक सरकार का लोकप्रिय नेता भी तानाशाह हो सकता है।

प्रश्न 2. क्या हम कह सकते हैं कि लोकतन्त्र सर्वाधिक अनुकूल शासन व्यवस्था है? उत्तर के पक्ष में कारण दीजिए।

उत्तर—निम्न गुणों के कारण लोकतन्त्र सर्वाधिक अनुकूल शासन व्यवस्था है—

1. जनमत पर आधारित शासन—जनमत पर आधारित शासन का अर्थ यह होता है कि इसमें शासन जनता की सामान्य इच्छा के अनुसार चलाया जाता है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा को ध्यान में रखा जाता है।

2. लोकप्रिय एवं स्थायी शासन—लोकतंत्र विश्व में सर्वाधिक लोकप्रिय शासन है; क्योंकि यह जनता की भागीदारी से अस्तित्व में आता है। साथ ही यह स्थायी शासन भी है; क्योंकि इसमें जनता ही शासन का संचालन करती है।

3. समानता और स्वतन्त्रता का पोषक—लोकतन्त्र के अन्तर्गत जाति, वंश, रंग, धर्म, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता है। कानून के समक्ष सभी नागरिकों को समान माना जाता है। इसके अतिरिक्त लोकतन्त्र स्वतन्त्रता का भी पोषक है जिसके अन्तर्गत विचार, अभिव्यक्ति, भाषण, सभा आदि की स्वतन्त्रताएँ प्राप्त होती हैं।

4. जनकल्याणकारी—लोकतन्त्र का उद्देश्य जनता का कल्याण करना है, लोकतंत्र में लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा सदैव आदर्श रूप में रहती है। यह राज्य पर निर्भर है वह इसे किस सीमा तक पूरा कर पाता है।

5. राजनीतिक जागृति—लोकतन्त्र में जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है तथा जन प्रतिनिधि भी जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं। इस प्रकार लोकतन्त्र जनता में राजनीतिक जागृति उत्पन्न कराने में भी सहायक सिद्ध होता है। इस प्रकार निर्वाचन एवं शासन कार्य में भाग लेने के कारण जनता में राजनीतिक चेतना आती है।

6. देशभक्ति की भावना—जनता ही देश की वास्तविक शासक होती है; अतः लोकतन्त्र में नागरिकों में देशभक्ति का विकास स्वाभाविक है। इस प्रकार जनता को देश के लिए काम करने का अवसर मिलता है।

7. क्रान्ति का भय नहीं—यह शासन प्रणाली जनता की इच्छा व सहयोग प्राप्ति पर आधारित होती है; अतः जनता के सन्तुष्ट रहने के कारण राजनीतिक और सामाजिक क्रान्ति का भी भय नहीं रहता। जनता के सन्तुष्ट न रहने पर चार या पाँच वर्ष बाद सत्ता परिवर्तन संभव है।

प्रश्न 3. लोकतान्त्रिक सरकार में विभिन्न प्रकार के दोष पाये जाते हैं। व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लोकतान्त्रिक सरकार में निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं—

1. अयोग्यों की सरकार—प्लेटो और अरस्तू ने लोकतन्त्र को मूर्खों की सरकार कहा है। एच० जी० वेल्स ने भी लोकतन्त्र को बुद्धिहीनों एवं अज्ञानियों का शासन कहा है। प्रजातन्त्र में सबको समान रूप से शासन करने का अवसर मिलता है। राजनीति में शिक्षित व्यक्तियों की कमी के कारण अन्ततः अयोग्यों के हाथ में ही शासन चला जाता है।

2. साहित्य, कला एवं संस्कृति का विरोधी—लोकतन्त्र में उसी कार्यक्रम पर धन व्यय किया जाता है जिससे अधिक मत प्राप्त किए जा सकें। साहित्य, कला एवं संस्कृति के विकास पर आवश्यकता अनुसार ध्यान नहीं दिया जाता है।

3. दलगत बुराइयाँ—देश की तुलना में अपने दलीय हित और स्वयं के हित पर अधिक ध्यान दिया जाता है। एक बार पैसा खर्च करके चुनाव जीता जाता है और जनता के लिए आये धन को आपस में बाँट लिया जाता है। नेता प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। विदेशी सौदों में भी कमीशन लिया जाता है।

4. समय तथा धन का अपव्यय—लोकतन्त्र में चुनावों पर करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। चुनावों के कारण ही जनता बढ़ने वाली महँगाई से भयभीत हो जाती है। इसके अतिरिक्त जनता के प्रतिनिधियों के वेतन और भत्ते के रूप में राष्ट्रीय आय का एक बहुत बड़ा भाग अनावश्यक रूप से खर्च हो जाता है।

5. धनवानों का प्रभुत्व—चुनाव प्रणाली अत्यधिक खर्चीली और जनबल पर आधारित होती है। अतः साधारण जनता विधानसभा और लोकसभा का चुनाव नहीं लड़ पाती है। धनवान ही चुनाव लड़ते हैं। प्रायः धनी धन के बल पर गरीब मतदाताओं का मत खरीदकर चुनाव जीत जाते हैं। निर्वाचन में चुने जाने के बाद वे धनवानों के हितों की ही रक्षा करने लगते हैं।

6. अनुत्तरदायी शासन—लोकतंत्र में सैद्धान्तिक स्थिति कितनी भी आदर्श क्यों न हो किन्तु व्यावहारिक रूप में उत्तरदायी शासन का अभाव होता है। ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार व्याप्त रहता है। आम जनता पिसकर रह जाती है। नौकरशाही भ्रष्ट होकर पूरे तंत्र को खोखला कर देती है, चुनी हुई सरकार उस पर नियन्त्रण नहीं लगा पाती है, पूँजीपतियों के द्वारा ही सरकारें बनायी और गिरायी जाती हैं।

7. आदर्शवाद पर आधारित—लोकतन्त्र कोरे आदर्शवाद पर आधारित है, इसमें व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान नहीं दिया जाता है। यद्यपि यह समानता और स्वतन्त्रता जैसे सिद्धान्तों पर आधारित है, किन्तु व्यवहार में समानता और स्वतन्त्रता कहीं दिखाई नहीं देती।

8. अन्ध भक्ति—लोकतन्त्र में जनता अपनी अज्ञानता के कारण एक नेता की पूजा करने लग जाती है। इसका लाभ उठाकर वह नेता तानाशाह भी बन सकता है। राजनीतिक विचारधारा का स्थान गौण हो जाता है। मीडिया और बुद्धिजीवी उसी नेता का गुणगान करने लगते हैं जो उच्च वर्ग का समर्थक व हितैषी होता है।

लोकतन्त्र के पक्ष और विपक्ष के तर्कों की विवेचना करने के बाद यह निष्कर्ष उचित प्रतीत होता है कि लोकतन्त्र ही शासन का सर्वोत्तम रूप है। इसके विपक्ष में दिये गये तर्कों के आधार पर हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि लोकतन्त्र की भी अपनी कमजोरियाँ हैं, किन्तु ये कमजोरियाँ अधिकार देकर, भ्रष्टाचार मुक्त, उत्तरदायी शासन व्यवस्था आदि प्रयासों के द्वारा सुधारी जा सकती हैं।

प्रश्न 4. लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था सरकार से परे भी संचालित होती है? समझाइए।

उत्तर—लोकतान्त्रिक व्यवस्था सरकार के अलावा भी संचालित होती है। कभी 'शब्द लोकतन्त्र' सरकार से भिन्न अन्य संगठनों के लिए प्रयुक्त किया जाता था। लोकतन्त्र का प्रयोग निर्णय निर्धारण में किया जाता था। एक प्रजातान्त्रिक निर्णय में सभी की सहमति होती थी। निर्णयों के निर्धारण में शक्तिशाली और कमजोर दोनों प्रकार के व्यक्तियों की सहमति ली जाती थी।

लोकतन्त्र का सिद्धान्त सरकार के अलावा अन्य सभी संगठनों में मान्य है। परिवार, धार्मिक और सामाजिक संगठन भी इसी सिद्धान्त पर कार्य करते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि लोकतन्त्र जीवन के हर क्रिया कलाप में प्रयुक्त होता है। जैसे परिवाार में कोई भी निर्णय बहुमत से लिया जाता है, परिवार के हर सदस्य की राय ली जाती है तत्पश्चात् बहुमत के द्वारा परिवार का मुखिया निर्णय करता है। पिता और पुत्र की सम्मति समान रूप से महत्व रखती है। इसी प्रकार शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी उन अध्यापकों को पसन्द नहीं करते हैं जो उनको प्रश्न पूछने का अवसर नहीं देते हैं। ऐसे शिक्षक लोकतान्त्रिक मर्यादाओं का पालन नहीं करते हैं। विद्यार्थी उसी अध्यापक को पसन्द करते हैं जो उन्हें लोकतान्त्रिक तरीके से शिक्षा प्रदान करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि लोकतान्त्रिक व्यवस्था सरकार से परे भी संचालित होती है।

प्रश्न 5. यदि हम लोकतन्त्र का प्रयोग एक आदर्श व्यवस्था के रूप में करते हैं, क्या भारत को एक लोकतान्त्रिक देश माना जा सकता है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर—भारत की शासन व्यवस्था लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था है। क्योंकि देश में जन प्रतिनिधि शासन करते हैं। इन प्रतिनिधियों के चयन के लिए निर्वाचन होते हैं एवं निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर होता है। जिस शासन में जनता की भागीदारी होती है उसे लोकतान्त्रिक शासन कहते हैं। भारत में निर्णय लेने का अधिकार जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में है। हमारे देश में चुनाव आयोग जो एक निष्पक्ष संस्था है के द्वारा निष्पक्ष एवं स्वतन्त्र निर्वाचन होता है तथा प्रत्येक वयस्क नागरिक जिसकी आयु 18 वर्ष से अधिक है को मत देने का अधिकार होता है तथा यह एक व्यक्ति-एक-वोट-एक-मोल के सिद्धान्त पर आधारित है। हमारे देश में विधि के शासन और नागरिक अधिकारों को संरक्षण प्राप्त है। भारत में नागरिकों को कुछ मूल अधिकार संविधान द्वारा प्रदान किये गये हैं जिनकी रक्षा सरकार एवं न्यायपालिका द्वारा की जाती है। भारत में स्वतन्त्र न्यायपालिका है। वह अपने निर्णय लेने में स्वतन्त्र है। सरकारें उस पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं बना सकतीं। निश्चित समयान्तराल के बाद चुनाव सम्पन्न होते हैं अत: हम कह सकते हैं कि भारत में एक पूर्ण लोकतान्त्रिक व्यवस्था है।

प्रश्न 6. 'सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार' क्या है? क्या सऊदी अरब और एस्टोनिया के नागरिकों को यह अधिकार प्राप्त हैं?

उत्तर—लोकतान्त्रिक शासन पद्धति वाले देशों में बिना किसी भेदभाव के लोगों को सार्वजनिक वयस्क मताधिकार प्राप्त हैं। वयस्क मताधिकार का अभिप्राय 18 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के अपना मत देने के अधिकार से है। संसार के लगभग सभी लोकतान्त्रिक देशों में वयस्क मताधिकार प्राप्त है।

एस्टोनिया नामक पूर्व सोवियत संघ के गणराज्य में रूसी अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को मताधिकार हासिल करने में मुश्किल रहती है तथा उन्हें बड़ी कठिनाई से यह अधिकार प्राप्त होता है, अत: हम यह कह सकते हैं कि एस्टोनिया में पूर्ण लोकतंत्र नहीं है। सउदी अरब में राजतन्त्र है। यहाँ के नागरिकों को वयस्क मताधिकार प्राप्त नहीं है।

प्रश्न 7. "निश्चित अवधि पर चुनाव करने एवं नेताओं की लोकप्रियता के बावजूद चीन लोकतन्त्र का आश्वासन देने में असफल रहा है।" व्याख्या कीजिए।

उत्तर—चीन की साम्यवादी सरकार को लोकतान्त्रिक सरकार की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। क्योंकि चीन में कम्युनिस्ट पार्टी का अधिनायकत्व है। चीन में केवल कम्युनिस्ट पार्टी की ही सरकार बन सकती है। यद्यपि चीन में चुनाव भी होते हैं परन्तु कम्युनिस्ट पार्टी का ही पूर्ण नियन्त्रण होता है। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों में से ही जनता को प्रतिनिधि चुनने का अवसर दिया जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि चीन में पूर्ण लोकतन्त्र नहीं है। यद्यपि चीन के कुछ कम्युनिस्ट नेता लोकप्रिय भी हैं तथा साम्यवादी शासन में चीन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और महाशक्ति बन गया है। फिर भी वह अपने नागरिकों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान नहीं कर सका है। चीन में सरकार के विरोध में धरना प्रदर्शन करने पर बलपूर्वक कुचल दिया जाता है। लोगों को सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त नहीं है, संचार माध्यम भी स्वतन्त्र नहीं है। वहाँ के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने आप को आजीवन राष्ट्रपति घोषित करवा लिया है।

●●

2 संविधान निर्माण

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. नीचे कुछ गलत वाक्य दिए गए हैं। हर एक में की गई गलती पहचानें और इस अध्याय के आधार पर उसको ठीक करके लिखें।

(क) स्वतंत्रता के बाद देश लोकतांत्रिक हो या नहीं, इस विषय पर स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं ने अपना दिमाग खुला रखा था।

(ख) भारतीय संविधान सभा के सभी सदस्य संविधान में कही गई हरेक बात पर सहमत थे।

(ग) जिन देशों में संविधान है, वहाँ लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था ही होगी।

(घ) संविधान देश का सर्वोच्च कानून होता है, इसलिए इसमें बदलाव नहीं किया जा सकता।

उत्तर—(क) स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं की इस सम्बन्ध में स्पष्ट धारणा थी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में लोकतंत्र होना चाहिए।

(ख) भारतीय संविधान सभा के सभी सदस्यों की संविधान के उपबंधों को लेकर भिन्न धारणाएँ थीं।

(ग) एक लोकतांत्रिक देश का संविधान निश्चित रूप से होना चाहिए।

(घ) संविधान में संशोधन की व्यवस्था होती है, क्योंकि इसे लोगों की इच्छाओं तथा समाज में आए बदलाव के अनुरूप होना चाहिए।

प्रश्न 2. दक्षिण अफ्रीका का लोकतांत्रिक संविधान बनाने में, इनमें से कौन-सा टकराव सबसे महत्त्वपूर्ण था?

(क) दक्षिण अफ्रीका और उसके पड़ोसी देशों का

(ख) स्त्रियों और पुरुषों का

(ग) गोरे अल्पसंख्यक और अश्वेत बहुसंख्यकों का

(घ) रंगीन चमड़ी वाले बहुसंख्यकों और अश्वेत अल्पसंख्यकों का।

उत्तर—(ग) गोरे अल्पसंख्यक और अश्वेत बहुसंख्यकों का।

प्रश्न 3. लोकतांत्रिक संविधान में इनमें से कौन-सा प्रावधान नहीं रहता?

(क) शासन प्रमुख के अधिकार

(ख) शासन प्रमुख का नाम

(ग) विधायिका के अधिकार

(घ) देश का नाम।

उत्तर—(ख) शासन प्रमुख का नाम।

प्रश्न 4. संविधान निर्माण में इन नेताओं और उनकी भूमिका में मेल बैठाएँ—

(क) मोतीलाल नेहरू	**(1) संविधान सभा के अध्यक्ष**
(ख) बी० आर० अंबेडकर	**(2) संविधान सभा के सदस्य**
(ग) राजेन्द्र प्रसाद	**(3) प्रारूप कमेटी के अध्यक्ष**
(घ) सरोजिनी नायडू	**(4) 1928 में भारत का संविधान बनाया**

उत्तर—

(क) मोतीलाल नेहरू	1928 में भारत का संविधान बनाया
(ख) बी० आर० अंबेडकर	प्रारूप कमेटी के अध्यक्ष
(ग) राजेन्द्र प्रसाद	संविधान सभा के अध्यक्ष
(घ) सरोजिनी नायडू	संविधान सभा के सदस्य

प्रश्न 5. जवाहर लाल नेहरू के नियति के साथ साक्षात्कार वाले भाषण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों का जवाब दें–

(क) नेहरू ने क्यों कहा था कि भारत का भविष्य सुस्ताने और आराम करने का नहीं है?

(ख) नए भारत के सपने किस तरह विश्व से जुड़े हैं?

(ग) वे संविधान निर्माताओं से क्या शपथ चाहते थे?

(घ) "हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की कामना हर आँख से आँसू पोंछने की है।" वे इस कथन में किसका जिक्र कर रहे थे?

उत्तर–(क) नेहरू ने पहले वाक्य में 'सम्पूर्ण नहीं या पूर्ण अर्थ में नहीं' जैसे भावों का प्रयोग यह व्यक्त करने के लिए किया है कि वक्त आ गया है कि भारत के लोग अपने वचन को पूरी तरह से अमल में लाएँ।

(ख) नए भारत के सपने सम्पूर्ण मानवता से जुड़े हैं।

(ग) वह भारतीय संविधान के निर्माताओं से यह शपथ लेना चाहते थे कि वह भारत के संसाधनों तथा जनता के प्रति मानवता के हित में अपने आपको समर्पित कर दें।

(घ) वह महात्मा गाँधी की ओर इशारा कर रहे थे।

प्रश्न 6. हमारे संविधान को दिशा देने वाले ये कुछ मूल्य और उनके अर्थ हैं। इन्हें आपस में मिलाकर दोबारा लिखिए।

(क) संप्रभु	**(1) सरकार किसी धर्म के निर्देशों के अनुसार काम नहीं करेगी।**
(ख) गणतंत्र	**(2) फैसले लेने का सर्वोच्च अधिकार लोगों के पास है।**
(ग) बन्धुत्व	**(3) शासन प्रमुख एक चुना हुआ व्यक्ति है।**
(घ) धर्मनिरपेक्ष	**(4) लोगों को आपस में परिवार की तरह रहना चाहिए।**

उत्तर–(क) संप्रभु–जनता के पास फैसला करने का सर्वोच्च अधिकार है।

(ख) गणतंत्र–राज्य का प्रमुख एक चुना हुआ व्यक्ति है।

(ग) बन्धुत्व–जनता भाई-बहनों की तरह रहे।

(घ) धर्मनिरपेक्ष–सरकार किसी भी धर्म का पोषण नहीं करेगी।

प्रश्न 7. कुछ दिन पहले नेपाल से आपके एक मित्र ने वहाँ की राजनैतिक स्थिति के बारे में आपको पत्र लिखा था। वहाँ अनेक राजनैतिक पार्टियाँ राजा के शासन का विरोध कर रही थीं। उनमें से कुछ का कहना था कि राजा द्वारा दिए गए मौजूदा संविधान में ही संशोधन करके चुने हुए प्रतिनिधियों को ज्यादा अधिकार दिए जा सकते हैं। अन्य पार्टियाँ, नया गणतांत्रिक संविधान बनाने के लिए नई संविधान सभा गठित करने की माँग कर रही थीं। इस विषय में अपनी राय बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखें।

उत्तर–इस सम्बन्ध में हमारे सामने दो विचार रखे गए हैं। पहले विचार के अनुसार चुने हुए जनप्रतिनिधियों को अधिक शक्ति दी जानी चाहिए जिससे सम्पूर्ण व्यवस्था को अधिक-से-अधिक जनतांत्रिक बनाया जा सके। दूसरा समूह राजशाही को खत्म कर इसकी जगह नए गणतांत्रिक संविधान के निर्माण की बात कर रहा है। मेरे विचार में अचानक कोई बड़ा परिवर्तन संघर्ष को जन्म देता है। अतः पहले कुछ वर्षों के लिए ब्रिटेन की तरह वहाँ भी एक संवैधानिक गणतंत्र की स्थापना होनी चाहिए। लेकिन, इस गणतंत्र में राजा की भूमिका केवल परामर्शदाता की हो। अतः वर्तमान संविधान में उपयुक्त संशोधन ही नेपाल के हित में उचित फैसला होगा।

प्रश्न 8. भारत के लोकतंत्र के स्वरूप में विकास के प्रमुख कारणों के बारे में कुछ अलग-अलग विचार इस प्रकार हैं। आप इनमें से हर कथन को भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए कितना महत्त्वपूर्ण कारण मानते हैं?

(क) अंग्रेज शासकों ने भारत को उपहार के रूप में लोकतांत्रिक व्यवस्था दी। हमने ब्रिटिश हुकूमत के समय बनी प्रांतीय असेंबलियों के जरिये लोकतांत्रिक व्यवस्था में काम करने का प्रशिक्षण पाया।

(ख) हमारे स्वतंत्रता संग्राम ने औपनिवेशिक शोषण और भारतीय लोगों को तरह-तरह की आजादी न दिए जाने का विरोध किया। ऐसे में स्वतंत्र भारत को लोकतांत्रिक होना ही था।

(ग) हमारे राष्ट्रवादी नेताओं की आस्था लोकतंत्र में थी। अनेक नव स्वतंत्र राष्ट्रों में लोकतंत्र का न आना हमारे नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

उत्तर–(क) इस कारक के योगदान को बहुत हद तक स्वीकार किया जा सकता है। हालाँकि इसे अंग्रेजों की देन नहीं

माना जा सकता है। यह सच है कि अगर हमें पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता तो भारत जैसे विशाल देश में आरंभिक दौर में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना बहुत ही कठिन होती।

(ख) इस कारक का भी भारत में लोकतंत्र की स्थापना में योगदान रहा है। चूँकि हमारे संघर्ष का तरीका, हमारे राजनीतिक दलों की संरचना सभी लोकतांत्रिक थीं, अतः लोकतंत्र की अच्छाइयों को हम अनुभव कर रहे थे। दूसरी ओर, चूँकि लोगों को विभिन्न स्वतंत्रताएँ नहीं मिली थीं, अतः लोकतंत्र ही एकमात्र व्यवस्था थी जो उनकी इन आकांक्षाओं को पूरा कर सकती थी।

(ग) स्वतंत्रता प्राप्ति के नाजुक दौर में यह बहुत आवश्यक था कि सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए निष्ठावान लोकतांत्रिक विचारों वाले नेता हों जिससे इन मूल्यों की स्थापना के लिए वे दूसरों को भी प्रेरित कर सकें। अतः इस कारक का योगदान भी महत्वपूर्ण था।

प्रश्न 9. 1912 में प्रकाशित "विवाहित महिलाओं के लिए आचरण" पुस्तक के निम्नलिखित अंश को पढ़ें—

"ईश्वर ने औरत जाति को शारीरिक तथा भावनात्मक दोनों ही तरह से ज्यादा नाजुक बनाया है। उन्हें आत्म-रक्षा के भी योग्य नहीं बनाया है। इसलिए ईश्वर ने उन्हें जीवन भर पुरुषों के संरक्षण में रहने का भाग्य दिया है—कभी पिता के, कभी पति के और कभी पुत्र के। इसलिए महिलाओं को निराश होने की जगह इस बात से अनुगृहित होना चाहिए कि वे अपने आपको पुरुषों की सेवा में समर्पित कर सकती हैं।" क्या इस अनुच्छेद में व्यक्त मूल्य संविधान के दर्शन से मेल खाते हैं या वे संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ हैं ?

उत्तर—इस पाठ्यांश में व्यक्त मूल्य हमारे संविधान में अंतर्निहित मूल्यों को प्रदर्शित नहीं करते।

यह हमारे संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ है, क्योंकि हमारा संविधान पुरुष तथा महिला को हर दृष्टिकोण से समान मानता है।

प्रश्न 10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए। क्या आप उनसे सहमत हैं ? अपने कारण भी बताइए।

(क) संविधान के नियमों की हैसियत किसी भी अन्य कानून के बराबर है।

(ख) संविधान बताता है कि शासन व्यवस्था के विविध अंगों का गठन किस तरह होगा।

(ग) नागरिकों के अधिकार और सरकार की सत्ता की सीमाओं का उल्लेख भी संविधान में स्पष्ट रूप में है।

(घ) संविधान संस्थाओं की चर्चा करता है, उसका मूल्यों से कुछ लेना-देना नहीं है।

उत्तर—(क) यह कथन सत्य नहीं है, क्योंकि संवैधानिक नियम मौलिक नियम हैं, जबकि दूसरे अन्य नियमों की वैधानिकता इस आधार पर तय होती है कि वे संवैधानिक नियमों के अनुरूप हैं या नहीं।

(ख) यह कथन सत्य है, क्योंकि हमारे संविधान में सरकार के तीनों अंगों-विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के संगठन तथा शक्ति की विस्तृत चर्चा की गई है।

(ग) यह कथन सही है, क्योंकि हमारे संविधान में नागरिकों को दिए गए विभिन्न मौलिक अधिकारों के लिए उपबंध किए गए हैं। साथ ही, सरकार की क्या शक्तियाँ एवं सीमाएँ हैं, इसकी भी विस्तृत चर्चा की गई है।

(घ) यह कथन गलत है, क्योंकि संविधान जिन मूल्यों पर आधारित है उनकी चर्चा संविधान की प्रस्तावना में की गई है तथा प्रस्तावना हमारे संविधान का भाग है।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दक्षिण अफ्रीका सरकार द्वारा नेल्सन मंडेला को क्यों बन्दी बनाया गया था?
(क) सरकार की सभी नीतियों का विरोध करने के कारण
(ख) भेदभावपूर्ण शासन का विरोध करने के कारण जिसने जातीय भेदभाव को उचित ठहराया
(ग) वह दक्षिण अफ्रीका के निवासी नीग्रो व्यक्ति को देश का राष्ट्रपति बनाना चाहते थे
(घ) इनमें से कोई नहीं।

2. उस दल का नाम बताइए जिसके नेतृत्व में रंगभेद नीति के विरोध में संघर्ष किया—
(क) अफ्रीकी श्रमिक संघ (ख) अफ्रीकी साम्यवादी दल
(ग) अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. नव लोकतान्त्रिक दक्षिण अफ्रीका जो कि नेल्सन मंडेला के नेतृत्व में अस्तित्व में आया, निम्न में से किसमें विश्वास नहीं करता था?
(क) जातीय समानता (ख) लोकतन्त्र
(ग) पृथक्करण की नीति (घ) सामाजिक न्याय।

4. दक्षिण अफ्रीका के संविधान के विकास के बारे में क्या सत्य नहीं है?
(क) यह शोषक व शोषितों के मध्य समझौते का फॉर्मूला था
(ख) प्रत्येक समूह अपने हितों की रक्षा करना चाहता था
(ग) श्वेत लोग बहुमत के शासन के लिए सहमत थे
(घ) श्वेत लोग अपनी सम्पत्ति सौंपने के लिए तैयार हो गये थे।

5. संविधान में निम्न में से किसका वर्णन नहीं किया गया है?
(क) सरकार की संरचना (ख) नागरिकों के अधिकार व कर्त्तव्य
(ग) संवैधानिक संशोधन के लिए प्रक्रिया (घ) नागरिकों के मध्य उत्पन्न विवादों के समाधान के तरीके।

6. भारत के स्वतन्त्र होने से पूर्व ही किसने भारत के भावी संविधान का प्रारूप तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी?
(क) महात्मा गाँधी (ख) जवाहर लाल नेहरू (ग) मोतीलाल नेहरू (घ) इन्दिरा गाँधी।

7. निम्न में से किसने भारतीय संविधान निर्माताओं को प्रेरित नहीं किया?
(क) ब्रिटेन की संसदीय सरकार (ख) अमेरिकी अधिकार बिल
(ग) फ्रांसीसी क्रान्ति के आदर्श (घ) जर्मन नेता हिटलर।

8. दक्षिण अफ्रीका के संविधान निर्माण में निम्न में से कौन-सा सबसे बड़ा विवाद था?
(क) दक्षिण अफ्रीका तथा इसके पड़ोसियों के मध्य
(ख) पुरुषों व स्त्रियों के मध्य
(ग) श्वेत अल्पसंख्यकों व काले बहुसंख्यकों के मध्य
(घ) इनमें से कोई नहीं।

9. निम्न में से कौन-सा प्रावधान एक लोकतान्त्रिक संविधान में नहीं पाया जाता है?
(क) राज्य प्रमुख की शक्तियाँ (ख) राज्य प्रमुख का नाम
(ग) व्यवस्थापिका की शक्तियाँ (घ) देश का नाम।

10. निम्न में से कौन-सा अधिनियम किसी भी प्रकार भारत में संसदीय लोकतन्त्र की स्थापना से सम्बन्धित नहीं था?
(क) पिट्स इण्डिया एक्ट (ख) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909
(ग) भारतीय परिषद अधिनियम, 1919 (घ) भारतीय परिषद अधिनियम, 1935

11. निम्न में से किस अधिनियम के द्वारा भारत में प्रान्तीय स्वायत्तता की स्थापना की गई?
(क) 1909 ई. का अधिनियम (ख) 1919 ई. का अधिनियम
(ग) 1935 ई. का अधिनियम (घ) इनमें से कोई नहीं।

12. भारत में लोकतान्त्रिक संस्थाओं का विचार किसके शासन काल में अस्तित्व में आया?
(क) फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन (ख) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन
(ग) मुस्लिम शासन (घ) इनमें से कोई नहीं।

13. भारत में स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किसके संघर्ष के रूप में आरम्भ हुआ?
(क) निम्न वर्गों का संघर्ष (ख) उच्च व मध्यम वर्गों का संघर्ष
(ग) अल्पसंख्यकों का संघर्ष (घ) श्रमिकों का संघर्ष।

14. किस क्रान्ति ने भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध एक सैन्य संघर्ष के लिए प्रेरित किया?
(क) फ्रांसीसी क्रान्ति (ख) रूसी क्रान्ति
(ग) अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. स्वतन्त्रता के बाद भारत को निम्न में से किस समस्या का सामना नहीं करना पड़ा?
(क) साम्प्रदायिक दंगे (ख) रियासतों की समस्या
(ग) ब्रिटेन के आक्रमण का भय (घ) निर्धनता, अशिक्षा एवं विकास का निम्न स्तर।

16. निम्न में से कौन व्यवस्थापिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका के संबंधों को नियन्त्रित करता है?
(क) प्रधानमंत्री (ख) संविधान (ग) केन्द्रीय सरकार (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के .... थे तथा डॉ. .... समिति के .... थे।
(क) चेयरमैन, अबुल कलाम, प्रारूप, अध्यक्ष (ख) अध्यक्ष, बी. बार. अम्बेडकर, प्रारूप, चेयरमैन
(ग) अध्यक्ष, बी. आर. अम्बेडकर, अध्यक्ष, संशोधन
(घ) इनमें से कोई नहीं।

18. निम्न में से कौन भारतीय संविधान सभा का सदस्य नहीं था?
(क) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर (ख) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
(ग) टी. टी. कृष्णमाचारी (घ) श्रीमती कमला नेहरू।

19. निम्न में से कौन भारतीय संविधान सभा का सदस्य नहीं था किन्तु सदस्यों द्वारा उसके दर्शन को अपनाया गया?
(क) बलदेव सिंह (ख) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (ग) महात्मा गाँधी (घ) जयपाल सिंह।

20. निम्न में से क्या भारत में लोकतन्त्र के पुर्ननिर्माण का उदाहरण नहीं है?
(क) मत देने की न्यूनतम आयु 21 से घटाकर 18 कर देना
(ख) सम्पत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची से हटा देना
(ग) मौलिक कर्त्तव्यों का समावेश
(घ) नौकरशाही की बढ़ती भूमिका।

21. निम्न में से क्या भारत के संवैधानिक दर्शन का एक तत्व नहीं है?
(क) भ्रातृत्व (ख) समाजवाद (ग) धर्मनिरपेक्ष (घ) अवसरवाद।

22. निम्न में से क्या भारतीय संविधान की विशेषता नहीं है?
(क) गणतन्त्र (ख) संसदीय लोकतंत्र (ग) संघीय नीति (घ) अध्याक्षात्मक शासन।

23. कौन-सा भारतीय नेता प्रत्येक आँख से आँसू पोंछना चाहता था?
(क) बल्लभ भाई पटेल (ख) पं. नेहरू
(ग) महात्मा गांधी (घ) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर।

[उत्तर—1. (ख), **2.** (ग), **3.** (ग), **4.** (घ), **5.** (घ), **6.** (ग), **7.** (घ), **8.** (ग), **9.** (ख), **10.** (क), **11.** (ग), **12.** (ख), **13.** (ख), **14.** (ख), **15.** (ग), **16.** (ख), **17.** (ख), **18.** (घ), **19.** (ग), **20.** (घ), **21.** (घ), **22.** (घ), **23.** (ग)।**]**

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. संविधान सभा के तीन सदस्यों के नाम बताइए।
उत्तर—जवाहरल लाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद और बलदेव सिंह।

प्रश्न 2. भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र क्यों कहा जाता है?
उत्तर—क्योंकि राज्य का अपना कोई धर्म नहीं है। लोग अपनी पसन्द के किसी भी धर्म का पालन करने के लिए स्वतन्त्र हैं।

प्रश्न 3. संविधान सभा का अध्यक्ष कौन था?
उत्तर—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

प्रश्न 4. प्रारूप समिति का अध्यक्ष कौन था?
उत्तर—डॉ. बी. आर. अम्बेडकर।

प्रश्न 5. संविधान सभा में ऐंग्लो इण्डियन तथा पारसी समुदाय का प्रतिनिधित्व किसने किया?
उत्तर—फ्रैंक एन्थोनी व एच. पी. मोदी।

प्रश्न 6. सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार से क्या अभिप्राय है?
उत्तर—प्रत्येक वयस्क नागरिक को जाति, रंग व लिंग पर आधारित भेदभाव के बिना वोट देने का अधिकार होता है।

प्रश्न 7. प्रस्तावना क्यों बहुत महत्वपूर्ण है?
उत्तर—क्योंकि इसमें संविधान के आदर्श तथा दर्शन निहित होता है।

प्रश्न 8. रंगभेद की नीति से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—इसका अर्थ होता है भिन्न जातियों यथा गोरे व काले लोगों के लिए भिन्न कानून।

प्रश्न 9. दक्षिण अफ्रीका में किसने रंगभेद व्यवस्था का समावेश किया?

उत्तर—डेनियल मलान।

प्रश्न 10. संविधान सभा वाद-विवाद से आप क्या समझते हैं? वे क्यों महत्वपूर्ण हैं?

उत्तर—संविधान सभा के सदस्यों के कथन तथा संविधान सभा के दस्तावेज रिकॉर्ड कर लिए जाते हैं तथा उन्हें संविधान सभा के वाद-विवाद के रूप में सुरक्षित रखा जाता है।

प्रश्न 11. किन्हीं तीन लोकतान्त्रिक देशों के नाम बताइए जिनके संविधान लिखित हैं।

उत्तर—यू. एस. ए., भारत व फ्रांस।

प्रश्न 12. नेल्सन मंडेला कौन था? उसकी प्रमुख उपलब्धियाँ क्या थीं?

उत्तर—नेल्सन मंडेला 'अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस' का अध्यक्ष तथा दक्षिण अफ्रीका का पूर्व राष्ट्रपति था। उसकी दो प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं—भेदभावपूर्ण शासन को उखाड़ फेंकना एवं दक्षिण अफ्रीका में आपसी सहमति के प्रतीक के रूप में उभरना।

प्रश्न 13. भारतीय संविधान निर्माताओं को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

उत्तर—विभाजन की पीड़ा, विभाजन के उपरान्त समस्यायें एवं निर्धनता व सामाजिक न्याय की समस्या।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना अत्यधिक महत्वपूर्ण क्यों है?

उत्तर—प्रत्येक राष्ट्र के संविधान में प्रस्तावना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह संविधान का एक महत्वपूर्ण भाग है। विद्वानों के विचारों में इस बिन्दु पर मतभेद पाया जाता है कि प्रस्तावना संविधान का कानूनी भाग है अथवा नहीं। विद्वानों का यह मत है कि संसद संविधान की प्रस्तावना में भी संविधान के अन्य अनुच्छेदों के समान ही अनुच्छेद 368 द्वारा संशोधन कर सकती है, इस स्थिति में प्रस्तावना संविधान का एक कानूनी भाग है। भारत में संविधान की प्रस्तावना को बहुत सोच-विचार के उपरान्त ही बनाया गया था। भारत में संविधान की प्रस्तावना विश्व के अन्य सभी संविधानों की प्रस्तावना से श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मूल्यों को प्राप्त करने का संकल्प व्यक्त किया गया है। संविधान की प्रस्तावना के महत्व को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है—

(1) प्रस्तावना किसी राष्ट्र की सरकार का मार्गदर्शन करती है जिसके अनुसार सरकार को अपनी नीतियों का निर्धारण करना होता है।

(2) प्रस्तावना भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य बनाने की घोषणा करती है।

(3) यह नागरिकों को प्रत्येक प्रकार की स्वतन्त्रता जैसे विचार अभिव्यक्ति, विश्वास तथा धर्म एवं उपासना की स्वतन्त्रता प्राप्त करने का लक्ष्य घोषित करती है।

(4) यह व्यक्ति की गरिमा तथा प्रतिष्ठा को बनाए रखने का आह्वान करती है।

(5) यह भारत के समस्त नागरिकों में पारस्परिक भाई-चारे एवं बन्धुता बढ़ाने का आदर्श उपस्थित करती है।

(6) यह राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता को बनाए रखने की आशा अभिव्यक्त करती है।

(7) यह प्रत्येक व्यक्ति को एक-समान अवसर प्रदान करने तथा उसके आदर-सम्मान को बनाए रखने में विश्वास प्रकट करती है।

(8) प्रस्तावना लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था के आदर्शों को अपनाने पर बल देती है।

(9) प्रस्तावना में समाजवादी पंथनिरपेक्ष शब्दावली को सम्मिलित करने पर इसका महत्व और भी बढ़ गया है।

(10) प्रस्तावना/में इस तथ्य को पूर्णतया स्पष्ट किया गया है कि भारत का संविधान भारतीयों द्वारा निर्मित किया गया है तथा उसे पालन करने की वचनबद्धता संविधान-निर्माताओं ने व्यक्त की है।

प्रश्न 2. संविधान सभा के संगठन का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संविधान सभा का निर्माण—युद्ध समाप्त होते ही सन् 1946 में ब्रिटिश सरकार ने कैबिनेट मिशन भारत भेजा। कैबिनेट मिशन के आगमन के साथ संविधान सभा का गठन का कार्य प्रारम्भ हो गया, परन्तु इसका गठन की प्रक्रिया को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग में मतभेद हो गया। इस मतभेद का मुख्य कारण ब्रिटिश प्रान्तों को तीन समूहों में बाँटा जाना,

तीनों समूहों को अलग रहने या संघ में मिल जाने की छूट आदि थे। इन गतिरोधों के बावजूद संविधान सभा के लिए जुलाई, 1946 में चुनाव हुए और 9 दिसम्बर, 1946 तक संविधान सभा का निर्माण-कार्य पूरा हो गया। इस संविधान सभा में 299 सदस्य थे जिनमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. अम्बेडकर, तेज बहादुर सप्रू, सरोजिनी नायडू के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

संविधान सभा के सदस्य—संविधान सभा एक निर्वाचित संस्था थी और इसके सदस्यों का निर्वाचन प्रान्तीय विधानमण्डलों द्वारा हुआ था; अतः भारत के विभिन्न भागों और वर्गों के प्रतिनिधियों को इसमें स्थान मिला। इसके अतिरिक्त देशी राज्यों के प्रतिनिधियों को भी इसमें स्थान दिया गया। डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद इसके स्थायी अध्यक्ष नियुक्त किए गए।

प्रारूप समिति का गठन—29 अगस्त, 1947 को संविधान सभा द्वारा एक प्रारूप समिति का गठन किया गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनाए गए और इस समिति ने काफी सोच-समझकर संविधान का प्रारूप तैयार किया। इस प्रारूप को फरवरी, 1948 में प्रकाशित किया गया और इसे 4 नवम्बर, 1948 को संविधान सभा के सामने पेश किया गया, इसी कारण डॉ. अम्बेडकर को 'भारतीय संविधान का जनक' कहा गया है।

संविधान के प्रारूप की स्वीकृति—संविधान के प्रारूप पर संविधान सभा में 144 दिनों तक विचार होता रहा। उसमें 2473 संशोधन पेश किए गए और 26 नवम्बर, 1949 को नया संविधान अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया गया। इस स्वीकृत संविधान में 395 अनुच्छेद, 22 भाग तथा 8 अनुसूचियाँ थीं।

संविधान का उद्घाटन—भारत के नए संविधान का उद्घाटन 26 जनवरी, 1950 को किया गया। इसी दिन से नवनिर्मित संविधान सम्पूर्ण भारत में लागू कर दिया गया, तत्पश्चात् भारत गणतन्त्र बन गया। इसी कारण 26 जनवरी को हम लोग गणतन्त्र दिवस मनाते हैं।

प्रश्न 3. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति के तहत काले लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था?

उत्तर—दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की राजनीति यूरोप के श्वेत (गोरे) लोगों ने लागू की थी। ये लोग प्रजातीय श्रेष्ठता की भावना से ग्रसित होकर कमजोर और अश्वेत लोगों का शोषण करते थे। 17वीं और 18वीं सदी में व्यापार करने आई यूरोप की कम्पनियों ने दक्षिण अफ्रीका को भी उसी तरह गुलाम बनाया जैसे भारत को बनाया था। भारत के विपरीत बड़ी संख्या में गोरे लोग दक्षिण अफ्रीका में बस गए और उन्होंने स्थानीय शासन को अपने हाथों में ले लिया। रंगभेद की राजनीति ने लोगों को उनकी चमड़ी के रंग के आधार पर बाँट दिया। यद्यपि दक्षिण अफ्रीका के स्थानीय लोगों का रंग काला होता है, किन्तु आबादी में उनका हिस्सा तीन-चौथाई है और उन्हें 'अश्वेत' कहा जाता था। अश्वेत यद्यपि बहुसंख्यक थे परन्तु वे अशिक्षा और अन्य बुराइयों से ग्रस्त थे। उनमें अन्याय का विरोध करने की क्षमता कम थी। अन्यथा रंगभेदी शासन इतने समय तक नहीं रहता। श्वेत और अश्वेतों के अतिरिक्त, वहाँ मिश्रित नस्लों जिन्हें 'रंगीन' चमड़ी वाला कहा जाता था, भारत से गए लोग भी थे। गोरे शासक, गोरों के अतिरिक्त शेष सभी को छोटा व निम्न मानते थे और इन्हें मतदान करने का अधिकार भी नहीं था।

गैर-गोरे (अश्वेत) लोगों को गोरों की बस्तियों में रहने की इजाजत नहीं थी, वे बिना परमिट वहाँ जाकर काम भी नहीं कर सकते थे। रेलगाड़ी, बस, टैक्सी, होटल, अस्पताल, स्कूल और कॉलेज, पुस्तकालय, सिनेमाघर, नाट्यगृह, समुद्रतट, तरणताल और सार्वजनिक शौचालयों तक में गोरों और कालों के लिए अलग-अलग व्यवस्था थी। इसे पृथक्करण कहा जाता था। काले लोग गोरों के लिए आरक्षित जगहों तथा उनके गिरजाघर तक में नहीं जा सकते थे। इसके साथ ही अश्वेतों को संगठन बनाने एवं इस भेदभावपूर्ण व्यवहार का विरोध करने का भी अधिकार नहीं था।

प्रश्न 4. निम्न को परिभाषित कीजिए—

प्रभुसत्ता सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक, गणतन्त्र।

उत्तर—(1) प्रभुसत्ता सम्पन्न—लोगों को अपने से जुड़े हर मामले में फैसला करने का सर्वोच्च अधिकार है। कोई भी बाहरी शक्ति भारत की सरकार को आदेश नहीं दे सकती।

(2) समाजवादी—समाज में सम्पदा सामूहिक रूप से पैदा होती है और समाज में उसका बँटवारा समानता के साथ होना चाहिए। सरकार जमीन और उद्योग-धन्धे की हकदारी से जुड़े कायदे-कानून इस तरह बनाए कि सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ कम हों।

(3) धर्मनिरपेक्ष—नागरिकों को किसी भी धर्म को मानने की पूरी स्वतन्त्रता है, लेकिन कोई धर्म आधिकारिक नहीं है। सरकार सभी धार्मिक मान्यताओं और आचरणों को समान सम्मान देती है।

(4) लोकतान्त्रिक—सरकार का एक ऐसा स्वरूप जिसमें लोगों को समान राजनैतिक अधिकार प्राप्त रहते हैं, लोग अपने शासन का चुनाव करते हैं और उसे जवाबदेह बनाते हैं। यह सरकार कुछ बुनियादी नियमों के अनुरूप चलती है।

(5) गणतन्त्र— शासन का प्रमुख लोगों द्वारा चुना हुआ व्यक्ति होगा न किसी वंश या राज-खानदान का।

प्रश्न 5. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति का अन्त किस प्रकार हुआ?

उत्तर—सन् 1950 में अश्वेत, रंगीन चमड़ी वाले और भारतीय मूल के लोगों ने रंगभेद प्रणाली के विरुद्ध संघर्ष करना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने विरोध प्रदर्शन किए तथा हड़तालें आयोजित कीं। भेदभाव वाली इस शासन-प्रणाली का विरोध करने वाले संगठन अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के झंडे तले एकजुट हुए, जिनमें कई मजदूर संगठन और कम्युनिस्ट पार्टी भी सम्मिलित थीं। अनेक संवेदनशील गोरे लोग भी रंगभेद समाप्त करने के आन्दोलन में अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के साथ आए और उन्होंने इस संघर्ष में अहम भूमिका निभाई। रंगभेद की नीति के कारण ही दक्षिण अफ्रीका को टेस्ट क्रिकेट में बहुत समय बाद प्रवेश मिला। अनेक देशों ने रंगभेद की निंदा की एवं इस व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई, लेकिन श्वेत सरकार ने हजारों अश्वेत और रंगीन चमड़ी वाले लोगों की हत्या और दमन करते हुए अपना शासन जारी रखा।

प्रश्न 6. भारतीय संविधान के निर्माण में किन कारकों का योगदान रहा?

उत्तर—स्वतन्त्रता के बाद भारत के स्वरूप को लेकर वर्षों पहले से चले आ रहे चिन्तन और वाद-विवादों ने भी काफी लाभ पहुँचाया। हमारे अनेक नेता 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति के आदर्शों, ब्रिटेन के संसदीय लोकतन्त्र और अमेरिका के अधिकारों की सूची से काफी प्रभावित थे। इसके अतिरिक्त रूस में 1917 में हुई समाजवादी क्रान्ति ने भी अनेक भारतीयों को प्रभावित किया और वे सामाजिक एवं आर्थिक समता पर आधारित व्यवस्था स्थापित करने की कल्पना करने लगे थे। वे मात्र नकल के समर्थक नहीं थे। उन पर विचार-विमर्श भी करते थे कि क्या ये भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप रहेंगी। संविधान निर्माण पर सन् 1949 की चीनी क्रांति का भी निश्चित रूप से प्रभाव पड़ा होगा।

प्रश्न 7. दक्षिण अफ्रीका के संविधान निर्माण में किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? इसके लिए कौन से समझौते किये गये?

उत्तर—18 नवम्बर, 1993 को ही अश्वेतों को मतदान का अधिकार देने तथा अल्पसंख्यक श्वेत शासन को समाप्त करने के लिए अन्तरिम संविधान की रचना कर दी गई। अन्तरिम संविधान के अन्तर्गत 400 सदस्यीय राष्ट्रीय सभा तथा 90 सदस्यों वाली सीनेट की व्यवस्था की गई। नवनिर्वाचित संसद को देश का स्थायी संविधान बनाने का अधिकार दिया गया। संविधान को बनाने में 1 वर्ष, 10 माह, 28 दिन लगे। इस ऐतिहासिक क्षण पर नेल्सन मंडेला ने कहा था, "हम एक युग की समाप्ति और नए युग के आगमन की दहलीज पर हैं। हमारे देश के इतिहास में पहली बार 27 अप्रैल, 1994 को सभी दक्षिण अफ्रीकी, चाहे उनकी भाषा, धर्म और संस्कृति कुछ भी हो, उनका रंग या वर्ग जो भी हो, समान नागरिकों के रूप में मतदान करेंगे।"

इस प्रकार, दक्षिण अफ्रीका का नया संविधान बना जो विश्व का सर्वश्रेष्ठ संविधान कहलाया। इससे नागरिकों को व्यापक अधिकार प्राप्त हुए और हर समस्या के समाधान में सभी की भागीदारी सुनिश्चित की गई। विश्व के लोकतान्त्रिक राज्यों के लिए दक्षिण अफ्रीका का संविधान एक मॉडल बन गया। यह कार्य दक्षिण अफ्रीकी लोगों द्वारा साथ रहने, साथ काम करने के दृढ़ निश्चय एवं पुराने कड़वे अनुभवों को आगे के इन्द्रधनुषी समाज बनाने में एक सबक के रूप में प्रयोग करने की समझदारी दिखाने के कारण सम्भव हुआ।

प्रश्न 8. संविधान में परिवर्तन के लिए कौन से प्रावधान किये गये और क्यों?

उत्तर—संविधान केवल मूल्यों और दर्शन का वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि वास्तविक रूप में तो संविधान इन मूल्यों को संस्थागत रूप देने का प्रयास है। वह दस्तावेज जिसे हम भारत का संविधान कहते हैं, उसका अधिकांश भाग इन्हीं व्यवस्थाओं को तय करने वाला है। यह एक विस्तृत दस्तावेज है, इसलिए समय-समय पर इसे नया रूप देने के लिए इसमें बदलाव की जरूरत पड़ती है। भारतीय संविधान के निर्माताओं को लगा कि इसे लोगों की भावनाओं के अनुरूप चलना चाहिए और समाज में हो रहे बदलावों से दूर नहीं रहना चाहिए। उन्होंने इसे पवित्र, स्थायी और न बदले जा सकने वाले कानून के रूप में नहीं देखा था, इसलिए उन्होंने बदलावों को समय-समय पर शामिल करने का प्रावधान भी किया। इन बदलावों को **संविधान संशोधन** कहा जाता है।

संविधान ने संस्थागत व्यवस्थाओं को कानूनी भाषा में दर्ज किया है। भारतीय संविधान वे नियम बताता है जिनके अनुसार शासकों का चुनाव किया जाएगा। इसमें स्पष्ट लिखा है कि किसके पास कितनी शक्ति होगी और कौन किस बारे में फैसले लेगा। इसके साथ ही संविधान ने नागरिकों को कुछ स्पष्ट अधिकार देकर सरकार के लिए लक्ष्मण रेखा भी निर्धारित की है कि सरकार इससे आगे हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

मूल्य आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. वैदिक काल में संसदीय लोकतन्त्र के तत्व हम कहाँ देख सकते हैं?

उत्तर—भारत में वैदिक काल में शासन में लोकतन्त्र के तत्व उपस्थित थे। वैदिक काल में भारत के कुछ क्षेत्रों में

लोकतान्त्रिक एवं गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। वैदिक काल में आधुनिक संसद के स्थान पर दरबारियों की सभा होती थी, जिनके निर्देशन में राजा अपने राज्य का संचालन करता था। सभी निर्णय सर्व-सम्मति से लिए जाते थे। प्रजा से राजा पुत्र की तरह प्यार करता था तथा प्रजाजनों को अपनी बात कहने की स्वतन्त्रता थी।

प्रश्न 2. औपनिवेशिक शासन किस प्रकार भारत में आधुनिक लोकतन्त्र के विकास को लेकर आया?

उत्तर—स्वतन्त्रता से पूर्व भारत ब्रिटेन का उपनिवेश था। विदेशी शासन से भारतीय जन क्षुब्ध थे। अंग्रेज शासक उन पर अत्याचार करते थे, अतः लोगों में स्वशासन की भावना जागी उनमें समतामूलक समाज की स्थापना के लिए लोकतन्त्र की स्थापना बलबती होती रही। ब्रिटेन में भी लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था थी अतः उन्होंने भी भारत को आजादी प्रदान करने के बाद लोकतन्त्रात्मक सरकार के गठन में सहयोग प्रदान किया। भारतीय संविधान के निर्माण के लिए भी सहयोग प्रदान किया। वास्तव में भारतीय लोकतन्त्र के विकास में अंग्रेज सरकार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रश्न 3. स्वतन्त्रता के शीघ्र बाद भारत को किन-किन समस्याओं व कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो कि संविधान निर्माताओं के भी मस्तिष्क में रही थी, उनकी एक सूची बनाइए।

उत्तर—स्वतन्त्रता के शीघ्र बाद भारत को निम्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ा—

(1) स्वतन्त्रता के समय देश का विभाजन हुआ, लाखों लोग साम्प्रदायिक हिंसा के शिकार हुए। आपसी सौहार्द्र में कमी आयी, फिर भी भारत एक श्रेष्ठ धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बना रहा।

(2) स्वतन्त्रता के समय भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी, परन्तु धीरे-धीरे जनसंख्या में वृद्धि होती गई जिससे नई समस्याओं जैसे बेरोजगारी, गरीबी आदि में वृद्धि हुई।

(3) भारत के सामने खाद्य समस्या भी पैदा हुई। कृषि की पुरानी तकनीकों के कारण पैदावार में वृद्धि जनसंख्या में वृद्धि दर से कम थी, अतः खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भरता बढ़ी।

(4) सामरिक समस्याएँ भी पैदा हुईं, चीन से 1962 में युद्ध लड़ा गया। परन्तु उस समय भारत की सामरिक शक्ति ज्यादा विकसित नहीं थी।

प्रश्न 4. भारतीय संविधान के निर्देशक मूल्यों की एक सूची बनाइए।

उत्तर—भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्य—भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्यों की सूची निम्नवत है—

(1) भारत को एक स्वतन्त्र सम्प्रभुता सम्पन्न गणराज्य घोषित करने की आकांक्षा व्यक्त की गई है।

(2) सम्प्रभुता जनता में निहित होगी।

(3) सभी लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय तथा विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता होगी।

(4) विश्वास, धर्म, उपासना और व्यवसाय की गारण्टी दी गई है।

(5) न्यायालय के समक्ष भारत का प्रत्येक नागरिक समान होगा।

प्रश्न 5. भारतीय संविधान की आधारभूत संरचना के तत्व कौन-कौन से हैं?

उत्तर—भारतीय संविधान की आधारभूत संरचना के तत्व संविधान की प्रस्तावना में वर्णित किए गये हैं, जो निम्नलिखित हैं— (1) सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र, (2) समाजवादी व्यवस्था, (3) धर्मनिरपेक्षता, (4) लोकतन्त्रात्मक शासन, (5) गणराज्य, (6) न्याय, (7) स्वतन्त्रता, (8) समता, (9) बन्धुता।

प्रश्न 6. आप कैसे कह सकते हैं कि भारत में लोकतन्त्र का पुनर्निर्माण किया गया है?

उत्तर—भारत में आजादी के बाद से कई महत्वपूर्ण संविधान संशोधन हुए हैं, जिनके द्वारा लोकतान्त्रिक मूल्यों की पुर्नस्थापना हुई है। लोकतान्त्रिक संस्थाएँ मजबूत हुई हैं। लोगों का लोकतन्त्र के प्रति विश्वास और अधिक बढ़ा है। भारतीय लोकतन्त्र में परिवर्तन की काफी सम्भावनायें थीं। इसी कारण संविधान निर्माताओं ने संविधान संशोधन का मार्ग प्रस्तुत किया। जिसका समय-समय पर उपयोग कर आने वाली सरकारों ने संविधान के मूलरूप को बरकरार रखते हुए संशोधन किए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि भारत में लोकतन्त्र का पुनर्निर्माण हुआ है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 2. एक लोकतान्त्रिक देश में संविधान का क्या महत्व है?

उत्तर—लोकतान्त्रिक देश में संविधान का महत्व—प्रत्येक लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था के लिए एक लिखित संविधान आवश्यक है। संविधान के लिखित होने से विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिकाओं हेतु नियम और कानून निर्दिष्ट होते हैं तथा सरकार के अंगों में परस्पर टकराव नहीं होता है। कुछ विद्वानों का मत है कि संविधान की कोई आवश्यकता ही नहीं है। जिस प्रकार ब्रिटेन का कोई संविधान नहीं है, फिर भी उसकी गणना लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था वाले देशों में होती है, परन्तु यह तर्क गलत है। संविधान का यह अर्थ संकुचित माना जाता है कि संविधान सिर्फ लिखित

नियमों का संग्रह है, जबकि संविधान का वास्तविक अर्थ यह है कि इसके अन्तर्गत सभी रीति-रिवाज, परम्पराएँ, अभिसमय, कानून, नियम एवं विनिमय आ जाते हैं, चाहे वे लिखित हों अथवा अलिखित। **जेलिनेक** नामक लेखक ने सही कहा है—"बिना संविधान के राज्य नहीं रह सकता, अपितु अराजकता फैला जाएगी।" दक्षिण अफ्रीका में जो संविधान बना, उससे बहुसंख्यक अश्वेत और अल्पसंख्यक श्वेत दोनों को यह विश्वास हो गया कि सरकार उनके हितों और अधिकारों की रक्षा अवश्य करेगी। दक्षिण अफ्रीका ने एक ऐसे संविधान का नमूना विश्व के सामने उपस्थित किया जिसमें श्वेत एवं अश्वेत दोनों को समान मानते हुए सारे भेदभाव मिटा दिए गए। शासकों के चुनाव के नियम, सरकार के कार्य, नागरिकों के अधिकार, सरकार के अंगों के गठन इत्यादि का संविधान में स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है। अल्पसंख्यक गोरों की जमीन जायदाद की रक्षा और अश्वेत गरीब मजदूरों के प्रति वचनबद्धता से सम्बन्धित बातें संविधान में निहित हैं। उन्हें कोई भी पक्ष भविष्य में नहीं तोड़ सकता। इस प्रकार स्पष्ट है कि संविधान लिखित नियमों का एक संग्रह होता है जिसे उस देश के सभी नागरिक स्वीकार करते हैं। यह किसी देश का सर्वोच्च कानून होता है जिसकी अवहेलना न तो शासक कर सकते हैं और न ही नागरिक।

प्रश्न 2. निम्न शब्दावली का क्या अर्थ है?

"हम, भारत के लोग, न्याय, स्वतन्त्रता, समानता व भाईचारा।"

उत्तर—भारतीय संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द महत्वपूर्ण है। जिनके अर्थ निम्नलिखित हैं—

(1) हम भारत के लोग—भारत के संविधान का निर्माण और अधिनियम भारत के लोगों ने अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से किया है न कि इसे किसी राजा या किसी बाहरी आदमी ने उन्हें दिया है। लोगों को अपने से जुड़े प्रत्येक मामले में निर्णय करने का सर्वोच्च अधिकार है। कोई भी बाह्य शक्ति भारत की सरकार को आदेश नहीं दे सकती है।

(2) न्याय—नागरिकों के साथ उनकी जाति, धर्म एवं लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

(3) स्वतन्त्रता—नागरिक के विचारों, विचारों की अभिव्यक्ति तथा विचारों की क्रियान्विति पर कोई अनुचित पाबन्दी नहीं लगेगी।

(4) समानता—कानून के समक्ष सभी लोग समान हैं। पहले चली आ रही सामाजिक असमानताओं को समाप्त करना होगा। सरकार हर नागरिक को समान अवसर उपलब्ध कराने की व्यवस्था करे।

(5) भाईचारा—सभी परस्पर भाई-चारे का आचरण करें। जैसे कि सभी एक परिवार के सदस्य हों। कोई भी नागरिक किसी दूसरे नागरिक को अपने से हीन न समझे।

प्रश्न 3. भारतीय संविधान के निर्धारक मूल्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्य—भारतीय संविधान के उद्देश्य एवं मूल्यों की झलक संविधान की प्रस्तावना के अन्तर्गत मिलती है। भारतीय संविधान के उद्देश्य को जवाहरलाल नेहरू ने संविधान सभा के सामने 13 दिसम्बर, 1946 को एक प्रस्ताव के रूप में भी प्रस्तुत किया। इसे उद्देश्य-प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है। उन्होंने उद्देश्य-प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा था, "मैं आपके सामने जो प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहा हूँ, उसमें हमारे उद्देश्यों की व्याख्या की गई है, योजना की रूपरेखा दी गई है और बताया गया है कि हम किस रास्ते पर चलने वाले हैं।" हमारे संविधान की उद्देशिका या प्रस्तावना में कहा गया है "हम, भारत के लोग भारत को एक प्रभुत्वसम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता और समानता दिलाने एवं उन सब में बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।" न्याय की परिभाषा सामाजिक, आर्थिक और आर्थिक न्याय के रूप में की गई है। स्वतंत्रता में विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता सम्मिलित है और समानता का अर्थ है प्रतिष्ठा एवं अवसर की समानता।

प्रश्न 4. "दक्षिण अफ्रीका का संविधान एक समझौता फॉर्मूला है।" वर्णन कीजिए।

उत्तर—दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरोध में चलाए गए इस आन्दोलन को अन्ततः सफलता मिली और 28 वर्षों तक कैद की सजा काटने के बाद नेल्सन मंडेला सन् 1990 में रिहा हुए। तत्कालीन श्वेत राष्ट्रपति डी. क्लार्क ने उदार और समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए रंगभेद समाप्त कर दिया और अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस और अन्य अश्वेत दलों के साथ समझौते की नीति अपनाई। 26 अप्रैल, 1994 की मध्य रात्रि को दक्षिण अफ्रीका का नया झण्डा लहराया गया और नेल्सन मंडेला ने राष्ट्रीय सरकार का गठन किया। नोबेल पुरस्कार प्राप्त मंडेला ने राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के बाद कहा कि वे सभी नस्ल के लोगों को आदर एवं सम्मान देंगे तथा वे बदले की भावना से काम नहीं करेंगे। उनके लिए सब बराबर हैं, वे श्वेत या अश्वेत आधिपत्य के विरुद्ध हैं। यह देश सबका है।

इस असाधारण परिवर्तन के बाद नए दक्षिण अफ्रीका के पहले राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला के शब्द—**"ऐतिहासिक रूप से एक-दूसरे के दुश्मन रहे दो समूह रंगभेद वाली शासन व्यवस्था की जगह शांतिपूर्ण ढंग से लोकतान्त्रिक व्यवस्था अपनाने पर सहमत हो गए; क्योंकि दोनों को एक-दूसरे की भलमनसाहत पर भरोसा था और वे इसे मानने को तैयार थे।**

मेरी कामना है कि दक्षिण अफ्रीकी लोग कभी भी अच्छाई पर विश्वास करना न छोड़ें और इस बात में आस्था रखें कि मनुष्य जाति पर विश्वास करना ही हमारे लोकतन्त्र का आधार है।" अश्वेत नेताओं ने अश्वेत समाज से आग्रह किया कि सत्ता में रहते हुए गोरे लोगों ने जो जुल्म किए थे, उन्हें वे भूल जाएँ और गोरों को माफ कर दें। मंडेला ने कहा कि अब सभी नस्लों तथा स्त्री-पुरुष की समानता, लोकतान्त्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों पर आधारित नए दक्षिण अफ्रीका का निर्माण करें। एक पार्टी ने दमन और नृशंस हत्याओं के जोर पर शासन किया था एवं दूसरी पार्टी ने स्वतन्त्रता की लड़ाई का नेतृत्व किया। किन्तु नए **संविधान** के निर्माण हेतु दोनों ही साथ-साथ बैठीं।

18 नवम्बर, 1993 को अश्वेतों को मतदान का अधिकार देने और अल्पसंख्यक श्वेत शासन को समाप्त करने के लिए अन्तरिम संविधान की रचना की गई। इस संविधान के अन्तर्गत 400 सदस्यीय राष्ट्रीय सभा एवं 90 सदस्यों वाली सीनेट की व्यवस्था की गई। नवनिर्वाचित संसद को देश का स्थायी संविधान बनाने का अधिकार दिया गया। संविधान निर्माण में कुल 1 वर्ष, 10 माह, 28 दिन का समय लगा। इस ऐतिहासिक क्षण पर नेल्सन मंडेला ने कहा था, "हम एक युग की समाप्ति और नए युग के आगमन की दहलीज पर हैं। हमारे देश के इतिहास में पहली बार 27 अप्रैल, 1994 को सभी दक्षिण अफ्रीकी, चाहे उनकी भाषा, धर्म और संस्कृति कुछ भी हो, उनका रंग या वर्ग जो भी हो, समान नागरिकों के रूप में मतदान करेंगे।" इस प्रकार, दक्षिण अफ्रीका का नया संविधान बना जो विश्व का सर्वश्रेष्ठ संविधान कहलाया। यह विश्व में इतने व्यापक अधिकार संविधान द्वारा देने वाला प्रथम देश बना। दक्षिण अफ्रीका के लोगों ने आपसी मतभेद भुलाकर समझदारी से मिलकर कार्य किया जिससे आज यह लोकतंत्र का मॉडल देश बनकर उभरा है।

दक्षिण अफ्रीका के संविधान की प्रस्तावना—संविधान की प्रस्तावना में कहा गया, "दक्षिण अफ्रीका का संविधान इतिहास और भविष्य, दोनों की बातें करता है। एक तरफ तो यह एक पवित्र समझौता है कि दक्षिण अफ्रीकी के रूप में हम, एक-दूसरे से यह वायदा करते हैं कि हम अपने रंगभेदी, क्रूर और दमनकारी इतिहास को फिर से दोहराने की अनुमति नहीं देंगे पर बात इतनी ही नहीं है। यह अपने देश को इसके सभी लोगों द्वारा वास्तविक अर्थों में साझा करने का घोषणापत्र भी है—श्वेत और अश्वेत, स्त्री और पुरुष, यह देश पूर्ण रूप से हम सभी का है।"

प्रश्न 5. भारत में संविधान निर्माताओं को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? समझाइए।

उत्तर—भारत में संविधान निर्माताओं को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ा—

(1) आजादी के बाद भारत को किस रास्ते पर चलना चाहिए इसे लेकर आजादी के संघर्ष के दौरान भी तीखे मतभेद थे परन्तु कुछ बुनियादी विचारों पर लगभग सभी लोगों की सहमति बन चुकी थी।

(2) संविधान सभा के गठन की प्रक्रिया को लेकर कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग में मतभेद हो गया।

(3) अंग्रेजों द्वारा फूट डालो की नीति ने भी गम्भीर समस्या उत्पन्न की थी। इसका मुख्य कारण ब्रिटिश प्रान्तों को तीन समूहों में बाँटा गया है। तीनों को अलग रहने या संघ में मिल जाने की छूट आदि थे।

(4) संविधान निर्माण के समय कई बिन्दुओं पर आपस में मतभेद थे परन्तु वे अन्ततः सफलतापूर्वक संविधान में समाहित कर लिए गये।

●●

3 चुनावी राजनीति

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. चुनाव क्यों होते हैं, इस बारे में कौन-सा वाक्य ठीक नहीं है?
(क) चुनाव लोगों को सरकार के कामकाज का फैसला करने का अवसर देते हैं।
(ख) लोग चुनाव में अपनी पसंद के उम्मीदवार का चुनाव करते हैं।
(ग) चुनाव लोगों को न्यायपालिका के कामकाज का मूल्यांकन करने का अवसर देते हैं।
(घ) लोग चुनाव से अपनी पसंद की नीतियाँ बना सकते हैं।
उत्तर—(ग) चुनाव लोगों को न्यायपालिका के कामकाज का मूल्यांकन करने का अवसर देते हैं।
प्रश्न 2. भारत के चुनाव लोकतांत्रिक हैं, यह बात बताने के लिए इनमें कौन-सा वाक्य सही कारण नहीं देता?
(क) भारत में दुनिया के सबसे ज्यादा मतदाता हैं।
(ख) भारत में चुनाव आयोग काफी शक्तिशाली है।
(ग) भारत में 18 वर्ष से अधिक उम्र का हर व्यक्ति मतदाता है।
(घ) भारत में चुनाव हारने वाली पार्टियाँ जनादेश स्वीकार कर लेती हैं।
उत्तर—(क) भारत में दुनिया के सबसे ज्यादा मतदाता हैं।
प्रश्न 3. निम्नलिखित में मेल ढूँढें—

(i) समय-समय पर मतदाता सूची का नवीनीकरण आवश्यक है ताकि	**(a) समाज के हर तबके का समुचित प्रतिनिधित्व हो सके।**
(ii) कुछ निर्वाचन-क्षेत्र अनु०जाति और अनु० जनजाति के लिए आरक्षित हैं ताकि	**(b) हर एक को अपना प्रतिनिधि चुनने का समान अवसर मिले।**
(iii) प्रत्येक को सिर्फ एक वोट डालने का हक है ताकि	**(c) हर उम्मीदवार को चुनावों में लड़ने का समान अवसर मिले।**
(iv) सत्ताधारी दल को सरकारी वाहन के इस्तेमाल की अनुमति नहीं क्योंकि	**(d) संभव है कुछ लोग उस जगह से अलग चले गए हों जहाँ उन्होंने पिछले चुनाव में मतदान किया था।**

उत्तर—

(i)	समय-समय पर मतदाता सूची का नवीनीकरण आवश्यक है ताकि	संभव है कुछ लोग उस जगह से अलग चले गए हों जहाँ उन्होंने पिछले चुनाव में मतदान किया था।
(ii)	कुछ निर्वाचन-क्षेत्र अनु०जाति और अनु०जनजाति के लिए आरक्षित हैं ताकि	समाज के हर तबके का समुचित प्रतिनिधित्व हो सके।
(iii)	प्रत्येक को सिर्फ एक वोट डालने का हक है ताकि	हर एक को अपना प्रतिनिधि चुनने का समान अवसर मिले।
(iv)	सत्ताधारी दल को सरकारी वाहन के इस्तेमाल की अनुमति नहीं क्योंकि	हर उम्मीदवार को चुनावों में लड़ने का समान अवसर मिले।

प्रश्न 4. इस अध्याय में वर्णित चुनाव सम्बन्धी सभी गतिविधियों की सूची बनाएँ और इन्हें चुनाव में सबसे पहले किए जाने वाले काम से लेकर आखिर तक के क्रम में सजाएँ। इनमें से कुछ मामले हैं—

चुनाव घोषणा पत्र जारी करना, वोटों की गिनती, मतदाता सूची बनाना, चुनाव अभियान, चुनाव नतीजों की घोषणा, मतदान, पुर्नमतदान के आदेश, चुनाव प्रक्रिया की घोषणा, नामांकन दाखिल करना।

उत्तर—(i) मतदाता सूची का बनाना
(ii) चुनाव प्रक्रिया की घोषणा
(iii) नामांकन दाखिल करना
(iv) चुनाव घोषणा-पत्र जारी करना
(v) चुनाव अभियान
(vi) मतदान
(vii) पुनर्मतदान का आदेश
(viii) मतगणना
(ix) चुनाव परिणामों की घोषणा।

प्रश्न 5. सुरेखा एक राज्य विधानसभा क्षेत्र में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने वाली अधिकारी है। चुनाव के इन चरणों में उसे किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

(क) चुनाव प्रचार
(ख) मतदान के दिन
(ग) मतगणना के दिन।

उत्तर—(क) चुनाव प्रचार—एक प्रभारी अधिकारी के रूप में सुरेखा को चाहिए कि स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव को ध्यान में रखते हुए वह सुनिश्चित करे कि,

(i) कोई भी उम्मीदवार अथवा अन्य व्यक्ति मतदाताओं को बहका या धमका तो नहीं रहा है अथवा उन्हें किसी तरह का लालच देकर अपने समर्थन में वोट डालने के लिए प्रेरित तो नहीं कर रहा है।

(ii) उम्मीदवारों द्वारा धर्म या जाति के नाम पर मतदाताओं से समर्थन तो नहीं माँगा जा रहा है।

(iii) सरकारी मशीनरियों का दुरुपयोग तो नहीं किया जा रहा है।

(iv) क्या ये लोग तय सीमा में चुनाव अभियान के दौरान खर्च कर रहे हैं।

(ख) मतदान के दिन—सुरेखा को चाहिए कि वह इस बात का ध्यान रखे कि मतदाताओं को किसी भी तरह से वोट डालने से रोका तो नहीं जा रहा है। किसी प्रकार की धाँधली तो नहीं की जा रही है? उसे मतपेटियाँ छीनने, जबरन बूथ पर कब्जा करने आदि जैसी चीजों की रिपोर्ट तुरंत आयोग को करनी चाहिये।

(ग) मतगणना के दिन—मतों की स्वतंत्र एवं निष्पक्ष गणना के लिए उसे पर्याप्त सुरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये। उसे पार्टियों के समर्थकों द्वारा की जाने वाली किसी भी संभावित घटना के लिए सतर्क रहना चाहिए।

प्रश्न 6. नीचे दी गई तालिका बताती है कि अमेरिकी कांग्रेस के चुनावों के विजयी उम्मीदवारों में अमेरिकी समाज के विभिन्न समुदाय के सदस्यों का क्या अनुपात था। ये किस अनुपात में जीते इसकी तुलना अमेरिकी समाज में इन समुदायों की आबादी के अनुपात से कीजिए। इसके आधार पर क्या आप अमेरिकी संसद के चुनाव में भी आरक्षण का सुझाव देंगे? अगर हाँ तो क्यों और किस समुदाय के लिए? अगर नहीं, तो क्यों?

समुदाय का प्रतिनिधित्व (प्रतिशत में)

	अमेरिका प्रतिनिधि सभा में	अमेरिकी समाज में
अश्वेत	8	13
हिस्पैनिक	5	13
श्वेत	86	70

उत्तर—हाँ, US कांग्रेस में प्रतिनिधिक पद्धति लागू की जानी चाहिए, क्योंकि इसके द्वारा प्रत्येक समुदाय को प्रतिनिधि सभा में बराबर का प्रतिनिधित्व (उनकी आबादी के अनुपात में) मिलना संभव हो सकेगा।

आबादी में काले लोगों एवं हिस्पैनिश का कुल प्रतिशत 26% होने के बावजूद कांग्रेस में केवल उन्हें 13% (अर्थात् अपनी आबादी के अनुपात में आधा) प्रतिनिधित्व प्राप्त है। जबकि, गोरे लोगों को उनकी आबादी से भी 16% अधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

प्रश्न 7. क्या हम इस अध्याय में दी गई सूचनाओं के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं? इनमें से सभी पर अपनी राय के पक्ष में दो तथ्य प्रस्तुत कीजिए।

(क) भारत के चुनाव आयोग को देश में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव करा सकने लायक पर्याप्त अधिकार नहीं है।

उत्तर—नहीं, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव संपन्न कराने के लिए चुनाव आयोग को पर्याप्त शक्तियाँ दी गई हैं—

(i) चुनाव सम्बन्धी सरकार की किसी भी सलाह को मानने के लिए आयोग बाध्य नहीं है।

(ii) आयोग सत्ताधारी पार्टी को सरकारी मशीनरियों के दुरुपयोग से रोक सकता है।

(ख) हमारे देश के चुनाव में लोगों की जबर्दस्त भागीदारी होती है।

उत्तर—यह स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव का सूचक है।

(i) यदि चुनावों में धाँधली होती तो मतदाताओं की संख्या निरंतर घटती जाती।

(ii) पिछले चुनाव में 57% प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मतों का प्रयोग किया।

अनुसूचित/अनुसूचित जनजाति के मतदाताओं का मतदान प्रतिशत तो इससे भी अधिक है।

(ग) सत्ताधारी पार्टी के लिए चुनाव जीतना बहुत आसान होता है।

उत्तर—नहीं, असफल शासक दल के लिए चुनाव जीतना अपेक्षाकृत कठिन है। क्योंकि—

(i) मतदाता चुनाव के दौरान किए गए वादों को पूरा नहीं किए जाने के कारण प्रायः इनसे नाराज रहते हैं।

(ii) विरोधी पार्टियों द्वारा नए वायदे करने के कारण माहौल उनके पक्ष में चला जाता है।

(घ) अपने चुनावों को पूरी तरह से निष्पक्ष और स्वतंत्र बनाने के लिए कई कदम उठाने जरूरी हैं।

उत्तर—हाँ, चुनावों को पूर्ण स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाने के लिए वर्तमान में सुधारों की आवश्यकता बढ़ गई है। क्योंकि—

(i) चुनाव के दौरान अधिकतम मात्रा में धन का दुरुपयोग होने लगा है।

(ii) उम्मीदवारों के रूप में अपराधी पृष्ठभूमि के लोग चुनाव में भाग लेते हैं तथा वे अपनी ताकत से जनता को प्रभावित करने में लगे हैं।

प्रश्न 8. चिनप्पा को दहेज के लिए अपनी पत्नी को परेशान करने के जुर्म में सजा मिली थी। सतवीर को छुआछूत मानने का दोषी माना गया था। दोनों को अदालत ने चुनाव लड़ने को इजाजत नहीं दी। क्या यह फैसला लोकतांत्रिक चुनावों के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ जाता है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर—नहीं, आयोग के निर्देशानुसार गंभीर आपराधिक मामले जिन व्यक्तियों पर सिद्ध हुए हैं, उन्हें वह चुनाव लड़ने से वंचित कर सकता है। दूसरा, संवैधानिक प्रावधान के अन्तर्गत छुआछूत का व्यवहार एक दंडनीय अपराध है।

प्रश्न 9. यहाँ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में चुनावी गड़बड़ियों की कुछ रिपोर्टें दी गई हैं। क्या ये देश अपने यहाँ के चुनावों में सुधार के लिए भारत से कुछ बातें सीख सकते हैं? प्रत्येक मामले में आप क्या सुझाव देंगे?

(क) नाइजीरिया के एक चुनाव में मतगणना अधिकारी ने जान-बूझकर एक उम्मीदवार को मिले वोटों की संख्या बढ़ा दी और उसे जीता हुआ घोषित कर दिया। बाद में अदालत ने पाया कि दूसरे उम्मीदवार को मिले पाँच लाख वोटों को उस उम्मीदवार के पक्ष में दर्ज कर लिया गया था।

उत्तर—हाँ, यह देश भारतीय मतगणना पद्धति से सीख ले सकता है। हमारे यहाँ मतगणना के समय चुनाव में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियों के पर्यवेक्षक मौजूद होते हैं एवं उनके सामने मतों की गणना की जाती है। इतना ही नहीं, किसी भी प्रकार का संदेह होने पर पुनर्मतगणना की भी व्यवस्था है।

(ख) फिजी में चुनाव से ठीक पहले एक परचा बाँटा गया जिसमें धमकी दी गई कि अगर पूर्व प्रधानमंत्री महेंद्र चौधरी के पक्ष में वोट दिया गया तो खून-खराबा हो जाएगा। यह धमकी भारतीय मूल के मतदाताओं को दी गई थी।

उत्तर—हाँ, फिजी के लोग भारतीय चुनाव पद्धति से सीख सकते हैं—

(i) इस प्रकार की धमकियों से निबटने के लिए संवैधानिक एवं विधिक प्रावधान होने चाहिए तथा ऐसी शक्तिशाली एजेंसी होनी चाहिए जो तत्काल दंडात्मक कार्यवाही कर सके।

(ii) यह प्रावधान होना चाहिए कि जो कोई पार्टी इस प्रकार के कार्यों में लिप्त पाई जाएगी, उसको चुनाव लड़ने के अयोग्य करार दिया जाएगा।

(ग) अमेरिका के हर प्रांत में मतदान, मतगणना और चुनाव संचालन की अपनी-अपनी प्रणालियाँ हैं। सन् 2000 के चुनाव में फ्लोरिडा प्रांत के अधिकारियों ने जॉर्ज बुश के पक्ष में अनेक विवादास्पद फैसले लिए पर उनके फैसले को कोई भी नहीं बदल सका।

उत्तर—अमेरिका, भारतीय चुनाव पद्धति से सीख ले सकता है—

(i) चुनाव में आयोजन के लिए यहाँ एकीकृत व्यवस्था है जो राष्ट्रीय चुनाव आयोग के रूप में काम करती है। इसके नियम तथा आदेश सम्पूर्ण देश में समान रूप से लागू होते हैं।

(ii) यह संस्था स्वतंत्र और सरकारी प्रभाव से मुक्त है। यह चुनाव के दौरान सरकार के फैसलों पर रोक लगा सकती है, यदि वे स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनाव के हित में न हों।

प्रश्न 10. भारत में चुनावी गड़बड़ियों से सम्बन्धित कुछ रिपोर्टें यहाँ दी गई हैं। प्रत्येक मामले में समस्या की पहचान कीजिए। इन्हें दूर करने के लिए क्या किया जा सकता है?

(क) चुनाव की घोषणा होते ही मंत्री महोदय ने बंद पड़ी चीनी मिल को दोबारा खोलने के लिए वित्तीय सहायता देने की घोषणा की।

उत्तर–(i) चुनाव की घोषणा के पश्चात् मंत्री द्वारा की गई यह घोषणा जनमत को प्रभावित करने वाला कदम है जो निष्पक्ष चुनाव में बाधक है।

(ii) इसके लिए मंत्री को कारण बताओ नोटिस आयोग जारी करे और अपेक्षित जवाब नहीं मिलने पर उनकी उस घोषणा को अवैध घोषित करे और दंडात्मक कार्यवाही करे।

(ख) विपक्षी दलों का आरोप था कि दूरदर्शन और आकाशवाणी पर उनके बयानों और चुनाव अभियान को उचित जगह नहीं मिली।

उत्तर–(i) यह निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न करने में बाधक है। इससे उन पार्टियों को जनता तक अपनी बात पहुँचाने का समान अवसर प्राप्त नहीं हुआ है। परिणामस्वरूप मतदान के प्रभावित होने की आशंका है।

(ii) आयोग को चाहिए कि अविलम्ब इसकी जाँच करवाए तथा सही पाए जाने पर उन पार्टियों की भी दूरदर्शन एवं रेडियो तक पर्याप्त पहुँच सुनिश्चित करने की व्यवस्था करें।

(ग) चुनाव आयोग की जाँच से एक राज्य की मतदाता सूची में 20 लाख फर्जी मतदाताओं के नाम मिले।

उत्तर–(i) इस प्रकार से स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव बाधित होगा क्योंकि वे सभी वोटर किसी एक पार्टी के पक्ष में मत करेंगे।

(ii) चुनाव आयोग इस मतदाता सूची को खारिज करे और सही मतदाता सूची तैयार करने का आदेश जारी करे। इस कार्य में लिप्त अधिकारियों को दण्डित करने के आदेश जारी किए जाएँ।

(घ) एक राजनैतिक दल के गुंडे बंदूकों के साथ घूम रहे थे, दूसरी पार्टियों के लोगों को मतदान में भाग लेने से रोक रहे थे और दूसरी पार्टी की चुनावी सभाओं पर हमले कर रहे थे।

उत्तर–(i) राजनीति के इस अपराधीकरण से स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव के होने की संभावना कम हो जाएगी। लोग इनके डर से चुनाव में भाग लेने के लिए आगे नहीं आएँगे।

(ii) आयोग को चाहिए कि ऐसे तत्वों और सम्बन्धित पार्टी का पता लगाकर उन पर उचित कार्यवाही करे। सभी उम्मीदवारों को समुचित सुरक्षा उपलब्ध करवाई जाए। प्रशासन से विधि-व्यवस्था की चौकसी बढ़ाने के लिए कहा जाए।

प्रश्न 11. जब यह अध्याय पढ़ाया जा रहा था तो रमेश कक्षा में नहीं आ पाया था। अगले दिन कक्षा में आने के बाद उसने अपने पिताजी से सुनी बातों को दोहराया। क्या आप रमेश को बता सकते हैं कि उसके इन बयानों में क्या गड़बड़ी है?

(क) औरतें उसी तरह वोट देती हैं जैसा पुरुष उनसे कहते हैं इसलिए उनको मताधिकार देने का कोई मतलब नहीं है।

उत्तर–वोट के अधिकार का सम्बन्ध इस बात से बिल्कुल नहीं है कि व्यक्ति अपने उस अधिकार का किस प्रकार प्रयोग करता है। अतः लैंगिक पक्ष का विचार किए बिना प्रत्येक व्यक्ति को वोट का अधिकार होना चाहिए।

(ख) पार्टी-पॉलिटिक्स से समाज में तनाव पैदा होता है। चुनाव में सबकी सहमति वाला फैसला होना चाहिए, प्रतिद्वंद्विता नहीं होनी चाहिए।

उत्तर–यह सच है कि पार्टी राजनीतिक समाज में तनाव पैदा करती है, लेकिन चुनावों में प्रायः सहमति की संभावना नगण्य है, क्योंकि प्रत्येक उम्मीदवार विजयी होना चाहता है तथा इस मुद्दे पर सहमति बनने की कोई संभावना ही नहीं है। अतः स्वस्थ प्रतियोगिता ही चुनाव का बेहतर विकल्प है।

(ग) सिर्फ स्नातकों को ही चुनाव लड़ने की इजाजत होनी चाहिए।

उत्तर–नहीं, यह लोकतांत्रिक सिद्धांतों के विरुद्ध है। विशेषकर हमारे देश में, जहाँ अशिक्षा बहुत अधिक है, यह लोगों के अधिकार का हनन होगा।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नीचे चुनाव कराने के कारण दिये गये हैं। इनमें से कौन सा असत्य है?
(क) चुनाव लोगों को सरकार के कार्यों का मूल्यांकन करने में सक्षम बनाते हैं
(ख) चुनाव में लोग अपनी पसन्द के प्रतिनिधियों का चयन करते हैं
(ग) चुनाव लोगों को न्यायपालिका के कार्यों का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करते हैं
(घ) लोग यह इंगित कर सकते हैं कि वे कौन सी नीतियाँ अधिक पसन्द करते हैं।

2. नीचे दिये गये तथ्य यह सिद्ध करते हैं कि भारत में सम्पन्न चुनाव लोकतान्त्रिक हैं। इनमें से कौन सा असत्य है?
(क) विश्व में सर्वाधिक मतदाता भारत में हैं
(ख) भारत का निर्वाचन आयोग अत्यधिक शक्तिशाली है
(ग) भारत में 18 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति को मताधिकार प्राप्त है
(घ) भारत में पराजित दल चुनावी निर्णय स्वीकार करते हैं।

3. किसी भी राज्य में चुनाव के बाद सरकार बनाने के लिए राज्य के गवर्नर द्वारा किसे आमन्त्रित किया जाता है?
(क) विपक्ष का नेता (ख) बहुमत दल का नेता
(ग) उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. निम्न में से क्या चुनाव का कार्य नहीं है?
(क) सरकार परिवर्तन (ख) सत्तारूढ़ दल की वैधता
(ग) सरकार निर्माण में लोगों की भूमिका (घ) संविधान में परिवर्तन के सुझाव।

5. निम्न में से कौन सा चुनाव का विकल्प नहीं है?
(क) जनमत संग्रह (ख) आम सहमति (ग) क्रान्ति (घ) मतदान द्वारा निर्णय।

6. निम्न में से कौन-सा वास्तविक लोकतान्त्रिक चुनाव की प्रमुख विशेषता है?
(क) सदैव सरकार का परिवर्तन (ख) सार्वभौमिक मताधिकार
(ग) अल्पसंख्यक का नेता के रूप में चुनाव (घ) इनमें से कोई नहीं।

7. चुनाव का एक दोष क्या है?
(क) सरकार परिवर्तन (ख) दलबन्दी
(ग) नये नेताओं का उदय (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. निम्न में से कौन सी भारत की निर्वाचन राजनीति की विशेषता नहीं है?
(क) निश्चित समय अन्तराल पर चुनाव (ख) संरक्षित निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था
(ग) सार्वभौमिक मताधिकार (घ) केवल स्नातक ही संसद से निर्वाचित हो सकते हैं।

9. भारत में चुनावों की व्यवस्था कौन करता है?
(क) केन्द्रीय सरकार (ख) राज्य सरकार
(ग) भारत का निर्वाचन आयोग (घ) भारत का राष्ट्रपति।

10. भारत में संसद व राज्य व्यवस्थापिकाओं के चुनावों की व्यवस्था कौन करता है?
(क) राष्ट्रपति (ख) भारत का निर्वाचन आयोग
(ग) प्रधानमन्त्री (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. निर्वाचन आयोग के सदस्यों की नियुक्ति कौन करता है?
(क) भारत का मुख्य न्यायधीश (ख) प्रधानमन्त्री
(ग) राष्ट्रपति (घ) जनता।

12. निम्न में से क्या भारत की चुनाव व्यवस्था की एक विशेषता नहीं है?
(क) सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार
(ख) गुप्त मतदान
(ग) अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों को व्यवस्थापिका में आरक्षण
(घ) साम्प्रदायिक निर्वाचन।

13. उपचुनाव सम्पन्न होते हैं—
(क) प्रत्यक्ष रूप से (ख) अप्रत्यक्ष रूप से
(ग) विधानसभा में रिक्त स्थान की पूर्ति
(घ) जब एक विधानसभा को समय से पूर्व भंग कर दिया जाता है।

14. लोकतन्त्र में चुनाव महत्वपूर्ण हैं क्योंकि–
(क) सरकार का गठन सरल हो जाता है।
(ख) विपक्षी दल के गठन में सहायता मिलती है
(ग) चुनाव सरकार की कार्यप्रणाली पर नियन्त्रण रखते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

15. निम्न में से क्या भारतीय निर्वाचन व्यवस्था की एक दुर्बलता या चुनौती है?
(क) गुप्त मतदान
(ख) इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का प्रयोग
(ग) सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग
(घ) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार।

16. निम्न में से कौन सा कथन गलत है?
(क) 21 वर्ष से अधिक आयु का प्रत्येक नागरिक वोट दे सकता है
(ख) प्रत्येक नागरिक को जाति, धर्म व लिंग पर आधारित भेदभाव के बिना समान रूप से वोट देने का अधिकार है।
(ग) कतिपय परिस्थितियों में कुछ अपराधियों व अस्वस्थ मस्तिष्क वाले व्यक्तियों को वोटाधिकार से वंचित किया जा सकता है।
(घ) सभी योग्य मतदाताओं के नामों की सूची प्राप्त करना सरकार का उत्तरदायित्व है।

17. चुनाव एवं चुनाव आयोग के सम्बन्ध में निम्न में से कौनसा कथन सत्य है?
(क) भारत का निर्वाचन आयोग देश में स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव कराने हेतु पर्याप्त शक्ति रखता है।
(ख) हमारे देश में चुनावों में जन-भागीदारी का उच्च स्तर है।
(ग) सत्तारूढ़ दल के लिए चुनाव जीतना बहुत सरल होता है।
(घ) चुनावों को पूर्णतया स्वतन्त्र व निष्पक्ष बनाने के लिए बहुत से सुधारों की आवश्यकता है।
(ङ) (क), (ख) व (घ) सही हैं।

18. भारत में स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनावों के समक्ष कौन सी चुनौतियाँ हैं? सही विकल्प का चयन कीजिए–
(क) आचरण के नियमों का प्रारूप
(ख) राजनीतिक दलों के मध्य आन्तरिक लोकतन्त्र का अभाव
(ग) धन व शक्ति का प्रभाव
(घ) राजवंशीय शासन
(ङ) (ख), (ग) व (घ) सही हैं।

19. आम चुनाव क्या हैं?
(क) किसी भी एक सदस्य की मृत्यु या इस्तीफे के कारण रिक्त हुए स्थान की पूर्ति हेतु केवल एक निर्वाचन क्षेत्र के लिए चुनाव कराना
(ख) लोक सभा के कार्यकाल की समाप्ति से पूर्व चुनाव कराना
(ग) प्रत्येक पाँच वर्ष के उपरान्त सभी निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव कराना
(घ) इनमें से कोई नहीं।

20. निम्न में से क्या चुनावी प्रक्रिया में नहीं आता है?
(क) मतदान
(ख) उम्मीदवार का नामांकन
(ग) नाम वापस लेना
(घ) मतदान केन्द्र पर कब्जा
(ङ) चुनाव प्रचार।

21. चुनाव प्रचार के दौरान निम्न में से किसकी अनुमति नहीं होती?
(क) किसी विशेष उम्मीदवार के पक्ष में वोट डलवाने के लिए मतदाताओं को धन देना
(ख) टी. बी. चैनल्स का प्रयोग करना
(ग) घर-घर जाकर चुनाव प्रचार करना
(घ) फोन पर मतदाताओं से सम्पर्क करना।

22. निम्न में से क्या चुनाव को लोकतान्त्रिक बनाता है? सही विकल्प का चयन कीजिए–
(क) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
(ख) मौलिक अधिकार
(ग) राज्य के नीति निर्देशक तत्व
(घ) स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव
(ङ) (क) व (घ) सही हैं।

23. निम्न में से क्या सही नहीं है?

(क) संसद व विधानसभाओं के लिए सभी चुनाव निर्वाचन आयोग कराता है

(ख) चुनाव आयोग निर्वाचक नामावली की तैयारी को निर्देशित व नियन्त्रित करता है

(ग) चुनाव आयोग चुनाव की तिथि तय नहीं कर सकता है

(घ) चुनाव आयोग नामांकन पत्रों की छानबीन करता है।

[**उत्तर—1.** (ग), **2.** (ख), **3.** (ख), **4.** (घ), **5.** (ग), **6.** (ख), **7.** (ख), **8.** (घ), **9.** (ग), **10.** (ख), **11.** (ग), **12.** (घ), **13.** (ग), **14.** (ग), **15.** (ग), **16.** (क), **17.** (ङ), **18.** (ङ), **19.** (ग), **20.** (घ), **21.** (क), **22.** (ङ), **23.** (ग)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मतपत्र क्या होता है?

उत्तर—एक कागज जिस पर चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों के नाम सम्बन्धित दल-चिन्हों के साथ होते हैं।

प्रश्न 2. 'चुनाव फोटो पहचान पत्र' (EPIC) क्या है?

उत्तर—यह निर्वाचन आयोग के द्वारा मतदाता (Voter) को दिया गया पहचान पत्र है कि वह वोट देने का अधिकार रखता है।

प्रश्न 3. निर्वाचक नामावली को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—वह सूची जिसमें वोट देने की योग्यता रखने वाले मतदाताओं के नाम होते हैं, निर्वाचक नामावली कहलाती है।

प्रश्न 4. इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) क्या है?

उत्तर—वोटों का रिकॉर्ड रखने वाली मशीन जो उम्मीदवारों के नाम व दलीय चिन्ह दर्शाती है।

प्रश्न 5. चुनाव ड्यूटी पर रहने वाले सरकारी अधिकारियों पर कौन नियन्त्रण रखता है?

उत्तर—भारत का निर्वाचन आयोग।

प्रश्न 6. निम्नलिखित चुनावों के दौरान निम्नलिखित दलों के नारे क्या थे?

कांग्रेस—1971 के चुनाव

जनता पार्टी—1977 के चुनाव

उत्तर-गरीबी हटाओ।

प्रश्न 7. देश की किस विधानसभा के सदस्यों की संख्या सर्वाधिक है?

उत्तर—उत्तर-प्रदेश (403)।

प्रश्न 8. निर्वाचन क्षेत्र का क्या अर्थ है?

उत्तर—चुनाव के उद्देश्य से देश का विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों में विभाजन।

प्रश्न 9. वर्तमान में कितने लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र हैं?

उत्तर—543 क्षेत्र।

प्रश्न 10. हमारे देश में क्षेत्र की दृष्टि से सबसे बड़ा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र कौन सा है?

उत्तर—लद्दाख।

प्रश्न 11. किसी भी चुनाव को कब स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष कहा जा सकता है?

उत्तर—जबकि मतदाता को बिना किसी भय के अपनी पसन्द के उम्मीदवार को वोट देने का अधिकार हो।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. चुनाव को क्या चीज लोकतान्त्रिक बनाती है?

उत्तर—चुनाव को लोकतांत्रिक मानने के अनेक कारण हैं—प्रथम प्रत्येक नागरिक को मताधिकार के प्रयोग की अनुमति हो एवं प्रत्येक व्यक्ति के मत का मूल्य समान हो। द्वितीय कारण है चुनाव में जनता के लिए विकल्प हो तथा पार्टियों और प्रत्याशियों को चुनाव लड़ने की स्वतन्त्रता हो। तृतीय एक निश्चित अंतराल पर चुनावों का आयोजन होना चाहिए। चतुर्थ लोग

जिसे चाहें वास्तव में चुनाव उसी का होना चाहिए। पाँचवें चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष ढंग से होने चाहिए जिससे लोग अपनी पसन्द के उम्मीदवार को चुन सकें। छठे, प्रत्येक व्यक्ति को मताधिकार की सुरक्षा प्रदान की जाये जिससे वह बिना किसी भय या लोभ के अपना मतदान कर सके।

प्रश्न 2. "आधुनिक लोकतन्त्रों में प्रतिनिधि सरकार लोकप्रिय है।" कारण बताइए।

उत्तर—लोकतन्त्र में प्रतिनिधियों का चुनाव जनता द्वारा मतदान के द्वारा किया जाता है। जनता अपने प्रतिनिधि से तमाम उम्मीदें रखती है तथा चुनाव में किए गए वायदों का भी पूरा दबाव होता है। जन प्रतिनिधि जनता की समस्याओं से भली-भाँति परिचित होते हैं। अतः लोकतन्त्र में प्रतिनिधि सरकार लोकप्रिय होती है।

प्रश्न 3. क्या राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा रखना अच्छा है। कारण दीजिए।

उत्तर—आज का युग प्रतिस्पर्द्धा का युग है। राजनैतिक प्रतिस्पर्धा होना एक अच्छी बात है। सभी राजनीतिज्ञ लोगों की सेवा की प्रेरणा से ही राजनीति में आते हैं। परन्तु वास्तविक जीवन में ऐसा नहीं है। नियमित चुनावी प्रतियोगिता का लाभ राजनैतिक दलों एवं राजनेताओं को मिलता है। वे जानते हैं कि जब वे लोगों की भावनाओं के अनुसार मुद्दों को उठाएँगे तभी उन्हें लोकप्रियता मिलेगी तथा अगले चुनाव में उनकी जीत की सम्भावना बढ़ेगी। यदि वे अपने काम-काज से जनता को संतुष्ट करने में असफल रहे तो अगला चुनाव नहीं जीत सकते। इस प्रतिद्वन्द्विता के कारण नेताओं को जनता की सेवा करने को बाध्य होना पड़ता है। इस राजनैतिक प्रतिस्पर्द्धा का लाभ मतदाता भी उठा सकते हैं। जब उनमें राजनीतिक चेतना और अपने प्रतिनिधि के चयन की सही परख हो।

प्रश्न 4. राजनीतिक दलों को चुनाव चिन्ह कौन प्रदान करता है? इन चिन्हों का क्या महत्व है?

उत्तर—चुनाव चिन्ह—प्रत्येक राजनीतिक दल का एक चुनाव चिन्ह होता है, जिसका आबंटन निर्वाचन आयोग द्वारा किया जाता है। चुनाव चिन्ह पर ही मतदाता को मतदान करना पड़ता है। वह पहले से ही यह निश्चित कर लेता है कि उसे किस चुनाव चिन्ह पर मतदान करना है।

सन् 2004 के आम चुनाव में पहली बार इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का इस्तेमाल पूरे देश में किया गया। इस मशीन का इस्तेमाल करना इतना आसान है कि अनपढ़ आदमी भी आसानी से इसका इस्तेमाल कर सकता है। इसके पूर्व मतदान हेतु मतपत्र छापा जाता था, जिसमें उम्मीदवारों के नाम के सामने उनका पहचान-पत्र की व्यवस्था लागू की गई है। सकार द्वारा मतदाता सूची में शामिल सभी को यह पहचान-पत्र दिया गया है। मतदान करने के समय यह पहचान-पत्र साथ रखना होता है जिससे फर्जी मतदान नहीं हो सके। किन्तु, अभी तक वोट देने के लिए पहचान-पत्र अनिवार्य नहीं हुआ है।

प्रश्न 5. गुप्त मतदान व्यवस्था के बारे में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—लोकतान्त्रिक प्रणाली में मतदाता को अपना वोट देने का अधिकार होता है। मतदाता के वोट की गोपनीयता का विशेष ध्यान रखा जाता है। इसके लिए मतदान केन्द्र पर बूथ बने होते हैं जो चारों ओर से बन्द होते हैं। केवल एक मतदाता उसके अन्दर जाता है तथा अपने मत का प्रयोग करता है। गुप्त मतदान से मतदाता के मत की गोपनीयता बनी रहती है। मतदाता को स्वतन्त्रतापूर्वक निर्भय होकर मतदान कराया जाता है।

प्रश्न 6. क्या हमारे देश में चुनाव अत्यधिक खर्चीले हैं?

उत्तर—क्या हमारे देश में चुनाव बहुत महँगे हैं?

भारत में चुनाव सम्पन्न कराने पर बहुत बड़ी राशि खर्च होती है, जैसे—सन् 2014 में लोकसभा चुनावों पर ही सरकार ने लगभग ₹ 3500 करोड़ खर्च किए। यदि गणना की जाए तो मतदाता सूची में दर्ज हर नाम पर ₹ 60 के लगभग खर्च हुआ। पार्टियों और उम्मीदवारों ने चुनाव में सरकार से भी अधिक खर्च किया। एक अनुमान के अनुसार सरकार, पार्टियों और उम्मीदवारों का कुल खर्च लगभग ₹ 30,000 करोड़ हुआ होगा अर्थात् प्रति मतदाता करीब ₹ 400 से 500।

कुछ लोग कहते हैं कि चुनाव हमारी जनता पर खासकर गरीब लोगों पर एक बोझ है और देश हर पाँच साल पर चुनाव कराने का बोझ नहीं उठा सकता। अब हम, इस खर्च की तुलना कुछ अन्य खर्चों से करते हैं—

- सरकार इस धनराशि से देश के लिए सैन्य संसाधन उपलब्ध करा सकती थी।
- दिल्ली में सन् 2010 में राष्ट्रमण्डल खेलों के आयोजन में हुए लगभग ₹ 10,000 करोड़ के खर्च की भरपाई कर सकती थी। तो क्या चुनावों को महँगा माना जा सकता है? इस विषय पर अपनी राय बनाएँ और कक्षा में चर्चा करें।

प्रश्न 7. भारत में मताधिकार की आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई है?

उत्तर—वयस्कों की सक्रिय भागीदारी के लिए भारत सरकार ने मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी है जिससे सभी वयस्क मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। पूर्व में 21 वर्ष की आयु वाले व्यक्ति को वयस्क माना जाता था।

प्रश्न 8. चुनाव घोषणा पत्र का क्या महत्व है?

उत्तर—प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव लड़ने से पूर्व अपना चुनाव घोषणा पत्र जारी करता है, जिसमें उसके अपने कार्यक्रम होते हैं, जिन्हें वह अपने दल के जीतने पर लागू करेगा। चुनाव घोषणा पत्र से जनता को विभिन्न दलों की भावी योजनाओं के बारे में जानकारी होती है जिससे वे अपने आप को मत देने के निर्णय को पक्का करते हैं कि किस प्रतिनिधि का चुनाव करना है। किसी दल का चुनाव घोषणा पत्र उसके भावी कार्यक्रम की रूपरेखा होता है। इससे मतदाता की जागरूकता में वृद्धि होती है साथ ही साथ लोकतन्त्र भी मजबूत होता है।

प्रश्न 9. चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों की भूमिका क्या होती है?

उत्तर—चुनाव के दौरान राजनीतिक दल जनमत तैयार करते हैं। इन दलों द्वारा जनता में जागरूकता उत्पन्न की जाती है। प्रचार के तमाम माध्यमों द्वारा वे अपने घोषणा पत्र की सहायता से देश के लिए भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। जिससे जनता द्वारा उचित प्रतिनधियों का चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सके। संगठित राजनीतिक दल राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का कार्य भी करते हैं। चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों द्वारा की गई घोषणाओं को पूरा करना अनिवार्य हो जाता है, नहीं तो अगले चुनाव में जनता द्वारा वे हरा दिए जायेंगे।

प्रश्न 10. साधारण बहुमत व्यवस्था की क्या कमजोरियाँ हैं?

उत्तर—साधारण बहुमत की स्थिति में सरकार की स्थिरता पर सन्देह बना रहता है जिससे सरकार पूर्ण रूप से अपनी योजनाओं का क्रियान्वयन नहीं कर पाती है। साधारण बहुमत की स्थिति में दल-बदल की सम्भावनायें अधिक हो जाती हैं। प्रतिनिधि प्रलोभनबस अपने दल को छोड़कर दूसरे दल में चले जाते हैं जिससे सरकार अल्पमत में आ जाती है। साधारण बहुमत की स्थिति में केवल सामान्य काम-काज ही सम्पन्न हो पाते हैं। जनहित के बड़े फैसले दो तिहाई बहुमत द्वारा सम्पन्न होते हैं। ऐसी स्थिति साधारण बहुमत में सम्भव नहीं है।

प्रश्न 11. निम्न को परिभाषित कीजिए—

(क) उपचुनाव (ख) मध्यावधि चुनाव।

उत्तर—(क) उपचुनाव—किसी सदस्य की मृत्यु हो जाने अथवा त्याग पत्र देने पर निर्वाचित सीट रिक्त हो जाती है ऐसी स्थिति में उस सीट के लिए चुनाव की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार होने वाले चुनाव को उपचुनाव कहते हैं। उपचुनाव लोकतन्त्र के दर्पण होते हैं तथा ये सरकार की लोकप्रियता को मापने का मापदण्ड होते हैं।

(ख) मध्यावधि चुनाव—मध्यावधि चुनाव तब कराये जाते हैं जब सरकार अपना सम्पूर्ण कार्यकाल पूर्ण न करके उसके पहले ही किन्हीं कारणों से अपना त्यागपत्र दे देती है। उस स्थिति में विधायिका के निम्न सदन को भंग करके पुनः चुनावों की घोषणा कर दी जाती है। राष्ट्र को 1980, ,1991, 1997 तथा 1999 ई. में मध्यावधि चुनावों की प्रक्रिया से गुजरना पड़ा था।

प्रश्न 12. चुनाव के दौरान विभिन्न राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवारों द्वारा अपनाई जाने वाली चुनाव आचार संहिता के प्रमुख तत्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—चुनाव आचार संहिता के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं—

(1) चुनाव की उद्घोषणा हो जाने के बाद मन्त्री किसी बड़ी योजना का शिलान्यास बड़े नीतिगत निर्णय या लोगों को सुविधायें देने वाले वायदे नहीं कर सकते।

(2) चुनाव प्रचार के लिए किसी धर्म स्थल का प्रयोग नहीं कर सकते।

(3) सरकारी वाहन, विमान अथवा अधिकारियों का चुनाव में उपयोग नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न 13. चुनाव प्रचार पर कौन नियन्त्रण रखता है और क्यों?

उत्तर—चुनाव प्रचार पर चुनाव आयोग नियन्त्रण रखता है। लोकतन्त्र में यद्यपि राजनैतिक दलों एवं उम्मीदवारों को अपनी इच्छा से चुनाव प्रचार करने की स्वतन्त्रता होती है लेकिन चुनावों के कानूनों के अनुसार किसी भी उम्मीदवार या पार्टी के लिए निम्नलिखित कार्य निषेध हैं—

(1) जाति या धर्म के नाम पर वोट माँगना।

(2) चुनाव अभियान में सरकारी संसाधनों का प्रयोग करना।

(3) लोक सभा चुनाव में एक निर्वाचन क्षेत्र में ₹ 25 लाख या विधान सभा चुनाव में ₹ 10 लाख से अधिक व्यय करना।

(4) मतदाता को प्रलोभन देना, घूस देना या धमकी देना।

यदि कोई भी उम्मीदवार इनमें से किसी भी मामले में दोषी पाया जाता है तो चुने जाने के बावजूद उसका चुनाव रद्द घोषित हो सकता है।

प्रश्न 14. निम्न कथन किस प्रकार गलत हैं?

(क) स्त्रियाँ उसी प्रकार से मतदान करती हैं जैसा कि पुरुष उन्हें कहते हैं? अतः स्त्रियों को मताधिकार देने का क्या लाभ है?

(ख) दलीय राजनीति समाज को विभाजित कर देती है।

(ग) केवल स्नातकों को ही चुनाव लड़ने की अनुमति होनी चाहिए।

उत्तर—(क) आधुनिक युग में स्त्रियों की साक्षरता दर में काफी वृद्धि हुई है, आज स्त्रियाँ आत्मनिर्भर एवं स्वतन्त्र हैं। आज के समय में वे बड़े-बड़े सरकारी पदों पर अवस्थित हैं। कई स्त्रियाँ कई देशों की राष्ट्राध्यक्ष बन चुकी हैं तथा वर्तमान में भी कई इस पद पर विराजमान हैं, अतः आज की स्त्रियाँ पुरुषों के कहने पर मतदान नहीं करती हैं ऐसी कुछ ही स्त्रियाँ हैं।

(ख) यद्यपि राजनीतिक दल अपने प्रचार में जाति, धर्म आदि का प्रयोग करते हैं जिससे समाज में वैमनस्य की भावना जाग्रत होती है तथा समाज बँट जाता है परन्तु दीर्घ काल में ये दल ही राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनते हैं। भारत एक विविधताओं से परिपूर्ण देश है। यहाँ राष्ट्रीय दलों द्वारा ही अनेकता में एकता स्थापित हो सकी है।

(ग) सभी प्रकार के कार्य केवल शैक्षिक योग्यता के आधार पर नहीं होते। कम पढ़े लिखे लोग भी जन समस्याओं को अच्छी तरह समझते हैं। शिक्षा के आधार पर मतदान पर रोक लगाना संविधान के अनुकूल भी नहीं है। इसका परिणाम होगा देश के अधिकतर लोगों को मताधिकार से वंचित करना। यदि केवल उम्मीदवारी के लिए बी. ए., बी. कॉम. अथवा बी. एस. सी. की स्नातक डिग्री को भी अनिवार्य किया गया तो भारत में 90% से अधिक नागरिक चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित हो जायेंगे।

प्रश्न 15. निम्न में चुनावी कदाचार को पहचानिए तथा उन्हें नियन्त्रित करने के तरीके बताइए।

(क) चुनाव की घोषणा के एकदम बाद मन्त्री ने वित्तीय सहायता का वादा किया।

(ख) निर्वाचन आयुक्त ने जाँच पड़ताल में पाया कि निर्वाचक नामावली में 20 लाख वोटरों के नाम जाली थे।

(ग) विरोधी दलों ने आरोप लगाया कि उनके अभियान को दूरदर्शन तथा ऑल इण्डिया रेडियो पर कोई स्थान नहीं दिया गया।

(घ) मतदाताओं को मत डालने से रोकने के लिए राजनीतिक दलों के द्वारा बन्दूकों का प्रयोग किया गया।

उत्तर—(क) चुनाव आचार संहिता के अनुसार चुनाव की घोषणाा के एकदम बाद मंत्री किसी भी वित्तीय सहायता की घोषणा नहीं कर सकता है अतः ऐसा करने पर चुनाव आयोग संज्ञान लेगा तथा उसके चुनाव को रद्द करायेगा।

(ख) निर्वाचक नामावली सरकारी कर्मचारियों द्वारा सत्यापन के बाद बनाई जाती है। अतः इसका सम्पूर्ण दोष सरकारी कर्मचारियों का है, उन्हें आयोग की सिफारिश पर प्रशासन दण्डित करेगा।

(ग) चुनाव प्रचार में चुनाव आचार संहिता में स्पष्ट है कि कोई भी दल यदि सरकार आदेशित करती है तो दूरदर्शन तथा ऑल इण्डिया रेडियो पर चुनाव प्रचार कर सकता है। ऐसे में प्रत्येक दल को एक निर्धारित समय आंवटित कर मौका दिया जाना चाहिए। यदि किसी एक दल को मौका नहीं दिया जाता है तो उसे मौका अवश्य देना चाहिए।

(घ) जब राजनीतिक दल मतदान रोकने के लिए बन्दूक का प्रयोग करते हैं तो यह चुनाव आचार संहिता का सीधा उल्लंघन है। ऐसे प्रत्याशी के प्रचार को आयोग संज्ञान में लेगा तथा उसके चुनाव को रद्द करवायेगा। यह आचार संहिता का स्पष्ट उल्लंघन है।

प्रश्न 16. उन तत्वों की एक सूची बनाइए जिन्हें आप भारत की निर्वाचक राजनीति में पसन्द नहीं करते हैं?

उत्तर—(1) निर्वाचन प्रक्रिया में धन का विशेष महत्व है। धनवान लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं।

(2) लोग जातीयता या साम्प्रदायिकता के आधार पर वोट डालते हैं।

(3) चुनाव प्रक्रिया बहुत खर्चीली है।

(4) निर्वाचन प्रक्रिया पर दबंगों का दबदबा है।

(5) निर्वाचित होने के पश्चात् जन प्रतिनिधि दल बदल कर लेते हैं।

प्रश्न 17. चुनावों में धन शक्ति के प्रयोग को आप कैसे रोक सकते हैं?

उत्तर—चुनाव में धन शक्ति के प्रयोग को रोकने के लिए विधिक उपाय ज्यादा असरदार हो सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति चुनाव में धन शक्ति का प्रयोग करता है तो उसे चुनाव लड़ने या आजीवन प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए या इस कार्य को अपराध की श्रेणी में रखकर कठोर दण्ड देना चाहिए। जनता में भी जागरूकता पैदा करनी चाहिए कि वे धन लोभ के कारण अपने अमूल्य वोट को चन्द पैसों में नहीं बेचें।

प्रश्न 18. चुनावी प्रतियोगिता के विषय में आप क्या सोचते हैं? क्या यह देश के लिए अच्छा है?

उत्तर—चुनावी प्रतियोगिता में कई तरह के नुकसान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इससे प्रत्येक बस्ती एवं प्रत्येक घर में एक बँटवारे जैसी स्थिति बन जाती है। विभिन्न देशों के नेता एवं कार्यकर्ता एक दूसरे पर आरोप लगाते हैं। पार्टियाँ चुनाव जीतने के लिए नेता विभिन्न प्रकार के हथकण्डे अपनाते हैं। कुछ अच्छे लोग इन्हीं कारणों से चुनाव में भाग नहीं लेते हैं क्योंकि लोकतन्त्र के नाम पर लोग एक दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं। परन्तु दीर्घ काल में यही व्यवस्था सही काम करने लगती है। सभी नेता जनता की सेवा की प्रेरणा से राजनीति में आते हैं। परन्तु वास्तविक जीवन में ऐसा नहीं होता। परन्तु अपने आप को राजनीति में अच्छे पर पर निरन्तर बनाए रखने के लिए नेताओं को जनता की सेवा करनी ही होगी। चुनावी प्रतियोगिता का सीधा लाभ राजनैतिक दलों एवं नेताओं को मिलता है। वे जानते हैं कि यदि उन्होंने जनता के अनुरूप मुद्दों को नहीं उठाया तो उनकी हार होगी। अतः दलों को प्रतियोगिता के कारण जनता की सेवा करनी ही होगी। अन्ततः प्रतियोगिता के कारण राजनैतिक दल एवं नेताओं को जनता की सेवा के लिए बाध्य होना पड़ता है।

प्रश्न 19. एक चनाव की सफलता का मूल्यांकन आप किस तरह करेंगे?

उत्तर—चुनाव की सफलता का मूल्यांकन निम्न आधार पर कर सकते हैं—

(1) सभी को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होना चाहिए। इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक मत होना चाहिए तथा प्रत्येक मत का एक समान मूल्य होना चाहिए।

(2) दलों तथा प्रत्याशियों को चुनाव लड़ने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए और मतदाता के लिए कुछ विकल्प होने चाहिए।

(3) चुनाव का अवसर नियमित अन्तराल पर मिलना चाहिए अर्थात् नये चुनाव कुछ वर्षों के बाद नियमित रूप से होने चाहिए।

(4) लोगों द्वारा वरीयता प्राप्त प्रत्याशी ही चुना जाना चाहिए।

(5) चुनाव स्वतन्त्र तथा न्यायपूर्ण व निष्पक्ष ढंग से होने चाहिए। जहाँ लोग अपनी इच्छानुसार व्यक्ति का चुनाव कर सकें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार क्या है और इसे भारत में क्यों अपनाया गया है?

उत्तर—वयस्क मताधिकार से तात्पर्य है कि मतदान का अधिकार एक निश्चित आयु के समस्त नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के प्राप्त होना चाहिए। भारत में मतदान की निम्नतम आयु-सीमा 18 वर्ष निर्धारित कर दी गई है। मताधिकार के सम्बन्ध में सम्पत्ति, लिंग या शिक्षा जैसा कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। वर्तमान में विश्व के समस्त देशों में वयस्क अथवा सार्वभौमिक मताधिकार की व्यवस्था है।

वयस्क मताधिकार के पक्ष में तर्क—वयस्क मताधिकार के पक्ष में दिए जाने वाले प्रमुख तर्क निम्नलिखित हैं—

(1) प्रभुसत्ता का स्रोत जनता है, इसलिए सभी को समान रूप से मताधिकार प्राप्त होना चाहिए।

(2) राज्य के कार्यों, कानूनों व नीतियों का प्रभाव सब पर समान रूप से पड़ता है। इसलिए सभी को मताधिकार प्राप्त होना चाहिए।

(3) सभी व्यक्ति समान हैं। सभी को अपने हितों की सुरक्षा के लिए मताधिकार प्राप्त होना चाहिए।

(4) सभी को मताधिकार प्राप्त होने से अल्पसंख्यक भी सरकार में प्रतिनिधित्व प्राप्त कर लेते हैं।

(5) शिक्षा, सम्पत्ति तथा लिंग सम्बन्धी भेदभाव अनुचित है, इसलिए सभी को मताधिकार प्राप्त होना चाहिए।

(6) वयस्क मताधिकार से व्यक्ति सम्मानित अनुभव करते हैं।

(7) नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए वयस्क मताधिकार आवश्यक है।

(8) वयस्क मताधिकार से राजनीतिक उदासीनता नष्ट होती है तथा राजनीतिक जागृति व शिक्षा प्राप्त होती है।

(9) वयस्क मताधिकार राष्ट्र की एकता का प्रतीक है।

(10) वयस्क मताधिकार लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों एवं भावनाओं के अनुकूल है।

प्रश्न 2. भारत जैसे-लोकतान्त्रिक देश के लिए चुनाव के महत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर—लोकतन्त्र में चुनावों का विशेष महत्व है। भारत जैसे विशाल लोकतान्त्रिक देश में चुनावों का और भी महत्व बढ़ जाता है। भारत में चुनाव का महत्व निम्नलिखित है—

(1) चुनाव के द्वारा जनता अपने मनपसन्द प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। वे प्रतिनिधि जो जनता की भावनाओं के अनुरूप कार्य करें तथा कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से जनता के हितों की रक्षा करें।

(2) चुनाव भारतीय राजनीति की दिशा तय करते हैं।

(3) चुनाव भारत में लोकतन्त्र की जड़ों को मजबूत करते हैं, चुनाव लोकतन्त्र की एक अनिवार्य प्रक्रिया है।

(4) चुनावों के द्वारा जनप्रनिधियों को जनता की सेवा के लिए बाध्य किया जाता है, क्योंकि जनप्रतिनिधि ये जानते हैं कि यदि वे अच्छा काम नहीं करेंगे तो जनता उन्हें दोबारा चुनेगी नहीं।

(5) निश्चित समयान्तराल पर चुनाव नई ऊर्जा का संचार करते हैं, देश में नया उत्साह होता है तथा नेताओं द्वारा नई-नई योजनाओं की घोषणा की जाती है।

प्रश्न 3. क्या हमें भारत में मतदाताओं व उम्मीदवारों के लिए कुछ शैक्षणिक योग्यताएँ निर्धारित की जानी चाहिए। अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

उत्तर—उम्मीदवारों की शैक्षिक योग्यता—जब देश की सभी नौकरियों के लिए किसी न किसी प्रकार की शैक्षिक योग्यता आवश्यक है तो विधायक या सांसद जैसे महत्त्वपूर्ण पदों के चुनाव के लिए किसी प्रकार की शैक्षिक योग्यता की जरूरत क्यों नहीं है?

- सभी तरह के काम सिर्फ शैक्षिक योग्यता के आधार पर नहीं होते; जैसे—भारतीय क्रिकेट टीम में चुनाव के लिए डिग्री की नहीं, अच्छा क्रिकेट खेलने की योग्यता आवश्यकता है। इसी प्रकार विधायक या सांसद की सबसे बड़ी योग्यता यह है कि वह अपने क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को समझे, उनकी चिंताओं को समझे एवं उनके हितों का प्रतिनिधित्व करे। वे यह काम कर रहे हैं या नहीं, इसकी परीक्षा उनके लाखों वोटर पाँच साल तक प्रतिदिन लेते हैं।
- अगर शिक्षा या डिग्री की प्रासंगिकता हो भी तो यह जिम्मा लोगों पर छोड़ देना चाहिए कि वे शैक्षिक योग्यता को कितना महत्त्व देते हैं।
- हमारे देश में शैक्षिक योग्यता की शर्त लगाना एक अन्य कारण से भी लोकतंत्र की मूल भावना के खिलाफ होगा। इसका अर्थ होगा देश के अधिकांश लोगों को चुनाव लड़ने के मौलिक अधिकार से वंचित करना; जैसे—यदि उम्मीदवारों के लिए बी०ए०, बी०कॉम० या बी. एस-सी. की स्नातक डिग्री को भी अनिवार्य किया गया तो 90 फीसदी से ज्यादा नागरिक चुनाव लड़ने के अयोग्य हो जाएँगे। उच्च वर्ग में शिक्षित व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक है। यह संविधान लेखन के समय में भी था, परन्तु कमजोर वर्ग के लोगों में शिक्षा का आनुपातिक स्तर कमजोर था।

प्रश्न 4. संरक्षित निर्वाचन क्षेत्र क्या होता है? भारत में इसके अस्तित्व के कारण बताइए।

उत्तर—आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र—हमारे देश का संविधान हर नागरिक को अपना प्रतिनिधि चुनने और जनप्रतिनिधि के तौर पर चुने जाने का अधिकार देता है। परन्तु हमारे संविधान निर्माताओं का यह मानना था, ऐसा सम्भव है कि खुली चुनावी प्रतिद्वन्द्विता में कुछ कमजोर समूहों के लोग लोकसभा व विधानसभाओं में पहुँच न पाएँ। हो सकता है कि चुनाव लड़ने और जीतने हेतु आवश्यक संसाधन, शिक्षा एवं सम्पर्क उनके पास न हो। संसाधनों वाले प्रभावशाली लोग उनको चुनाव जीतने से रोक भी सकते हैं। यदि ऐसा हुआ तो संसद एवं विधानसभा दोनों में ही हमारी आबादी के एक बड़े हिस्से की आवाज दब कर रह जायेगी। इसलिए हमारे लोकतान्त्रिक प्रतिनिधित्व का चरित्र कमजोर हो जाएगा तथा यह व्यवस्था कम लोकतान्त्रिक होगी।

इसी वजह से हमारे संविधान निर्माताओं ने कमजोर वर्गों के लिए आरक्षित चुनाव क्षेत्र की व्यवस्था की है। इसलिए अनुसूचित जातियों के लोगों के लिए कुछ चुनाव क्षेत्र आरक्षित किये गये तो कुछ क्षेत्रों को अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीट से सिर्फ अनुसूचित जाति का ही उम्मीदवार चुनाव लड़ सकता है। इसी प्रकार, अनुसूचित जनजाति चुनाव क्षेत्र से, अनुसूचित जनजाति का उम्मीदवार चुनाव लड़ सकता है। अभी लोकसभा में 84 सीटें अनुसूचित जातियों के लिए और 47 अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। (1 सितम्बर, 2012 की स्थिति) ये सीटें इन वर्गों के आबादी के हिस्से के अनुपात में हैं। इस प्रकार अनुसूचित जाति एवं जनजाति हेतु आरक्षित सीटें किसी दूसरे सामाजिक वर्ग का स्थान नहीं लेती हैं।

कमजोर समूहों के लिए आरक्षण की यह व्यवस्था बाद में जिला और स्थानीय स्तर पर भी लागू की गई। अनेक राज्यों में पंचायत तथा नगर निगम/नगरपालिका चुनाव में अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए सीटें आरक्षित हैं। हालाँकि आरक्षित सीटों का अनुपात राज्यों में उनकी जनसंख्या के आधार पर अलग-अलग होता है। इसी प्रकार पंचायत या नगर निगम/नगरपालिका चुनावों में महिलाओं के लिए 1/3 सीटें आरक्षित की गई हैं।

प्रश्न 5. चुनावी प्रसार क्या होता है? राजनीतिक नेताओं द्वारा प्रयुक्त चुनावी प्रचार के विभिन्न तरीकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—चुनाव अभियान से आशय एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें प्रत्येक उम्मीदवार मतदाताओं को अपने पक्ष में मत देने के लिए सहमत कराने का प्रयास करता है। उम्मीदवारों की अंतिम सूची की घोषणा होना एवं मतदान की तारीख के बीच प्राय: दो सप्ताह का समय चुनाव प्रचार के लिए दिया जाता है। इस अवधि में उम्मीदवार मतदाताओं से संपर्क करते हैं, राजनेता चुनावी सभाओं में भाषण देते हैं और राजनैतिक पार्टियाँ अपने समर्थकों को सक्रिय करती हैं। राजनीतिक दलों के

उम्मीदवार आज घर-घर जाकर या नुक्कड़ सभाओं को करने में ज्यादा यकीन कर रहे हैं। इसी अवधि में अखबार और टीवी चैनलों पर चुनाव से जुड़ी खबरें और बहसें भी होती हैं। अखबारों और स्थानीय चैनलों पर उम्मीदवार अपने पक्ष में विज्ञापन प्रकाशित करते हैं। यह चुनाव अभियान केवल एक-दो सप्ताह का नहीं होता अपितु राजनैतिक दल चुनाव होने के महीनों पहले से ही इसकी तैयारियाँ शुरू कर देते हैं।

चुनाव अभियान के दौरान राजनैतिक पार्टियों द्वारा उठाए गए कुछ सफल नारे इस प्रकार हैं—

(i) इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी ने सन् 1971 के लोकसभा चुनावों में 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया था। इस दौरान पार्टी ने वायदा किया था कि वह सरकार की नीतियों में बदलाव करके सबसे पहले देश से गरीबी हटाएगी।

(ii) सन् 1977 में हुए अगले लोकसभा चुनावों में जनता पार्टी ने नारा दिया—लोकतंत्र बचाओ। पार्टी ने आपातकाल के दौरान हुई ज्यादतियों को समाप्त करने एवं नागरिक आजादी को बहाल करने का वायदा किया। जयप्रकाश नारायण ने विपक्ष को एकजुट करने में अहम भूमिका निभायी।

(iii) वामपंथी दलों ने सन् 1977 में हुए पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में 'जमीन-जोतने वाले को' का नारा दिया था।

(iv) सन् 1983 के आंध्र प्रदेश के विधानसभा चुनावों में तेलुगू देशम पार्टी के नेता एन० टी० रामाराव ने तेलुगू स्वाभिमान का नारा दिया था।

2014 के लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री नरेन्द्र मोदी 'सबका साथ-सबका विकास' नारा दिया था।

●●

4 संस्थाओं की कार्यप्रणाली

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. न्यायपालिका के संबंध में निम्न में से कौन सा कथन गलत है?
   (क) संसद के द्वारा पारित कानून के लिए न्यायिक अनुमोदन आवश्यक है
   (ख) यदि कोई कानून भारतीय संविधान के विपरीत होता है तो न्यायपालिका उसे निष्फल कर सकती है
   (ग) न्यायपालिका, कार्यपालिका से स्वतन्त्र है
   (घ) यदि किसी व्यक्ति के अधिकारों का हनन होता है तो वह न्यायपालिका की शरण ले सकता है।
2. निम्न में से कौन-सी संस्थाएँ देश के विद्यमान कानून में परिवर्तन ला सकती हैं?
   (क) सर्वोच्च न्यायालय (ख) राष्ट्रपति (ग) प्रधानमन्त्री (घ) संसद।
3. देश में राजनीतिक निकायों के अस्तित्व का निम्नलिखित में से कौन सा कारण नहीं है?
   (क) नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए
   (ख) कल्याणकारी योजनाएँ बनाने व लागू करने के लिए
   (ग) जनता को स्वास्थ्य व अन्य सुविधाएँ प्रदान करने के लिए
   (घ) धर्म का उपदेश देने के लिए।
4. भारत में जनता की तरफ से कौन सर्वोच्च राजनीतिक सत्ता का नेतृत्व करता है?
   (क) राष्ट्रपति (ख) प्रधानमंत्री (ग) संसद (घ) सर्वोच्च न्यायालय।
5. निम्न में से क्या भारतीय संसद का हिस्सा नहीं है?
   (क) लोकसभा (ख) राज्यसभा (ग) राष्ट्रपति (घ) उपराष्ट्रपति।
6. हमारे देश में कौन सा सर्वाधिक शक्तिशाली राजनीतिक निकाय है?
   (क) राज्यसभा-उच्च सदन (ख) लोकसभा-निम्न सदन
   (ग) सर्वोच्च न्यायालय (घ) राष्ट्रपति।
7. हमारे देश की निर्णय प्रक्रिया में अन्तिम निर्णय किसका होता है?
   (क) लोक सेवक (ख) मन्त्री (ग) राष्ट्रपति (घ) मुख्य न्यायधीश।
8. भारत के प्रधानमन्त्री को कौन नियुक्त करता है?
   (क) सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायधीश (ख) राष्ट्रपति
   (ग) लोकसभा स्पीकर (घ) इनमें से कोई नहीं।
9. निम्न में से किस विधि के द्वारा जजों को उनके पदों से हटाया जा सकता है?
   (क) संसदीय कानून (ख) महाभियोग (ग) संविधान संशोधन (घ) इनमें से कोई नहीं।
10. देश के विद्यमान कानून में निम्न में से कौनसा राजनीतिक निकाय परिवर्तन कर सकता है?
    (क) सर्वोच्च न्यायालय (ख) राष्ट्रपति (ग) प्रधानमंत्री (घ) संसद।
11. लोकतान्त्रिक संस्थाएँ निकायों पर अधिक बल क्यों देती हैं?
    (क) संस्थाएँ एक अच्छे निर्णय को शीघ्र लेना सरल बनाती हैं।
    (ख) एक बुरे निर्णय की ओर तीव्रता से आगे बढ़ती हैं।

(ग) संस्थाएँ किसी भी निर्णय के सम्बन्ध में विशाल जनसमूह से सलाह लेने का अवसर प्रदान करती हैं।
(घ) विलम्ब के लिये एवं जटिल निर्णयों के लिए।
(ङ) दोनों (क) व (ग)।

12. जनता के प्रतिनिधियों की सभा जो देश के लिए कानून बनाती है—
(क) कार्यपालिका (ख) व्यवस्थापिका (ग) राज्य (घ) सभा।

13. मिली जुली राजनीति ने प्रधानमन्त्री की शक्ति पर बहुत से प्रतिबन्ध लगा दिये हैं। सही कथनों का चयन कीजिए—
(क) मिली जुली सरकार या गठनबन्धन सरकार का प्रधानमन्त्री अपनी इच्छानुसार निर्णय नहीं ले पाता है।
(ख) उसे गठबन्धन के साथी नेताओं व दलों का नेतृत्व करना होता है।
(ग) गठबन्धन सरकार में प्रधानमन्त्री की शक्तियों का उपयोग उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है।
(घ) प्रधानमन्त्री को विभिन्न समूहों व कार्यों के मध्य समायोजन स्थापित करना होता है।
(ङ) विकल्प (क) व (घ) सही हैं।

14. राज्य सभा के सदस्य का कार्यकाल कितना होता है?
(क) 3 वर्ष (ख) 4 वर्ष (ग) 5 वर्ष (घ) 6 वर्ष।

15. कार्यालय ज्ञापन के सम्बन्ध में निम्न में से कौन सा कथन सर्वाधिक सही है?
(क) एक नीति जो सरकारी नौकरियों व शैक्षणिक संस्थाओं में कुछ आरक्षित पदों की घोषणा करती है।
(ख) एक सम्पर्क जो सरकारी नीति व निर्णय को अभिव्यक्त करते हुए उचित सत्ता द्वारा जारी किया जाता है।
(ग) संस्थाओं का एक समूह जो कानूनों को बनाने, लागू करने व उनकी व्याख्या करने की शक्ति रखता है।
(घ) लोगों की एक ऐसी संस्था जो मुख्य नीतियों को लागू करने की सत्ता रखती है।

16. यदि कोई भारत के राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित होता है तो वह निम्न में से कौन सा निर्णय ले सकता है?
(क) दोनों सदनों द्वारा पारित विधेयक को पुनर्विचार हेतु भेज सकता है
(ख) मन्त्रिपरिषद् में अपनी पसन्द को नेता को मनोनीत कर सकता है
(ग) अपनी पसन्द के व्यक्ति को प्रधानमन्त्री नियुक्त कर सकता है
(घ) प्रधानमन्त्री जिसे लोकसभा में बहुमत प्राप्त है, को पद से हटा सकता है।

17. केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद में निम्नलिखित मन्त्रियों को सम्मिलित किया जाता है। सही विकल्पों का चयन कीजिए—
(क) कैबिनेट मंत्री (ख) मुख्यमंत्री
(ग) राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) (घ) राज्य मंत्री
(ङ) विकल्प (क), (ग) व (घ) सही हैं।

18. लोकसभा व राज्यसभा की सदस्य संख्या कितनी है? सही विकल्प का चयन कीजिए—
(क) लोकसभा में 485 तथा राज्यसभा में 265 (ख) लोकसभा में 620 तथा राज्यसभा में 340
(ग) लोकसभा में 460 तथा राज्यसभा में 200 (घ) लोकसभा में 545 तथा राज्यसभा में 245

[**उत्तर—1.** (क), **2.** (घ), **3.** (घ), **4.** (ग), **5.** (घ), **6.** (ख), **7.** (ख), **8.** (ख), **9.** (ख), **10.** (घ), **11.** (ङ), **12.** (ख), **13.** (ग), **14.** (घ), **15.** (घ), **16.** (क), **17.** (ङ), **18.** (घ)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के प्रधानमन्त्री का चुनाव प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा क्यों नहीं किया जाता है?

उत्तर—क्योंकि हमारी संसदीय शासन व्यवस्था में बहुमत दल के नेता को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया जाता है और उसकी नियुक्ति चुनाव के बाद ही की जा सकती है।

प्रश्न 2. मण्डल आयोग का मुख्य प्रावधान क्या था?

उत्तर—पिछड़े वर्गों के लिए सरकारी नौकरियों में तथा सरकारी शिक्षण संस्थाओं में 27 प्रतिशत आरक्षण।

प्रश्न 3. राजनीतिक कार्यपालिका तथा स्थायी कार्यपालिका में क्या अन्तर है?

उत्तर—राजनीतिक कार्यपालिका (नौकरशाही) अवकाश ग्रहण (Retirement) तक पद पर रहते हैं। वस्तुत: ये ही राजनीतिक कार्यपालिका द्वारा निर्मित नीतियों को लागू करते हैं।

प्रश्न 4. कार्यालय ज्ञापन को पारित करने में संसद ने क्या भूमिका निभाई?

उत्तर—सांसदों ने मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की माँग की। ज्ञापन को लागू करने हेतु संसद में व्यापक विचार-विमर्श व वाद-विवाद हुआ। इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री ने भी संसद में अपना निर्णय दिया।

प्रश्न 5. सरकार में न्यायपालिका को स्वतन्त्र रखना क्यों आवश्यक है?

उत्तर—ऐसा इसलिए है क्योंकि न्यायपालिका संविधान की संरक्षक तथा नागरिक अधिकारों की रक्षक है। अत: इसे बिना किसी हस्तक्षेप के स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करना चाहिए।

प्रश्न 6. भारत के मुख्य न्यायधीश की नियुक्ति किस प्रकार की जाती है?

उत्तर—भारत के मुख्य न्यायधीश की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार की सिफारिशों के आधार पर भारत के राष्ट्रपति के द्वारा की जाती है।

प्रश्न 7. वे कौन से तरीके हैं जिनमें राज्यसभा, लोकसभा से अधिक शक्तिशाली हो सकती है?

उत्तर—(i) दो तिहाई बहुमत के द्वारा यह संसद को राज्य सूची के विषय में कानून बनाने का अधिकार दे सकती है। (ii) अखिल भारतीय सेवाओं के सृजन के सम्बन्ध में यह विशेष शक्तियाँ रखती है।

प्रश्न 8. पी. आई. एल. या जनहित याचिका क्या है?

उत्तर—पी. आई एल. का अर्थ है जनता के हितों की सुरक्षा हेतु याचिका प्रस्तुत करना। यह याचिका स्वयं पीड़ित पक्ष द्वारा नहीं वरन् स्वयं न्यायालय द्वारा अथवा किसी अन्य पक्ष द्वारा न्यायालय में प्रस्तुत की जाती है।

प्रश्न 9. प्रधानमंत्री के समक्ष कौन सी प्रमुख बाध्यताएँ रही हैं?

उत्तर—(क) गठबन्धन की सरकार, (ख) स्वतन्त्र निर्णय लेने की अक्षमता एवं (ग) सरकार पर दल का दबाव।

प्रश्न 10. भारतीय न्यायपालिका के प्रमुख कार्य बताइए।

उत्तर—संविधान संरक्षक के रूप में कार्य करना। संविधान की व्याख्या करना एवं राज्यों के मध्य विवाद उत्पन्न होने पर उनका निपटारा करना।

प्रश्न 11. भारतीय न्यायिक व्यवस्था के संगठन का वर्णन कीजिए।

उत्तर—राष्ट्रीय स्तर—सर्वोच्च न्यायालय; राज्य स्तर—उच्च न्यायालय, जिला स्तर—जिला न्यायालय।

प्रश्न 12. हम किस प्रकार यह कह सकते हैं कि भारत में एक एकीकृत न्यायपालिका है?

उत्तर—जिला न्यायालय में दी गई अपील उच्च न्यायालय जाती है तथा उच्च न्यायालय से यह सर्वोच्च न्यायालय जाती है।

प्रश्न 13. राष्ट्रपति अपने विवेक का प्रयोग कब कर सकता है?

उत्तर—राष्ट्रपति आपातकाल के समय तथा उस समय जबकि किसी भी राजनीतिक दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होता है।

प्रश्न 14. गठबन्धन सरकार क्या है?

उत्तर—यह एक ऐसी सरकार है जिसमें कई राजनैतिक दल सहयोग करते हैं। गठबन्धन सरकार बनाने का प्रमुख कारण यह है कि संसद में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता है। राष्ट्रीय आपातकाल या संकट के समय भी गठबन्धन सरकार का गठन किया जा सकता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. धन विधेयक एवं साधारण विधेयक के सम्बन्ध में लोक सभा की शक्तियों व कार्यों की तुलना कीजिए।

उत्तर—लोक सभा में धन विधेयक पहले प्रस्तुत किए जाते हैं जबकि राज्य सभा में ऐसा नहीं होता है। यदि धन विधेयक राजसभा द्वारा पास नहीं किया जाता है तो संसद द्वारा पास विधेयक मान्य होता है। साधारण विधेयकों के सम्बन्ध में दोनों सदनों की शक्ति समान है। परन्तु दोनों सदनों में मतभेद होने पर उनके संयुक्त अधिवेशन में निर्णय लिया जाता है। लोक सभा की सदस्य संख्या राज्य सभा की सदस्य संख्या से अधिक होने के कारण अन्तिम निर्णय लोकसभा के पक्ष में होता है।

प्रश्न 2. 'सामूहिक उत्तरदायित्व' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—मन्त्रिमण्डल के सदस्य एक टीम के रूप में सामूहिक उत्तरदायित्व के तहत कार्य करते हैं। चाहे किसी विषय पर कैबिनेट मन्त्री भिन्न-भिन्न राय रखते हैं परन्तु एक बार मन्त्रिमण्डल के निर्णय लिए जाने पर सभी मन्त्रियों को निर्णय पर सहमति देनी होती है। कोई भी मन्त्री सामूहिक निर्णय की आलोचना नहीं कर सकता है। चाहे वह सरकार का दूसरे मन्त्रालय से सम्बन्धित निर्णय हो।

प्रश्न 3. भारतीय संविधान ने किस प्रकार न्यायपालिका की स्वतन्त्रता स्थापित की है?

उत्तर—भारतीय संविधान के अनुसार, न्यायपालिका, विधायिका या कार्यपालिका के नियन्त्रण में नहीं है। न्यायाधीश सरकार के निर्देश या सत्ताधारी पार्टी के अनुसार कार्य नहीं करते। इसी कारण वह विधायिका और कार्यपालिका के नियन्त्रण में नहीं होती। न्यायाधीशों के वेतन तथा भत्ते भारत की संचित निधि से दिये जाते हैं। आपातकाल को छोड़कर उनके वेतन तथा भत्तों में कमी नहीं की जा सकती। व्यावहारिक रूप में न्यायाधीशों की नियुक्ति सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, वरिष्ठ न्यायाधीश करते हैं। एक बार किसी व्यक्ति को सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त हो जाने पर उसे उसके पद से महाभियोग की क्रिया द्वारा ही हटाया जा सकता है। अर्थात् उसे दोनों सदनों के अलग-अलग दो तिहाई बहुमत से ही हटाया जा सकता है।

प्रश्न 4. कैबिनेट तथा मंत्रिपरिषद् के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कैबिनेट, कैबिनेट मन्त्रियों का समूह होता है जिसे प्रधानमन्त्री की सलाह पर राष्ट्रपति नियुक्त करता है जो मन्त्रिपरिषद् के नाम पर निर्णय करने के लिए बैठक करते हैं। इस प्रकार कैबिनेट मन्त्रिपरिषद् का शीर्ष समूह होता है। इसमें लगभग 20 मन्त्री होते हैं। जबकि मन्त्रिपरिषद् उस निकाय का सरकारी नाम है जिसमें कैबिनेट मन्त्री, स्वतन्त्र प्रभार वाले राज्य मन्त्री शामिल होते हैं। इसमें साधारण तथा विभिन्न स्तर के 60 से 80 मन्त्री होते हैं।

प्रश्न 5. संसदीय सरकार को कई बार प्रधानमन्त्रीय सरकार क्यों कह दिया जाता है?

उत्तर—प्रधानमन्त्री लोकसभा में बहुमत दल का नेता होता है। राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री की सलाह पर अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है तथा कभी भी किसी भी मन्त्री को प्रधानमन्त्री अपनी इच्छानुसार अपनी सिफारिश पर राष्ट्रपति द्वारा हटवा सकता है। नीतिगत फैसले कैबिनेट द्वारा लिए जाते हैं। कैबिनेट मंत्रियों की राय और विचार अलग हो सकते हैं किन्तु सबको कैबिनेट द्वारा लिए गये निर्णय की जिम्मेदारी लेनी होती है। इस प्रकार संसदीय सरकार में प्रधानमन्त्री सर्वशक्तिमान व्यक्ति होता है। इसी कारण कभी-कभी संसदीय सरकार को प्रधानमन्त्रीय सरकार कह दिया जाता है।

प्रश्न 6. आरक्षण पर प्रकाशित कार्यालय ज्ञापन के सम्बन्ध में निम्नलिखित के द्वारा क्या भूमिका निभाई गई?
(क) संयुक्त सचिव, (ख) वी. पी. सिंह, (ग) बी. पी. मण्डल, (घ) संसद।

उत्तर—(क) संयुक्त सचिव—संयुक्त सचिव ने आदेश जारी करके घोषणा को लागू किया।

(ख) वी. पी. सिंह—वी. पी. सिंह उस समय के प्रधानमन्त्री थे जब उन्होंने आरक्षण के प्रस्ताव को संसद में पेश किया।

(ग) बी. पी. मण्डल—बी. पी. मण्डल आयोग के अध्यक्ष थे जिन्होंने अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 27% आरक्षण की सिफारिश की थी।

(घ) संसद—संसद ने आरक्षण के प्रस्ताव को बहुमत से पारित किया था।

प्रश्न 7. भारत के राष्ट्रपति को क्यों एकमात्र औपचारिक प्रधान माना जाता है?

उत्तर—राष्ट्रपति देश का संवैधानिक प्रमुख है जैसे ब्रिटेन का राजा होता है। वह अपने अधिकारों का प्रयोग केवल मन्त्रिपरिषद् की सलाह से ही कर सकता है। संविधान के 42वें संशोधन में यह व्यवस्था कर दी गई थी कि राष्ट्रपति मन्त्रिपरिषद् की सलाह मानने के लिए बाध्य होगा। इसके अतिरिक्त संविधान के 44वें संशोधन-अधिनियम में कहा गया है कि राष्ट्रपति मन्त्रिपरिषद् की सिफारिश को पुनर्विचार के लिए वापस लौटा सकता है। मन्त्रिपरिषद् द्वारा पुनः विचार करने के बाद राष्ट्रपति से जो सिफारिश की जाएगी, उसे राष्ट्रपति को अवश्य मानना पड़ेगा।

प्रश्न 8. हमें राजनीतिक संस्थाओं की आवश्यकता क्यों होती है? समझाइए।

उत्तर—लोकतान्त्रिक सरकारों के काम राजनीतिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। सरकारी कार्य सरकारी आदेश जारी करने मात्र से ही समाप्त नहीं हो जाता है वरन् विभिन्न शासकीय संस्थाओं को उन्हें कार्यरूप में परिणत करने के लिए भी सक्रिय होना पड़ता है। उदाहरणार्थ, सरकार पर नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और सबको शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी होती है। इसका अर्थ यह है कि जनकल्याणकारी कार्य सरकार करती है। वह कर एकत्रित करके इसे नौकरशाही, सेना, पुलिस तथा अन्य विकास कार्यक्रमों पर व्यय करती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कल्याणकारी योजनाएँ बनाकर उन्हें लागू करती है। कुछ व्यक्तियों को इन गतिविधियों को चलाने के लिए निर्णय करना होता है तथा कुछ लोगों को इन्हें क्रियान्वित कराना होता है। जो लोग इन कल्याणकारी कार्यक्रमों को लागू करते हैं उन्हें नौकरशाह कहते हैं। नौकरशाही स्थायी होती है। अतः सरकार बदलने से योजनाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। विभिन्न देशों में इसी प्रकार की व्यवस्था अपनायी जाती है। कोई भी लोकतन्त्र तभी सही रूप से काम करता है, जब शासकीय संस्थाएँ अपने उतरदायित्व को अच्छी तरह निभाती हैं। किसी भी देश के संविधान में प्रत्येक संस्था के अधिकारों और कार्यों के बारे में कुछ नियमों का वर्णन होता है। दिए गए उदाहरण में हमने इस तरह की विभिन्न संस्थाओं को काम करते देखा।

- प्रधानमन्त्री एवं कैबिनेट ऐसी संस्थाएँ हैं जो सभी महत्त्वपूर्ण नीतिगत निर्णय करती हैं।
- मन्त्रियों द्वारा लिए गए निर्णयों को लागू करने के उपायों के लिए एक निकाय के रूप में नौकरशाह (Bureaucrates) जिम्मेदार होते हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय वह संस्था है, जहाँ नागरिक और सरकार के मध्य उत्पन्न विवाद सुलझाए जाते हैं।

प्रश्न 9. हमें संसद की आवश्यकता क्यों है? समझाइए।

उत्तर—शासकीय संस्थाओं में व्यवस्थापिका अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत में भी एक संघीय व्यवस्थापिका है जिसे संसद कहा जाता है। भारतीय संसद के दो सदन हैं—प्रथम सदन लोकसभा है जिसे निम्न सदन भी कहा जाता है। लोकसभा के सदस्यों का चुनाव प्रत्यक्ष ढंग से होता है तथा इसमें जनता के प्रतिनिधि चुनकर आते हैं। अतः इसे प्रतिनिधि सभा भी कहा जाता है। राज्यसभा संसद का दूसरा सदन है जिसे उच्च सदन भी कहा जाता है। राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष ढंग से होता है। राज्य की विधानसभाओं के सदस्य राज्यसभा के सदस्यों को निर्वाचित करते हैं, जबकि 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं। राज्यसभा एक स्थायी सदन है, यह कभी भंग नहीं होती, लेकिन इसके 1/3 सदस्य प्रत्येक 2 वर्ष पश्चात् रिटायर होते रहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक सदस्य का कार्यकाल 6 वर्ष होता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति भी संसद का एक अंग होता है। इस प्रकार लोकसभा, राज्यसभा और राष्ट्रपति तीनों मिलकर संसद कहलाते हैं। लोकसभा का अधिवेशन बुलाने एवं लोकसभा को विघटित करने का अधिकार राष्ट्रपति को प्राप्त है। राष्ट्रपति ही संसद द्वारा पारित विधेयकों पर अपने हस्ताक्षर करता है, इसके बाद ही विधेयक कानून बनता है। भारत में संसदीय सरकार है; अतः शासकीय संस्थाओं में सबसे अधिक शक्तिशाली संस्था संसद ही है। मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति ही उत्तरदायी होती है। लोकसभा कई प्रकार से मंत्रिपरिषद् पर नियंत्रण रखती है।

प्रश्न 10. मन्त्रिपरिषद् की विभिन्न श्रेणियाँ बताइए।

उत्तर—मन्त्रिपरिषद् उस निकाय का सरकारी नाम है जिसमें निम्नलिखित मन्त्री सम्मिलित होते हैं एवं इसमें साधारणतया विभिन्न स्तरों के 60 से 80 मन्त्री होते हैं। मंत्रिपरिषद में मंत्रियों की निम्नलिखित तीन श्रेणियाँ होती हैं—

- **'कैबिनेट मन्त्री'** साधारणतः सत्ताधारी पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा अनुभवी एवं योग्य होते हैं। कैबिनेट मन्त्री मन्त्रिपरिषद् के नाम पर निर्णय करने के लिए बैठक करते हैं। इस प्रकार कैबिनेट मन्त्रिपरिषद् का शीर्ष समूह होता है, जिसमें लगभग 20 मन्त्री होते हैं।
- **'स्वतन्त्र प्रभार वाले राज्यमन्त्री'** साधारणतः छोटे मन्त्रालयों के प्रभारी होते हैं। ये विशेष रूप से आमन्त्रित किए जाने पर ही कैबिनेट की बैठकों में भाग लेते हैं।
- **'राज्यमन्त्री'** अपने विभाग के कैबिनेट मन्त्रियों से जुड़े होते हैं एवं उनकी सहायता करते हैं। नए और कम अनुभवी नेता इस श्रेणी में आते हैं।

प्रश्न 11. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में प्रमुख निर्णयकर्त्ता कौन हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारतीय राजनीति में प्रमुख निर्णयकर्त्ता निम्नलिखित हैं—

(1) सर्वोच्च न्यायालय—सर्वोच्च न्यायालय संसद द्वारा पारित कानून की वैधता को देखता है।

(2) कैबिनेट—कैबिनेट किसी कानून पर विचार विमर्श कर उसे संसद में पेश करता है।

(3) राष्ट्रपति—राष्ट्रति संसद द्वारा पास कानून को अध्यादेश जारी करता है।

(4) सरकारी अधिकारी—आदेश जारी करके घोषणा को लागू किया जाता है।

प्रश्न 12. देश में एक प्रमुख नीति निर्णय कैसे लिया जाता है? समझाइए।

उत्तर—सरकारी नीतिगत निर्णय के लिए एक प्रक्रिया अपनाई जाती है। इस प्रक्रिया के तहत सरकार के एक विभाग या एक व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा ही सारे निर्णय नहीं लिए जाते हैं वरन् सबसे पहले केन्द्रीय मन्त्रिमंडल यह निर्णय लेता है कि जनकल्याण के हित में कौन-सा कानून बनाया जाए। इसके लिए एक प्रस्ताव तैयार किया जाता है जिसे विधेयक कहते हैं। इस विधेयक को संसद की स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जाता है। विचार-विमर्श के बाद जब विधेयक संसद द्वारा पारित हो जाता है, तब राष्ट्रपति के पास स्वीकृति के लिए भेजा जाता है और जब राष्ट्रपति उस पर हस्ताक्षर कर देते हैं, तब वह कानून बन जाता है। संसद में कानून-निर्माण की क्या प्रक्रिया है? यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सरकार द्वारा निर्णय लेने में कार्यपालिका और विधायिका दोनों संस्थाओं की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जब कानून बन जाता है, तब कार्यपालिका को अधिक सक्रिय होना पड़ता है; क्योंकि कानून के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व कार्यपालिका का ही है। कानून का सही क्रियान्वयन नहीं होने पर अथवा कानून का उल्लंघन किए जाने पर सम्बन्धित व्यक्ति न्यायपालिका के नियन्त्रण में आ जाते हैं। यदि कानून संविधान का उल्लंघन करता है तो न्यायिक पुनर्विलोकन (Judicial Review) का

अधिकार न्यायपालिका को प्राप्त है। इस प्रकार, नीतिगत निर्णय और उसके सही क्रियान्वयन के लिए तीनों संस्थाएँ एक साथ उत्तरदायी हैं।

प्रश्न 13. आप समाज में सरकार को आवश्यक क्यों मानते हैं?

उत्तर—समाज को व्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए सरकार आवश्यक है। पुरातन काल से ही यह व्यवस्था समाज में पायी जाती रही है। प्राचीन समय में राजशाही शासन व्यवस्था थी जो लोकतान्त्रिक सरकारों में परिवर्तित हो गई। सरकार के द्वारा व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं समानता की सुरक्षा रहती है तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को उन्नति के समान अवसर उपलब्ध होते हैं। सरकार की अनुपस्थिति में समाज में अराजक स्थिति उत्पन्न हो जायेगी, जिससे अव्यवस्था का माहौल बन जायेगा, जिससे मानवीय सम्बन्ध समाप्त हो जायेंगे।

प्रश्न 14. "संसद का निरन्तर पतन हो रहा है।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं?

उत्तर—आज लोकतन्त्र में सांसद संसदीय मर्यादाओं का सही ढंग से पालन नहीं कर रहे हैं। आये दिन संसद की बैठकों में कई-कई घण्टे तथा कभी-कभी कई-कई दिन हंगामें में नष्ट हो जाते हैं। कई सांसद अभद्र भाषा का प्रयोग करने लगते हैं। कभी-कभी हाथापाई की नौबत भी आ जाती है। इन सम्पूर्ण घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि देश में संसद की गरिमा को ठेस पहुँच रही है। ज्यादातर बैठकों में सदस्य कम समय के लिए ही उपस्थिति दर्ज करते हैं। संसदीय लोकतन्त्र में आने वाली ये बाधाएँ उसे निरन्तर पतन की ओर ले जा रही हैं। इसे रोकना ही होगा। जनता का खून पसीने से पैदा किया हुआ धन सांसद व्यर्थ में ही नष्ट करते हैं।

प्रश्न 15. "एक बड़ी संख्या में संस्थाएँ हैं जो सरकार की कार्यप्रणाली में व्यवधान उत्पन्न करती हैं।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं?

उत्तर—संस्थाओं के साथ काम करना सरल नहीं है; क्योंकि संस्थाओं के साथ नियम-कानून जुड़े होते हैं और इनसे नेताओं के हाथ भी बँध सकते हैं। संस्थाओं के कामकाज में कुछ बैठकें, कुछ समितियाँ और कुछ रूटीन काम होता है। इनके कारण अक्सर काम में देरी और परेशानियाँ होती हैं, इसीलिए संस्थाओं के साथ कामकाज में परेशानी महसूस की जा सकती है। ऐसे में यह भी कहा जा सकता है कि क्यों न एक ही व्यक्ति सारे फैसले ले तो ज्यादा बेहतर होगा। नियम-कानून और बैठकों की क्या आवश्यकता है? पर यह सोच लोकतन्त्र की बुनियादी भावना के अनुकूल नहीं है। संस्थाओं के कामकाज के तरीकों से जो कुछ परेशानियाँ होती हैं या थोड़ा समय लगता है, वह भी कई मायने में उपयोगी होता है; क्योंकि किसी भी फैसले के पहले अनेक लोगों से राय-विचार करने का अवसर मिल जाता है। संस्थाओं के कारण एक अच्छा फैसला शीघ्र करना आसान नहीं होता, लेकिन संस्थायें गलत फैसला भी जल्दी ले पाना मुश्किल बना देती हैं। इसी कारण लोकतान्त्रिक सरकारों को इन संस्थाओं की आवश्यकता प्रतीत होती है।

प्रश्न 16. तुमने अपने दिन-प्रतिदिन के पारिवारिक जीवन में सामूहिक उत्तरदायित्व की व्यवस्था से क्या शिक्षा ग्रहण की है?

उत्तर—सामूहिक उत्तरदायित्व से परिवार सरलतापूर्वक संचालित होता है। परिवार में एक बार निर्णय हो जाने पर यदि कोई परिवार का सदस्य उसकी आलोचना शुरू कर देता है तो परिवार के टूटने की सम्भावना उत्पन्न हो जाती है। आर्थिक विषयों पर लिए गये निर्णयों में यदि लाभ या हानि की स्थिति उत्पन्न होती है तो सभी सदस्यों को उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। टीका टिप्पणी करने पर परिवार में कलह उत्पन्न हो जाती है। हालांकि वर्तमान में संयुक्त परिवारों की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है। उसका केवल एक ही कारण है सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना की कमी। इस कमी के कारण एकल परिवारों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

प्रश्न 17. एक संस्था के रूप में न्यायपालिका की दिन-प्रतिदिन के जीवन में क्या प्रासंगिकता है?

उत्तर—न्यायपालिका नागरिकों के मौलिक अधिकारों तथा स्वतन्त्रता के रक्षक के रूप में कार्य करती है। नागरिकों को संविधान से मिले अपने अधिकारों के उल्लंघन के मामले में न्याय पाने के लिए अदालतों में जाने का अधिकार है। अदालतों ने सार्वजनिक हित और मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए विभिन्न फैसले और निर्देश दिए हैं। सरकार की कार्यवाहियों से जनहित को ठेस पहुँचने की स्थिति में कोई भी व्यक्ति न्यायालय में जा सकता है। इसे जनहित याचिका कहते हैं। अदालतें सरकार को निर्णय करने की शक्ति के दुरुपयोग से रोकने के लिए हस्तक्षेप करती हैं तथा सरकारी अधिकारियों को भ्रष्ट आचरण से रोकती हैं। इसी कारण न्यायपालिका दिन-प्रतिदिन के जीवन में प्रासंगिक है।

प्रश्न 18. क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि प्रधानमंत्री की संस्था गठबन्धन सरकार में कमजोर हो चुकी है?

उत्तर—गठबन्धन सरकारें विभिन्न विचारधारा वाली राजनैतिक पार्टियों के गठजोड़ से बनती हैं। एक सामान्य कार्यक्रम पर उनका समझौता होता है। अत: ऐसी स्थितियों में प्रधानमन्त्री की स्थिति कमजोर होती है। उसे विभिन्न दलों के नेताओं को सन्तुष्ट करते हुए अपनी सरकार का संचालन करना पड़ता है। प्रधानमन्त्री दबाव में कार्य करता है। यदि ऐसा नहीं करेगा तो

उसकी सरकार गिरने की सम्भावना बनी रहेगी। यह अनुभव के आधार पर देखा गया है कि गठबन्धन सरकारें ज्यादा समय तक टिक नहीं पाती हैं। उनका पतन लगभग अनिवार्य होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संसद की शक्तियों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर—उसके उपरान्त प्रधानमन्त्री अपने मन्त्रिमण्डल का गठन करता है और मन्त्रियों को उनकी योग्यता, क्षमता एवं कार्यकुशलता [illegible] महत्वपूर्ण कार्य करने पड़ते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. कानून-निर्माण सम्बन्धी कार्य—संसद का सर्वप्रथम और महत्वपूर्ण कार्य देश के लिए कानूनों का निर्माण करना है। अत: संसद को नए कानून बनाने, अनावश्यक कानूनों को समाप्त करने या कानूनों में संशोधन आदि करने का अधिकार है, परन्तु इस सम्बन्ध में संसद की शक्तियों को संविधान द्वारा निश्चित किया गया है।

2. नीति-निर्धारण सम्बन्धी अधिकार—भारत सरकार की गृह-नीति और विदेश-नीति संसद ही निर्धारित करती है। युद्ध, सन्धि आदि के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय भी संसद द्वारा ही लिया जाता है।

3. कार्यपालिका पर नियन्त्रण—केन्द्रीय कार्यपालिका की वास्तविक शक्ति मन्त्रिपरिषद् के हाथ में रहती है और मन्त्रिपरिषद् लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है। इस दृष्टि से संसद का कोई भी सदस्य किसी मन्त्री से कोई भी आवश्यक सूचना प्राप्त कर सकता है। संसद, सरकार की नीतियों और कार्यों की आलोचना करके उस पर नियन्त्रण रखती है। संसद विभिन्न तरीकों से सरकार पर पूर्ण अधिकार व नियन्त्रण रखती है। संसद प्रश्न तथा पूरक प्रश्न पूछकर, काम रोको, निन्दा एवं स्थगन प्रस्ताव पारित करके, कटौती प्रस्ताव पारित करके तथा अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से मन्त्रिमण्डल पर नियन्त्रण रखती है। अविश्वास प्रस्ताव द्वारा मन्त्रिपरिषद् को अपदस्थ करने का अधिकार केवल लोकसभा को प्राप्त है, राज्यसभा को यह अधिकार प्राप्त नहीं है।

4. वित्तीय अधिकार—सरकार की आय-व्यय का वार्षिक बजट संसद ही पारित करती है। नए कर लगाना, अनावश्यक कर समाप्त करना, करों की दर में वृद्धि या कमी करना आदि सभी का अधिकार संसद को दिया गया है। संसद की अनुमति के बिना सरकार न तो नागरिकों पर कोई कर लगा सकती है और न ही संसद की स्वीकृति के बिना कोई व्यय कर सकती है।

5. न्याय सम्बन्धी अधिकार—संसद को न्याय सम्बन्धी महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हैं। यदि राष्ट्रपति संविधान के विरुद्ध आचरण करे अथवा संविधान का उल्लेख करे तो संसद उसके विरुद्ध महाभियोग का प्रस्ताव पारित करके, उसे अपदस्थ कर सकती है। संसद अपने प्रस्ताव द्वारा राष्ट्रपति से अनुरोध करके अयोग्य और भ्रष्ट न्यायाधीशों को भी अपदस्थ कर सकती है।

6. संविधान में संशोधन का अधिकार—भारतीय संविधान में संशोधन करने का अधिकार संविधान-प्रदत्त प्रक्रियाओं के अन्तर्गत संसद को ही प्रदान किया गया है।

7. निर्वाचन सम्बन्धी अधिकार—संसद के सदस्य एवं राज्यों तथा संघ-शासित राज्य-क्षेत्रों की विधानसभाओं के सदस्य मिलकर राष्ट्रपति का चुनाव करते हैं तथा संसद के दोनों सदनों के सदस्य उपराष्ट्रपति का निर्वाचन करते हैं।

8. अन्य अधिकार एवं कार्य—(i) राज्यों के निवेदन पर संसद उन राज्यों में विधानपरिषद् की स्थापना कर सकती है या उसे समाप्त कर सकती है।

(ii) संसद को राज्यों के नाम बदलने, उनकी सीमाओं में परिवर्तन करने तथा नया राज्य बनाने का भी अधिकार है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि संसद की शक्तियाँ बहुत व्यापक हैं। संविधान के उपबन्धों के अन्तर्गत संसद पूर्ण रूप से सम्प्रभु है। संसद को न केवल विधायी शक्तियाँ ही प्राप्त हैं वरन् कार्यपालिका एवं वित्तीय क्षेत्र में भी उसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावकारी शक्तियाँ प्रदान की गई हैं।

प्रश्न 2. भारतीय प्रधानमन्त्री की शक्तियों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर—प्रधानमन्त्री ही आन्तरिक प्रशासन का संचालन के साथ-साथ विदेशों से सम्बन्धों के निर्धारण एवं संचालन के लिए उत्तरदायी हैं। सम्पूर्ण देश का भविष्य प्रधानमन्त्री की नीतियों तथा निर्णयों पर ही आधारित होता है।

प्रधानमन्त्री के कार्य एवं शक्तियाँ (दायित्व)

प्रधानमन्त्री के कार्यों एवं शक्तियों को अग्रलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है—

1. मन्त्रिपरिषद् का निर्माता—राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करता है। तत्पश्चात् प्रधानमन्त्री अपने मन्त्रिमण्डल के सदस्यों के नामों की सूची राष्ट्रपति के पास भेजता है। सामान्यत: राष्ट्रपति इस सूची को अपनी स्वीकृति प्रदान कर देता है। केन्द्र की विधायिका को संसद कहते हैं। यह सरकार का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है, क्योंकि संसद के सदस्य

के आधार पर विभागों का वितरण करता है। इस सम्बन्ध में वह कोई भी निर्णय लेने में पूर्ण रूप स्वतन्त्र होता है। मन्त्रिमण्डल के सदस्यों की संख्या किसी भी स्थिति में लोकसभा की कुल सदस्य संख्या के 15% से अधिक नहीं हो सकती। उसे मन्त्रिपरिषद् का निर्माता कहा जाता है। प्रधानमन्त्री की मन्त्रिपरिषद् में स्थिति के सम्बन्ध में अंग्रेज राजनीतिज्ञ लॉर्ड मार्ले का यह कथन सही है—"प्रधानमन्त्री मन्त्रिमण्डल के वृत्तखण्ड का मुख्य पत्थर है।"

2. कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान—देश की वास्तविक कार्यपालिका-शक्ति मन्त्रिपरिषद् में निहित होती है और मन्त्रिपरिषद् का प्रधानमन्त्री होता है। इस प्रकार संघीय कार्यपालिका या सरकार का वास्तविक प्रधान प्रधानमन्त्री ही होता है। राष्ट्रपति तो नाममात्र का अध्यक्ष होता है।

3. प्रशासन का प्रधान प्रबन्धक—प्रधानमन्त्री एक प्रकार से देश के शासन का प्रधान प्रबन्धक होता है, क्योंकि वही देश के शासन को विभिन्न प्रशासनिक विभागों में विभाजित करता है और उन विभागों का उत्तरदायित्व स्वविवेक के आधार पर विभिन्न मन्त्रियों को सौंपता है। देश के शासन-संचालन से सम्बन्धित नीतियों को भी वही निर्धारित करता है।

4. मन्त्रिमण्डल का अध्यक्ष—प्रधानमन्त्री मन्त्रिमण्डल का अध्यक्ष होता है और वही मन्त्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता तथा उनका संचालन करता है।

5. मन्त्रिपरिषद् और राष्ट्रपति के बीच सम्पर्क सूत्र—प्रधानमन्त्री राष्ट्रपति तथा मन्त्रिमण्डल दोनों के मध्य प्रमुख कड़ी के रूप में कार्य करता है। उसी के द्वारा मन्त्रिमण्डल की नीतियों, निर्णयों आदि की सूचना राष्ट्रपति तक पहुँचती है। राष्ट्रपति के निर्णय मन्त्रियों तक पहुँचाना, राष्ट्रपति को विभिन्न सन्दर्भों में परामर्श देना एवं समस्त मन्त्रालयों की सूचना राष्ट्रपति तक पहुँचाना आदि महत्वपूर्ण कार्यों को प्रधानमन्त्री ही करता है।

6. लोकप्रिय सदन का नेता—प्राय: प्रधानमन्त्री लोकप्रिय सदन का नेता होता है लेकिन ऐसा होना कानूनी बाध्यता नहीं है।

प्रश्न 3. लोकतन्त्रत्र में किस प्रक्रिया के द्वारा प्रमुख निर्णय लिए जाते हैं?

उत्तर—इस प्रकार स्पष्ट है कि इस ज्ञापन पर कोई अकेला अधिकारी हस्ताक्षर नहीं कर सकता अर्थात् अधिकारी स्वयं इतना बड़ा फैसला नहीं ले सकता। अवश्य ही वह अपने मन्त्री द्वारा दिए गए निर्देशों को ही लागू कर सकता है। कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग के मन्त्री भी अकेले यह निर्णय नहीं ले सकते, अर्थात् इतने बड़े निर्णय में देश के सम्बन्धित प्रमुख अधिकारी शामिल होते हैं। अब पुन: इन प्रमुख बिन्दुओं पर सरसरी नजर डालते हैं—

राष्ट्रपति राष्ट्राध्यक्ष होता है और औपचारिक रूप से देश का सबसे बड़ा अधिकारी होता है।

संघीय **सरकार** का प्रमुख तत्कालीन प्रधानमन्त्री ही होता है और सरकार की ओर से अधिकांश अधिकारों का प्रयोग वही करता है।

राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री की सिफारिश पर मन्त्रियों को नियुक्त करता है। इनसे बनने वाले मन्त्रिमण्डल की बैठकों में ही राजकाज से जुड़े अधिकांश निर्णय लिए जाते हैं।

संसद के दो सदन होते हैं—लोकसभा और राज्यसभा। प्रधानमन्त्री को लोकसभा के सदस्यों के बहुमत का समर्थन प्राप्त होना आवश्यक है।

सन् 1979 में भारत सरकार ने द्वितीय पिछड़ी जाति आयोग गठित किया जिसकी अध्यक्षता बी. पी. मण्डल ने की थी और इसी कारण इसे आमतौर पर मण्डल आयोग कहते हैं। इसे भारत में सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की पहचान के लिए मापदण्ड तय करने और उनका पिछड़ापन दूर करने के उपाय बताने की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस आयोग ने सन् 1980 में अपनी सिफारिशें दीं। आयोग द्वारा सुझाए गए उपायों में एक सिफारिश थी—सरकारी नौकरियों में सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण देना। इस रिपोर्ट और उसकी सिफारिशों पर संसद में बहस की।

अनेक वर्षों तक कई पार्टियों और सांसद इसे लागू करने की माँग करते रहे, फिर सन् 1989 के लोकसभा चुनाव सम्पन्न हुए। जनता दल ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में वादा किया कि सत्ता में आने पर वह मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करेगा। चुनाव के बाद जनता दल की ही सरकार बनी और इसके नेता वी. पी. सिंह प्रधानमन्त्री बने। इसके बाद अनेक घटनाएँ घटित हुईं—

नवगठित सरकार ने संसद में राष्ट्रपति के भाषण के माध्यम से मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू करने की अपनी मंशा की घोषणा की।

6 अगस्त, 1990 को केन्द्रीय कैबिनेट की बैठक में इसके बारे में एक औपचारिक निर्णय लिया गया।

अगले दिन प्रधानमन्त्री वी. पी. सिंह ने एक बयान के माध्यम से इस निर्णय के बारे में संसद के दोनों सदनों को अवगत कराया।

कैबिनेट के फैसले को कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग को भेज दिया गया और विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने कैबिनेट के निर्णय के मुताबिक एक आदेश तैयार किया एवं मन्त्री की स्वीकृति केन्द्रीय सरकार की तरफ से ली। एक अधिकारी ने उस आदेश पर हस्ताक्षर किए और इस तरह 13 अगस्त, 1990 को ओ. एम. नं. 36012/31/90 को तैयार किया गया।

प्रश्न 4. लोकतन्त्र में स्थायी कार्यपालिका की तुलना में राजनीतिक कार्यपालिका अधिक शक्तिशाली क्यों है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लोकतान्त्रिक देश में कार्यपालिका के दो भाग होते हैं। इनमें से जनता द्वारा निश्चित अवधि तक के लिए निर्वाचित लोगों को राजनैतिक कार्यपालिका कहते हैं। ये राजनैतिक व्यक्ति होते हैं, जो बड़े फैसले करते हैं। दूसरी ओर जिन्हें लम्बे समय के लिए नियुक्त किया जाता है, उन्हें स्थायी कार्यपालिका या **प्रशासनिक सेवक** (लोक सेवक) कहते हैं। सेवा आयोग द्वारा केन्द्र में व राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा राज्य में लोक सेवकों की भर्ती की जाती है। इस प्रकार लोक सेवाओं में काम करने वाले लोगों को लोक सेवक (Civil Servants) या नौकरशाह कहते हैं। वे सत्ताधारी पार्टी के बदलने पर भी अपने पदों पर बने रहते हैं। ये अधिकारी राजनैतिक कार्यपालिका के अंतर्गत काम करते हैं एवं दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में उनकी सहायता करते हैं। इनसे आशा की जाती है कि ये प्रत्येक सरकार में अपने कार्य को निष्पक्षता और ईमानदारी के साथ व उत्साहपूर्वक करेंगे।

राजनैतिक कार्यपालक को गैर-राजनैतिक कार्यपालक (स्थायी कार्यपालक) से अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं तथा मन्त्री नौकरशाह से अधिक प्रभावशाली भी होते हैं। हालांकि नौकरशाह अधिक शिक्षित और उसे विषय की जानकारी भी अधिक होती है और वित्त मन्त्रालय में काम करने वाले सलाहकारों को अर्थशास्त्र की जानकारी वित्त मन्त्री से अधिक हो सकती है, इसके अतिरिक्त रक्षा, उद्योग, स्वास्थ्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खान आदि मन्त्रालय में ऐसा होना आम बात है, फिर भी इन मामलों में अन्तिम निर्णय करने का अधिकार मन्त्रियों को ही होता है; क्योंकि लोकतन्त्र में लोगों की इच्छा ही सर्वोपरि होती है। साधारणतया मंत्री इतने शिक्षित और विषय के विशेषज्ञ नहीं होते हैं अतः वे नौकरशाहों की सलाह मान लेते हैं। वास्तव में नौकरशाही ही असली कार्यपालिका होती है। जो सभी नीतिगत निर्णयों को व्यावहारिक रूप में लागू करती है। मंत्री अपने फैसले के नतीजे के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होता है। इसी वजह से मन्त्री ही समस्त निर्णय करता है एवं मन्त्री ही उस ढाँचे और उद्देश्यों को तय करता है जिसमें नीतिगत फैसले किए जाते हैं।

प्रश्न 5. हम किस प्रकार कह सकते हैं कि राज्यसभा की तुलना में लोकसभा सर्वोच्च शक्तियाँ रखती हैं? समझाइए।

उत्तर—लोकसभा निम्नलिखित कारणों से राज्यसभा से अधिक शक्तिशाली है—

(1) लोकसभा में वित्त विधेयक पहले प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जबकि राज्यसभा में ऐसा नहीं होता है।

(2) साधारण विधेयकों के सम्बन्ध में दोनों सदनों की शक्ति समान है, परन्तु दोनों सदनों में मतभेद होने पर उनके संयुक्त अधिवेशन में निर्णय लिया जाता है। लोकसभा की सदस्य संख्या राज्यसभा की सदस्य संख्या से अधिक होने के कारण अन्तिम निर्णय लोकसभा के पक्ष में ही होता है।

(3) लोकसभा केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित कर सके अपदस्थ कर सकती है, जबकि राज्यसभा को यह अधिकार प्राप्त नहीं है।

प्रश्न 6. भारत की प्रमुख राजनीतिक संस्थाओं के नाम लिखिए। उनमें से प्रत्येक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत में प्रमुख दो राजनीति संस्थायें हैं—

लोकसभा—लोकसभा संसद का निम्न सदन है। यह जनता का प्रतिनिधि सदन है। इसके सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होकर आते हैं। वर्तमान में लोकसभा सदस्यों की संख्या 545 है। इनमें से राष्ट्रपति को एंग्लो-इण्डियन समुदाय के दो व्यक्तियों को मनोनीत करने का अधिकार प्राप्त है। लोकसभा निम्न भूमिका का निर्वाह करती है—

(i) कानून बनाना—लोकसभा का प्रमुख कार्य देश के लिए कानून बनाना है। उसे संघ सूची तथा समीपवर्ती सूची के सभी विषयों पर कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है। कानून बनाने के लिएए विधेयक के रूप में यह लोक सभा में प्रस्तुत किया जाता है तथा लोक सभा में पास होने प राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होने के बाद यह विधेयक कानून बन जाता है।

(ii) कार्यपालिका पर नियन्त्रण—लोक सभा कार्यपालिका पर नियन्त्रण रखती है। मन्त्रिपरिषद् के सदस्य अपने कार्यों के लिए लोक सभा के प्रति उत्तरदायी होते हैं। लोक सभा के सदस्यों को मन्त्रियों से प्रश्न पूछने का अधिकार प्राप्त होता है।

(iii) बजट पास करने का अधिकार—देश का बजट भी लोक सभा के सामने पेश किया जाता है। जिसे लोक सभा सीधे या संसोधन के साथ पास करती है।

(iv) संविधान में संशोधन करना—संविधान में संशोधन हेतु लोकसभा की स्वीकृति आवश्यक होती है। सदन के दोनों सदनों के दो तिहाई बहुमत से संविधान में संशोधन होता है।

(v) निर्वाचन में भाग लेना—कई पदाधिकारियों के निर्वाचन में लोकसभा सदस्य भाग लेते हैं। जैसे—लोक सभा अध्यक्ष, राष्ट्रपति आदि।

राज्य सभा—यह संसद का उच्च सदन है। इसकी सदस्य संख्या 250 हो सकती है। इसमें दो तरह के सदस्य होते हैं निर्वाचित एवं मनोनीत।

राज्य सभा के निम्नलिखित कार्य हैं—

(i) कानून बनाना—कानून बनाने में लोक सभा की तरह राज्य सभा भी भाग लेती है; क्योंकि सभी विधेयक राज्य सभा के पास भी आते हैं।

(ii) कार्यपालिका पर नियन्त्रण—राज्य सभा के सदस्यों को मन्त्रियों से प्रश्न पूछने का अधिकार भी होता है। राज्य सभा मन्त्रियों के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव नहीं ला सकती है।

(iii) धन विधेयक पास करना—धन विधेयक को लोक सभा में पास होने के पश्चात् राज्य सभा में भेजा जाता है। राज्य सभा इसे 14 दिन से अधिक नहीं रोक सकती।

(iv) संविधान में संशोधन करना—संसद के दोनों सदनों के दो तिहाई बहुमत से पारित होने पर ही संविधान संशोधन हो सकता है। राज्य सभा लोक सभा द्वारा पारित प्रस्ताव को अस्वीकृत भी कर सकती है।

(v) अन्य अधिकार—लोक सभा की तरह राज्य सभा को भी अन्य अधिकार प्राप्त हैं। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति के चुनाव में राज्य सभा के सदस्य भाग लेते हैं।

प्रश्न 7. "न्यायपालिका की शक्तियों व स्वतन्त्रता की हर कीमत पर रक्षा की आवश्यकता है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—समस्त प्रकार की शासन-प्रणालियों में न्यायपालिका की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, परन्तु संघात्मक व्यवस्था में न्यायपालिका के दायित्व और भी बढ़ जाते हैं। संघात्मक व्यवस्था में शासन की सत्ता एक लिखित एवं कठोर संविधान द्वारा केन्द्र तथा राज्यों के मध्य विभाजित होती है। केन्द्र की सरकार केवल उन विषयों पर ही कानून का निर्माण कर सकती है, जो संघ-सूची में वर्णित होते हैं तथा राज्य सरकारें राज्य-सूची के विषयों पर कानून का निर्माण कर सकती हैं। किसी भी सरकार को दूसरी सरकार के क्षेत्र का अतिक्रमण करने का अधिकार प्राप्त नहीं होता है। यदि ऐसा होता है तो संघात्मक व्यवस्था ही समाप्त हो जाएगी। न्यायपालिका को यह अधिकार प्राप्त है कि वह सरकार के कार्यक्षेत्र एवं शक्तियों पर अपना प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष अंकुश रखे जिससे इन शक्तियों का दुरुपयोग या अतिक्रमण न हो। इसीलिए न्यायपालिका को यह शक्ति प्राप्त होती है कि वह ऐसे किसी भी कानून अथवा आदेश को अवैधानिक घोषित कर दे जो संविधान की धाराओं का उल्लंघन करता हो। एक स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष न्यायपालिका ही अपने दायित्वों का समुचित रूप से पालन कर सकती है।

प्रश्न 8. भारत के राष्ट्रपति की कौनसी विधायी व कार्यपालिका शक्तियाँ हैं?

उत्तर—राष्ट्रपति के अधिकार एवं कर्तव्य—राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रधान होता है एवं उसका पद गौरव का पद होता है। उसके कर्त्तव्य तथा अधिकार निम्नलिखित हैं—

1. कार्यपालिका के क्षेत्र में—राष्ट्रपति कार्यपालिका का औपचारिक प्रधान होता है। राष्ट्र का शासन उसी के नाम से चलाया जाता है। कार्यपालिका के क्षेत्र में उसे निम्नलिखित अधिकार प्राप्त हैं—

(i) राष्ट्रपति लोकसभा में बहुमत दल के नेता को प्रधानमन्त्री नियुक्त करता है। प्रधानमन्त्री की सलाह से वह अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। वह मन्त्रियों को हटा भी सकता है।

(ii) राष्ट्रपति को राज्यपालों, सर्वोच्च न्यायालय और राज्य के उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों, निर्वाचन आयुक्तों, संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, भारत के महान्यायवादी, कम्पट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया आदि की नियुक्ति का अधिकार है।

(iii) राष्ट्रपति देश की सेना का सर्वोच्च कमांडर होता है। अतः उसे युद्ध की घोषणा करने, युद्ध समाप्ति की घोषणा करने तथा संधि करने का अधिकार है।

(iv) विदेशी राजदूत अपना परिचय-पत्र राष्ट्रपति के सामने ही प्रस्तुत करते हैं।

2. व्यवस्थापिका के क्षेत्र में—राष्ट्रपति संघीय व्यवस्थापिका, अर्थात् संसद का एक अंग है। इस सम्बन्ध में उसके अधिकार और कर्तव्य निम्नलिखित हैं—

(i) राष्ट्रपति को संसद की बैठक बुलाने, स्थगित करने एवं लोकसभा को भंग करने का अधिकार प्राप्त है।

(ii) राष्ट्रपति राज्यसभा के 12 सदस्यों को मनोनीत कर सकता है।

(iii) संसद से पारित होने के बाद प्रत्येक विधेयक राष्ट्रपति के पास भेजा जाता है एवं उसके हस्ताक्षर के बाद ही वह कानून बन पाता है।

(iv) धन-विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के बिना लोकसभा के सामने प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

(v) संसद की बैठक नहीं होने पर राष्ट्रपति को अनुच्छेद 123 के तहत अध्यादेश जारी करने का अधिकार है।

(vi) राष्ट्रपति को संसद में अपना संदेश भेजने का अधिकार है।

3. वित्त के क्षेत्र में—राष्ट्रपति को वित्त के क्षेत्र में निम्नलिखित अधिकार प्राप्त हैं—

(i) संसद के सामने बजट की प्रस्तुति करना।

(ii) प्रत्येक पाँच वर्ष बाद वित्त आयोग की नियुक्ति करना।

(iii) धन-विधेयक को मंजूरी देना।

4. न्याय के क्षेत्र में—न्याय के क्षेत्र में राष्ट्रपति को निम्नलिखित अधिकार प्राप्त हैं—

(i) किसी अपराधी की सजा को माफ करना या कम कर देना; वह फाँसी की सजा को भी माफ कर सकता है या आजीवन कारावास में बदल सकता है।

(ii) वह सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है।

(iii) संसद के प्रस्ताव पर वह न्यायाधीशों को हटा सकता है।

5. कूटनीतिक अधिकार—भारत के राष्ट्रपति को कूटनीतिक अधिकार भी प्राप्त हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(i) भारत के राजदूतों एवं प्रतिनिधियों की नियुक्ति करना।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का प्रतिनिधित्व करना।

(iii) अन्य देशों के साथ संधि या समझौते करना।

(iv) भारत में आए विदेशी राजदूतों का स्वागत करना।

6. संकटकालीन अधिकार—राष्ट्रपति को कुछ संकटकालीन अधिकार भी दिए गए हैं। निम्नलिखित तीन परिस्थितियों में राष्ट्रपति संकटकाल की घोषणा कर सकता है—

(i) युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में। (अनुच्छेद 352 के तहत)

(ii) राज्य में सांविधानिक तन्त्र के विफल होने की स्थिति में। (अनुच्छेद 356 के तहत)

(iii) आर्थिक संकट की स्थिति में। (अनुच्छेद 360 के तहत)

संकटकालीन अधिकार का प्रयोग—राष्ट्रपति के द्वारा समय-समय पर संकटकालीन अधिकार का प्रयोग किया जाता रहा है। भारत में तीन बार अनुच्छेद 352 के तहत संकट की घोषणा की जा चुकी है जिसे राष्ट्रीय संकट कहा जाता है। दूसरी तरह का संकट तो कई बार विभिन्न राज्यों में आया है। इस परिस्थिति में अनुच्छेद 356 के तहत राज्य में 'राष्ट्रपति शासन' लागू किया जाता है। तीसरी तरह का संकट देश में कभी नहीं आया; इसलिए राष्ट्रपति ने आर्थिक संकट के अधिकार का प्रयोग अभी तक नहीं किया है। राष्ट्रीय संकट की घोषणा सन् 1962, 1971 और 1975 में की गई थी। इन्दिरा गाँधी के काल, जून 1975 में आपातकाल की घोषणा की गई थी जिसकी अत्यधिक आलोचना हुई थी।

प्रश्न 9. भारतीय संसद कार्यपालिका को नियन्त्रित करती है?

उत्तर—राजनैतिक कार्यपालक को गैर-राजनैतिक कार्यपालक से अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं तथा मन्त्री नौकरशाह से अधिक प्रभावशाली भी होते हैं। हालाँकि नौकरशाह अधिक शिक्षित और उसे विषय की जानकारी भी अधिक होती है और वित्त मन्त्रालय में काम करने वाले सलाहकारों को अर्थशास्त्र की जानकारी वित्त मन्त्री से ज्यादा हो सकती है, इसके अलावा रक्षा, उद्योग, स्वास्थ्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खान आदि मन्त्रालयों में ऐसा होना आम बात है, फिर भी इन मामलों में अन्तिम निर्णय करने का अधिकार मन्त्रियों को ही होता है; क्योंकि लोकतन्त्र में लोगों की इच्छा ही सर्वोपरि होती है। मन्त्री का चुनाव जनता द्वारा होता है और इस तरह उसे जनता की ओर से उनकी इच्छाओं को लागू करने का अधिकार होता है। वह अपने फैसले के नतीजे के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होता है। इसी वजह से मन्त्री ही सारे फैसले करता है एवं मन्त्री ही उस ढाँचे और उद्देश्यों को तय करता है जिसमें नीतिगत फैसले किए जाते हैं। किसी मन्त्री से अपने मन्त्रालय के मामलों का विशेषज्ञ होने की उम्मीद नहीं की जा सकती; क्योंकि सभी तकनीकी मामलों पर मन्त्री विशेषज्ञों की सलाह लेता है और सभी विशेषज्ञ अक्सर एक से अधिक विकल्प मन्त्री के सामने पेश करते हैं। इन्हीं विकल्पों में से मन्त्री अपने उद्देश्यों के अनुसार निर्णय लेता है।

वास्तव में, ऐसा ही हर बड़े संगठन में भी होता है। इनमें भी वे व्यक्ति, जो पूरे मामले को भली-भाँति समझते हैं, वे ही सबसे महत्वपूर्ण निर्णय करते हैं, विशेषज्ञ नहीं करते। यहाँ विशेषज्ञ रास्ता बता सकते हैं, परन्तु व्यापक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति ही अन्तिम निर्णय लेता है। इसी प्रकार लोकतन्त्र में निर्वाचित मन्त्री इसी व्यापक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति की भूमिका में होते हैं।

प्रश्न 10. सरकार के विभिन्न अंगों जैसे व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के द्वारा किए जाने प्रमुख कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—(1) व्यवस्थापिका के कार्य—व्यवस्थापिका, कार्यपालिका द्वारा दिये गये निर्देशों को सम्पूर्ण देश में लागू करने का कार्य करती है अर्थात् व्यवस्थापिका, कार्यपालिका द्वारा बनाए गये कानूनों का जनता द्वारा पालन सुनिश्चित करती है। यह सरकारी कर्मचारियों का समूह होता है। यह सरकार द्वारा घोषित की गई योजनाओं के क्रियान्वयन का कार्य करती है। इसमें मन्त्रियों के सचिव तथा अन्य राजपत्रित प्रशासनिक अधिकारी आते हैं।

(2) कार्यपालिका के कार्य—कार्यपालिका मुख्यत: देश के लिए कानून निर्माण का कार्य करती है। यह संविधान में संशोधन भी कर सकती है। यह वार्षिक बजट भी प्रस्तुत करती है तथा राष्ट्रपति एवं लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव में भी भाग लेती है।

(3) न्यायपालिका के कार्य—न्यायपालिका भारत के संविधान की व्याख्या करती है। जब उसे लगता है कि विधायिका का कोई कानून अथवा कार्यपालिका की कोई कार्यवाही संविधान के खिलाफ है तो न्यायपालिका ऐसी कार्यवाही को अमान्य घोषित कर सकती है। न्यायपालिका नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा करती है। यह जनहित याचिकायें स्वीकार कर भ्रष्ट लोगों को दण्डित करती है। भारत में न्यायालय के समक्ष सभी लोगों के साथ समानता का व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय समाज में न्यायपालिका एक विश्वास पात्र संस्था है।

5 लोकतान्त्रिक अधिकार

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. इनमें से कौन-सा मौलिक अधिकारों के उपयोग का उदाहरण नहीं है?

(क) बिहार के मजदूरों का पंजाब के खेतों में काम करने जाना।

(ख) ईसाई मिशनों द्वारा मिशनरी स्कूलों की शृंखला चलाना।

(ग) सरकारी नौकरी में औरत और मर्द को समान वेतन मिलना।

(घ) बच्चों द्वारा माँ-बाप की सम्पत्ति विरासत में पाना।

उत्तर—(घ) बच्चों द्वारा माँ-बाप की सम्पत्ति विरासत में पाना।

प्रश्न 2. इनमें से कौन-सी स्वतंत्रता भारतीय नागरिकों को नहीं है?

(क) सरकार की आलोचना की स्वतंत्रता

(ख) सशस्त्र विद्रोह में भाग लेने की स्वतंत्रता

(ग) सरकार बदलने के लिए आंदोलन शुरू करने की स्वतंत्रता

(घ) संविधान के केन्द्रीय मूल्यों का विरोध करने की स्वतंत्रता।

उत्तर—(घ) संविधान के केन्द्रीय मूल्यों का विरोध करने की स्वतंत्रता।

प्रश्न 3. भारतीय संविधान इनमें से कौन-सा अधिकार देता है?

(क) काम का अधिकार

(ख) पर्याप्त जीविका का अधिकार

(ग) अपनी संस्कृति की रक्षा का अधिकार

(घ) निजता का अधिकार।

उत्तर—(ग) अपनी संस्कृति की रक्षा का अधिकार।

प्रश्न 4. उस मौलिक अधिकार का नाम बताएँ जिसके तहत निम्नलिखित स्वतंत्रताएँ आती हैं?

(क) अपने धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता

(ख) जीवन का अधिकार

(ग) छुआछूत की समाप्ति

(घ) बेगार पर प्रतिबंध।

उत्तर—(ख) जीवन का अधिकार।

प्रश्न 5. लोकतंत्र और अधिकारों के बीच सम्बन्धों के बारे में इनमें से कौन-सा बयान ज़्यादा उचित है? अपनी पसंद के पक्ष में कारण बताएँ।

(क) हर लोकतांत्रिक देश अपने नागरिकों को अधिकार देता है।

(ख) अपने नागरिकों को अधिकार देने वाला हर देश लोकतांत्रिक है।

(ग) अधिकार देना अच्छा है, पर यह लोकतंत्र के लिए जरूरी नहीं है।

उत्तर—(क) यह सर्वाधिक उपयुक्त कथन है, क्योंकि लोकतांत्रिक देश में वहाँ के नागरिकों को उसके कुछ अधिकारों की गारंटी दी जाती है। कई बार लोगों के पास गैर-लोकतांत्रिक देश में भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। अतः इस आधार पर उन्हें लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 6. स्वतंत्रता के अधिकार पर ये पाबंदियाँ क्या उचित हैं? अपने जवाब के पक्ष में कारण बताएँ।

(क) भारतीय नागरिकों को सुरक्षा कारणों से कुछ सीमावर्ती इलाकों में जाने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है।

(ख) स्थानीय लोगों के हितों की रक्षा के लिए कुछ इलाकों में बाहरी लोगों को संपत्ति खरीदने की अनुमति नहीं है।

(ग) शासक दल को अगले चुनाव में नुकसान पहुँचा सकने वाली किताब पर सरकार प्रतिबंध लगाती है।

उत्तर—(क) देश की सुरक्षा, जनता की सुरक्षा है। यदि सरकार इसको देखते हुए कुछ संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्रों में लोगों के घूमने पर प्रतिबंध लगाती है तो यह सर्वथा उचित है। क्योंकि, इससे न केवल सम्बन्धित व्यक्ति/व्यक्तियों की सुरक्षा को खतरा हो सकता है, बल्कि इसका लाभ उठाकर राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में सम्मिलित लोग दुश्मन से सूचनाओं का आदान-प्रदान भी कर सकते हैं। साथ ही, इस प्रकार की स्वतंत्रता से सीमा के आर-पार अवैध व्यापार और घुसपैठ को बढ़ावा मिल सकता है।

(ख) नागरिकों को संविधान द्वारा दी गई स्वतंत्रता के अंतर्गत देश में कहीं भी बस जाने की स्वतंत्रता भी है। लेकिन, यदि सरकार स्थानीय लोगों के हित में यह फैसला लेती है कि कोई बाहरी व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में संपत्ति नहीं खरीद सकता, तो यह उचित ही है। ऐसा वह वहाँ के लोगों की विशेष सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने के लिए करती है।

(ग) लोगों को संविधान के अंतर्गत अपने विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है और पुस्तक विचार व्यक्त करने का एक माध्यम है। शर्त यह है कि ऐसे विचार समाज विरोधी या राष्ट्रविरोधी न हों। लेकिन, यदि सरकार केवल इस कारण से किताब के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाती है कि यह उसकी पार्टी के विरोध में है या आगामी चुनाव में उसकी पार्टी पर इसका प्रभाव पड़ सकता है, तो यह सरासर गलत है। क्योंकि, इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का हनन होता है।

प्रश्न 7. मनोज एक सरकारी दफ्तर में मैनेजर के पद के लिए आवेदन देने गया। वहाँ के किरानी ने उसका आवेदन लेने से मना कर दिया और कहा, 'झाड़ू लगाने वाले का बेटा होकर तुम मैनेजर बनना चाहते हो। तुम्हारी जाति का कोई कभी इस पद पर आया है? नगरपालिका के दफ्तर जाओ और सफाई कर्मचारी के लिए अर्जी दो।' इस मामले में मनोज के किस मौलिक अधिकार का उल्लंघन हो रहा है? मनोज की तरफ से जिला अधिकारी के नाम लिखे एक पत्र में इसका उल्लेख करो।

उत्तर—

दिनांक
06.04.2018

सेवा में,
जिला कलेक्टर,
कानपुर, उत्तर प्रदेश

विषय—मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के सम्बन्ध में।

श्रीमान्,

नम्र निवेदन है कि मैं मनोज, पुत्र श्री रामप्रसाद निवासी कानपुर दिनांक 2.4.2018 को के० पी० कॉलेज में MBA कोर्स में दाखिले के लिए आवेदन करने गया। वहाँ सम्बन्धित क्लर्क ने आवेदन लेने से मना कर दिया। उन्होंने मुझे जातिसूचक शब्दों के इस्तेमाल द्वारा अपमानित किया।

श्रीमान्, हमारे संविधान में नागरिकों को विभिन्न मौलिक अधिकार दिए गए हैं। उपरोक्त घटना में हमारे 'अवसर की समानता' के अधिकार का उल्लंघन हुआ है। साथ ही संविधान के उपबंध के अन्तर्गत अस्पृश्यता का अंत किया गया है, लेकिन मेरे साथ अस्पृश्य व्यवहार किया गया है।

अतः श्रीमान् जी से निवेदन है कि आवश्यक कदम उठाते हुए हमारे अधिकारों की रक्षा करें। इसके लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूँगा।

विश्वास भाजन
मनोज

प्रश्न 8. जब मधुरिमा संपत्ति के पंजीकरण वाले दफ्तर में गई तो रजिस्ट्रार ने कहा, "आप अपना नाम मधुरिमा बनर्जी, बेटी ए० के० बनर्जी नहीं लिख सकतीं। आप शादीशुदा हैं और आपको अपने पति का ही नाम देना होगा। फिर आपके पति का उपनाम तो राव है। इसलिए आपका नाम भी बदलकर मधुरिमा राव हो जाना चाहिए।" मधुरिमा इस बात से सहमत नहीं हुई। उसने कहा, "अगर शादी के बाद मेरे पति का नाम नहीं बदला तो मेरा नाम क्यों बदलना चाहिए? अगर वह अपने नाम के साथ पिता का नाम लिखते रह सकते हैं तो मैं क्यों नहीं लिख सकती?" आपकी राय में इस विवाद में किसका पक्ष सही है? और क्यों?

उत्तर—मेरे विचार में रजिस्ट्रार की सलाह पूर्वाग्रह से प्रभावित तथा अनुचित है। मधुरिमा का कहना बिल्कुल सही है कि यदि विवाह के बाद उसके पति का नाम नहीं बदला तो उसका नाम क्यों? वास्तव में, इस प्रकार का रिवाज पुरुष प्रधानता का सूचक है। यह महिला-पुरुष समानता के विचार का भी विरोधी है। यह महिला-स्वतंत्रता की भावना के विरुद्ध है।

प्रश्न 9. मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के पिपरिया में हजारों आदिवासी और जंगल में रहने वाले लोग सतपुड़ा राष्ट्रीय पार्क, बोरी वन्यजीव अभ्यारण्य और पंचमढ़ी वन्यजीव अभ्यारण्य से अपने प्रस्तावित विस्थापन का विरोध करने के लिए जमा हुए। उनका कहना था कि यह विस्थापन उनकी जीविका और उनके विश्वासों पर हमला है। सरकार का दावा है इलाके के विकास और वन्य जीवों के संरक्षण के लिए उनका विस्थापन जरूरी है। जंगल पर आधारित जीवन जीने वाले की तरफ़ से राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को एक पत्र, इस मसले पर सरकार द्वारा दिया जा सकने वाला संभावित जवाब और इस मामले पर मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट तैयार करो।

उत्तर—सेवा में,

अध्यक्ष,

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग

श्रीमान्,

निवेदन यह है कि हम वनवासी लोग सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, बोरी वन्यजीव अभयारण्य एवं पंचमढ़ी वन्यजीव अभयारण्य क्षेत्रों में सैकड़ों वर्षों से रहते आ रहे हैं। हम वनवासियों की हर गतिविधि वन से जुड़ी हुई है। हमारी जीविका का मुख्य स्रोत वन हैं। इन वनों से हमारी परंपराएँ एवं मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं।

आज सरकार विकास एवं वन्यजीवों की सुरक्षा के नाम पर हमें यहाँ से विस्थापित करना चाहती है। इससे हमारा जीवन बुरी तरह प्रभावित होगा।

अतः श्रीमान् जी से विनम्र निवेदन है कि हमारी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हमें न्याय दिलाएँ। इसके लिए हम वनवासी सदैव श्रीमान् जी के आभारी रहेंगे।

विश्वास भाजन
वनवासी
पंचमढ़ी क्षेत्र

सरकार का पक्ष

क्षेत्र के विकास तथा वन्यजीवों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार ने यह निर्णय किया है कि सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, बोरी वन्यजीव अभयारण्य तथा पंचमढ़ी अभयारण्य क्षेत्रों से वनवासियों को विस्थापित कर कहीं और उनका पुनर्वास किया जाए। इससे न केवल वन्यजीवों को सुरक्षा मिलेगी, बल्कि क्षेत्र में विकास कार्यों द्वारा यहाँ के लोगों को राष्ट्र की मुख्यधारा से भी जोड़ा जा सकेगा। इनके लिए स्वच्छ पेयजल, चिकित्सा, शिक्षा, आवास आदि जैसी मौलिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा सकेंगी।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट

सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान तथा बोरी एवं पंचमढ़ी वन्यजीव अभयारण्य क्षेत्रों से लोगों के विस्थापन से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को देखते हुए आयोग ने सरकार के इस कदम पर आपत्ति उठाई है। आयोग का कहना है कि सरकार पहले उनके जीविका एवं पुनर्वास की व्यवस्था करे फिर इस प्रकार के कदम उठाये। इन लोगों की जीविका वनों से चलती है। विस्थापन की स्थिति में हजारों परिवार प्रभावित होंगे। न केवल उनकी जीविका छिनेगी, बल्कि उनकी मान्यताओं एवं परंपराओं पर भी प्रभाव पड़ेगा। अतः सरकार एक समिति बनाकर पहले इससे जुड़ी सभी समस्याओं की जानकारी ले, फिर अन्य आवश्यक कदम उठाए, जिससे उनके मानवीय अधिकारों का हनन न हो।

प्रश्न 10. इस अध्याय में पढ़े विभिन्न अधिकारों को आपस में जोड़ने वाला एक मकड़जाल बनाएँ। जैसे आने-जाने का स्वतंत्रता का अधिकार तथा पेशा चुनने की स्वतंत्रता का अधिकार आपस में एक-दूसरे से जुड़े हैं। इसका एक कारण है कि आने-जाने की स्वतंत्रता के चलते व्यक्ति अपने गाँव या शहर के अंदर ही नहीं, दूसरे गाँव, दूसरे शहर और दूसरे राज्य तक जाकर काम कर सकता है। इसी प्रकार इस अधिकार को तीर्थाटन से जोड़ा जा सकता है जो किसी व्यक्ति द्वारा अपने धर्म का अनुसरण करने की आजादी से जुड़ा है। आप इस मकड़जाल को बनाएँ और तीर के निशानों से बताएँ कि कौन-से अधिकार आपस में जुड़े हैं। हर तीर के साथ सम्बन्ध बताने वाला एक उदाहरण भी दें।

उत्तर—[छात्र स्वयं करें।]

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'एमनेस्टी इण्टरनेशनल' की क्या भूमिका है?
(क) अन्तर्राष्ट्रीय शन्ति के लिए कार्य करना
(ख) विश्व में शस्त्र दौड़ को बन्द करना
(ग) अन्तर्राष्ट्रीय कैदियों की स्थिति के बारे में सूचनाएँ एकत्रित करना
(घ) इनमें से कोई नहीं।

2. सऊदी अरब में लोगों के अधिकारों से सम्बन्धित निम्न में से कौन सा कथन सत्य है?
(क) धर्म की स्वतन्त्रता नहीं (ख) राजनीतिक दल बनाने का अधिकार
(ग) मीडिया की स्वतन्त्रता का अधिकार (घ) महिला अधिकारों के प्रति सम्मान।

3. कोसोवो की मिलोशेविक सरकार अल्बानियों के विरुद्ध क्यों थी?
(क) अल्बानी राष्ट्र विरोधी थे।
(ख) वह चाहता था कि सर्ब शासन करें और अल्बानियों पर प्रभावी रहें
(ग) अल्बानी लोग सर्ब से स्वतन्त्रता चाहते थे
(घ) इनमें से कोई नहीं।

4. अधिकारों के साथ कौनसी बाध्यता है?
(क) दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना (ख) अधिकार प्रतिबन्धों से परिपूर्ण हैं
(ग) अधिकारों का उपभोग केवल करदाताओं के द्वारा ही किया जा सकता है
(घ) इनमें से कोई नहीं।

5. अप्रतिबन्धित स्वतन्त्रता ला सकती है—
(क) कानून विहीनता (ख) अराजकता
(ग) दोनों (क) व (ख) (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. जब हमारे अधिकारों में से किसी एक का भी हनन होता है, तो हम किस अधिकार के तहत इसका निवारण कर सकते हैं?
(क) सूचना का अधिकार (ख) स्वतन्त्रता का अधिकार
(ग) संवैधानिक उपचारों का अधिकार (घ) इनमें से कोई नहीं।

7. सऊदी अरब में नागरिक अधिकारों के संदर्भ में निम्न में से गलत कथन का चयन कीजिए—
(क) शासकों के चुनाव या उन्हें बदलने में लोगों की कोई भूमिका नहीं होती है।
(ख) नागरिक राजनीतिक दल या कोई भी राजनीतिक संगठन बना सकते हैं।
(ग) धर्म की स्वतन्त्रता नहीं है।
(घ) महिलाओं पर बहुत से सार्वजनिक प्रतिबन्ध हैं।

8. निम्न में से कौन सा अधिकार भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों में वर्णित नहीं है?
(क) स्वतन्त्रता का अधिकार (ख) रोजगार का अधिकार
(ग) धर्म का अधिकार (घ) समानता का अधिकार।

9. स्वतन्त्रता के अधिकार के सम्बन्ध में निम्न में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(क) लोग भारत के किसी भी स्थान में बसने के लिए स्वतन्त्र हैं।
(ख) लोग गाँवों से जाकर शहरों में बस सकते हैं।
(ग) व्यवसाय चुनने की कोई स्वतन्त्रता नहीं है।
(घ) किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतन्त्रता है।

10. निम्न में से कौन सा कथन अधिकारों को सही रूप से परिभाषित करता है?
(क) अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त विशेषाधिकार हैं।
(ख) अधिकार वे कर्त्तव्य हैं जिन्हें प्रत्येक नागरिक को करना है।

(ग) अधिकार प्रत्येक नागरिक को प्रदत्त वे शक्तियाँ हैं जो सरकार की दुरुपयोग की शक्ति पर नियन्त्रण रखते हैं।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

11. निम्न में से कौन सी मौलिक अधिकारों की क्रियान्विति नहीं है और क्यों?
(क) माता-पिता की सम्पत्ति बच्चों को प्राप्त होती है।
(ख) ईसाई मिशनियों ने मिशनरी स्कूलों की एक श्रृंखला स्थापित की।
(ग) सरकारी सेवा में पुरुष व स्त्रियाँ समान वेतन पाते हैं।
(घ) बिहार से श्रमिक पंजाब के खेतों में काम करने जाते हैं।

12. मानव अधिकार आयोग के सम्बन्ध में निम्न में से कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?
(क) यह सन् 1993 में कानून द्वारा स्थापित एक स्वतन्त्र निकाय है।
(ख) देश के संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदत्त सभी अधिकार इसमें समाहित हैं।
(ग) आयोग अपने कार्यों के लिए न्यायपालिका के प्रति जवाबदेह है।
(घ) विकल्प (क) व (ख) सही हैं।

13. कौन सा मौलिक अधिकार 'बंधुआ श्रम' पर प्रतिबन्ध लगाता है?
(क) शोषण के विरुद्ध अधिकार (ख) शिक्षा का अधिकार
(ग) संवैधानिक उपचारों का अधिकार (घ) स्वतन्त्रता का अधिकार।

14. निम्न में से क्या धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार नहीं है?
(क) एक व्यक्ति अपनी इच्छा से धर्म परिवर्तन के लिए स्वतन्त्र है
(ख) एक व्यक्ति अलौकिक शक्तियों व देवताओं को प्रसन्न करने के लिये पशुओं व मनुष्यों की बलि दे सकता है
(ग) एक व्यक्ति अपने धर्म का प्रचार कर सकता है
(घ) प्रत्येक धार्मिक वर्ग अपने धार्मिक मामलों को करने के लिए स्वतन्त्र है।

[**उत्तर—1.** (ग), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (क), **5.** (ग), **6.** (ग), **7.** (ग), **8.** (ख), **9.** (ग), **10.** (क), **11.** (क), **12.** (घ), **13.** (क), **14.** (ख)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार मौलिक अधिकार क्यों कहलाते हैं?
उत्तर—क्योंकि वे अनिवार्य हैं तथा मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं।

प्रश्न 2. ऐसे दो संवैधानिक प्रावधान बताइए जो महिलाओं व बच्चों को सुरक्षा प्रदान करते हैं?
उत्तर—जीवन का अधिकार, समानता का अधिकार तथा शोषण के विरुद्ध अधिकार।

प्रश्न 3. शोषण के विरुद्ध अधिकार के अन्तर्गत वर्णित कोई दो अधिकार बताइए।
उत्तर—(i) मानव-व्यापार पर प्रतिबन्ध एवं (ii) बाल श्रम का निषेध।

प्रश्न 4. हमारे मौलिक अधिकारों पर कौन सी सीमायें लगाई गई हैं?
उत्तर—(i) नागरिकों के मौलिक कर्तव्य एवं (ii) राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान अधिकारों का स्थगन।

प्रश्न 5. लोकतन्त्र के लिए अधिकार क्यों आवश्यक हैं?
उत्तर—ये सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग से नागरिकों को बचाते हैं तथा अल्पसंख्यकों की भी रक्षा करते हैं।

प्रश्न 6. वाक्-अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के विरुद्ध किन्हीं दो सीमाओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर—इस अधिकार का उपयोग हिंसा भड़काने के लिए या जनता को राज्य के विरुद्ध विद्रोह हेतु भड़काने के लिए नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 7. संविधान द्वारा उपाधियाँ देने की प्रथा का अन्तर क्यों कर दिया गया?
उत्तर—क्योंकि यह समानता के अधिकार के विरुद्ध है।

प्रश्न 8. जनहित याचिका का क्या अर्थ है?
उत्तर—इसका अर्थ है जनता के हितों की सुरक्षा हेतु याचिका। यह याचिका कोर्ट में पीड़ित पक्ष द्वारा नहीं वरन् स्वयं कोर्ट द्वारा या अन्य किसी पक्ष द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

प्रश्न 9. किन्हीं दो अधिकारों का वर्णन कीजिए जो महत्वपूर्ण संवैधानिक अधिकार हैं किन्तु मौलिक अधिकार नहीं हैं।

उत्तर—शिक्षा का अधिकार एवं रोजगार का अधिकार।

प्रश्न 10. ग्वान्टानामो बे कहाँ स्थित है?

उत्तर—क्यूबा के निकट।

प्रश्न 11. सऊदी अरब पर कौन शासन करता है?

उत्तर—वंशानुगत राजा।

प्रश्न 12. सऊदी अरब में व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के सदस्यों का चयन कौन करता है?

उत्तर—राजा।

प्रश्न 13. कोसोवो कहाँ स्थित है?

उत्तर—यूगोस्लाविया में।

प्रश्न 14. कोसोवो के दो प्रमुख जातीय समूहों के नाम लिखिए।

उत्तर—अल्बानी व सर्ब।

प्रश्न 15. कोसोवो के राजा का नाम लिखिए जिन्हें मानवता के विरुद्ध अपराध के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा दण्डित किया गया।

उत्तर—मिलोशेविक।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'अधिकारों' की परिभाषा दीजिए।

उत्तर—अधिकार मनुष्य की वे माँगें हैं जो समाज या राज्य द्वारा स्वीकृत होती हैं। **प्रो० लास्की** के अनुसार, "अधिकार सामाजिक जीवन की वे दशाएँ हैं जिनके बिना मनुष्य अपना पूर्ण विकास नहीं कर पाता है।" अन्य शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि अधिकार किसी व्यक्ति का अपने लोगों, अपने समाज एवं अपनी सरकार से दावा है। हम सभी प्रसन्नतापूर्वक, बिना किसी भय और अपमान के जीना चाहते हैं। इसके लिए हम दूसरों से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं जिससे हमें कोई नुकसान न हो, कोई कष्ट न हो। इसी प्रकार हमारे व्यवहार से भी किसी को नुकसान नहीं होना चाहिए, कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। अधिकारों से व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य भी पूरा होता है। अधिकारों को समाज और अदालतें भी मान्यता देती हैं। अधिकार इस प्रकार के होने चाहिए जिनसे किसी अन्य के अधिकारों का हनन न हो। यूगोस्लाविया के सर्ब लोग पूरे देश पर कैसे अपना दावा नहीं कर सकते थे। वास्तव में, हम जो दावे करते हैं वे तार्किक भी होने चाहिए। हमें कोई भी अधिकार इस बाध्यता के साथ प्रदान किया जाता है कि हम दूसरों के अधिकारों का सम्मान करेंगे। समय और स्थान के अनुसार अधिकारों की अवधारणा भी बदलती रहती है। दो सौ साल पहले महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था, लेकिन सन् 2015 से पहले सऊदी अरब में महिलाओं को वोट का अधिकार न होना उनके अधिकारों का हनन था। अब सऊदी अरब में भी सन् 2015 से महिलाओं को भी मताधिकार प्राप्त हो गया है।

प्रश्न 2. अमेरिकी सेनाओं ने किस आधार पर विश्व के विभिन्न हिस्सों से 600 लोगों को उठाया?

उत्तर—न्यूयॉर्क में हुए आतंकवादी हमले के कारण खुफिया तरीके से अमेरिकी सेना ने विश्व के विभिन्न स्थानों से 600 लोगों को पकड़ लिया तथा इन लोगों को गुआंतानामो बे स्थित एक जेल में बंद कर दिया। अमेरिकी सरकार के अनुसार ये लोग न्यूयॉर्क में हुए 11 सितम्बर, 2001 के हमलों के लिए जिम्मेदार थे किन्तु वास्तव में इन लोगों में बहुत से निर्दोष थे जिनका आंतकवाद जैसी बुराई से कोई सम्बन्ध नहीं था। अनस के पिता जमिल अल-बन्ना उन 600 लोगों में एक थे जिन्हें केवल संदेह के आधार पर गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। ये गिरफ्तार व्यक्ति जिस देश के नागरिक हैं, उस देश की सरकार को भी इसकी सूचना नहीं दी गयी थी। अन्य कैदियों की तरह जमिल के परिवार वालों को भी अखबारों के माध्यम से ही जानकारी हुई कि उसे जेल में रखा गया है। इन कैदियों की परिवार वालों, मीडिया के लोगों और यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों को भी उनसे मिलने की अनुमति नहीं थी। ऐसी स्थिति में ये कैदी अपने देश की अदालतों में अपनी स्वतंत्रता के लिए अपील भी नहीं कर सकते थे।

प्रश्न 3. एल बन्ना के परिवार को किस प्रकार उसकी गिरफ्तारी की जानकारी हुई?

उत्तर—एल बन्ना के परिवार वालों को उनकी गिरफ्तारी की जानकारी समाचार-पत्रों के माध्यम से हुई थी। यह भी ज्ञात हुआ कि उन्हें जेल में डाल दिया गया है। इन लोगों को उनके देश की सरकारों को भी उनकी गिरफ्तारी की जानकारी नहीं दी गई थी।

प्रश्न 4. एमनेस्टी इण्टरनेशनल संस्था किस प्रकार के कार्य करती है?

उत्तर—एमनेस्टी इण्टरनेशनल या अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन कैदियों की स्थिति के बारे में सूचनायें एकत्रित करता है तथा विश्व के किसी भी देश में मानवाधिकारों की स्थिति का अध्ययन करता है। यदि किसी देश में मानवाधिकारों की स्थिति ठीक नहीं पायी जाती है तो यह उस देश की सरकार को समस्या के बारे में निर्देशित करता है। मानवाधिकार आयोग को स्वयं दण्ड देने का अधिकार प्राप्त नहीं है। फिर भी देशों की सरकारों को आयोग के अनुसार कार्यवाही करनी पड़ती है क्योंकि सरकारों पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव होता है।

प्रश्न 5. समाज में अधिकारों को महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?

उत्तर—समाज में अधिकारों की एक विशेष भूमिका होती है। ये अधिकार बहुसंख्यकों के दमन से अल्पसंख्यकों की रक्षा करते हैं। अधिकार किसी को भी मनमानी करने से रोकते हैं। यदि कोई किसी का अधिकार हड़पना चाहे या बहुमत के लोग अल्पमत में आ गये लोगों पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हों तो ऐसी स्थिति में सरकार को नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। भारत में सर्वोच्च न्यायालय मानवाधिकारों की सुरक्षा की गारण्टी देता है।

प्रश्न 6. किस प्रकार के दावों को अधिकार कहा जा सकता है?

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर।

प्रश्न 7. अधिकार किस प्रकार कानूनी शक्ति प्राप्त करते हैं?

उत्तर—जब अधिकार संविधान द्वारा प्रदत्त होते हैं तथा उनकी सुरक्षा की गारण्टी सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रदान की जाती है तो अधिकारों को कानूनी शक्ति प्राप्त हो जाती है। सरकार को आम नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी कार्यवाही कर हनन करने वाले को अवश्य दण्डित करना पड़ता है।

प्रश्न 8. लोकतन्त्र में जनता को किस प्रकार के अधिकार प्राप्त होते हैं?

उत्तर—लोकतन्त्र में अधिकारों की एक विशेष भूमिका होती है। लोकतन्त्र अपने नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए मौलिक अधिकार प्रदान करता है। इन अधिकारों के माध्यम से समानता, स्वतन्त्रता और न्याय की व्यवस्था की जाती है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है। भारत के मूल संविधान में 7 मौलिक अधिकार थे, लेकिन 44वें संविधान संशोधन के बाद अब 6 मौलिक अधिकार रह गये हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(1) समानता का अधिकार, (2) स्वतन्त्रता का अधिकार, (3) शोषण के विरुद्ध अधिकार, (4) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, (5) सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार, (6) सूचना का अधिकार।

प्रश्न 9. किस प्रकार के समाज में लोकतन्त्र का अस्तित्व सम्भव है?

उत्तर—लोकतन्त्र की सफलता के लिए जागरूक समाज की आवश्यकता होती है। जिस समाज के लोग लोकतान्त्रिक मूल्यों को जानते हैं तथा उसके महत्व को समझते हैं। ऐसे समाज में लोकतन्त्र का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता है। यदि कोई प्रतिनिधि चुनाव के बाद अधिनायकवाद का पोषक हो जाता है तो यदि उस देश की जनता जागरूक होगी तो उसके विरुद्ध सामूहिक आन्दोलन खड़ा कर उसमें अपनी अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित कर ऐसी घटनाओं को रोक देगी। दूसरी तरफ समाज में अपने मूल अधिकारों के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न 10. कानून का शासन क्या है?

उत्तर—लोकतान्त्रिक प्रणाली में किसी देश का अपना संविधान होता है। जनप्रतिनिधियों का चुनाव सीधे जनता द्वारा होता है। जिनके हाथों में देश की सत्ता होती है। वे जनता की भावनाओं के अनुसार सरकार का संचालन करते हैं। लोगों को संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों की रक्षा स्वतन्त्र न्यायपालिका द्वारा की जाती है। यदि किसी व्यक्ति के मूल अधिकारों पर आघात होता है तो वह न्यायालय में जा सकता है। न्यायालय वैद्यता की जाँच करता है तथा अपना निर्णय देता है। न्यायालय के निर्णय का पालन व्यवस्थापिका द्वारा किया जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली कानून का शासन है।

प्रश्न 11. समानता के अधिकार के दो अपवाद लिखिए।

उत्तर—समानता के अधिकार के अपवाद—(1) सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों के लिए संविधान द्वारा आरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई गई है जो समानता के अधिकार के अपवाद के रूप में देखा जाता है।

(2) यद्यपि सरकार ने ऊँच नीच की भावना समाप्त करने के लिए समस्त उपाधियों को जो ब्रिटिश शासन द्वारा प्रदान की गई थी निरस्त कर दिया। परन्तु मानव हितों और उनके उत्थान को ध्यान में रखते हुए विशिष्ट क्षेत्रों में योगदादन करने वाले व्यक्तियों को सरकार अलंकरण देती है।

प्रश्न 12. भारतीय संविधान के द्वारा कौन सी तीन विशेष बुराइयाँ गैर कानूनी घोषित की गई हैं?

उत्तर—(1) भारतीय संविधान के द्वारा छुआ-छूत को सामाजिक बुराई बताकर इसे गैर कानूनी घोषित किया गया है।
(2) धर्म या रंग या किसी अन्य आधार पर लोगों के साथ व्यवहार करना भी गैर कानूनी घोषित किया गया है।
(3) न्यायालय के समक्ष सभी नागरिक समान हैं।

प्रश्न 13. धर्म की स्वतन्त्रता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर देखें।

प्रश्न 14. संविधान ने अल्पसंख्यकों को सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक अधिकार क्यों प्रदान किये हैं?

उत्तर—अल्पसंख्यकों को भाषा, संस्कृति एवं धर्म के विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है, अन्यथा वे बहुसंख्यकों की भाषा, धर्म और संस्कृति के प्रभाव में पिछड़ते चले जाएँगे। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर भारतीय संविधान में अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार निम्न प्रकार से स्पष्ट किए गए हैं—

1. नागरिकों में विशिष्ट भाषा या संस्कृति वाले किसी भी समूह को अपनी भाषा, लिपि एवं संस्कृति की सुरक्षा का अधिकार है।

2. किसी भी सरकारी या सरकारी अनुदान पाने वाले शैक्षिक संस्थान में किसी नागरिक को धर्म, जाति, मूलवंश या भाषा के आधार पर प्रवेश लेने से नहीं रोका जा सकता।

3. सभी अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद का शैक्षिक संस्थान स्थापित करने एवं चलाने का अधिकार है। इसमें अल्पसंख्यक अपने धर्म के लोगों के लिए इसमें 50% तक सीटें आरक्षित कर सकते हैं।

यहाँ अल्पसंख्यक का अर्थ राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक अल्पसंख्यक मात्र नहीं है। यदि किसी स्थान पर एक विशेष भाषा को बोलने वालों का बहुमत होगा तो वहाँ अलग भाषा बोलने वाले अल्पसंख्यक होंगे।

प्रश्न 15. संवैधानिक उपचारों के अधिकार का क्या अर्थ है?

उत्तर—हमें संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों को लागू कराने की माँग करने का अधिकार है। इसे **संवैधानिक उपचार का अधिकार** कहा जाता है। अनुच्छेद 32 के तहत यह मौलिक अधिकार संविधान द्वारा दिया गया है। यह अधिकार अन्य अधिकारों को प्रभावी बनाता है। यदि हमारे अधिकारों का उल्लंघन कोई और नागरिक या कोई संस्था या फिर स्वयं सरकार ही कर रही हो तो हम न्यायालय की शरण ले सकते हैं। मौलिक अधिकारों का मामला होने पर हम सीधे सर्वोच्च न्यायालय या किसी राज्य के उच्च न्यायालय में जा सकते हैं। न्यायपालिका इन अधिकारों की संरक्षक है। इस कारण डॉ. अम्बेडकर ने संवैधानिक उपचार के अधिकार को हमारे संविधान की 'आत्मा और हृदय' कहकर सम्बोधित किया था।

प्रश्न 16. पी. आई. एल. का क्या अर्थ है?

उत्तर—जनहित याचिका भारतीय कानून में सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए मुकदमे का प्रावधान है। अन्य सामान्य अदालती याचिकाओं से अलग, इसमें यह आवश्यक नहीं की पीड़ित पक्ष स्वयं अदालत में जाए। यह किसी भी नागरिक या स्वयं न्यायालय द्वारा पीड़ितों के पक्ष में दायर किया जा सकता है।

प्रश्न 17. अधिकारों की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर—किसी भी देश में राजनीतिक व्यवस्था का महत्त्व उस देश में नागरिकों को दिये गये अधिकारों द्वारा पहचाना जाता है। अधिकारों में रोटी, कपड़ा, मकान और रोजगार की गांरटी इसे आर्थिक लोकतंत्र की ओर ले जाती है। दक्षिण अफ्रीका के संविधान ने इस ओर कदम बढ़ाये हैं। लोकतन्त्र में प्रत्येक नागरिक को मतदान करने एवं चुनाव लड़कर प्रतिनिधि के रूप में चुने जाने का अधिकार है। लोकतान्त्रिक चुनाव हों इसके लिए लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने, राजनैतिक दल बनाने और राजनैतिक गतिविधियों की स्वतंत्रता के अधिकार का होना आवश्यक है।

लोकतन्त्र में अधिकारों की एक विशेष भूमिका होती है। ये अधिकार बहुसंख्यकों के दमन से अल्पसंख्यकों की रक्षा करते हैं। इस प्रकार अधिकार किसी को भी मनमानी न करने देने की गारंटी के समान हैं। यदि कोई किसी का अधिकार हड़पना चाहे या बहुमत के लोग अल्पमत में आ गए लोगों पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हों तो ऐसी स्थिति में सरकार को नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। लेकिन कई बार चुनी हुई सरकार भी अपने ही नागरिकों के अधिकारों का हनन करती है या नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की उपेक्षा करती है। इसीलिए कुछ अधिकारों को सरकार से भी ऊँचा दर्जा प्रदान किए जाने की आवश्यकता है जिससे कि स्वयं सरकार भी उनका उल्लंघन न कर सके। लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्थाओं में नागरिकों के अधिकार संविधान में लिखित रूप में और वाद योग्य होते हैं। न्यायपालिका उनकी संरक्षक होती है।

प्रश्न 18. क्या कर्त्तव्यों के बिना अधिकारों का अस्तित्व हो सकता है?

उत्तर—कर्त्तव्य अधिकार पर अवलम्बित हैं, जिस प्रकार अपने अस्तित्व के लिए अधिकार सदैव कर्त्तव्यों पर निर्भर है,

उसी प्रकार कर्त्तव्य भी अधिकारों पर निर्भर है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य को ऐसे अधिकार प्राप्त हों जिनके द्वारा वह अपना शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास कर सके। इस विकास के द्वारा ही वह कर्त्तव्यपालन के योग्य बन सकता है।

प्रश्न 19. मौलिक अधिकार किस प्रकार राज्य को एक नैतिक चरित्र प्रदान करते हैं?

उत्तर—लघु उत्तरीय प्रश्न 17 का उत्तर।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. "भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत के संविधान में अनुच्छेद 25 से 28 तक धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार वर्णित है। विश्व के अन्य देशों के समान भारत के अधिकांश लोग अलग-अलग धर्म को मानते हैं। कुछ लोग किसी भी धर्म को नहीं मानते। संविधान में भारत के लिए धर्मनिरपेक्ष शब्द प्रयुक्त किया गया है। धर्मनिरपेक्ष शासन वह है जहाँ किसी भी धर्म को अधिकारिक धर्म की मान्यता नहीं होती। भारतीय संविधान में राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होगा और वह किसी भी धर्म का पक्ष नहीं लेगा।

भारत में प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म मानने, उस पर आचरण करने एवं उसका प्रचार करने का अधिकार है। प्रत्येक धार्मिक समूह या पंथ को अपने धार्मिक कामकाज का प्रबंधन करने की स्वतंत्रता है, परन्तु किसी को लालच आदि देकर धर्म परिवर्तन कराने का अधिकार नहीं दिया गया है। निस्संदेह व्यक्ति को अपनी इच्छा से धर्म परिवर्तन करने की स्वतंत्रता है। अपना धर्म मानने और उसके अनुसार आचरण का यह अर्थ कतई नहीं है कि व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जैसा चाहे वैसा करे। जैसे—कोई आदमी देवता या कथित अदृश्य शक्तियों को संतुष्ट करने के लिए नरबलि या पशुबलि नहीं दे सकता, इसके साथ ही औरतों को हीन मानने या उनकी आजादी का हनन करने वाले धार्मिक रीति-रिवाजों को भी अनुमति नहीं दी गई है। इस प्रकार कोई जबर्दस्ती किसी विधवा का मुंडन नहीं करा सकता एवं उसे केवल सफेद वस्त्र धारण करने के लिए विवश नहीं कर सकता।

धर्मनिरपेक्ष शासन में सरकार किसी धर्म या धार्मिक संस्था को प्रोत्साहन देने या उसके रख-रखाव के लिए कर देने के लिए किसी व्यक्ति को बाध्य नहीं कर सकती। राज्य द्वारा सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जायेगी। राज्य से मान्यता और सहायता प्राप्त अन्य संस्थाओं के मामले में प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक शिक्षा या उपासना में उपस्थित न होने की स्वतंत्रता होगी।

प्रश्न 2. लोकतन्त्र में मौलिक अधिकारों के महत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर—लघु उत्तरीय प्रश्न 17 का उत्तर।

प्रश्न 3. संवैधानिक उपचारों के अधिकार की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32)—यदि राज्य या सरकार नागरिक को दिए गए मूल अधिकारों पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगताी है या उनका हनन करती है, तो नागरिक उसके लिए उच्च न्यायालय अथवा उच्चतम न्यायालय की शरण ले सकते हैं। इस प्रकार यह अधिकार अन्य मौलिक अधिकारों की सुरक्षा हेतु दिया गया है। इस अधिकार के बिना अन्य मूल अधिकारों का कोई महत्व नहीं है।

नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए उच्च न्यायालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा निम्नलिखित पाँच प्रकार के लेख जारी किए जाते हैं—

(1) बन्दी प्रत्यक्षीकरण, (2) परमादेश, (3) प्रतिषेध, (4) उत्प्रेषण तथा (5) अधिकार-पृच्छा।

अपवाद—व्यक्ति साधारण परिस्थितियों (शान्तिकाल) में ही मौलिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए न्यायालय की शरण ले सकते हैं, परन्तु आपातकालीन स्थिति की घोषणा के समय इनके क्रियान्वयन पर रोक लगाई जा सकती है।

प्रश्न 4. ग्वान्टानामो बे कहाँ स्थित है? वहाँ क्यों एक जेल की स्थापना की गई?

उत्तर—न्यूयॉर्क में हुए आतंकवादी हमले के कारण खुफिया तरीके से अमेरिकी सेना ने विश्व के विभिन्न स्थानों से 600 लोगों को पकड़ लिया तथा इन लोगों को गुआन्टानामो बे स्थित एक जेल में बंद कर दिया। अमेरिकी सरकार के अनुसार ये लोग न्यूयॉर्क में हुए 11 सितम्बर, 2001 के हमलों के लिए जिम्मेदार थे किन्तु वास्तव में इन लोगों में बहुत से निर्दोष थे जिनका आतंकवाद जैसी बुराई से कोई सम्बन्ध नहीं था। अनस के पिता जमिल अल-बन्ना उन 600 लोगों में एक थे जिन्हें केवल संदेह के आधार पर गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। ये गिरफ्तार व्यक्ति जिस देश के नागरिक हैं, उस देश की सरकार को भी इसकी सूचना नहीं दी गयी थी। अन्य कैदियों की तरह जमिल के परिवार वालों को भी अखबारों के माध्यम से ही जानकारी हुई कि उसे जेल में रखा गया है। इन कैदियों की परिवार वालों, मीडिया के लोगों और यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों को भी उनसे मिलने की अनुमति नहीं थी। ऐसी स्थिति में ये कैदी अपने देश की अदालतों में

अपनी स्वतंत्रता के लिए अपील भी नहीं कर सकते थे।

एक अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन **एमनेस्टी इंटरनेशनल** ने गुआंतानामो बे के कैदियों की स्थिति के बारे में सूचनाएँ एकत्रित कीं तथा बताया कि उनके ऊपर अत्याचार किये जा रहे हैं। अनेक कैदियों ने भूख हड़ताल करके इन स्थितियों के खिलाफ अपना विरोध व्यक्त करना चाहा, लेकिन उनको जबर्दस्ती खाना खिलाया गया या नाक के रास्ते उनके पेट में पहुँचाया गया। जिन कैदियों को आधिकारिक रूप से निर्दोष करार दिया गया था, उनको भी मुक्त नहीं किया गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा करायी गयी एक स्वतंत्र जाँच से ही इन बातों की पुष्टि हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्कालीन महासचिव ने गुआंतानामो बे जेल को बंद कर देने की सिफारिश की, लेकिन अमेरिकी सरकार ने इन अपीलों को भी ठुकरा दिया।

प्रश्न 5. कोसोवो में संघर्ष का मुख्य कारण क्या था?

उत्तर—कोसोवो पुराने यूगोस्लाविया का एक प्रांत था, जो अब उससे अलग हो गया है। इस प्रदेश में अल्बानियाई लोगों की संख्या अधिक थी, किन्तु पूरे देश की जनसंख्या के आधार पर सर्ब लोग बहुसंख्यक थे। उग्र सर्ब राष्ट्रवाद के भक्त मिलोशेविक ने यहाँ के चुनावों में जीत प्राप्त की। उनकी सरकार ने कोसोवो के अल्बानियाई लोगों के प्रति बहुत ही कठोर व्यवहार किया। अनेक सर्ब नेताओं का मानना था कि अल्बानियाई अल्पसंख्यक या तो देश छोड़कर चले जाएँ या सर्बों का प्रभुत्व स्वीकार कर लें। कोसोवो में जनसंहार के अनेक मामले सामने आये। एक बड़ी संख्या में नरकंकाल मिलने से यह अन्तरर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया।

कोसोवो के एक शहर में अप्रैल, 1999 में एक अल्बानियाई परिवार के साथ कुछ ऐसी घटना घटित हुई कि 74 वर्षीया बतीशा होक्सा अपनी रसोई में अपने 77 वर्षीय पति इजेत के साथ बैठी आग ताप रही थी। उन्होंने विस्फोटों की आवाज सुनी, किन्तु उनको यह एहसास भी नहीं हुआ कि सर्बिया की सेना शहर में घुस आई है। तभी उनका दरवाजा खोलकर पाँच-छह सैनिक अंदर आए और पूछा, "बच्चे कहाँ हैं?"

बतीशा इस घटना को याद करते हुए बताती है, "उन्होंने इजेत की छाती में तीन गोलियाँ दाग दीं।" उसके सामने ही उसके पति की मौत हो गयी और सैनिकों ने उसकी अँगुली से उसके विवाह की अँगूठी उतार ली और उसे भाग जाने को कहा, "मैं अभी दरवाजे से बाहर भी नहीं निकली थी कि उन्होंने घर में आग लगा दी।" वह बरसात में बेघर होकर सड़क पर खड़ी थी—उसके पास न मकान था, न पति और न शरीर पर पहने वस्त्रों के अतिरिक्त कोई अन्य सामान। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। यह कथा हजारों अल्बानियाई लोगों के साथ हुए बर्ताव की सच्चाई को व्यक्त करती है। यह नरसंहार उस देश की अपनी ही सेना, एक ऐसे नेता के निर्देश पर कर रही थी, जो लोकतान्त्रिक चुनाव में जीतकर सत्ता में आया था। यह जातीय पूर्वाग्रहों के चलते सबसे भयंकर नरसंहार था, अंत में अनेक देशों के हस्तक्षेप से यह जनसंहार रुका एवं मिलोशेविक की सत्ता गयी। इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में उन पर मानवता के विरुद्ध अपराध का मुकदमा भी चलाया गया।

प्रश्न 6. दक्षिण अफ्रीका में नागरिकों को दिये गये नवीन अधिकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—देखिए अध्याय संविधान निर्माण।

प्रश्न 7. सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक अधिकार पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 14 का उत्तर।

प्रश्न 8. व्यक्तियों के स्वतन्त्रता के अधिकार पर कौन से प्रतिबन्ध लगाये गये हैं?

उत्तर—साधारणतया हर नागरिक को ये स्वतन्त्रताएँ प्राप्त हैं, परन्तु इसका अर्थ यह है कि आप अपनी स्वतन्त्रता का ऐसा उपयोग नहीं कर सकते जिससे दूसरे की स्वतन्त्रता का हनन होता हो। आप अपनी स्वतन्त्रता के चलते सार्वजनिक परेशानी उत्पन्न नहीं कर सकते जिससे अव्यवस्था का जन्म हो। हालाँकि आप वह सब करने के लिए स्वतन्त्र हैं जिससे दूसरों को काई परेशानी न हो, परन्तु स्वतन्त्रता का अर्थ असीमित मनमानी करने का लाइसेंस पा लेना नहीं है। अतः समाज के व्यापक हितों को देखते हुए सरकार हमारी स्वतन्त्रताओं पर कुछ पाबन्दियाँ लगा सकती है।

अभिव्यक्ति की आजादी हमारे लोकतन्त्र की एक बुनियादी विशेषता है। अभिव्यक्ति की आजादी में बोलने, लिखने और कला के विभिन्न रूपों में स्वयं को व्यक्त करना शामिल है। दूसरों से स्वतन्त्र ढंग से विचार-विमर्श और संवाद करके ही हमारे विचारों और व्यक्तित्व का विकास होता है। हालाँकि आपकी राय दूसरों से अलग हो सकती है, परन्त सम्भव है कि कई सौ लोग एक ही तरह से सोचते हों, तब भी आपको अलग राय रखने और व्यक्त करने की आजादी है। आप सरकार की किसी नीति से या किसी संगठन की गतिविधियों से असहमति व्यक्त कर सकते हैं। अपने माँ-बाप, दोस्तों या रिश्तेदार से बातचीत करते हुए आप सरकार की किसी नीति या किसी संगठन की गतिविधियों की आलोचना करने को स्वतन्त्र हैं। आप

अपने विचारों को लिखकर या अखबारों-पत्रिकाओं में छपवाकर भी व्यक्त कर सकते हैं। आप यह काम चित्र बनाकर, कविता या गीत लिखकर भी कर सकते हैं, परन्तु आप इस स्वतन्त्रता का उपयोग किसी व्यक्ति या समुदाय के खिलाफ बगावत के रूप में नहीं कर सकते। आप किसी के खिलाफ झूठी बातें कहने या उसकी प्रतिष्ठा गिराने वाली बातें प्रचारित करने में इस स्वतन्त्रता का अनधिकृत उपयोग नहीं कर सकते।

प्रश्न 9. आप किस आधार पर कह सकते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में भारत में अधिकारों का विस्तार हुआ है?

उत्तर—संविधान, कानूनों एवं न्यायिक निर्णयों के माध्यम से धीरे-धीरे अधिकारों का दायरा बढ़ता गया है। प्रेस की स्वतंत्रता का अधिकार, सूचना का अधिकार एवं शिक्षा का अधिकार जैसे अधिकार मौलिक अधिकारों का ही विस्तार हैं। अब स्कूली शिक्षा प्रत्येक भारतीय का अधिकार बन चुकी है। 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा दिलाना सरकार की जिम्मेदारी है। यह व्यवस्था 86वें संविधान संशोधन द्वारा की गई है। संसद ने नागरिकों को सूचना का अधिकार प्रदान किया है। यह अधिकार विचारों और अभिव्यक्ति की आजादी के मौलिक अधिकार के तहत ही है। हमें सरकारी दफ्तरों से सूचना माँगने एवं पाने का अधिकार है। सर्वोच्च न्यायालय ने जीवन के अधिकार को नया विस्तार देते हुए उसमें भोजन के अधिकार को भी सम्मिलित कर दिया है।

सन् 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने जीवन के अधिकार के साथ-साथ शांतिपूर्वक मृत्यु पाने का अधिकार भी प्रदान किया है। एक ऐतिहासिक फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने निष्क्रिय इच्छामृत्यु (Passive Euthanasia) की अनुमति देकर मनुष्य को गरिमा के साथ मरने का अधिकार प्रदान किया है। इच्छामृत्यु हेतु लिखी गई जीवन की वसीयत (Living will) को साथ कानूनी मान्यता दी गई है। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि जीवन एवं मृत्यु दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। मृत्यु जीने की प्रक्रिया का ही एक हिस्सा है। सर्वोच्च न्यायालय ने 'पैसिव यूथेनेशिया' और 'लिविंग विल' को 'राइट टू लाइफ' का ही अंग माना है।

इसके अतिरिक्त संविधान अनेक दूसरे अधिकार भी देता है जो मौलिक अधिकार नहीं हैं; जैसे—संपत्ति रखने का अधिकार मौलिक अधिकार नहीं है, किन्तु यह एक कानूनी अधिकार है। चुनाव में वोट देने का अधिकार एक महत्त्वपूर्ण संवैधानिक अधिकार है।

कई बार मानवाधिकारों का भी विस्तार होता है। विश्व में लोकतन्त्र के विस्तार के साथ सरकारों पर दबाव बढ़ता जा रहा है कि वे इन सर्वमान्य नैतिक दावों को मानें, उन्हें कानूनी रूप दें। कई अंतर्राष्ट्रीय संधियों एवं **प्रतिज्ञा-पत्रों** ने भी अधिकारों का दायरा बढ़ाने में सहायता की है। लोक-कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है।

अधिकारों का दायरा बढ़ने के साथ-साथ नए अधिकार सामने आ रहे हैं। ये लोगों को संघर्षों से प्राप्त हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका के संविधान में नागरिकों को कई तरह के नए अधिकार दिए गए हैं। इनमें से कुछ अधिकार निम्नलिखित हैं—

(i) निजता का अधिकार—इसके कारण नागरिकों एवं उनके घरों की तलाशी नहीं ली जा सकती, उनके फोन टैप नहीं किए जा सकते, उनके पत्रों को खोलकर पढ़ा नहीं जा सकता।

(ii) पर्यावरण का अधिकार—ऐसा पर्यावरण पाने का अधिकार जो नागरिकों के स्वास्थ्य या कुशलक्षेम के प्रतिकूल न हो।

(iii) पर्याप्त आवास पाने का अधिकार।

(iv) स्वास्थ्य सेवाओं, पर्याप्त भोजन एवं पानी तक पहुँच का अधिकार; किसी को भी आपात् चिकित्सा देने से इंकार नहीं किया जा सकता।

अनेक लोगों का मानना है कि काम का अधिकार, स्वास्थ्य का अधिकार, जीने के लिए आवश्यक न्यूनतम आवश्यकताओं का अधिकार और निजता के अधिकार को भारत में भी मौलिक अधिकार बना देना चाहिए। यदि ऐसा होता है तभी वास्तविक लोकतंत्र राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना हो सकेगी।

प्रश्न 10. हम किस प्रकार अपने मौलिक अधिकारों को सुरक्षित रख सकते हैं?

उत्तर—हमें संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों को लागू कराने की माँग करने का अधिकार है। इसे **संवैधानिक उपचार का अधिकार** कहा जाता है। अनुच्छेद 32 के तहत यह मौलिक अधिकार संविधान द्वारा दिया गया है। यह अधिकार अन्य अधिकारों को प्रभावी बनाता है। यदि हमारे अधिकारों का उल्लंघन कोई और नागरिक या कोई संस्था या फिर स्वयं सरकार ही कर रही हो तो हम न्यायालय की शरण ले सकते हैं। मौलिक अधिकारों का मामला होने पर हम सीधे सर्वोच्च न्यायालय या किसी राज्य के उच्च न्यायालय में जा सकते हैं। न्यायपालिका इन अधिकारों की संरक्षक है। इस कारण डॉ. अम्बेडकर ने संवैधानिक उपचार के अधिकार को हमारे संविधान की 'आत्मा और हृदय' कहकर सम्बोधित किया था।

सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालयों को मौलिक अधिकार लागू कराने के मामले में निर्देश देने, आदेश या **रिट** जारी करने का अधिकार है। ये पाँच रिट—बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, अधिकार पृच्छा और उत्प्रेषण हैं। अदालतें अधिकारों के हनन का शिकार होने वालों को हर्जाना दिलवा सकती हैं एवं हनन करने वालों को दंडित भी कर सकती हैं। हमारे देश की न्यायपालिका सरकार एवं संसद से स्वतंत्र हैं और नागरिकों के अधिकारों के संरक्षण हेतु सक्षम है।

मौलिक अधिकारों के हनन एवं सामाजिक या सार्वजनिक हित के मामलों में कोई भी व्यक्ति न्यायालय में जा सकता है। ऐसे मामलों को 'जनहित याचिका' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

इस व्यवस्था में कोई भी व्यक्ति या समूह सरकार के किसी कानून या काम के खिलाफ सार्वजनिक हितों की रक्षा हेतु सर्वोच्च न्यायालय या किसी उच्च न्यायालय में जा सकता है। जनहित याचिका में पीड़ित व्यक्ति की ओर से कोई भी व्यक्ति या संस्था याचिका दाखिल कर सकती है। ऐसे मामले न्यायाधीश के नाम पोस्टकार्ड पर लिखी अर्जी के माध्यम से भी उठाए जा सकते हैं। यदि न्यायाधीशों को प्रतीत हो कि वास्तव में इस मामले में सार्वजनिक हितों का हनन है तो वे मामले को विचार के लिए स्वीकार कर सकते हैं।

●●

इकाई—4 (अर्थशास्त्र)

1 पालमपुर गाँव की कहानी

(क) एन. सी. ई. आर. टी पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में जनगणना के दौरान दस वर्ष में एक बार प्रत्येक गाँव का सर्वेक्षण किया जाता है। पालमपुर से सम्बन्धित सूचनाओं के आधार पर निम्न तालिका को भरिए :

(क) अवस्थिति क्षेत्र

(ख) गाँव का कुल क्षेत्र

(ग) भूमि का उपयोग (हेक्टेयर में)

कृषि भूमि		भूमि जो कृषि के लिए उपलब्ध नहीं है
सिंचित	असिंचित	(निवास स्थानों, सड़कों, तालाबों, चरागाहों आदि के क्षेत्र)
	26 हेक्टेयर	
(घ) सुविधाएँ		
शैक्षिक		
चिकित्सा		
बाजार		
बिजली पूर्ति		
संचार		
निकटतम कस्बा		

उत्तर—(क) अवस्थिति क्षेत्र : रायगंज से 3 किलोमीटर की दूरी पर, शाहपुर के नजदीक, पश्चिमी उत्तर प्रदेश।

(ख) गाँव का कुल क्षेत्र : 200 + 26 = 226 हेक्टेयर।

(ग) भूमि का उपयोग (हेक्टेयर में) : 200 हेक्टेयर।

कृषि भूमि		भूमि जो कृषि के लिए उपलब्ध नहीं है
सिंचित	असिंचित	(निवास स्थानों, सड़कों, तालाबों, चरागाहों आदि के क्षेत्र)
200	—	26 हेक्टेयर

(घ) सुविधाएँ

शैक्षिक—2 प्राथमिक विद्यालय और 1 उच्च विद्यालय
चिकित्सा—एक सरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और एक निजी औषधालय
बाजार—रायगंज (पालमपुर से 3 किलोमीटर की दूरी पर)
बिजली पूर्ति—हाँ, अधिकांश घरों में बिजली आपूर्ति
संचार—
निकटतम कस्बा—शाहपुर

प्रश्न 2. खेती की आधुनिक विधियों के लिए ऐसी अधिक आगतों की आवश्यकता होती है जिन्हें उद्योगों में विनिर्मित किया जाता है, क्या आप सहमत हैं?

उत्तर—हाँ, मैं इस बात से सहमत हूँ कि खेती की आधुनिक विधियों के लिए ऐसे अधिक आगतों या साधनों की आवश्यकता होती है जिन्हें उद्योगों में विनिर्मित किया जाता है। उदाहरण के लिए, जुताई के लिए ट्रैक्टर, कटाई के लिए हार्वेस्टर, गहाई के लिए थ्रेशर, अधिक उपज के लिए रासायनिक खाद, खेती की मशीनों के ईंधन के लिए डीजल, फसलों की बीमारियों के लिए कीटनाशक, सिंचाई के लिए पम्पिंग सेट के साथ-साथ डैम, नहरों आदि के लिए इलेक्ट्रिक उपकरण तथा मशीनरी, औजार आदि। ये सभी उद्योगों में ही विनिर्मित किए जाते हैं।

प्रश्न 3. पालमपुर में बिजली के प्रसार ने किसानों की किस तरह मदद की?

उत्तर—बिजली के प्रसार ने पालमपुर के किसानों की निम्न प्रकार मदद की—

(i) बिजली के आने से पहले पालमपुर के किसान कुओं से रहट द्वारा पानी निकाल कर छोटे-छोटे खेतों की सिंचाई किया करते थे। लेकिन बिजली के आने से उन्होंने कम समय में अधिक क्षेत्र की सिंचाई के लिए नलकूप लगाने शुरू कर दिए। परिणामस्वरूप, पालमपुर के 200 हेक्टेयर के पूरे जुते हुए क्षेत्र की सिंचाई होने लगी।

(ii) बिजली के प्रसार से सिंचाई सुविधाएँ बढ़ीं जिससे पूरे वर्ष विभिन्न फसलें उपजाई जाने लगीं।

(iii) किसान अब मानसून की अनिश्चितता पर निर्भर नहीं रहे।

(iv) सिंचाई के लिए नहर, तालाब आदि से जल प्राप्त करने के लिए प्रायः आपसी विवाद हो जाता है। पालमपुर के किसानों को इससे भी छुटकारा मिला।

(v) बिजली सिंचाई के अतिरिक्त तेजी से गहाई करने के लिए, थ्रेशर चलाने एवं डैम आदि के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुई।

प्रश्न 4. क्या सिंचित क्षेत्र को बढ़ाना महत्वपूर्ण है? क्यों?

उत्तर—हाँ, कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए सिंचित क्षेत्र को बढ़ाना निश्चय ही महत्वपूर्ण है। कृषि उत्पादन के लिए जल आवश्यक होता है। अतः इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) कई क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा नहीं होती है। साथ ही, यह अनिश्चित भी होती है। पठारी क्षेत्रों, जैसे दक्षिणी पठार एवं मध्य भारत, पंजाब, राजस्थान आदि में कम वर्षा होती है। इन क्षेत्रों में कृत्रिम सिंचाई बिल्कुल आवश्यक है। इसके बिना यहाँ खेती प्रायः असम्भव है।

(ii) कई क्षेत्र ऐसे भी हैं जहाँ वर्षा तो पर्याप्त होती है लेकिन यह वर्ष के कुछ दिनों तक ही केन्द्रित होती है। वर्ष का शेष भाग सूखा ही रहता है। इसलिए इन क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाएँ वर्ष में एक से अधिक फसल उपजाने में सहायक होंगी।

(iii) इसके अलावा धान, गेहूँ, गन्ना जैसी कुछ खाद्य एवं नकदी फसलों के लिए जल की पर्याप्त एवं निरन्तर आपूर्ति की आवश्यकता होती है।

(iv) साथ ही, अधिक उपज देने वाले एच.वाई.वी. बीजों के लिए भी पर्याप्त जल की आवश्यकता होती है।

आज भी देश के कुल कृषि क्षेत्र का 40% से भी कम भाग सिंचित है। अतः तेजी से बढ़ती हमारी जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं को देखते हुए कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सिंचाई एक महत्वपूर्ण आगत होगा।

प्रश्न 5. पालमपुर के 450 परिवारों में भूमि के वितरण की एक सारणी बनाइए।

उत्तर—पालमपुर के 450 परिवारों में भूमि का वितरण—

किसानों के प्रकार	परिवारों की संख्या	अधिकृत भूमि
भूमिहीन किसान	150 (अधिकांश दलित)	भूमिहीन
छोटे किसान	240	2 हेक्टेयर से कम
मझोले एवं बड़े किसान	60	2 हेक्टेयर से अधिक
बड़े किसान	—	10 हेक्टेयर या उससे अधिक
कुल	**450 परिवार**	

प्रश्न 6. पालमपुर में खेतिहर श्रमिकों की मजदूरी न्यूनतम मजदूरी से कम क्यों है?

उत्तर—यह डाला की स्थिति से भी स्पष्ट है कि पालमपुर में खेतिहर श्रमिकों की मजदूरी न्यूनतम मजदूरी से कम है। सरकार द्वारा खेतिहर श्रमिकों के लिए एक दिन की न्यूनतम मजदूरी ₹ 60 निर्धारित है। परन्तु डाला को केवल ₹ 35-40 ही मिलते हैं। इसका कारण है कि—

(i) खेतिहर मजदूर या तो भूमिहीन किसान परिवार अथवा छोटे किसान परिवार से आते हैं। वे गरीब एवं असहाय होते हैं। वे दैनिक मजदूरी पर काम करते हैं। उन्हें नियमित रूप से काम ढूँढ़ना पड़ता है। चूँकि पालमपुर में खेतिहर श्रमिकों में बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा है, इसलिए श्रमिक न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी पर भी काम करने को सहमत हो जाते हैं।

(ii) अधिकांश खेतिहर श्रमिक निचली जाति एवं दलित वर्गों से होते हैं। उनमें भूमि मालिकों से ऊँची मजदूरी माँगने का साहस कम होता है।

(iii) खेतिहर श्रमिक सामान्यत: अशिक्षित एवं अनभिज्ञ होते हैं। वे श्रम-संघों में संगठित नहीं होते हैं। अत: वे ऊँची मजदूरी सुनिश्चित करने के लिए भूमि मालिकों से मोल-भाव करने की स्थिति में नहीं होते हैं।

प्रश्न 7. अपने क्षेत्र में दो श्रमिकों से बात कीजिए। खेतों में काम करने वाले या विनिर्माण कार्य में लगे मजदूरों में से किसी को चुनें। उन्हें कितनी मजदूरी मिलती है? क्या उन्हें नकद पैसा मिलता है या वस्तु-रूप में? क्या उन्हें नियमित रूप से काम मिलता है? क्या वे कर्ज में हैं?

उत्तर—मैंने अपने क्षेत्र के रामू एवं राधा नामक दो खेतिहर श्रमिकों से बात की। इस वार्तालाप को नीचे दिया जा रहा है—

मैंने रामू और राधा से कहा, "आप कितनी मजदूरी प्राप्त करते हैं?"

उन्होंने कहा, "हमें केवल ₹ 35-40 ही मिलते हैं।"

मैंने उनसे पुन: पूछा, "आपको मजदूरी नकद में मिलती है अथवा वस्तु में?"

उन्होंने कहा, "हमें मजदूरी कभी नकद में तथा कभी वस्तु, जैसे—अनाज के रूप में मिलती है।"

मैंने कहा, "क्या आप लोगों को नियमित रूप से काम मिलता है?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, पिछले वर्ष हमने वर्ष-भर में लगभग 200 दिन ही काम किया।"

अंत में मैंने पूछा, "क्या आप ऋणग्रस्त हैं?"

रामू ने कहा, "जब खेतों में कोई काम नहीं था तो मैंने स्थानीय साहूकार से ₹ 3,000 का ऋण लिया। ईश्वर ही जानता है कि मैं उसे अब कैसे चुका पाऊँगा।" राधा ने कहा, "मैंने पिछले वर्ष गाँव के साहूकार से ₹ 2,000 का ऋण लिया था। इसलिए उसने मुझे आगे ऋण देने से मना कर दिया है।"

इस प्रकार, मैंने अपने क्षेत्र में देखा कि—

(i) खेतिहर श्रमिकों को सिर्फ ₹ 35-40 मजदूरी मिलती है।

(ii) उन्हें मजदूरी कभी नकद में तथा कभी वस्तु के रूप में मिलती है।

(iii) उन्हें नियमित रूप से काम नहीं मिलता है।

(iv) इसलिए वे कर्ज में होते हैं।

प्रश्न 8. एक ही भूमि पर उत्पादन बढ़ाने के लिए अलग-अलग कौन-से तरीके हैं? समझाने के लिए उदाहरणों का प्रयोग कीजिए।

उत्तर—एक ही भूमि पर उत्पादन बढ़ाने के अलग-अलग दो तरीके हैं—

(i) बहुविध फसल प्रणाली एवं (ii) खेती की आधुनिक विधियाँ।

(i) बहुविध फसल प्रणाली—एक वर्ष में किसी भूमि पर एक से अधिक फसल पैदा करने को बहुविध फसल प्रणाली कहते हैं। उदाहरण के लिए, किसान बरसात के मौसम (खरीफ) में ज्वार एवं बाजरा, अक्टूबर से दिसम्बर के बीच आलू तथा सर्दी के मौसम (रबी) में गेहूँ उगाते हैं।

(ii) खेती की आधुनिक विधियाँ—इसके अंतर्गत :

(a) परम्परागत बीजों के स्थान पर उन्नत बीजों का प्रयोग किया जाता है। इससे एक ही पौधे से अधिक मात्रा में अनाज पैदा होता है।

(b) सिंचाई बिजली-चालित नलकूपों से की जाती है।

(c) रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है।

(d) ट्रैक्टर, थ्रेशर जैसी मशीनों का प्रयोग होता है।

प्रश्न 9. एक हेक्टेयर भूमि के मालिक किसान के कार्य का ब्यौरा दीजिए।

उत्तर—एक हेक्टेयर भूमि उस वर्ग क्षेत्र के बराबर होती है, जिसके एक पक्ष का माप 100 मीटर हो। मान लेते हैं कि एक किसान अपनी एक हेक्टेयर भूमि पर गेहूँ की खेती करने की योजना बना रहा है। इसके लिए—

(i) उसे बीज, खाद, कीटनाशक के साथ-साथ जल तथा खेती के अपने उपकरणों की मरम्मत करने के लिए कुछ नकदी की भी आवश्यकता होगी। यह अनुमान किया जा सकता है कि उसे कार्यशील पूँजी के रूप में कम-से-कम ₹ 3,000 की आवश्यकता होगी जिसके लिए उसे ऋण लेना होगा।

(ii) चूँकि उसके पास भूमि कम है, इसलिए उसे बड़े किसानों के खेतों में कठिन शर्तों पर खेतिहर श्रमिकों के रूप में भी काम करना पड़ता है।

(iii) उसे अपने घर के कामों को भी करना पड़ता है।

(iv) जब खेती-बाड़ी का काम नहीं होता तो वह गैर-कृषि कार्य भी करता है।

प्रश्न 10. मझोले और बड़े किसान कृषि के लिए कैसे पूँजी प्राप्त करते हैं? वह छोटे किसानों से कैसे भिन्न हैं?

उत्तर—(i) बड़े किसानों को अधिशेष कृषि उत्पादों को बेचकर खेती के लिए पूँजी प्राप्त होती है। वे अपनी कमाई का एक भाग बचत कर लेते हैं और उसे अगले मौसम के लिए कार्यशील पूँजी के रूप में रख लेते हैं। वे वर्ष-प्रतिवर्ष की बचतों को जोड़कर अपनी स्थिर पूँजी को भी बढ़ाते हैं।

(ii) दूसरी ओर, छोटे किसानों को कृषि के लिए पूँजी के लिए पैसे उधार लेने पड़ते हैं। वे प्राय: बड़े किसानों, गाँव के साहूकारों अथवा व्यापारियों से उधार लेते हैं।

प्रश्न 11. सविता को किन शर्तों पर तेजपाल सिंह से ऋण मिला है? क्या ब्याज की कम दर पर बैंक से कर्ज मिलने पर सविता की स्थिति अलग होगी?

उत्तर—सविता को कठोर शर्तों पर तेजपाल सिंह से ऋण मिला है।

(i) तेजपाल सिंह एक बड़ा किसान है। उसने सविता को चार महीनों के लिए 24% की ब्याज दर पर ऋण दिया है। यह ब्याज की एक बहुत ऊँची दर है।

(ii) सविता को यह भी वचन देना पड़ा है कि वह कटाई के मौसम में उसके खेतों में एक श्रमिक के रूप में ₹ 35 प्रतिदिन पर काम करेगी। यह मजदूरी बहुत कम है।

निस्संदेह, ब्याज की कम दर पर बैंक से कर्ज मिलने पर सविता की स्थिति अलग होती। वह ब्याज की कम दर पर ऋण आसानी से चुका पाती और उसे तेजपाल सिंह के लिए खेतिहर मजदूर के रूप में कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ता।

प्रश्न 12. अपने क्षेत्र के कुछ पुराने निवासियों से बात कीजिए और पिछले 30 वर्षों में सिंचाई और उत्पादन के तरीकों में हुए परिवर्तनों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखिए। (वैकल्पिक)।

उत्तर—मैंने अपने क्षेत्र में गाँव के चौपाल पर कई पुराने निवासियों से बात की और उनसे पिछले 30 वर्षों में सिंचाई एवं उत्पादन के तरीकों में हुए परिवर्तनों के विषय में जानने की कोशिश की।

मैंने माधव से कहा, "काका, कृपया मुझे 1970 के दशक में प्रचलित सिंचाई प्रणाली के विषय में बताइए।" माधव ने कहा, "उस समय किसान सामान्यत: कुओं अथवा तालाबों से रहट द्वारा पानी निकालकर अपने छोटे-छोटे खेतों की सिंचाई किया करते थे। इसके अतिरिक्त खेतिहर श्रमिक सिंचाई के लिए मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करते थे।"

मैंने मुरारी से पूछा, "काका, 30 वर्ष पहले उत्पादन के कौन-से तरीके थे?"

मुरारी काका ने कहा, "उस समय खेतों की जुताई बैलों से होती थी। रासायनिक खाद के बदले मानव खाद का प्रयोग होता था। कुओं अथवा तालाबों से रहट अथवा मिट्टी के बर्तनों द्वारा पानी निकालकर खेतों की सिंचाई की जाती थी। खेतिहर श्रमिक फसलों की कटाई करते थे।"

इस प्रकार, हम देखते हैं कि सिंचाई प्रणाली तथा उत्पादन की विधियों में अब व्यापक परिवर्तन हो चुका है।

(i) रहट अथवा मिट्टी के बर्तनों के स्थान पर अब प्राय: पम्पिंग सेट प्रयोग किए जाते हैं।

(ii) बैलों के स्थान पर ट्रैक्टरों और थ्रेशरों का प्रयोग किया जाता है।

(iii) परम्परागत बीजों का प्रयोग अब नहीं होता है, बल्कि लगभग सम्पूर्ण प्रदेश में अधिक उपज देने वाले एच.वाई.वी. बीजों का प्रयोग किया जाता है।

(iv) गोबर अथवा दूसरी प्राकृतिक खाद के बदले रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों का प्रयोग बहुत बढ़ गया है।

प्रश्न 13. आपके क्षेत्र में कौन-से गैर-कृषि उत्पादन कार्य हो रहे हैं? इनकी एक संक्षिप्त सूची बनाइए।

उत्तर—हमारे क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या का लगभग 25% भाग कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में लगा है। उन लोगों की मुख्य क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) डेयरी—यह हमारे क्षेत्र के कुछ परिवारों में एक प्रचलित क्रिया है। लोग गायों और भैंसों को पालते हैं और दूध को निकट के शहरों में बेचते हैं।

(ii) लघु स्तरीय विनिर्माण—वर्तमान में मेरे गाँव में लगभग 40 परिवार लघु स्तरीय विनिर्माण में लगे हैं। विनिर्माण कार्य पारिवारिक श्रम की मदद से अधिकांश घरों अथवा खेतों में किया जाता है। इनमें गुड़ उद्योग, मिट्टी के बर्तन बनाने का काम, हस्तशिल्प के काम सम्मिलित हैं।

(iii) दुकानदारी—हमारे क्षेत्र के कुछ लोग दुकानदारी का काम भी करते हैं। वे शहरों के थोक बाजारों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ खरीदते हैं और उन्हें गाँव में लाकर बेचते हैं।

(iv) परिवहन—हमारे क्षेत्र में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो परिवहन सेवाओं में लगे हैं। इनमें रिक्शावाले, ताँगेवाले, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक ड्राइवर और परम्परागत बैलगाड़ी तथा दूसरी गाड़ियाँ चलाने वाले लोग सम्मिलित हैं।

प्रश्न 14. गाँवों में और अधिक गैर-कृषि कार्य प्रारम्भ करने के लिए क्या किया जा सकता है?

उत्तर—गाँवों में और अधिक गैर-कृषि कार्य प्रारम्भ करने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा सकते हैं—

(i) जानकारी—गाँव वालों को गैर-कृषि उत्पादन कार्यों की विशेषताओं एवं महत्व के विषय में जानकारी दी जानी चाहिए। अगर वे यह जान जाएँगे कि वे कैसे इन क्रियाओं से अधिक पैसे कमा सकते हैं तो वे लोग निश्चय ही ऐसी क्रियाएँ शुरू कर देंगे और उनका विस्तार करेंगे।

(ii) ऋण सुविधाएँ—सरकार कम ब्याज दर पर गाँव वालों को ऋण उपलब्ध कराए जिससे वे इन क्रियाओं को शुरू कर सकें। पूँजी का अभाव उनकी सबसे बड़ी समस्या होती है।

(iii) परिवहन की सुविधाएँ—आसानी से उपलब्ध एवं सस्ती परिवहन सेवाएँ निश्चित रूप से गैर-कृषि उत्पादन क्रियाओं को प्रोत्साहित करती हैं। लोग आसानी से अपनी वस्तुएँ नजदीकी बाजार से ले जा सकते हैं।

(iv) विपणन सहायता—सरकार को चाहिए कि वह ग्रामीणों को विपणन की सुविधाएँ उपलब्ध कराए क्योंकि उनकी वस्तुएँ प्रायः गैर-मानकीकृत होती हैं।

(v) तकनीकी सहायता—गाँवों में लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास तकनीकी जानकारी का निम्न स्तर तथा प्रशिक्षित एवं अनुभवी व्यक्तियों के अभाव के कारण भी प्रभावित होता है। इसलिए सरकार को ऐसी क्रियाओं को प्रोत्साहन देने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. वे व्यक्ति जो सामान व सेवाओं के निर्माण में मदद करते हैं, कहलाते हैं—
(क) उत्पादक (ख) श्रमिक (ग) विनिर्माता (घ) भवन निर्माता।

2. आगत जैसे—मिट्टी, औजार एवं किसान की सेवाएँ कहलाती हैं—
(क) प्राथमिक आगत (ख) द्वितीयक आगत
(ग) तृतीयक आगत (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. आगत जैसे—बीज, खाद व जल हैं—
(क) प्राथमिक आगत (ख) द्वितीयक आगत
(ग) तृतीयक आगत (घ) ये सभी।

4. उत्पादन के कारक हैं—
(क) भूमि व श्रम (ख) भौतिक पूँजी (ग) व्यवसायी (घ) उक्त सभी।

5. कोई भी कार्य चाहे शारीरिक श्रम का हो या मानसिक हो, यदि वह धन के लिए किया जाता है तो कहलाता है—
(क) आर्थिक क्रियाकलाप (ख) श्रम
(ग) सेवा (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. औजारों, मशीनों, इमारतों का उपयोग उत्पादन के कई वर्षों तक किया जा सकता है। अतः कहलाता है—
(क) स्थायी पूँजी (ख) संपदा (ग) कार्यशील पूँजी (घ) उक्त सभी।

7. हाथ में कच्चा माल व धन कहलाता है—
(क) सम्पदा (ख) स्थायी पूँजी (ग) कार्यशील पूँजी (घ) उक्त सभी।

8. भूमि प्रकृति का निशुल्क उपहार है किन्तु पूँजी है—
(क) मानव निर्मित (ख) कृत्रिम (ग) आदेश (घ) इनमें से कोई नहीं।

9. एक व्यक्ति खतरा उठाते हुए अनश्चितता की स्थिति में किसी वस्तु का उत्पादन करता है, वह कहलाता है—
(क) श्रमिक (ख) व्यवसायी (ग) विनिर्माता (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. एक व्यवसायी अपने उत्पादकता के कारकों को जोड़ता है; जैसे—
(क) भूमि (ख) श्रम (ग) पूँजी (घ) उक्त सभी।

11. कोई भी कम्पनी बेचकर जो कमाती है, निर्गत उत्पादक के कारकों के मध्य निम्न रूप में विभक्त हो जाता है—
(क) किराया (ख) वेतन (ग) ब्याज व लाभ (घ) उक्त सभी।

12. आधुनिक तकनीक की प्रमुख विशेषताएँ हैं—
(क) उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करना
(ख) रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग
(ग) सिंचाई साधनों की उपलब्धता तथा कीटनाशकों का प्रयोग
(घ) उक्त सभी।

13. खरीफ की मुख्य फसलें हैं—
(क) गेहूँ (ख) जौ (ग) चना (घ) इनमें से कोई नहीं।

14. रबी की मुख्य फसल है—
(क) गेहूँ (ख) सरसों (ग) जौ (घ) उक्त सभी।

15. प्रमुख जायद फसल है—
(क) मक्का (ख) मूँगफली (ग) सब्जियाँ व फल (घ) उक्त सभी।

16. निम्न में से कौन सा उत्पादन का कारक नहीं है?
(क) भूमि (ख) श्रम (ग) पूँजी (घ) क्रय शक्ति।

17. निम्न में से क्या स्थायी पूँजी नहीं है?
(क) औजार (ख) कच्चा माल (ग) मशीन (घ) इमारत।

उत्तर—1. (क), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (घ), **5.** (क), **6.** (क), **7.** (ग), **8.** (क), **9.** (ख), **10.** (घ), **11.** (घ), **12.** (घ), **13.** (घ), **14.** (घ), **15.** (घ), **16.** (घ), **17.** (ख)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आधुनिक कृषि विधियों में अधिक आगतों की आवश्यकता होती है जिनका औद्योगिक निर्माण इकाई में किया जाता है। क्या आप सहमत हैं?

उत्तर—हाँ, आधुनिक कृषि विधियों में अधिक आगतों की आवश्यकता होती है जिनका निर्माण औद्योगिक इकाई में किया जाता है। ये आगत हैं—रसायन, उर्वरक, कीटनाशक आदि।

प्रश्न 2. विद्युत के विस्तार ने पालमपुर के किसानों की सहायता किस प्रकार की?

उत्तर—विद्युत की सहायता से खेतों में ट्यूब वैल चलाये जा सके तथा अन्य बहुत से कार्यों में विद्युत का उपयोग किया गया।

प्रश्न 3. क्या सिंचाई के अधीन क्षेत्र बढ़ाना महत्वपूर्ण है? क्यों?

उत्तर—हाँ, उत्पादन बढ़ाने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 4. पालमपुर में कृषि श्रमिकों के वेतन न्यूनतम वेतन से भी कम क्यों है?

उत्तर—क्योंकि पालमपुर में श्रमिकों की संख्या अधिक है तथा उनमें सौदा करने की शक्ति भी नहीं है। उन्हें जो दिया जाता है, वे स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्न 5. उत्पादक कौन होता है?

उत्तर—जो भी वस्तुओं व सेवाओं के निर्माण में सहायता देते हैं, उत्पादक कहलाते हैं।

प्रश्न 6. वस्तुओं का उत्पादन किसे कहते हैं?

उत्तर—जब उत्पादन क्रिया में मूल्यांकन व उपयोगी वस्तुएँ बनाई जाती हैं तो यह वस्तुओं का उत्पादन कहलाता है।

प्रश्न 7. सेवाओं का उत्पादन किसे कहा जाता है?

उत्तर—एक डॉक्टर के द्वारा व्यक्ति का इलाज करना, अध्यापक द्वारा कोचिंग देना, दर्जी की सेवाएँ, यातायात सुविधाएँ, कोरियर, टेलीफोन बूथ आदि सेवाओं का उत्पादन है।

प्रश्न 8. परम्परागत रूप से उत्पादन के कारक कौन-कौन से हैं?

उत्तर—परम्परागत रूप से उत्पादन के कारक हैं—भूमि, श्रम, पूँजी व उद्यम।

प्रश्न 9. प्राथमिक व द्वितीयक आगत कौन से हैं?

उत्तर—प्राथमिक आगत—मृदा, औजार व कृषकों की सेवाएँ।

द्वितीयक आगत—बीज, खाद व पानी।

प्रश्न 10. भूमि को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—भूमि से अभिप्राय सभी प्राकृतिक संसाधनों से है जो कि प्रकृति की ओर से निःशुल्क उपहार है, जैसे वन, पर्वत, मिट्टी आदि।

प्रश्न 11. उत्पादन का उद्देश्य क्या है?

उत्तर—उत्पादन का उद्देश्य लोगों की माँग व आवश्यकता के अनुसार उन्हें खाद्यान्न व सेवाएँ प्रदान करता है।

प्रश्न 12. मिश्रित कृषि क्या है?

उत्तर—इस प्रकार की कृषि में फसल उत्पादन व पशुपालन साथ-साथ किया जाता है।

प्रश्न 13. बहुफसली व्यवस्था क्या है?

उत्तर—बहुफसली व्यवस्था के अन्तर्गत एक ही भूमि पर विभिन्न मौसमों में क्रमानुसार एक के बाद दूसरी फसल उगाई जाती है।

प्रश्न 14. फसल चक्र के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—फसल चक्र में भूमि के मृदा पोषक तत्वों व उर्वरता को बनाये रखने के लिए एक ही भूमि पर क्रमानुसार अथवा चक्र में बारी-बारी से गेहूँ, जौ व फलीय पौधों की फसलें उगाई जाती हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भूमि की विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—भूमि की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) भूमि प्रकृति का निःशुल्क उपहार है।

(2) कृषि कार्य में प्रयुक्त भूमि का क्षेत्र वस्तुतः स्थिर होता है। लेकिन कुछ बंजर भूमि को कृषि योग्य भूमि में बदला जा सकता है।

(3) भूमि की मापक इकाई हेक्टेयर है।

(4) भूमि उत्पादन का एक निष्क्रिय साधन है; श्रम व पूँजी को लगाकर ही भूमि से उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

(5) भूमि के एक टुकड़े पर आधुनिक उत्पादन विधियों का प्रयोग करके उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

प्रश्न 2. श्रम क्या है? समझाइए।

उत्तर—श्रम—श्रम उत्पादन का प्रमुख कारक है। कुछ उत्पादक क्रियाओं में आवश्यक कार्यों को करने के लिए पढ़े-लिखे कर्मियों की आवश्यकता पड़ती है जबकि कुछ क्रियाओं को करने के लिए शारीरिक कार्य करने वाले श्रमिकों की आवश्यकता होती है। सभी श्रमिक आवश्यक श्रम उत्पादन के लिए प्रदान करते हैं।

प्रश्न 3. पूँजी का क्या महत्व है?

उत्तर—उत्पादन के लिए भौतिक पूँजी सर्वाधिक आवश्यक तत्व है। उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर अपेक्षित कई तरह की वस्तुएँ, संपत्ति आदि भौतिक पूँजी कहलाती हैं। भौतिक पूँजी के अन्तर्गत औजार, मशीन, भवन, कच्चा माल एवं नकद मुद्रा आदि आती हैं। श्रमिकों को मजदूरी देने के लिए नकद मुद्रा की आवश्यकता होती है। नकद मुद्रा को कार्यशील पूँजी कहते हैं। पूँजी के बिना उत्पादन संभव नहीं होता अतः उत्पादन के क्षेत्र में पूँजी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है।

प्रश्न 4. एक व्यवसायी के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—व्यवसायी वह व्यक्ति होता है जो भूमि, श्रम एवं पूँजी की सहायता से वस्तुओं का उत्पादन कर उनका विपणन करता है। व्यवसायी अपनी योग्यता से श्रम, भूमि एवं पूँजी का एक ऐसा संयोजन करता है जिससे अधिकतम उत्पादन संभव हो सके। वह अपना साहस एवं प्रबन्धन इसमें प्रयुक्त करता है। जिसके बदले में उसे लाभ प्राप्त होता है। एक कुशल व्यवसायी अधिकतम लाभ प्राप्त करता है।

प्रश्न 5. कृषि की आधुनिक विधियाँ क्या हैं?

उत्तर—भारत में कृषि की नवीन पद्धति 1960 के दशक के अन्तिम वर्षों में अपनाई गई जिसे **हरित क्रान्ति** (Green Revolution) की संज्ञा दी गई। इसके अन्तर्गत भारतीय किसान धान और गेहूँ की फसलों के उत्पादन के लिए 'अधिक उपज देने वाली किस्म' (High-Yielding Varieties , HYV) के बीजों का प्रयोग करने लगे। इन बीजों के प्रयोग से कृषि

की उपज में बहुत तेजी से वृद्धि हुई। पारम्परिक बीजों की अपेक्षा नई उन्नत किस्म के बीजों से प्रतिहेक्टेयर उत्पादन में दुगुनी या उससे भी अधिक वृद्धि सम्भव है, परिणामतः अब उसी भूखण्ड से पहले की तुलना में बहुत अधिक अनाज का उत्पादन होने लगा है; परन्तु अधिक उपज देने वाले बीजों से वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए सिंचाई की समुचित व्यवस्था, रासायनिक खादों तथा फसलों को कीटाणुओं और रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियों का प्रयोग अनिवार्य है। इनके संयुक्त प्रयोग द्वारा ही कृषि की उपज अथवा उत्पादकता में यथेष्ट वृद्धि लाई जा सकती है। भारत में कृषि की नवीन पद्धति का प्रयोग सर्वप्रथम पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने किया। इन क्षेत्रों के किसानों ने अपनी भूमि की सिंचाई के लिए नलकूप लगाए तथा अधिक उपज देने वाले बीजों, रासायनिक खाद एवं कीटनाशक औषधियों का प्रयोग आरम्भ किया। कुछ बड़े किसान ट्रैक्टर, थ्रेसर जैसे कृषि-उपकरणों का भी प्रयोग करने लगे। इससे भूमि की जुताई और फसलों की कटाई का कार्य सुगम हो गया। यही कारण है कि इन क्षेत्रों में भूमि की उत्पादकता में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

प्रश्न 6. दालों के उत्पादन पर हरित क्रान्ति का क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर—हरित क्रान्ति में दालों के उत्पादन में तेजी से गिरावट आई। किसानों ने गेहूँ एवं चावल के उत्पादन में अधिक रुचि दिखाई जिससे इन फसलों के उत्पादन में तो अभूतपूर्व वृद्धि हुई लेकिन दलहन वाली फसलें कम मात्रा में बोई गईं जिससे उनके उत्पादन में कमी आई।

प्रश्न 7. तकनीकी सुधारों के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—पुराने समय में खेती पुराने ढंग से की जाती थी, परन्तु हरित क्रान्ति के समय खेती में तकनीकी सुधारों को अंजाम दिया गया। इन सुधारों में उन्नत किस्म के बीजों की बुबाई, सिंचाई के आधुनिक उपकरणों तथा तकनीकों का प्रयोग, रासायनिक खादों तथा फसलों को कीटाणुओं एवं रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियों का प्रयोग आदि अनिवार्य सुधारों से उत्पादकता में तेजी से वृद्धि हुई है।

प्रश्न 8. कृषि की आधुनिक तकनीकों के उपयोग में कृषक को किस कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है?

उत्तर—कृषि की आधुनिक तकनीकों के उपयोग में कृषकों को भौतिक पूँजी की अधिक आवश्यकता होती है। कृषि यन्त्रों, उन्नत किस्मों के बीजों, रासायनिक खाद, कीटनाशक एवं सिंचाई के साधनों के विकास के लिए नकद पूँजी की आवश्यकता में तेजी से वृद्धि हुई है। यद्यपि मानव पूँजी की आवश्यकता कम हुई है।

प्रश्न 9. बहु-फसलीय व्यवस्था एवं कृषि की आधुनिक विधियों में क्या अन्तर है?

उत्तर—जब भूमि के एक निश्चित टुकड़े पर एक से अधिक फसल उपजाई जाती है तब इसे बहुफसल कार्यक्रम कहते हैं। वर्तमान में भारत में दो से तीन फसलें उगाई जाने लगी हैं जिससे वार्षिक उत्पादन में वृद्धि हुई है। यह वृद्धि तभी संभव हुई है जब कृषि की आधुनिक विधियों द्वारा खेती की जाती है। कृषि की आधुनिक विधियों में उन्नत किस्म के बीजों की बुबाई, सिंचाई के आधुनिक साधन, कीटनाशक दवाओं का छिड़काव, रासायनिक खादों का प्रयोग, कृषि यन्त्रों का प्रयोग आदि क्रियाएँ शामिल हैं।

प्रश्न 10. पालमपुर के किसानों के मध्य किस प्रकार भूमि का वितरण किया गया? एक तालिका बनाइए।

उत्तर—कृषि के लिए भूमि कितनी महत्वपूर्ण है, यह तो आपको पता चल गया होगा। दुर्भाग्यवश कृषि कार्यों में लगे सभी लोगों के पास कृषि हेतु पर्याप्त भूमि नहीं है। पालमपुर में 450 परिवारों में से लगभग एक-तिहाई अर्थात् लगभग 150 परिवारों के पास कृषि के लिए जमीन उपलब्ध नहीं है, इनमें से अधिकांश दलित लोग हैं। शेष परिवारों में से 240 परिवार जिनके पास भूमि है, 2 हेक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाले छोटे भूमि के टुकड़ों पर कृषि कार्य करते हैं। भूमि के ऐसे टुकड़ों पर खेती करने से किसानों के परिवारों को पर्याप्त आमदनी नहीं हो पाती।

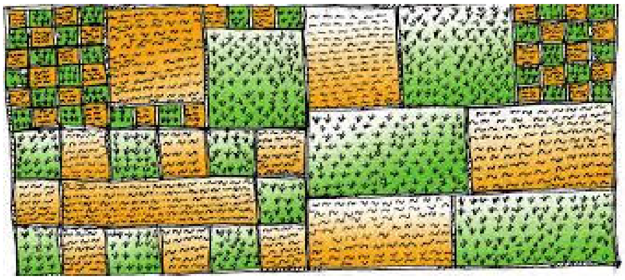

चित्र : पालमपुर गाँव : कृषि भूमि का वितरण।

सन् 1960 में कृषक जयसिंह के पास 2.25 हेक्टेयर असिंचित भूमि थी। जयसिंह अपने तीन पुत्रों की सहायता से इस भूमि पर खेती करता था। यद्यपि वे बहुत आराम से नहीं रह रहे थे, किन्तु परिवार अपनी एक भैंस से होने वाली कुछ अतिरिक्त आमदनी से अपना गुजारा कर रहा था। जयसिंह की मृत्यु के कुछ वर्ष बाद, उसके तीनों पुत्रों के बीच भूमि का बँटवारा हो गया। अब उनमें से प्रत्येक के पास केवल 0.75 हेक्टेयर भूमि का टुकड़ा था, किन्तु, अब आधुनिक कृषि विधियों एवं अच्छी सिंचाई व्यवस्था होने के बावजूद जयसिंह के बेटे अपनी जमीन से गुजारा नहीं कर पा रहे हैं। वर्ष के कुछ भाग में उन्हें कुछ अतिरिक्त कार्य भी खोजना पड़ता है।

चित्र में एक गाँव के चारों ओर बिखरे हुए भूमि के छोटे-छोटे टुकड़ों को देखा जा सकता है। इन पर छोटे किसान खेती करते हैं। दूसरी तरफ, गाँव के आधे से अधिक भाग में काफी बड़े आकार के प्लॉट हैं। पालमपुर में मझोले एवं बड़े किसानों के 60 परिवार हैं जो 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर कृषि कार्य करते हैं। कुछ बड़े किसानों पर 10 हेक्टेयर अथवा इससे भी अधिक भूमि है।

प्रश्न 11. आधुनिक कृषि के अन्तर्गत किसानों को पहले की अपेक्षा अधिक धन लगाने की आवश्यकता होती है। क्यों?

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 8 का उत्तर।

प्रश्न 12. पालमपुर की गैर-कृषि गतिविधियों के बारे में लिखिए।

उत्तर—पालमपुर गाँव में गैर-कृषि क्रियाएँ—पालमपुर में कार्यशील जनसंख्या का केवल 25 प्रतिशत भाग, गैर-कृषि कार्यों में संलग्न है। मुख्य गैर-कृषि क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—

1. डेरी—पालमपुर गाँव के लोग भैंस पालते हैं और दूध को निकट के बड़े गाँव रायगंज में बेच आते हैं। रायगंज में 'दूध संग्रहण एवं शीतलन केन्द्र' खुला हुआ है।

2. लघु स्तरीय विनिर्माण—गाँव के लगभग 50 लोग विनिर्माण कार्यों में लगे हुए हैं। यहाँ विनिर्माण कार्य छोटे पैमाने पर किया जाता है और उत्पादन विधि बहुत सरल है।

3. कुटीर उद्योग—गाँव में गन्ना पेरने वाली मशीनें लगी हैं। ये मशीनें बिजली से चलाई जाती हैं। किसान स्वयं उपजाए गन्ने तथा दूसरों से गन्ना खरीदकर गुड़ बनाते हैं और शाहपुर के व्यापारियों को बेचते हैं।

4. व्यापार कार्य—पालमपुर के व्यापारी शहरों के थोक बाजारों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ खरीदते हैं तथा उन्हें गाँव में लाकर बेचते हैं; जैसे—चावल, गेहूँ, तेल, बिस्किट, साबुन, टूथपेस्ट, बैटरी, मोमबत्तियाँ, कॉपी, पैन, पेन्सिल आदि। भीड़-भाड़ वाले इलाकों में खाने-पीने की वस्तुएँ भी बेची जाती हैं।

5. परिवहन वाहन—पालमपुर के लोग अनेक प्रकार के वाहन चलाते हैं; जैसे—रिक्शा, ताँगा, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक, बैलगाड़ी व अन्य गाड़ियाँ। ये वाहन वस्तुओं व यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं और इसके बदले में वाहन चालकों को किराए के रूप में पैसे मिलते हैं।

6. प्रशिक्षण सेवा—पालमपुर गाँव में एक कम्प्यूटर केन्द्र खुला हुआ है। इस केन्द्र में कम्प्यूटर प्रशिक्षक के रूप में दो कम्प्यूटर डिग्री धारक महिलाएँ भी काम करती हैं। पर्याप्त विद्यार्थी कम्प्यूटर सीख रहे हैं।

प्रश्न 13. पालमपुर में यातायात व संचार की क्या व्यवस्था है?

उत्तर—पालमपुर के लोग अनेक प्रकार के वाहन चलाते हैं, जैसे—रिक्शा, ताँगा, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक, बैलगाड़ी एवं अन्य गाड़ियाँ। ये वाहन वस्तुओं व यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। और इसके बदले में वाहन चालकों को किराए के रूप में पैसे मिलते हैं। संचार के साधनों के रूप में पालमपुर वासी मोबाइल फोन, टी.वी., रेडियो आदि का उपयोग करते हैं। पालमपुर गाँव में एक कम्प्यूटर केन्द्र खुला हुआ है। इस केन्द्र में कम्प्यूटर प्रशिक्षक के रूप में दो कम्प्यूटर डिग्री धारक महिलाऐं भी काम करती हैं। पर्याप्त विद्यार्थी कम्प्यूटर सीख रहे हैं।

प्रश्न 14. पालमपुर में यातायात (वस्तु विनिमय) की क्या स्थिति है?

उत्तर—पालमपुर के दुकानदार गाँव के लोगों के लिए आवश्यक वस्तुएँ हल्द्वानी के थोक विक्रेताओं से खरीदते हैं। इनमें चीनी, चाय, तेल बिस्किट, साबुन, डिटरजेंन्ट, टूथपेस्ट, टार्च, मोमबत्ती, स्टेशनरी का सामान, किताबें आदि होती हैं। त्रिलोक के पास भूमि का एक बड़ा प्लाट है। पहले वह दिल्ली में रहकर LPG में काम करता था परन्तु अब वह गाँव लौट आया है तथा उसने एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र खोला है जिसमें प्रतिभावान शिक्षकों द्वारा पालमपुर के नवयुवकों को कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रश्न 15. ग्रामों में किस प्रकार और अधिक गैर-कृषि क्रियाकलापों को आरम्भ किया जा सकता है?

उत्तर—ग्रामों में छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों को खोल कर गैर कृषि क्रियाकलापों को आरम्भ किया जा सकता है। गाँवों में कृषि कार्य पूरे वर्ष नहीं चलता है। किसानों को कुछ समय के लिए खेती में कोई कार्य नहीं होता। ऐसे अवकाश के समय में वे छोटी-मोटी वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं। घर में रहने वाली महिलाएँ भी उनके इस कार्य में हाथ बटा सकती हैं। कुटीर उद्योगों के लिए कम स्थान तथा कम पूँजी की आवश्यकता होती है। कुटीर उद्योगों में डेरी, पशुपालन, मुर्गीपालन, मत्स्य पालन, सिलाई आदि का विस्तार कर गैर-कृषि क्रियाकलापों में वृद्धि की जा सकती है।

प्रश्न 16. क्या कोई ऐसी विधि है जिससे उसी भूमि से अधिक उत्पादन किया जा सके?

उत्तर—कृषि भूमि से अधिक उत्पादन के लिए एक सुगम तरीका यह है कि एक वर्ष में अधिक-से-अधिक फसलें उगाई जाए। वर्ष में लगभग तीन फसलें अवश्य उगाई जाएँ जिससे उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि होगी। इसके अलावा उन्नत

किस्म के बीज एवं खाद व कीटनाशकों का प्रयोग कर उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। हरित क्रान्ति के बाद देश में इन्हीं उपायों द्वारा कुल फसलों के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है।

प्रश्न 17. हरित क्रान्ति के विषय में आप क्या जानते हैं? इसने किस प्रकार भारतीय कृषि की सहायता की?

उत्तर—भारत में कृषि की नवीन पद्धति 1960 के दशक के अन्त में अपनाई गई जिसे **हरित क्रान्ति** (Green Revolution) की संज्ञा दी गई। इसके अन्तर्गत भारतीय किसान चावल और गेहूँ की फसलों के उत्पादन के लिए 'अधिक उपज वाले बीजों' का प्रयोग करने लगे। परम्परागत् बीजों की तुलना में HYV बीजों से एक ही पौधे से अधिक मात्रा में अनाज पैदा होने की सम्भावना रहती थी। इसके फलस्वरूप, जमीन के उसी भाग में पहले की अपेक्षा अधिक अनाज की मात्रा पैदा होने लगी। यद्यपि अधिक उपज देने वाले बीजों से वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए अत्यधिक पानी, रासायनिक खादों तथा फसलों की कीटाणुओं और रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियों की आवश्यकता होती है। इनके संयुक्त प्रयोग द्वारा ही कृषि की उपज अथवा उत्पादकता में यथेष्ट वृद्धि लाई जा सकती है।

प्रश्न 18. क्या भूमि कृषि के आधुनिक तरीकों को बनाये रखेगी?

उत्तर—भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है। अत: इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए। अधिक रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि की उर्वरता कम हो गई है।

प्रश्न 19. भारत के ग्रामों में अप्रवास एक सामान्य गतिविधि क्यों है? लोग क्यों विस्थापित होते हैं? अपने गंतव्य पर पहुँचकर वे क्या करते हैं तथा उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है?

उत्तर—भारत के ग्रामों में मानव जीवन के लिए आधारभूत आवश्यकताओं की कमी है। ग्रामों में कृषि ही रोजगार का प्रमुख साधन है। खेतों में भी पूरे वर्ष के लिए काम नहीं मिलता है अत: गाँव के लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। गाँवों में बच्चों की अच्छी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था की भी कमी है। खेती के अलावा कोई रोजगार नहीं है। इन्हीं कारणों से गाँव के लोग शहरों की ओर रोजगार या शिक्षा की तलाश में चले जाते हैं तथा शहरों में जाकर मजदूरी या नौकरी करने लगते हैं। यहाँ पर इनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। इनका शोषण किया जाता है। इन्हें किसी भी समय नौकरी या मजदूरी से हटाया जा सकता है। इनका जीवन अनिश्चितताओं से भरा हुआ होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. श्रम की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर—श्रम की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

(1) श्रम को श्रमिक से अलग नहीं किया जा सकता है।

(2) श्रमिक केवल अपने श्रम को बेचता है।

(3) श्रम अन्तिम कारक नहीं है, यह प्राथमिक कारक है।

(4) श्रम का मूल्य निर्धारित नहीं होता है। श्रमिक श्रम की मजदूरी को स्वयं स्वीकार करता है।

(5) श्रमिक की मोल-तोल करने की शक्ति बहुत कम होती है।

(6) श्रम की माँग की तुरन्त एवं उसी मात्रा में पूर्ति संभव नहीं है।

(7) श्रम की माँग एवं पूर्ति के आधार पर मजदूरी का निर्धारण होता है।

प्रश्न 2. भौतिक पूँजी क्या है? क्या भूमि एक पूँजी है?

उत्तर—भौतिक पूँजी—मनुष्य द्वारा निर्मित कोई भी गैर मानवीय परिसम्पत्ति जिसका उपयोग उत्पादन में किया जाता है, भौतिक पूँजी कहलाती है। उत्पादन के लिए भौतिक पूँजी सर्वाधिक आवश्यक तत्व है। उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर अपेक्षित कई तरह की वस्तुएँ, संपत्ति आदि भौतिक पूँजी कहलाती हैं। भौतिक पूँजी के अन्तर्गत निम्नलिखित को रखा जाता है—

(1) औजार, मशीन, भवन—ग्राम्य उत्पादन के क्षेत्र में औजारों तथा मशीनों में अत्यन्त साधारण औजार किसान के हल से लेकर परिष्कृत मशीनें; जैसे—जैनरेटर, टरबाइन, कम्प्यूटर आदि आते हैं। औजारों, मशीनों और भवनों का उत्पादन कार्य में दशकों से प्रयोग हो रहा है और इन्हें उत्पादन कार्यों की स्थाई पूँजी कहा जाता है।

(2) कच्चा माल और नकद मुद्रा—कच्चे माल के अभाव में किसी वस्तु के उत्पादन की कल्पना नहीं की जा सकती। बुनकरों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला सूत और कुम्हारों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली मिट्टी कच्चे माल के उदाहरण हैं। उत्पादन के दौरान भुगतान करने तथा जरूरी माल खरीदने के लिए धन की भी आवश्यकता होती है। कच्चा माल तथा नकद मुद्रा को कार्यशील पूँजी कहते हैं। औजारों, मशीनों तथा भवनों को छोड़ कर कच्चा माल और नकद मुद्रा उत्पादन क्रिया के दौरान समाप्त हो जाते हैं।

(3) भूमि—भूमि उत्पादन का एक आवश्यक अवयव है जिसकी सहायता से उत्पादन संभव होता है। भूमि प्रकृति के द्वारा दिया गया नि:शुल्क उपहार है। भूमि भी पूँजी का ही एक स्वरूप है।

प्रश्न 3. पालमपुर गाँव में कृषि के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—यहाँ कृषि के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ मौजूद हैं। पालमपुर में समस्त भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है। कोई भूमि बेकार नहीं छोड़ी जाती। वर्षा ऋतु (खरीफ) में किसान ज्वार और बाजरा उगाते हैं। यह फसल पशुओं के चारे के लिए प्रयोग की जाती है। इसके बाद अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य आलू की खेती की जाती है। सर्दी के मौसम में खेतों में गेहूँ की फसल उगायी जाती है। उत्पादित गेहूँ में से परिवार के खाने के लिए रखकर शेष गेहूँ किसानों द्वारा रायगंज की मंडी में बेच दिया जाता है। भूमि के एक भाग में गन्ने की फसल उगायी जाती है। गन्ने की कटाई वर्ष में एक बार ही की जाती है। गन्ना अपने कच्चे रूप में अथवा गुड़ के रूप में शाहपुर के व्यापारियों को बेचा जाता है।

पालमपुर में सिंचाई की पर्याप्त सुविधा होने के कारण, यहाँ के किसान एक वर्ष में तीन अलग-अलग फसलों का उत्पादन करते हैं। पालमपुर में बिजली की व्यवस्था जल्दी ही हो गई थी जिसके कारण यहाँ की सिंचाई की पद्धति ही बदल गई। इससे पहले किसान कुओं से रहट द्वारा पानी निकालकर छोटे-छोटे खेतों की सिंचाई किया करते थे। लोगों ने देखा कि बिजली से चलने वाले नलकूपों से अधिक प्रभावकारी तरीके से एवं अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती थी। आरम्भ में कुछ नलकूप सरकार द्वारा लगाए गए थे, किन्तु शीघ्र ही किसानों ने अपने निजी नलकूप लगाने प्रारम्भ कर दिए। परिणामस्वरूप, 1970 के दशक के मध्य तक 250 हेक्टेयर के पूरे जुते हुए क्षेत्र की सिंचाई होने लगी।

प्रश्न 4. गेहूँ व दालों के उत्पादन के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—भारत में कृषि की नवीन पद्धति 1960 के दशक के अन्त में अपनाई गई जिसे हरित क्रान्ति की संज्ञा दी गई। इसके अन्तर्गत भारतीय किसान चावल और गेहूँ की फसलों के उत्पादन के लिए 'अधिक उपज वाले बीजों' का प्रयोग करने लगे। परम्परागत बीजों की तुलना में HYV बीजों से एक ही पौधे से अधिक मात्रा में अनाज पैदा होने की संभावना रहती थी। इसके परिणामस्वरूप जमीन के उसी भाग में पहले की अपेक्षा अधिक मात्रा में अनाज की पैदावार होने लगी। यद्यपि अधिक उपज देने वाले बीजों से वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए अत्यधिक पानी, रासायनिक खादों तथा फसलों को कीटाणुओं और रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियों की आवश्यकता होती है। इनके द्वारा ही फसलों की उपज में यथेष्ट वृद्धि लाई जा सकती है। भारत में हरियाणा, पंजाब एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने सबसे पहले प्रयोग किया जिसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों में भूमि की उत्पादकता में काफी तीव्रता से वृद्धि हुई। गेहूँ का उत्पादन काफी बढ़ गया तथा खाद्यान्न उत्पादन में भारत आत्मनिर्भर हो गया। गेहूँ के उत्पादन में तो काफी तीव्रता से वृद्धि हुई परन्तु किसानों ने दालों को बोना बहुत कम कर दिया जिससे दालों के उत्पादन में काफी गिरावट दर्ज की गई। जिससे दालों के भाव काफी ऊँचे हो गये।

प्रश्न 5. श्रम कौन प्रदान करता है? समझाइए।

उत्तर—श्रम को भूमि के पश्चात् उत्पादन का दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण साधन कहा जाता है। कृषि कार्य के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। छोटे किसान परिवार समेत खुद भी खेतों में कार्य करते हैं। इसके विपरीत बड़े और मझोले किसान अपने खेतों पर कार्य करने के लिए दूसरे मजदूरों पर निर्भर रहते हैं तथा अन्य मजदूरों को मजदूरी पर रखते हैं। खेतों में काम करने वाले मजदूर भूमिहीन होते हैं या बहुत-ही छोटे-से आकार में खेती करते हैं। किसानों द्वारा दी गई मजदूरी नकद या वस्तु (अनाज) के रूप में हो सकती है और कभी-कभी श्रमिकों को भोजन भी मिलता है। मजदूरी भी कई तरह की होती है, जैसे—दैनिक मजदूरी (दिहाड़ी) या किसी विशेष कार्य (कटाई और बुआई) के लिए एक मुक्त देय राशि। दैनिक मजदूरी पाने वालों को प्रतिदिन काम ढूँढ़ना पड़ता है। सरकार द्वारा न्यूनतम मजदूरी ₹ 375 निश्चित है परंतु गाँवों में श्रमिक कम मजदूरी पर भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं जिसका कारण निर्धनता है।

प्रश्न 6. मध्यम व बड़े कृषक खेती के लिए पूँजी कैसे प्राप्त करते हैं? यह छोटे कृषकों से किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर—खेतों में आधुनिक तरीकों का प्रयोग करने के लिए अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए आज किसानों को पहले की तुलना में अधिक पैसा चाहिए।

अधिकांश छोटे किसानों को पूँजी की व्यवस्था करने के लिए पैसा उधार लेना पड़ता है। उनके द्वारा गाँव के बड़े किसानों से अथवा गाँव के साहूकारों से या फिर खेती के लिए विभिन्न आगतों की पूर्ति करने वाले व्यापारियों से कर्ज लेना पड़ता है। इस प्रकार के कर्ज पर ब्याज की दर बहुत अधिक होती है। कर्ज चुकाने के लिए उन्हें बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं। इस प्रकार छोटा किसान हमेशा कर्ज में दबा रहता है।

छोटे किसानों की तुलना में मध्यम और बड़े कृषक कृषि कार्य से बचत करते हैं। बचत पूँजी में परिवर्तित हो जाती है। जिससे इन्हें बाहर से कर्ज लेने की या पूँजी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती है। कुछ बड़े किसान आवश्यकता से अधिक पूँजी संचय कर लेते हैं। इस पूँजी को वह छोटे किसानों को कर्ज के रूप में दे देते हैं तथा उनसे ब्याज वसूलते हैं। इस कारण बड़े किसान पूँजीपति होते जाते हैं तथा छोटे किसान गरीब से गरीबतर होते जाते हैं।

●●

2 संसाधन के रूप में लोग

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. 'संसाधन के रूप में लोग' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—'संसाधन के रूप में लोग' से हमारा आशय है कि भूमि एवं पूँजी जैसे अन्य संसाधनों की भाँति ही देश की कार्यशील जनसंख्या भी एक संसाधन है क्योंकि इनमें उत्पादन कौशल एवं क्षमता होती है। अर्थात् इनमें सकल राष्ट्रीय उत्पाद के सृजन में योगदान देने की क्षमता है। इस संसाधन को मानव संसाधन कहा जाता है।

प्रश्न 2. मानव संसाधन भूमि और भौतिक पूँजी जैसे अन्य संसाधनों से कैसे भिन्न है?

उत्तर—मानव संसाधन भूमि और भौतिक पूँजी जैसे अन्य संसाधनों से निम्न प्रकार भिन्न है—

(i) अन्य संसाधनों से भिन्न, मानव संसाधन का आर्थिक विकास की दृष्टि से दोहरा महत्व है। लोग विकास के साधन एवं साध्य दोनों होते हैं। एक ओर वे उत्पादन के साधन और दूसरी ओर वे अंतिम उपयोगकर्ता अर्थात् स्वयं साध्य भी होते हैं।

(ii) मानव संसाधन भूमि और पूँजी जैसे अन्य संसाधनों का प्रयोग कर सकता है लेकिन भूमि और पूँजी अपने आप उपयोगी नहीं हो सकते।

(iii) अन्य संसाधनों से अलग मानव संसाधन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अधिक शिक्षित एवं अधिक स्वस्थ लोगों के लाभ स्वयं उन तक ही सीमित नहीं होते हैं, बल्कि उनका लाभ उन तक भी पहुँचता है जो स्वयं उतने शिक्षित एवं स्वस्थ नहीं हैं।

प्रश्न 3. मानव पूँजी निर्माण में शिक्षा की क्या भूमिका है?

उत्तर—मानव पूँजी निर्माण में शिक्षा निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है—

(i) यह लोगों के लिए नए अवसर प्रदान करती है, नयी आकांक्षाएँ देती है और उनमें जीवन के मूल्य, प्रवृत्ति, ज्ञान एवं कौशल विकसित करती है।

(ii) यह लोगों को क्षमता एवं लोचशीलता प्रदान करती है और उन्हें देश के आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए सक्षम बनाती है।

(iii) शिक्षा से गुणवत्ता तथा गुणवत्ता से कुल उत्पादकता बढ़ती है। कुल उत्पादकता के बढ़ने से अर्थव्यवस्था का विकास होता है। इससे व्यक्ति को वेतन के रूप में अथवा फिर उसकी पसन्द के किसी दूसरे रूप में प्रतिफल मिलता है।

(iv) शिक्षा लोगों को शराब, जुआ जैसी बुरी आदतों से बचाती है और अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करती है।

(v) शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देते हैं। साथ ही, वे अपने परिवार को सीमित रखते हैं।

(vi) सामान्य शिक्षा लोगों की समझ के स्तर को बढ़ाती है। जबकि प्रौद्योगिकी शिक्षा देश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित कर कौशल और उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

(vii) यह देश की समस्याओं के समाधान के लिए विवेकशील और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।

इस प्रकार, यह राष्ट्रीय आय और सांस्कृतिक समृद्धि में वृद्धि करती है और प्रशासन की कार्य-क्षमता बढ़ती है।

प्रश्न 4. मानव पूँजी निर्माण में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?

उत्तर—स्वास्थ्य का आशय केवल बीमारी से छुटकारा पाना ही नहीं है बल्कि इससे आशय शारीरिक एवं मानसिक कुशलता से भी है—

(i) स्वास्थ्य में सुधार मानव पूँजी निर्माण और जीवन की बेहतर गुणवत्ता का एक आवश्यक तत्व है। यह लोगों के लिए नए-नए अवसर प्रदान करती है, नयी आकांक्षाएँ देती है तथा जीवन के मूल्यों, संभावनाओं एवं क्षमता का विकास करती है।

(ii) स्वास्थ्य में सुधार श्रमिकों की कुशलता, क्षमता एवं गुणवत्ता बढ़ाती है। इससे उनकी कुल उत्पादकता बढ़ती है और कुल उत्पादकता के बढ़ने से उनकी आय एवं अर्थव्यवस्था का विकास होता है।

(iii) केवल स्वस्थ व्यक्ति ही अपने काम के प्रति सचेष्ट तथा ईमानदार रह सकता है।

प्रश्न 5. किसी व्यक्ति के कामयाब जीवन में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?

उत्तर—किसी व्यक्ति के कामयाब जीवन में स्वास्थ्य की निम्नलिखित भूमिका होती है—

(i) किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य उसे अपनी क्षमता को प्राप्त करने और बीमारियों से लड़ने की ताकत देता है।

(ii) एक स्वस्थ व्यक्ति अपने कौशल एवं उत्पादकता द्वारा देश के विकास में ही अपना योगदान नहीं देता है बल्कि वह विकास का लाभ अधिक अच्छी प्रकार उठा पाता है।

(iii) कठिन और लगातार परिश्रम करने तथा जीवन का आनन्द उठाने की किसी व्यक्ति की क्षमता काफी हद तक उसके स्वास्थ्य की स्थिति पर निर्भर करती है। जबकि अस्वस्थ लोग वास्तव में किसी संगठन के लिए बोझ बन जाते हैं।

(iv) स्वास्थ्य व्यक्ति की कुशलता एवं क्षमता बढ़ाता है जिससे उसकी कुल उत्पादकता बढ़ती है। इससे उसे अच्छा वेतन और आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

प्रश्न 6. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों में किस तरह की विभिन्न आर्थिक क्रियाएँ संचालित की जाती हैं?

उत्तर—किसी देश के लोगों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्यों को अर्थव्यवस्था के निम्नलिखित तीन मुख्य क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जा सकता है—प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक।

(i) प्राथमिक क्षेत्र—इस क्षेत्र में प्रकृति प्रदत्त पदार्थों के उपयोग एवं उसके संग्रहण से सम्बन्धित क्रियाएँ शामिल होती हैं। इस क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न क्रियाकलाप हैं—कृषि, वानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन, मुर्गीपालन एवं खनन।

(ii) द्वितीयक क्षेत्र—इसमें वे सभी क्रियाएँ आती हैं जिनसे कच्चे मालों या प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को मानव उपयोगी अन्य वस्तुओं में परिवर्तित किया जा सके। द्वितीयक क्षेत्र में उत्खनन तथा विनिर्माण से सम्बन्धित क्रियाएँ शामिल होती हैं।

(iii) तृतीयक क्षेत्र—इसके अन्तर्गत वे सभी क्रियाएँ आती हैं जो आधुनिक उद्योग एवं अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए आवश्यक होती हैं। इसे सेवा क्षेत्र भी कहते हैं। इस क्षेत्र में व्यापार, परिवहन, संचार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन सेवाएँ आदि शामिल की जाती हैं। ये सभी क्रियाकलाप देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि करते हैं।

प्रश्न 7. आर्थिक और गैर-आर्थिक क्रियाओं में क्या अन्तर है?

उत्तर—(i) आर्थिक क्रियाएँ—पैसा कमाने और व्यय करने से सम्बन्धित सभी क्रियाएँ आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। इस प्रकार, प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों के अन्तर्गत आने वाली सभी क्रियाओं को आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। उदाहरण के लिए, किसान अपने खेतों में कृषि कार्य करते हैं।

(ii) गैर-आर्थिक क्रियाएँ—वे क्रियाएँ जो प्रत्यक्षत: धन से सम्बन्धित नहीं हैं, उन्हें गैर-आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। ये क्रियाएँ देश-भक्ति, प्रेम, पारिवारिक दायित्व, समाज सेवा, धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में की जाती हैं। उदाहरण के लिए, माँ अपने बच्चों के लिए खाना पकाती है।

प्रश्न 8. महिलाएँ क्यों निम्न वेतन वाले कार्यों में नियोजित होती हैं?

उत्तर—शिक्षा और कौशल बाजार में किसी व्यक्ति की आय के मुख्य निर्धारक होते हैं—

(i) शिक्षा व्यक्ति को उपलब्ध आर्थिक अवसरों के बेहतर उपयोग में सहायता करती है। चूँकि अधिकांश महिलाओं के पास बहुत कम शिक्षा होती है, इसलिए उन्हें पुरुषों की अपेक्षा कम पारिश्रमिक दिया जाता है।

(ii) कौशल अथवा व्यावसायिक हुनर भी किसी व्यक्ति की आय का निर्धारक होता है। महिलाएँ प्राय: अकुशल होती हैं, इसलिए उन्हें पुरुषों की अपेक्षा कम वेतन वाले काम करने पड़ते हैं। लेकिन उच्च शिक्षा और उच्च कौशल प्राप्त महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेतन मिलता है।

प्रश्न 9. 'बेरोजगारी' शब्द की आप कैसे व्याख्या करेंगे?

उत्तर—बेरोजगारी उस समय विद्यमान कही जाती है, जब प्रचलित मजदूरी की दर पर काम करने के लिए इच्छुक लोग रोजगार नहीं पा सकें। दूसरे शब्दों में, बेरोजगारी से आशय इच्छा के बावजूद रोजगार के न मिलने से है। साथ ही, श्रम शक्ति जनसंख्या में वे लोग सम्मिलित किए जाते हैं, जिनकी उम्र 15 वर्ष से 59 वर्ष के बीच है। उदाहरण के लिए—

(i) सकल की माँ शीला अपने परिवार के लिए काम करती है। वह अपने घर से बाहर पैसे के लिए काम करना नहीं चाहती है। अत: उसे बेरोजगार नहीं कहा जा सकता है।

(ii) उसी प्रकार, अंकित का भाई अमित तथा बहन आभा क्रमश: 9 वर्ष और 11 वर्ष के हैं। इसलिए उन्हें बेरोजगार नहीं कहा जा सकता।

(iii) अंकित के दादा-दादी की आयु भी 59 वर्ष से अधिक है। इसलिए उन्हें भी बेरोजगार नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 10. प्रछन्न और मौसमी बेरोजगारी में क्या अन्तर है?

उत्तर—प्रछन्न बेरोजगारी—प्रछन्न बेरोजगारी के अन्तर्गत लोग काम करते नजर आते हैं लेकिन वास्तव में वे बेरोजगार होते हैं। इसके अन्तर्गत किसी काम में लोग आवश्यकता से अधिक संख्या में लगे होते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी प्रायः कृषि क्षेत्र में पायी जाती है। उदाहरण के लिए, एक परिवार के पास एक खेती योग्य भूमि का टुकड़ा है, जहाँ केवल 5 लोगों के काम की आवश्यकता है लेकिन इसमें परिवार के सभी 9 सदस्य लगे हैं। यदि उनमें से 4 लोग हटा दिए जाते हैं तो भी उत्पादन में कोई कमी नहीं होती है। इसलिए ये 4 अतिरिक्त लोग प्रछन्न रूप से नियोजित होते हैं।

मौसमी बेरोजगारी—मौसमी बेरोजगारी तब होती है, जब लोग वर्ष के कुछ महीनों में रोजगार प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी भी कृषि क्षेत्र में पाई जाती है। वर्ष में कुछ व्यस्त मौसम होते हैं, जब बुआई, कटाई, निराई एवं गहाई होती है। लेकिन कुछ विशेष महीनों में कृषि पर आश्रित लोगों को अधिक काम नहीं मिल पाता।

प्रश्न 11. शिक्षित बेरोजगारी भारत के लिए एक विशेष समस्या क्यों है?

उत्तर—सामान्य रूप से यह आशा की जाती है कि शिक्षा रोजगार के स्तर में सुधार करती है, लेकिन भारत में ऐसा नहीं हुआ है। भारत के लिए यह एक विशेष समस्या बन गयी है।

(i) विभिन्न डिग्रीधारी अनेक युवक रोजगार पाने में असमर्थ हैं। 1993-94 में भारत में लगभग 1 करोड़ लोग शिक्षित बेरोजगार थे।

(ii) भारत में मैट्रिक की तुलना में स्नातक एवं स्नातकोत्तर युवकों में बेरोजगारी अधिक तेजी से बढ़ी है।

(iii) जैसे उच्च वर्ग में शिक्षित लोग अधिक हैं तो कुछ विशेष श्रेणियों; जैसे—दलित वर्ग में शिक्षित लोगों की कमी विद्यमान है।

(iv) एक ओर तकनीकी योग्यता प्राप्त लोगों के बीच बेरोजगारी है, तो दूसरी ओर आर्थिक विकास के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल की कमी भी है।

भारत में शिक्षित बेरोजगारी के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(a) त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली, (b) विभिन्न प्रकार के काम के लिए तकनीकी योग्यता एवं अभिरुचि का अभाव, (c) शिक्षित श्रमिकों की माँग और पूर्ति के बीच कुसमायोजन।

प्रश्न 12. आपके विचार से भारत किस क्षेत्रक में रोजगार के सर्वाधिक अवसर सृजित कर सकता है?

उत्तर—मेरे विचार से भारत विनिर्माण क्षेत्रक में रोजगार के सर्वाधिक अवसर सृजित कर सकता है। कृषि क्षेत्र में प्रछन्न बेरोजगारी होती है। यदि खेत में परिवार के सभी सदस्यों के काम की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति उसमें लगा होता है।

इसलिए प्राथमिक क्षेत्र में लगे इन अधिशेष श्रमिकों को विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्रकों में लाना चाहिए।

(i) यद्यपि द्वितीयक क्षेत्र में छोटे पैमाने पर होने वाले विनिर्माण अर्थात् लघु एवं कुटीर उद्योगों में श्रम का सबसे अधिक भाग लगा है। फिर भी इस क्षेत्र में रोजगार अवसरों को बढ़ाने की अत्यधिक संभावना है। इसका कारण है कि भारत में पूँजी का अभाव है और जनसंख्या का अधिकांश भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहा है।

(ii) रोजगार के अवसर तृतीयक क्षेत्र विशेषकर जैव-प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी आदि जैसे नए क्षेत्रों में भी बढ़ाए जा सकते हैं।

प्रश्न 13. क्या आप शिक्षा प्रणाली में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या दूर करने के लिए कुछ उपाय सुझा सकते हैं?

उत्तर—भारत में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या दूर करने के लिए शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित उपाय सुझाए जा सकते हैं—

(i) भारतीय शिक्षा प्रणाली को रोजगार-उन्मुख बनाया जाना चाहिए।

(ii) प्रारम्भ से ही छात्रों की व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए जिससे वे स्व-रोजगार कर सकें।

(iii) एक ऐसी शिक्षा योजना तैयार की जानी चाहिए जिससे शिक्षित युवकों को बेरोजगारी की समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

(iv) छात्रों को स्व-रोजगार के विषय में जागरूक बनाया जाना चाहिए।

(v) शिक्षित व्यक्तियों में शिक्षकों, डॉक्टरों आदि के रूप में गाँवों में सेवा करने की भावना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(vi) रोजगार सूचना एवं मार्गदर्शन प्रदान करने वाले संस्थानों का विस्तार किया जाना चाहिए।

(vii) महँगी व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा एवं अपनी व्यावसायिक इकाई स्थापित करने के लिए छात्रों को वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए।

(viii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, विशेषकर अप्रवासी भारतीयों को देश में अपना उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

प्रश्न 14. क्या आप कुछ ऐसे गाँवों की कल्पना कर सकते हैं जहाँ पहले रोजगार का कोई अवसर नहीं था, लेकिन बाद में बहुतायत में हो गया?

उत्तर—मेरे गाँव के आस-पास कुछ आर्थिक रूप से पिछड़े गाँव हैं। इन गाँवों के अधिकांश लोग अनुसूचित जाति और पिछड़ी जातियों से सम्बन्धित हैं। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। इन गाँवों में परिवार के लगभग सभी सदस्य अपने खेतों में काम करते थे। लेकिन वास्तव में, प्रत्येक सदस्य को उन्हीं खेतों में काम करने की आवश्यकता नहीं होती थी। ये सभी गाँव आर्थिक रूप से पिछड़े थे और यहाँ रोजगार का कोई अवसर नहीं था।

एक बार प्रखंड विकास पदाधिकारी (बी.डी.ओ.) ने इन गाँवों के लोगों और अपने क्षेत्र के मुखिया की बैठकें बुलाईं। उसने शिक्षा के महत्व को बताया और माता-पिता को स्कूल में अपने बच्चे का नामांकन दिलवाने के लिए प्रोत्साहित किया। कुछ लोग जिला हरिजन विद्यालय में अपने बच्चे का नामांकन करवाने के लिए सहमत हो गए। कुछ समय बाद छात्र शिक्षित होकर अपने-अपने गाँव लौटे। उनमें से कुछ लोगों ने अपने गाँव के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। कुछ व्यक्तियों ने सरकार से ऋण लेकर अपनी लघु स्तरीय व्यावसायिक इकाइयाँ चलानी शुरू कर दीं। कुछ लड़कियों ने सिलाई का प्रशिक्षण लिया और गाँव के सभी लोगों के लिए कपड़े सीने लगीं। इस सफलता से प्रेरित होकर इन गाँवों के सभी परिवारों ने अपने बच्चों को शिक्षा देना शुरू कर दिया। कुछ छात्र मेडिकल कॉलेजों में नामांकन के लिए चुन लिए गए। वे पढ़ाई के बाद नजदीकी गाँवों के बीमार लोगों का इलाज करने लगे। इस प्रकार इन गाँवों में शिक्षकों, डॉक्टरों, दर्जियों एवं अन्य कई रोजगार सृजित कर लिए गए।

प्रश्न 15. किस पूँजी को आप सबसे अच्छा मानते हैं—भूमि, श्रम, भौतिक पूँजी और मानव पूँजी? क्यों?

उत्तर—निस्संदेह, मानव पूँजी को हम सबसे अच्छी पूँजी मानते हैं। मानव पूँजी, भूमि, श्रम और भौतिक पूँजी जैसे अन्य संसाधनों से कई दृष्टि से अच्छी है—

(i) मानव संसाधन अन्य संसाधनों से इसलिए अच्छा है क्योंकि इसका आर्थिक विकास की दृष्टि से दोहरा महत्व है। लोग विकास के साधन एवं साध्य दोनों होते हैं। एक ओर वे उत्पादन के साधन और दूसरी ओर वे अन्तिम उपयोगकर्ता एवं स्वयं साध्य भी होते हैं। इसका कारण है कि विकास का अंतिम उद्देश्य लोगों को बेहतर और अधिक सुरक्षित जीवन प्रदान करना है।

(ii) मानव संसाधन भूमि और पूँजी जैसे अन्य संसाधनों का प्रयोग कर सकता है लेकिन भूमि और पूँजी अपने आप उपयोगी नहीं हो सकते।

(iii) मानव पूँजी की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अधिक शिक्षित एवं अधिक स्वस्थ लोगों के लाभ स्वयं उन तक ही सीमित नहीं होते हैं, बल्कि उनका लाभ उन तक भी पहुँचता है जो स्वयं उतने शिक्षित एवं स्वस्थ नहीं हैं। जबकि भूमि, श्रम एवं भौतिक पूँजी के संदर्भ में ऐसा नहीं होता है।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सन् 1951 में भारत की जनसंख्या थी—
(क) 36.1 करोड़ (ख) 35.1 करोड़ (ग) 46.1 करोड़ (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. भारत की जनसंख्या अनुमानतः बढ़ कर हो गई है-
(क) 121 करोड़ (ख) 117 करोड़ (ग) 127 करोड़ (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. भारत विश्व की कुल जनसंख्या का है—
(क) 17.5 प्रतिशत (ख) 7 प्रतिशत (ग) 27 प्रतिशत (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है—
(क) चीन (ख) भारत (ग) यू. के. (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. भारत में जनसंख्या घनत्व है—
(क) प्रति वर्ग किमी. 324 व्यक्ति (ख) प्रति वर्ग किमी 224 व्यक्ति
(ग) प्रति वर्ग किमी. 424 व्यक्ति (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. सन् 2001 की जनसंख्या के अनुसार, देश में लिंग-अनुपात है—
(क) 1000 पुरुषों पर 933 स्त्रियाँ (ख) 1000 पुरुषों पर 927 स्त्रियाँ
(ग) 1000 पुरुषों पर 933 स्त्रियाँ (घ) इनमें से कोई नहीं।

7. सन् 1991 से 2001 के मध्य साक्षरता दर में वृद्धि हुई—
(क) 52.21% से 65.38% (ख) 52% से 65%
(ग) 53.31% से 75.14% (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. सन् 1991 से 2001 के दौरान, महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई—
(क) 39.38% से 58.28% (ख) 43.38% से 59.28%
(ग) 52.21% से 65.38% (घ) इनमें से कोई नहीं।

9. किस जनसंख्या को देश की सम्पत्ति कहा जा सकता है?
(क) उच्च जनसंख्या (ख) अशिक्षित जनसंख्या
(ग) निपुण व प्रशिक्षित जनसंख्या (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. लोगों पर निवेश उसी प्रकार है जैसे कि .... पर निवेश ....
(क) भूमि (ख) सम्पत्ति (ग) भूमि एवं पूँजी (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. किसी भी व्यक्ति के द्वारा किये गये कार्यों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—
(क) पुरुषों व स्त्रियों के द्वारा आर्थिक क्रियाकलाप
(ख) बाजार के क्रियाकलाप एवं क्रय सम्बन्धी क्रियाकलाप
(ग) आर्थिक क्रियाकलाप एवं गैर-आर्थिक क्रियाकलाप
(घ) इनमें से कोई नहीं।

12. प्राथमिक क्षेत्र में आता है—
(क) कृषि, डेयरी, मत्स्य पालन (ख) वानिकी, विनिर्माण, व्यापार
(ग) शिकार, बैंकिंग, बीमा (घ) इनमें से कोई नहीं।

13. तृतीयक क्षेत्र में आते हैं—
(क) परिवहन, बैंकिंग, बीमा (ख) स्वास्थ्य, उत्खनन, विनिर्माण
(ग) भंडार गृह, चीनी उत्पादन, शिकार (घ) इनमें से कोई नहीं।

14. द्वितीयक क्षेत्र में आते हैं—
(क) बीजों से तेल का उत्पादन, वस्त्र निर्माण, कारखाना कार्य
(ख) व्यापार, संचार, पर्यटन
(ग) मत्स्य पालन, बैंकिंग, डेयरी
(घ) इनमें से कोई नहीं।

15. निम्न में से कौन सी क्रिया प्राथमिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है?
(क) कृषि (ख) वानिकी (ग) शिक्षा (घ) खनन।

16. निम्न में से कौन सी क्रिया तृतीयक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है?
(क) परिवहन (ख) बैंकिंग (ग) विनिर्माण (घ) पर्यटन।

उत्तर—1. (क), **2.** (क), **3.** (क), **4.** (ख), **5.** (क), **6.** (क), **7.** (क), **8.** (क), **9.** (ग), **10.** (ग), **11.** (ग), **12.** (क), **13.** (क), **14.** (क), **15.** (ग), **16.** (ग)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत की वर्तमान जनसंख्या कितनी है तथा 1952 में जनसंख्या कितनी थी?

उत्तर—भारत की वर्तमान अनुमानित जनसंख्या लगभग 136 करोड़ (जून 2019 में संयुक्त राष्ट्र के आकलनानुसार) है। सन् 1951 में जनसंख्या 36.1 करोड़ थी।

प्रश्न 2. मानव संसाधन किस प्रकार भूमि व भौतिक पूँजी जैसे संसाधनों से भिन्न है?

उत्तर—मानव संसाधन अन्य संसाधनों जैसे भूमि व भौतिक पूँजी का उपयोग कर सकते हैं, जबकि भूमि व भौतिक पूँजी स्वयं का उपयोग नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न 3. जनसंख्या घनत्व को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—भूमि के प्रति इकाई क्षेत्रफल में निवास करने वाली लोगों की संख्या जनसंख्या घनत्व कहलाती है।

प्रश्न 4. भारत का जनसंख्या घनत्व कितना है तथा विश्व का औसत जनसंख्या घनत्व कितना है?

उत्तर—भारत का जनसंख्या घनत्व 324 प्रति वर्ग किमी है तथा विश्व का औसत जनसंख्या घनत्व 45 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।

प्रश्न 5. सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में लिंग अनुपात कितना था?

उत्तर—1000 पुरुषों पर 933 स्त्रियाँ।

प्रश्न 6. मानव संसाधन क्या है?

उत्तर—वे सभी मनुष्य जो उपयोगी क्रियाकलापों में संलग्न हैं, मानव संसाधन कहलाते हैं।

प्रश्न 7. सन् 1951 तथा 2001 के लिए साक्षरता दर क्या थी?

उत्तर—1951—18.33%, 2001—65.38%।

प्रश्न 8. 1994 में लड़कियों के जन्म की जीवन प्रत्याशा कितनी थी?

उत्तर—60.9 वर्ष।

प्रश्न 9. स्त्रियों की कार्य-भागीदारी दर क्या है?

उत्तर—भारत में कुल वयस्क श्रम दर का 36 प्रतिशत स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

प्रश्न 10. 'बेरोजगारी' शब्द को समझाइये।

उत्तर—यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें सक्षम व वर्तमान वेतन पर इच्छुक व्यक्तियों को रोजगार नहीं मिल पाता है।

प्रश्न 11. किस पूँजी को आप सर्वोत्तम मानेंगे—भूमि, श्रम, भौतिक पूँजी व मानव पूँजी? क्यों?

उत्तर—इन सभी संसाधनों में मानव पूँजी सर्वोत्तम है क्योंकि यह अन्य सभी प्रकार की पूँजी का उपयोग करने में सक्षम है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत का जनसंख्या परिमाण क्या है?

उत्तर—1951 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 36.1 करोड़ थी। जो आज 2011 की जनगणना के अनुसार बड़कर 121 करोड़ हो गई है। जो वर्तमान में 135 करोड़ हो गई है। इतने समय में जो जनसंख्या में वृद्धि हुई है वह चीन की जनसंख्या की आधी है। हमारे देश की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या की 17.5 प्रतिशत है।

प्रश्न 2. भारत के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में पुरुषों व स्त्रियों के वेतन में क्या अन्तर है?

उत्तर—भारत के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में पुरुषों को स्त्रियों से अधिक वेतन मिलता है। इसका कारण है कि अधिकांश महिलाओं के पास बहुत कम शिक्षा और निम्न कौशल स्तर होता है। अधिकांश महिलाएँ ऐसी जगह काम करती हैं जहाँ नौकरी की सुरक्षा नहीं होती है। इसके विपरीत उच्च शिक्षा और उच्च कौशल वाली महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेतन मिलता है। संगठित क्षेत्रक में शिक्षण और चिकित्सा उन्हें सबसे अधिक आकर्षित करते हैं। भारत में अब महिलाओं ने प्रशासनिक और अन्य सेवाओं में प्रवेश कर लिया है जिसमें वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सेवा के उच्च स्तर की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 3. जनसंख्या में अन्तर्राज्यीय विभेद का क्या अभाव है?

उत्तर—2011 में भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ थी। 2001 की जनसंख्या की तुलना में 2011 की जनसंख्या में अन्तर्राज्यीय विभेद स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में जनसंख्या की वृद्धि दर अधिक थी जबकि आन्ध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु आदि में जनसंख्या वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम थी। इस वृद्धि दर का प्रभाव स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, अन्तर्राज्यीय प्रवास पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 4. चीन, एशिया तथा विश्व की तुलना में भारत का जनसंख्या घनत्व कितना है?

उत्तर—भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या की 17.5% है। अतः भारत विश्व का सबसे घना बसा देश है। चीन का जनसंख्या घनत्व 133 व्यक्ति प्रति एक वर्ग किलोमीटर है। जबकि भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति एक वर्ग किलोमीटर है। विश्व का जनसंख्या घनत्व 45 व्यक्ति प्रति एक वर्ग किलोमीटर है तथा एशिया का जनसंख्या घनत्व 116 व्यक्ति प्रति एक वर्ग किलोमीटर है।

प्रश्न 5. मानव संसाधनों की संरचना के सामान्य गुण क्या हैं?

उत्तर—मानव संसाधनों की संरचना के सामान्य गुण निम्नलिखित हैं—

1. शिक्षा—शिक्षा मनुष्य का अति महत्वपूर्ण गुण है। भारत में साक्षरता दर में पिछले वर्षों में काफी वृद्धि हुई है। शिक्षित व्यक्ति कौशलपूर्ण कार्य करने में सक्षम होता है जबकि अशिक्षित व्यक्ति श्रम प्रदान करता है।

2. स्वास्थ्य—स्वास्थ्य मानव संसाधन का प्रमुख गुण है। कोई भी नियोक्ता अस्वस्थ व्यक्ति को काम पर नहीं रखेगा। स्वस्थ व्यक्ति की श्रम शक्ति एवं उत्पादन क्षमता अधिक होती है।

प्रश्न 6. मानव संसाधनों का विकास किस प्रकार किया जा सकता है?

उत्तर—मानव संसाधनों का विकास शिक्षा एवं स्वास्थ्य में अधिक धन निवेश कर विकसित किया जा सकता है। देश में अच्छी शिक्षा व्यवस्था के लिए शिक्षण संस्थानों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में वृद्धि कर किया जा सकता है तथा स्वास्थ्य सुधारों के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं की उचित व्यवस्था करनी चाहिए जिससे देश में स्वस्थ एवं शिक्षित नागरिकों की संख्या में वृद्धि हो। ऐसे नागरिक सकल राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

प्रश्न 7. विश्व में वयस्कों की तुलनात्मक रूप से निरक्षरता दर क्या है?

उत्तर—विश्व के विभिन्न देशों में वयस्कों की निरक्षरता दर भिन्न-भिन्न है—भारत में पुरुष निरक्षरता 29% तथा स्त्रियों की निरक्षरता दर 53% है। विश्व के कम आय वाले देशों में वयस्क पुरुष निरक्षरता दर 28% तथा स्त्रियों की 46% है। विश्व के मध्यम आय वाले देशों में वयस्क निरक्षरता दर पुरुषों की 9% तथा स्त्रियों की 18% है। उच्च आय वाले देशों में यह दर पुरुषों के लिए 3% तथा स्त्रियों के लिए 3% है।

प्रश्न 8. भारत में लिंग अनुपात के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—भारत में प्रति 1000 पुरुषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या कम है। इसे लिंग अनुपात कहते हैं। सन् 1971 में यह 930 था जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में 949 तथा शहरी क्षेत्र में 858 थी। सन् 1981 में यह 933 था जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में 951 तथा शहरी क्षेत्र में 879 था। सन् 1991 में 927 था जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में 938 तथा शहरी क्षेत्र में 894 थी। सन् 2011 की जनगणना में लिंगानुपात 940 थी जो ग्रामीण क्षेत्र में 947 तथा शहरी क्षेत्र में 926 थी।

प्रश्न 9. व्यक्ति के कार्यशील जीवन में स्वास्थ्य क्या भूमिका निभाता है?

उत्तर—किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य उसे अपनी क्षमता को प्राप्त करने तथा बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है। कोई भी स्त्री/पुरुष संगठन के समग्र विकास में अपने योगदान को अधिकतम करने में सक्षम नहीं होगा। वास्तव में अपना कल्याण करने के लिए स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण आधार है। स्वास्थ्य व्यक्ति की कार्यशीलता में वृद्धि करता है। कोई भी नियोक्ता अपने संस्थान में किसी अस्वस्थ व्यक्ति को काम पर नहीं रखेगा।

प्रश्न 10. आर्थिक क्रियाओं एवं गैर आर्थिक क्रियाओं में क्या अन्तर हैं?

उत्तर—आर्थिक क्रियाएँ वे क्रियाएँ हैं, जो धन कमाने के उद्देश्य से की जाती हैं। ऐसे कार्य करने वालों को मजदूरी, वेतन अथवा लाभ प्राप्त होता है। इनमें निजी अथवा सरकारी क्षेत्र में वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन शामिल होता है।

गैर-आर्थिक क्रियाएँ वे क्रियाएँ हैं जो धन कमाने के उद्देश्य से नहीं की जातीं, जैसे गृहिणी द्वारा घर का कार्य करना, अध्यापक द्वारा अपने बच्चों को पढ़ाना। इनसे राष्ट्रीय आय में कोई वृद्धि नहीं होती है।

प्रश्न 11. स्त्रियों को कम वेतन वाले कार्यों में ही क्यों लगाया जाता है?

उत्तर—महिलाएँ निम्न वेतन वाले कार्यों में नियोजित होती हैं, क्योंकि—

(1) अधिकांश महिलाएँ अकुशल होती हैं, उनका साक्षरता का स्तर निम्न होता है और वे प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए घर से बाहर नहीं जा पातीं।

(2) अधिकांश महिलाएँ अपने क्षेत्र से बाहर जाकर काम करना नहीं चाहतीं।

(3) महिलाओं के लिए कानूनी व सुरक्षा प्रावधान कम हैं।

प्रश्न 12. प्रच्छन्न एवं मौसमी बेरोजगारी में क्या अन्तर है?

उत्तर—प्रच्छन्न और मौसमी बेरोजगारी में निम्नलिखित अन्तर हैं—

(1) प्रच्छन्न बेरोजगारी वह स्थिति है जिसमें किसी कार्य में आवश्यकता से अधिक श्रमिक कार्यरत रहते हैं जबकि मौसमी बेरोजगारी वह स्थिति है जिसमें श्रमिकों को एक विशेष मौसम में ही कार्य मिलता है।

(2) प्रच्छन्न बेरोजगारी में श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है। इसका अर्थ होता है कि अतिरिक्त श्रमिकों को कार्य से हटाने पर उत्पादकता में कमी नहीं आएगी। मौसमी रोजगार में श्रम की उत्पादकता धनात्मक होती है।

(3) प्रच्छन्न बेरोजगारी सामान्यत: कृषि व ग्रामीण क्षेत्रों में पायी जाती है जबकि मौसमी बेरोजगारी ग्रामीण व शहरी दोनों ही क्षेत्रों में पायी जाती है। यह अधिकतर कृषि आधारित उद्योगों में पायी जाती है।

प्रश्न 13. आप क्या सोचते हैं कि भारत के लिए किस क्षेत्र में रोजगार की सर्वाधिक सम्भावनाएँ हो सकती हैं?

उत्तर—भारत के प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्र अर्थात् सभी क्षेत्रों में रोजगार बढ़ने के अवसर विद्यमान हैं।

प्राथमिक क्षेत्र में वानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन व खनन में; **द्वितीयक क्षेत्र** में विनिर्माण, दवाइयों और **तृतीयक क्षेत्र** में परिवहन, बीमा, बैंकिंग, संचार आदि में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं, बशर्तें सही रूप में जनशक्ति का नियोजन किया जाए।

प्रश्न 14. बेरोजगारी का अर्थव्यवस्था के विकास पर क्या प्रभाव होता है?

उत्तर—बेरोजगारी से मानव संसाधन की बर्बादी होती है। बेरोजगारी से आर्थिक बोझ बड़ता है। कार्यरत जनसंख्या पर बेरोजगारों की निर्भरता बढ़ जाती है। किसी देश के समग्र विकास पर बेरोजगारी का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बेरोजगारी में वृद्धि मंदीग्रस्त अर्थव्यवस्था का सूचक है। इससे संसाधनों का उचित उपयोग नहीं हो पाता है। यदि लोगों को संसाधन के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है तो स्वाभाविक रूप से अर्थव्यवस्था के लिए दायित्व बन जायेंगे।

प्रश्न 15. क्या आप शिक्षित बेरोजगारी की समस्या को कम करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु कुछ सुझाव दे सकते हैं?

उत्तर—नगरीय क्षेत्रों में सामान्यत: शिक्षित बेरोजगारी पायी जाती है। इसके समाधान के लिए सरकार को रोजगार परक शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। केवल डिग्री प्रदान करने वाली प्रणाली से बेरोजगारी में वृद्धि ही होगी। सरकार को देश की आवश्यकतानुसार व्यवसाय के प्रत्येक क्षेत्र में कौशल विकास केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिए। पूर्व में देखा गया है कि एक क्षेत्र में ज्यादा प्रशिक्षित लोग भी बेरोजगारी का कारण बन जाते हैं, जैसे तकनीकी क्षेत्र में।

प्रश्न 16. स्पष्ट कीजिए कि अधिक जनसंख्या एक सम्पत्ति है या दायित्व है?

उत्तर—हम जानते हैं कि मानव पूँजी में निवेश भौतिक पूँजी की ही भाँति प्रतिफल प्रदान करती है। अधिक जनसंख्या सदैव हानिकारक नहीं होती, यह भी एक संपदा है। जिसका उचित प्रयोग कर एक संपत्ति के रूप में देखा जा सकता है। यदि लोग उच्च शिक्षित एवं कौशलपूर्ण होंगे तो इनके द्वारा सकल राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी और उपभोग का स्तर ऊँचा होता है। इसके फलस्वरूप रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा हो जाता है। शिक्षित, प्रशिक्षित एवं स्वस्थ लोग निष्क्रिय पड़े संसाधनों का बेहतर प्रयोग कर सकते हैं। यदि जनाधिक्य के रूप में जनसंख्या को देखा जाय तो देश में बेरोजगारी होगी तथा कार्यरत लोगों पर बेरोजगार लोगों का दायित्व बढ़ेगा तब अधिक जनसंख्या भार या दायित्व बन जायेगी।

प्रश्न 17. महिलाओं की श्रम बल व भागीदारी में योगदान की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुलना कीजिए।

उत्तर—ज्यादातर अशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिलाएँ पुरुषों से निम्न वेतन वाले कार्यों में नियोजित किया जाता है। अधिकांश महिलाएँ अकुशल होती हैं। उनका साक्षरता का स्तर निम्न होता है। वे प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए घर से बाहर नहीं जाती हैं। ज्यादातर महिलाएँ अपने क्षेत्र से दूर कार्य करना नहीं चाहती हैं। महिलाओं की सुरक्षा के कानूनी प्रावधान कम हैं। भारत की इस स्थिति की तुलना में पाश्चात्य देशों की महिलाएँ शैक्षिक एवं कौशल की दृष्टि से पुरुषों के बराबर हैं। अत: वे पुरुषों के समान भागीदारी निभा रही हैं।

प्रश्न 18. भारत में शिक्षित बेरोजगारी क्यों एक विशिष्ट समस्या है?

उत्तर—शिक्षित बेरोजगारी से आशय है—शिक्षित व प्रशिक्षित लोगों का बेरोजगार होना। हाईस्कूल, स्नातक व परास्नातक डिग्रीधारियों को कार्य न मिलना भारत के लिए एक विशेष समस्या है। इससे मानव संसाधन नष्ट हो रहे हैं और दूसरी ओर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग नहीं हो पा रहा है। इस प्रकार वह जनशक्ति जो अर्थव्यवस्था के लिए परिसम्पत्ति है, रोजगार के अभाव में बोझ बन गई है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मानव संसाधन विकास में शिक्षा की क्या भूमिका है?

उत्तर—समाज के विकास में भी शिक्षा का योगदान है। यह राष्ट्रीय आय और सांस्कृतिक समृद्धि में वृद्धि करती है और प्रशासन की कार्य-क्षमता बढ़ाती है। सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा में सार्वजनिक पहुँच, धारण और गुणवत्ता प्रदान करने का प्रावधान किया गया है और इस मामले में लड़कियों पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत के प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय जैसे प्रगतिशील विद्यालयों की स्थापना की गई है। वृहद् स्तर पर हाईस्कूल के विद्यार्थियों को ज्ञान और कौशल से सम्बन्धित व्यावसायिक ज्ञान प्रदान कराने के लिए व्यावसायिक शाखाओं का निर्माण किया गया है। शिक्षा पर योजना परिव्यय पहली पंचवर्षीय योजना के ₹ 151 करोड़ से बढ़कर ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में ₹ 3766.90 करोड़ हो गया है। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में शिक्षा पर व्यय 1951-52 के 0.64 प्रतिशत से बढ़कर 2015-16 में 3 प्रतिशत (बजटीय अनुमान) हो गया है। इसके बाद स्थायी रूप से कुछ वर्षों तक 3 प्रतिशत रहा। इससे साक्षरता-दर सन् 1951 के 18 प्रतिशत से बढ़कर सन् 2011 में 74 प्रतिशत हो गई। साक्षरता प्रत्येक नागरिक का न केवल अधिकार है बल्कि यह नागरिकों द्वारा अपने कर्त्तव्यों का ठीक प्रकार से पालन करने तथा अपने अधिकारों का ठीक प्रकार से लाभ उठाने के लिए अनिवार्य भी है। तथापि जनसंख्या के विभिन्न भागों के बीच व्यापक अन्तर पाया जाता है। महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में साक्षरता-दर करीब 16.6 प्रतिशत अधिक है और ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता-दर करीब 16 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार केरल के कुछ जिलों में साक्षरता दर 94 प्रतिशत थी, जबकि बिहार में 62

प्रतिशत। प्राथमिक स्कूल प्रणाली भारत के 5,00,000 से भी अधिक गाँवों में फैली हुई है, परन्तु दुर्भाग्यवश स्कूल शिक्षा के इस विस्तार को शिक्षा के निम्न स्तर और पढ़ाई बीच में छोड़ने की उच्च दर ने कमजोर कर दिया है। 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सभी स्कूली बच्चों को वर्ष 2010 तक प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में **सर्वशिक्षा अभियान** एक महत्त्वपूर्ण कदम था। राज्यों, स्थानीय सरकारों और **प्राथमिक शिक्षा सार्वभौमिक लक्ष्य** को प्राप्त करने के लिए समुदाय की सहभागिता के साथ केन्द्रीय सरकार की यह एक समयबद्ध पहल थी। इसके साथ ही, प्राथमिक शिक्षा में नामांकन बढ़ाने के लिए 'सेतु-पाठ्यक्रम' और 'स्कूल लौटो शिविर' प्रारम्भ किए गए। कक्षा में बच्चों की उपस्थिति को बढ़ावा देने, बच्चों के धारण और उनकी पोषण स्थिति में सुधार के लिए दोपहर के भोजन की योजना कार्यान्वित की गयी है। सरकार का अनुमान है कि इन नीतियों से भारत में शिक्षित लोगों की संख्या में वृद्धि हो सकती है।

बारहवीं योजना में उच्च शिक्षा में 18-23 आयु वर्ग के नामांकन में वर्ष 2017-18 में 25.2 प्रतिशत तक की वृद्धि तथा वर्ष 2020-21 तक 30 प्रतिशत तक की वृद्धि करने का प्रयास किया जा रहा है। यह विश्व औसतन 26 प्रतिशत से मिलती-जुलती है। यह रणनीति पहुँच में वृद्धि, गुणवत्ता, राज्यों के लिए विशेष पाठ्यक्रम में परिवर्तन को स्वीकार करना, व्यवसायीकरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग का जाल बिछाने पर केन्द्रित है। योजना दूरस्थ शिक्षा, औपचारिक, अनौपचारिक दूरस्थ तथा संचार प्रौद्योगिकी की शिक्षा देने वाले शिक्षण संस्थानों के अभिसरण पर भी केन्द्रित है। पिछले 50 वर्षों में विशेष क्षेत्रों में उच्च शिक्षा देने वाले शिक्षण संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों की संख्या में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

प्रश्न 2. मानव संसाधन विकास में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?

उत्तर—किसी भी कम्पनी का मुख्य उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है। क्या कोई भी फर्म ऐसे व्यक्तियों को रोजगार देने के लिए प्रेरित होगी जो खराब स्वास्थ्य होने के कारण स्वस्थ श्रमिकों के बराबर कार्य नहीं कर पाएँ?

किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य उसे अपनी क्षमता को प्राप्त करने तथा बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है। इस तरह का कोई भी अस्वस्थ स्त्री/पुरुष संगठन के समग्र विकास में अपने योगदान को अधिकतम करने में सक्षम नहीं होगा। वास्तव में, अपना कल्याण करने के लिए स्वास्थ्य एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार है। यही कारण है कि जनसंख्या की स्वास्थ्य स्थिति को सुधारना किसी भी देश की प्राथमिकता होती है। हमारी राष्ट्रीय नीति का लक्ष्य भी जनसंख्या के अल्प सुविधा प्राप्त वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार कल्याण एवं पौष्टिक सेवा की पहुँच को सुनिश्चित एवं बेहतर बनाना है। विगत पाँच दशकों में हमारे देश ने सरकारी व निजी क्षेत्रकों में प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक सेवाओं के लिए अपेक्षा के अनुरूप एक विस्तृत स्वास्थ्य आधारिक संरचना और जनशक्ति का निर्माण किया है।

भारत में ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जिनमें ये भौतिक सुविधाएँ भी मौजूद नहीं हैं। भारत में कुल 301 डेन्टल कॉलेज तथा 381 मेडिकल कॉलेज हैं। केवल चार राज्य महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और आन्ध्रप्रदेश में कुल राज्यों से अधिक मेडिकल सुविधाएँ हैं।

प्रश्न 3. नारी शिक्षा का क्या महत्व है?

उत्तर—भारत में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। मानव संसाधन में महिलाओं का विशेष योगदान है। परन्तु शिक्षा एवं प्रशिक्षण में पुरुषों से पीछे होने के कारण उन्हें कम वेतन के कार्यों पर नियुक्त किया जाता है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के श्रम का शोषण अधिक होता है। यदि महिलाएँ पढ़ी लिखी होंगी तो उन्हें पुरुषों के समान वेतन तथा कार्य मिलेगा। यूरोप के अनेक देशों में महिलाएँ पुरुषों के बराबर शिक्षित हैं तथा अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी कर रही हैं। शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में उनका दबदबा है। ये सब उनकी शिक्षा के द्वारा ही संभव हुआ है। अतः नारी शिक्षा का विशेष महत्व है।

प्रश्न 4. भारत में नारी के स्वास्थ्य की क्या स्थिति रही है?

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-2 का उत्तर।

प्रश्न 5. प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र में कौन-कौन से क्रियाकलाप आते हैं?

उत्तर—पुरुषों और महिलाओं के व्यावसायिक वितरण से आशय उस कार्यशील जनसंख्या से है जो विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में संलग्न है। लोग विभिन्न क्रियाकलापों में संलग्न हैं। इन विभिन्न आर्थिक क्रियाकलापों को तीन प्रमुख क्षेत्रकों-प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक में वर्गीकृत किया जा सकता है जिसका वर्णन निम्नलिखित है—

(i) प्राथमिक क्षेत्रक—प्राथमिक क्षेत्रक के अन्तर्गत कृषि-वानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन, मुर्गीपालन और खनन आदि सम्मिलित हैं।

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक—द्वितीयक क्षेत्रक में उत्खनन और विनिर्माण शामिल हैं।

(iii) तृतीयक क्षेत्रक—तृतीयक क्षेत्रक में व्यापार, परिवहन, संचार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन सेवाएँ इत्यादि शामिल किए जाते हैं। इस क्षेत्रक में क्रियाकलाप के फलस्वरूप वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। ये क्रियाकलाप राष्ट्रीय आय में मूल्य-वर्धन करते हैं, इस प्रकार ये क्रियाएँ आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। आर्थिक क्रियाओं को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है—बाजार क्रियाएँ और गैर-बाजार क्रियाएँ।

(अ) बाजार क्रियाएँ—इन क्रियाओं में वेतन या लाभ के उद्देश्य से की गई क्रियाओं के लिए पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। इनमें सरकारी सेवा सहित वस्तु या सेवाओं का उत्पादन सम्मिलित होता है।

(ब) गैर बाजार क्रियाएँ—इन क्रियाओं से अभिप्राय स्व-उपभोग के लिए उत्पादन करना है। इसके अतिरिक्त उन क्रियाओं में प्राथमिक उत्पादों का उपभोग और प्रसंस्करण तथा अचल सम्पत्तियों का स्वलेखा उत्पादन भी सम्मिलित है।

प्रश्न 6. क्या आप ऐसे ग्रामों की कल्पना कर सकते हैं जिनमें आरम्भ में रोजगार के कोई अवसर नहीं थे किन्तु बाद में बहुत से अवसर उत्पन्न हो गये।

उत्तर—एक गाँव था, जिसमें बहुत से परिवार रहते थे। प्रत्येक परिवार में इतनी उपज हो जाती थी जिसे परिवार के सदस्य खा-पी सकें। परिवार के सदस्य अपने बच्चों को पढ़ाते, अपने कपड़े बुनते और इसी तरह प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकताएँ स्वयं ही पूरी कर लेता था। इन्हीं में से एक परिवार ने अपने एक बेटे को कृषि महाविद्यालय में भेजने का निर्णय लिया। लड़के को पास के एक कृषि महाविद्यालय में प्रवेश मिल गया। कुछ समय बाद वह कृषि-इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर वह वापस गाँव आ गया। उसने अपनी सृजनात्मकता से एक उन्नत किस्म का हल विकसित किया जिससे गेहूँ की पैदावार बढ़ गई। इस प्रकार गाँव में ऐग्रो-इंजीनियरिंग का एक नया रोजगार सृजित हुआ तथा वहीं पर उसकी पूर्ति भी हुई। गाँव के उस परिवार ने अपनी अधिशेष फसल पास ही के गाँव में बेच दी। इससे प्राप्त लाभ को उन्होंने आपस में बाँट लिया। इस सफलता से प्रेरित होकर कुछ समय बाद गाँव के सभी परिवारों ने एक बैठक बुलाई। वे स्वयं के बच्चों के लिए भी बेहतर और ठीक भविष्य चाहते थे। उन्होंने पंचायत से गाँव में ही एक स्कूल खोलने का निवेदन किया। उन्होंने पंचायत को विश्वास दिलाया कि वे अपने बच्चों को स्कूल में भेजेंगे। पंचायत ने सरकारी सहायता से एक स्कूल खोला। पास ही के कस्बे में एक शिक्षक की नियुक्ति की गई। गाँव के सभी बच्चों ने स्कूल में जाना प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय बाद, गाँव के एक परिवार ने अपनी एक लड़की को सिलाई का प्रशिक्षण दिलाया। अब वह गाँव के सभी लोगों के लिए कपड़े सिलने लगी। इस प्रकार, दर्जी का एक नया कार्य सृजित हुआ तथा इसका एक और सकारात्मक प्रभाव हुआ। किसानों को कपड़े खरीदने के लिए दूर जाने में लगा समय बचने लगा।

अब किसान खेतों में ज्यादा समय देने लगे जिसका परिणाम यह हुआ है कि कृषि उत्पादन में वृद्धि होने लगी। यह समृद्धि की शुरूआत थी। किसानों के पास अब उपभोग से ज्यादा वस्तुएँ उपलब्ध थीं। अब वे अपने उत्पादन उन लोगों को बेच सकते थे जो उनके गाँव के बाजार में आते थे। समय के साथ वह गाँव, जहाँ प्रारम्भ में किसी नए कार्य को औपचारिक रूप से कोई अवसर नहीं था, अब एग्रो-इंजीनियर, दर्जी, शिक्षक तथा अन्य प्रकार के लोगों से परिपूर्ण हो गया।

●●

3 निर्धनता : एक चुनौती

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में निर्धनता रेखा का आकलन कैसे किया जाता है?

उत्तर—भारत में निर्धनता रेखा का निर्धारण करते समय जीवन-निर्वाह के लिए खाद्य पदार्थों, कपड़ों, जूतों, ईंधन और प्रकाश, शैक्षिक एवं चिकित्सा सम्बन्धी आवश्यकताओं आदि पर विचार किया जाता है। इन भौतिक मात्राओं को रुपयों में उनकी कीमतों से गुणा कर दिया जाता है। निर्धनता रेखा का आकलन करते समय खाद्य आवश्यकता के लिए वर्तमान सूत्र वांछित कैलोरी आवश्यकताओं पर आधारित है। भारत में स्वीकृत कैलोरी आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कैलोरी प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन और नगरीय क्षेत्रों में 2100 कैलोरी प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन है।

इन गणनाओं के आधार पर वर्ष 2000 में किसी व्यक्ति के लिए निर्धनता रेखा का निर्धारण ग्रामीण क्षेत्रों में ₹ 328 प्रतिमाह तथा शहरी क्षेत्रों में ₹ 454 प्रतिमाह किया गया था।

प्रश्न 2. क्या आप समझते हैं कि निर्धनता आकलन का वर्तमान तरीका सही है?

उत्तर—हाँ, मेरे विचार में निर्धनता आकलन का वर्तमान तरीका निश्चय ही सही है, क्योंकि—

(i) हमारा देश अल्पविकसित देश है, इसलिए न्यूनतम आवश्यकताओं में सबसे पहले मनुष्य की दिन-प्रतिदिन की आवश्यक आवश्यकताओं को अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(ii) आज भी हमारे देश की जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भाग (26%) दो वक्त का भोजन जुटाने में सक्षम नहीं है। मनुष्य भोजन के बिना जीवित नहीं रह सकता है। इसलिए निर्धनता रेखा का आकलन करते समय खाद्य आवश्यकता का वर्तमान सूत्र सर्वाधिक उपयुक्त है जो वांछित कैलोरी आवश्यकता पर आधारित है।

(iii) चूँकि ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोग अधिक शारीरिक परिश्रम करते हैं, इसलिए इन क्षेत्रों में कैलोरी आवश्यकता शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक मानी जाती है।

प्रश्न 3. भारत में 1973 से निर्धनता की प्रवृत्तियों की चर्चा करें।

उत्तर—भारत में निर्धनता की प्रवृत्तियों को नीचे दी गई तालिका की सहायता से अच्छी प्रकार समझा जा सकता है :

तालिका : भारत में निर्धनता के अनुपात

	निर्धनता अनुपात (प्रतिशत)			निर्धनों की संख्या (करोड़)		
वर्ष	ग्रामीण	शहरी	योग	ग्रामीण	शहरी	संयुक्त योग
1973-74	56.4	49.0	54.9	26.1	6.0	32.1
1993-94	37.3	32.4	36.0	24.4	7.6	32.0
1999-2000	27.1	23.6	26.1	19.3	6.7	26.0

स्रोत—आर्थिक सर्वेक्षण 2002-03, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

उपर्युक्त तालिका से निर्धनता की प्रवृत्तियों से सम्बन्धित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :

(i) पिछले वर्षों में निर्धनता में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। यह 1973 में 55% था जो निरन्तर घटकर शताब्दी के अन्त में लगभग 26% हो गया।

(ii) भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी, शहरी क्षेत्रों में गरीबी की अपेक्षा सदा अधिक रही है।

(iii) यद्यपि निर्धनता में रह रहे लोगों का प्रतिशत 1973-74 के दौरान कम हुआ, लेकिन निर्धन लोगों की संख्या 32 करोड़ के आस-पास ही कायम रही। जबकि 1993-94 और 1999-2000 के बीच निर्धन लोगों की संख्या में भी कमी दर्ज की गई।

प्रश्न 4. भारत में निर्धनता में अंतर्राज्यीय असमानताओं का एक विवरण प्रस्तुत करें।

उत्तर—भारत के प्रत्येक राज्य में निर्धन में लोगों का अनुपात एक समान नहीं है।

(i) यद्यपि प्रत्येक राज्य में गरीबी कम हुई है, लेकिन निर्धनता कम करने में सफलता की दर विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है।

(ii) हाल के अनुमानों के अनुसार, 20 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में निर्धनता अनुपात 26.1% के राष्ट्रीय अनुपात से कम है।

(iii) उड़ीसा एवं बिहार क्रमशः 47% और 43% के निर्धनता अनुपातों के साथ दो सबसे गरीब राज्य हैं।

(iv) उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार एवं उत्तर प्रदेश में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में गरीबी अधिक है।

(v) अन्य राज्यों की तुलना में केरल, जम्मू-कश्मीर, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात एवं पश्चिम बंगाल में निर्धनता में उल्लेखनीय गिरावट आई है।

(vi) पंजाब, हरियाणा, केरल एवं पश्चिम बंगाल में निर्धनता में महत्वपूर्ण कमी के प्रमुख कारण क्रमशः ऊँची कृषि वृद्धि दर, मानव संसाधन विकास और भूमि सुधार उपाय हैं।

(vii) आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में अनाजों के सार्वजनिक वितरण से निर्धनता में कमी आई है।

प्रश्न 5. उन सामाजिक और आर्थिक समूहों की पहचान करें जो भारत में निर्धनता के समक्ष निरुपाय हैं?

उत्तर—सामाजिक समूह—निर्धनता के प्रति सर्वाधिक असुरक्षित सामाजिक समूह निम्नलिखित हैं—

(i) अनुसूचित जाति एवं

(ii) अनुसूचित जनजाति के परिवार।

(a) भारत में निर्धनता रेखा के नीचे के लोगों का औसत 26% है, जबकि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित क्रमशः 43% और 51% लोग निर्धन हैं।

(b) इन सामाजिक समूहों के अतिरिक्त परिवार के भीतर भी आय और सुविधा की असमानता है। महिला, वृद्ध लोग तथा लड़कियाँ प्रायः गरीबों में भी गरीब होती हैं।

आर्थिक समूह—आर्थिक समूहों में निर्धनता के प्रति सर्वाधिक असुरक्षित समूह हैं—

(i) ग्रामीण कृषि एवं श्रमिक परिवार और

(ii) शहरी अनियत दैनिक वेतन भोगी श्रमिक परिवार। आँकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भूमिहीन कृषि श्रमिकों का लगभग 47% भाग एवं शहरी क्षेत्रों में अनियत श्रमिकों का 50% भाग निर्धनता रेखा के नीचे है।

प्रश्न 6. भारत में अंतर्राज्यीय निर्धनता में विभिन्नता के कारण बताइए।

उत्तर—भारत के प्रत्येक राज्य में निर्धन लोगों का अनुपात एक समान नहीं है। यद्यपि प्रत्येक राज्य में गरीबी कम हुई है। लेकिन निर्धनता कम करने में सफलता की दर विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार एवं उत्तर प्रदेश में ग्रामीण निर्धनता के साथ नगरीय निर्धनता भी अधिक है, जबकि केरल, जम्मू-कश्मीर, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात एवं पश्चिम बंगाल में निर्धनता में उल्लेखनीय गिरावट आई है।

(ii) पंजाब एवं हरियाणा जैसे राज्यों में उच्च कृषि वृद्धि दर के कारण निर्धनता में अधिक कमी आई है, जबकि अन्य राज्यों में कृषि वृद्धि दर अधिक नहीं हुई।

(iii) केरल ने विशेषकर शिक्षा के माध्यम से मानव संसाधन विकास पर अधिक ध्यान दिया है जिससे उसकी निर्धनता में अन्य राज्यों की तुलना में पर्याप्त कमी आई है।

(iv) पश्चिम बंगाल में भूमि सुधार उपायों से निर्धनता कम करने में सहायता मिली है।

(v) आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु में अनाज का सार्वजनिक वितरण निर्धनता में कमी लाने का कारण है।

(vi) राज्यों में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता में विभिन्नता भी इसका एक कारण है।

(vii) भारत के राज्यों में औद्योगीकरण का विकास समान ढंग से नहीं हुआ है।

प्रश्न 7. वैश्विक निर्धनता की प्रवृत्तियों की चर्चा करें।

उत्तर—वैश्विक निर्धनता पर आँकड़े निम्नलिखित प्रवृत्तियों को दर्शा रहे हैं—

(i) विकासशील देशों में निर्धन लोगों का अनुपात बहुत अधिक है।

(ii) यहाँ अंतर्राष्ट्रीय निर्धनता रेखा के अनुसार 1 डॉलर प्रतिदिन से कम आय पर रह रहे लोगों का अनुपात 1990 में 28% से कम होकर 2001 में 21% रह गया है।

(iii) वैश्विक निर्धनता में महत्वपूर्ण कमी के बावजूद व्यापक क्षेत्रीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

(iv) चीन एवं दक्षिण एशियाई देशों में तीव्र आर्थिक विकास और मानव संसाधन विकास में पर्याप्त निवेशों के परिणामस्वरूप निर्धनता में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। चीन में निर्धन लोगों की संख्या 1981 में 60.6 करोड़ से कम होकर 2001 में 21.2 करोड़ रह गई है।

(v) भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान जैसे दक्षिण एशियाई देशों में यह गिरावट उतनी अधिक नहीं हो पाई है।

(vi) सब-सहारा अफ्रीका में निर्धनता 1981 में 41% से बढ़कर 2001 में 46% हो गई।

(vii) रूस जैसे पूर्व समाजवादी देशों में भी निर्धनता पुनः व्याप्त हो गई है।

प्रश्न 8. निर्धनता उन्मूलन की वर्तमान सरकारी रणनीति की चर्चा करें।

उत्तर—निर्धनता उन्मूलन की वर्तमान सरकारी रणनीति के निम्नलिखित दो आयाम हैं—

(i) आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहन, एवं

(ii) लक्षित निर्धनता-निरोधी कार्यक्रम।

(i) आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहन—आर्थिक संवृद्धि अवसरों को व्यापक बना देती है और मानव विकास में निवेश के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराती है। परिणामस्वरूप निर्धनता कम होती है।

(ii) लक्षित निर्धनता-निरोधी कार्यक्रम—कुछ प्रमुख निर्धनता-निरोधी निम्न कार्यक्रम इस प्रकार हैं—

(क) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम (एन.आर.ई.जी.ए.), 2005—यह अधिनियम प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रतिवर्ष 100 दिन के सुनिश्चित रोजगार का प्रावधान करता है। प्रस्तावित रोजगारों का एक तिहाई रोजगार महिलाओं के लिए आरक्षित है। कार्यक्रम के अन्तर्गत यदि आवेदक को 15 दिनों के अन्दर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया गया तो वह दैनिक बेरोजगारी भत्ते का हकदार होगा।

(ख) राष्ट्रीय काम के बदले अनाज कार्यक्रम (एन.एफ.डब्ल्यू.पी.), 2004—यह कार्यक्रम सभी ग्रामीण निर्धनों के लिए खुला है।

(ग) प्रधानमंत्री रोजगार योजना (पी.एम.आर.वाय.), 1993—इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे शहरों में शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर सृजित करना है।

इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

(घ) ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (आर.ई.जी.पी.), 1995

(ङ) स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एस.जी.एस.वाय.), 1999

(च) प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (पी.एम.जी.वाय.), 2000

(छ) अंत्योदय अन्न योजना (ए.ए.वाय.)

प्रश्न 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें—

(क) मानव निर्धनता से आप क्या समझते हैं?

(ख) निर्धनों में सबसे निर्धन कौन हैं?

(ग) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—(क) मानव निर्धनता की धारणा निर्धनता की अपेक्षा अधिक व्यापक है। मानव निर्धनता उन्मूलन से आशय न केवल उन्हें भोजन देने बल्कि उनकी समुचित शिक्षा, घर, स्वास्थ्य सेवा की सुविधा, रोजगार की सुरक्षा और सबसे ऊपर आत्म-विश्वास से है। जाति, लिंग-भेद, बाल-श्रम आदि का कोई अस्तित्व नहीं होना चाहिए।

(ख) महिला, बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ एवं वृद्ध लोग निर्धनों में भी सबसे निर्धन होते हैं।

(ग) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) यह अधिनियम प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रतिवर्ष 100 दिनों के सुनिश्चित रोजगार का प्रावधान करता है।

(ii) प्रस्तावित रोजगारों का एक-तिहाई रोजगार महिलाओं के लिए आरक्षित है।

(iii) केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी कोष की स्थापना करेगी।

(iv) राज्य सरकारें भी राज्य रोजगार गारण्टी कोष की स्थापना करेंगी।

(v) कार्यक्रम के अन्तर्गत यदि आवेदक को 15 दिनों के अन्दर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया गया तो वह दैनिक बेरोजगारी भत्ते का अधिकारी होगा।

(vi) इसके लागू हो जाने पर 'काम के बदले अनाज' का राष्ट्रीय कार्यक्रम भी इस कार्यक्रम के अंतर्गत आ जाएगा।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निर्धनता की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली जनसंख्या का राष्ट्रीय औसत है—
(क) 26% (ख) 20% (ग) 36% (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. शहरी निर्धनों में आते हैं—
(क) बेरोजगार दैनिक जीवन भोगी श्रमिक (ख) घरेलू सेवक
(ग) रिक्शा खींचने वाले (घ) उक्त सभी।

3. 1991-2000 में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए निर्धनता रेखा थी—
(क) ₹ 328 प्रति व्यक्ति मासिक (ख) ₹ 338 प्रति व्यक्ति मासिक
(ग) ₹ 454 प्रति व्यक्ति मासिक (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. 2011-12 में शहरी क्षेत्रों में लिए निर्धनता रेखा थी—
(क) ₹ 1000 (ख) ₹ 474 (ग) ₹ 554 (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. 1999-2000 में निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाले व्यक्तियों की संख्या थी—
(क) 26.02 करोड़ (ख) 36 करोड़ (ग) 46.02 करोड़ (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. निर्धनता से सम्बन्धित मुद्दा है—
(क) भूमिहीनता (ख) बेरोजगारी (ग) परिवारों का आकार (घ) उक्त सभी।

7. भारत में प्रत्येक व्यक्ति निर्धन है। अनुमान से बताइए भारत में कितने लोग निर्धनता में रहते हैं?
(क) 27 करोड़ (ख) 36 करोड़ (ग) 20 करोड़ (घ) 21 करोड़।

8. उस देश का नाम बताइए जहाँ निर्धनों की संख्या सर्वाधिक है।
(क) भारत (ख) पकिस्तान (ग) यू. एस. ए. (घ) चीन।

9. निर्धनता का अर्थ है—
(क) भूख तथा आवास की कमी (ख) स्वच्छ जल एवं स्वच्छता सुविधाओं का अभाव
(ग) पूर्ण रोजगार के अवसरों का अभाव (घ) उक्त सभी।

10. निर्धनता का सामाजिक सूचकांक है—
(क) अशिक्षा का स्तर (ख) स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच का अभाव
(ग) रोजगार के अवसरों का अभाव (घ) उक्त सभी।

11. 'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार सुरक्षा अधिनियम' कब पारित किया गया?
(क) फरवरी 2005 (ख) सितम्बर 2005 (ग) मार्च 2005 (घ) नवम्बर 2005

12. 'राष्ट्रीय खाद्य या कार्य कार्यक्रम' कब पारित किया गया?
(क) 2005 (ख) 2003 (ग) 2004 (घ) 2001

13. निर्धनता के सामाजिक बहिष्कार को किस रूप में देखा जा सकता है?
(क) निर्धन अन्य निर्धन लोगों के साथ निर्धनता के वातावरण में रह रहे हैं।
(ख) धनी केवल धनी लोगों के साथ रह रहे हैं?
(ग) धनी व निर्धन एक ही प्रकार के वातावरण में रह रहे हैं।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

14. निम्न में से कौनसा सर्वाधिक असुरक्षित आर्थिक समूह है?
(क) ग्रामीण कृषि श्रमिक समूह (ख) ग्रामीण श्रमिक समूह
(ग) ग्रामीण कृषि सम्बन्धी समूह (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. निम्न में सर्वाधिक असुरक्षित सामाजिक समूह कौनसा है?
(क) ग्रामीण कृषि श्रमिक (ख) शहरी अनियत श्रम समूह
(ग) अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति समूह (घ) उक्त सभी।

16. निर्धनता अभी भी निम्न क्षेत्रों में एक गम्भीर समस्या है—
(क) ओडिशा, बिहार, असम व त्रिपुरा (ख) ओडिशा, बिहार, त्रिपुरा व केरल
(ग) ओडिशा, त्रिपुरा, केरल व तमिलनाडु (घ) ओडिशा, बिहार, पंजाब व हरियाणा।

17. किस राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या निर्धनता रेखा के नीचे जीवनयापन कर रही है?
(क) ओडिशा (ख) बिहार (ग) राजस्थान (घ) मध्य प्रदेश।

18. शहरी क्षेत्रों में कम कैलोरी की आवश्यकता के बावजूद निर्धनता रेखा उच्च क्यों है?
(क) क्योंकि शहरी क्षेत्रों में बहुत सी आवश्यक वस्तुओं के दाम बहुत अधिक है।
(ख) शहर के लोग अधिक खाते हैं।
(ग) शहरी क्षेत्रों में निर्धनता के कारण अलग-अलग हैं।
(घ) उक्त सभी।

19. निर्धनता निम्न में से किस स्थान पर देखी जा सकती है?
(क) गाँवों में (ख) शहरी झुग्गियों में
(ग) निर्माण स्थलों पर (घ) फटेहाल भिखारी
(ङ) उक्त सभी।

20. निर्धनता के सामाजिक सूचक हैं—
(क) दुग्ध उपयोग की मात्रा (ख) अशिक्षा का स्तर
(ग) जेब खर्च की राशि (घ) जूतों की संख्या।

21. किस राज्य में निर्धनता में महत्वपूर्ण कमी देखने को मिली है?
(क) असम (ख) बिहार (ग) जम्मू-कश्मीर (घ) उत्तर-प्रदेश।

[**उत्तर—1.** (क), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (क), **5.** (क), **6.** (घ), **7.** (क), **8.** (क), **9.** (घ), **10.** (घ), **11.** (ख), **12.** (ग), **13.** (क), **14.** (क), **15.** (ग), **16.** (क), **17.** (क), **18.** (क), **19.** (ङ), **20.** (ख), **21.** (ग)।]

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निर्धनता क्या है?

उत्तर—यह उस परिस्थिति को व्यक्त करती है जिसमें लोग अपने उपभोग की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति में असफल रहते हैं।

प्रश्न 2. सापेक्ष निर्धनता का क्या अर्थ है?

उत्तर—लोगों के मध्य आय की असमानता की स्थिति सापेक्ष निर्धनता कहलाती है।

प्रश्न 3. पूर्ण निर्धनता क्या है?

उत्तर—यह निर्धनता की वह स्थिति है जिसमें लोगों की आय इतनी कम होती है कि वे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाते हैं।

प्रश्न 4. निर्धनता रेखा क्या है?

उत्तर—यह निर्धनों व गैर-निर्धनों को विभाजित करने वाली रेखा है।

प्रश्न 5. कुल गणना अनुपात का क्या अर्थ है?

उत्तर—निर्धनता रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों का अनुपात कुल गणना अनुपात कहलाता है।

प्रश्न 6. निर्धनता के कोई तीन सामाजिक कारक बताइए।

उत्तर—(i) निरक्षरता, (ii) जातिवाद, (iii) संयुक्त परिवार व्यवस्था।

प्रश्न 7. 'प्रधानमंत्री रोजगार योजना' (PMRY) कब आरम्भ की गई?

उत्तर—1993 में।

प्रश्न 8. 'ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम' (REGP) कब आरम्भ की गई?

उत्तर—1995 में।

प्रश्न 9. NSSO का पूर्ण रूप क्या है?

उत्तर—राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (National Sample Survey Organization)

प्रश्न 10. 'कार्य कार्यक्रम के लिए राष्ट्रीय भोजन' कब आरम्भ किया गया?

उत्तर—2004 में।

प्रश्न 11. प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना' कब आरम्भ की गई?

उत्तर—2000 में।

प्रश्न 12. MNREGA का पूर्ण रूप लिखिए।

उत्तर—राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार सुरक्षा अधिनियम (National Rural Employment Guarantee Act)

प्रश्न 13. SGSY का पूर्ण रूप लिखिए।

उत्तर—स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना।

प्रश्न 14. ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा उठाये गये दो कदमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—सरकार ने भूमि सुधार की दिशा में कई कदम उठाये; जैसे—जमींदारी व्यवस्था की समाप्ति; छोटे व भूमिहीन कृषकों के मध्य अतिरिक्त भूमि का वितरण। ग्रामीण युवाओं को रोजगार सुलभ कराने के लिए 'जवाहर ग्राम समृद्धि योजना' का आरम्भ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए—

(क) सापेक्ष निर्धनता, (ख) पूर्ण निर्धनता।

उत्तर—परिभाषा—निर्धनता से अभिप्राय है—जीवन, स्वास्थ्य तथा कार्यकुशलता के लिए न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं की प्राप्ति की अयोग्यता।

निर्धनता के स्वरूप—निर्धनता को दो रूपों में समझाया जा सकता है—(1) सापेक्ष निर्धनता, (2) निरपेक्ष निर्धनता।

1. सापेक्ष निर्धनता—सापेक्ष निर्धनता से आशय विभिन्न वर्गों, प्रदेशों या दूसरे देशों की तुलना में पायी जाने वाली निर्धनता से है। जिस देश या वर्ग के लोगों का जीवन निर्वाह स्तर नीचा होता है वे सापेक्ष रूप से निर्धन होते हैं।

उदाहरण—माना अमेरिका की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय, 34,870 डॉलर और भारत की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 330 डॉलर है तो भारत में सापेक्षिक रूप से निर्धनता है।

2. निरपेक्ष निर्धनता—निरपेक्ष निर्धनता से आशय किसी दंश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्धनता की माप से है। भारत में निरपेक्ष निर्धनता का अनुमान लगाने के लिए 'निर्धनता रेखा' की अवधारणा का प्रयोग किया जाता है।

निर्धनता रेखा—निर्धनता रेखा वह रेखा है जो उस प्रति व्यक्ति औसत मासिक आय को प्रकट करती है जिसके द्वारा लोग अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को सन्तुष्ट कर सकते हैं।

भारत में निर्धनता रेखा—भारत में 1999-2000 की कीमतों पर ग्रामीण क्षेत्र में ₹ 328 तथा शहरी क्षेत्रों में ₹ 454 प्रतिमास उपभोग को निर्धनता रेखा माना गया है। भारत में उन व्यक्तियों को निरपेक्ष रूप से निर्धन माना गया है जिनका मासिक उपभोग व्यय इस रेखा से नीचे है।

प्रश्न 2. भारत में निर्धनता के अनुमानों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—निर्धनता के अनुमान—तालिका के अनुसार, भारत में निर्धनता अनुपात में वर्ष 1993-94 के 45% के मुकाबले वर्ष 2004-05 में 37.2% तक गिरावट आई। वर्ष 2011-12 में निर्धनता रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों का अनुपात और भी गिरकर 22% पर आ गया। यदि यह गिरावट इसी प्रकार जारी रही तो आगामी वर्षों में निर्धनता रेखा से नीचे के लोगों की संख्या 20% से भी कम हो जाएगी। भारत में निर्धनों की संख्या वर्ष 2004-05 में 407 मिलियन से गिरकर वर्ष 2011-12 में 270 मिलियन हो गई। अत: वर्ष 2004-05 से 2011-12 के मध्य औसतन गिरावट 22% हुई है।

भारत में निर्धनता के अनुमान (तेंदुलकर कार्यप्रणाली)

	निर्धनता अनुपात (प्रतिशत में)			निर्धनों की संख्या (करोड़ में)		
वर्ष	**ग्रामीण**	**शहरी**	**योग**	**ग्रामीण**	**शहरी**	**संयुक्त योग**
1993-94	507	32	**45**	329	75	**404**
2004-05	42	26	**37**	326	81	**407**
2009-10	34	21	**30**	278	76	**335**
2011-12	26	14	**22**	217	53	**270**

प्रश्न 3. ग्रामीण व शहरी निर्धनता में अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—ग्रामीण निर्धनता भूमि हीन कृषकों, ग्रामीण कामगारों, पिछड़ा वर्ग एवं जनजातियों में पायी जाती है जबकि शहरी निर्धनता पढ़े लिखे लोगों में तथा निम्न आय वर्ग के लोगों में पायी जाती है। जब गाँवों में निर्धनता में वृद्धि होती है तो ग्रामीण लोग शहर की ओर पलायन करने लगते हैं। वे दैनिक मजदूरी तथा नौकरी की तलाश में शहर में आकर अपना जीवन यापन करने लगते हैं। अत: शहरी एवं ग्रामीण निर्धनता एक दूसरे से सम्बन्धित है।

प्रश्न 4. निर्धनता के दो प्रमुख कारण समझाइए।

उत्तर—(1) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि—भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इस वृद्धि का मुख्य कारण गत वर्षों में मृत्यु दर में तेजी से कमी तथा जन्म दर का लगभग एक सा बना रहना है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक ओर उत्पादन में होने वाली वृद्धि को निष्प्रभावी कर देती है तो दूसरी ओर निर्धनता दर को बढ़ा देती है। फलस्वरूप निर्धनता की समस्या और अधिक भयंकर हो जाती है।

(2) मूल्यों में वृद्धि—भारत में कीमतों में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि विशेष रूप से कृषि सम्बन्धित पदार्थों में हुई है। निर्धन लोग कीमतों में वृद्धि से बुरी तरह प्रभावित होते हैं। वे और अधिक निर्धन होते चले जाते हैं।

प्रश्न 5. निर्धनता के दुष्चक्र को समझाइए।

उत्तर—निर्धनता ही निर्धनता की जननी है। निर्धनता का दुष्चक्र यह स्पष्ट करता है कि निर्धनता कारण और प्रभाव दोनों है। निर्धनता से जीवन स्तर में कमी होती है जिसके परिणाम स्वरूप श्रमिकों की कार्यक्षमता में कमी आती हे। कार्यक्षमता में कमी से उत्पादन क्षमता में कमी आती है जिससे आय का स्तर कम हो जाता है। आय के स्तर में कमी निर्धनता को जन्म देती है।

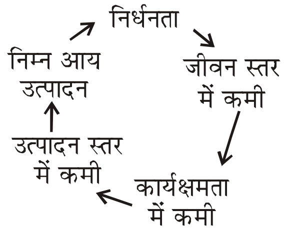

निर्धनता दुष्चक्र

प्रश्न 6. सरकार के द्वारा निर्धनता की समाप्ति हेतु उठाये गये कदमों के क्या परिणाम हुए हैं?

उत्तर—भारत सरकार ने निर्धनता को समाप्त करने के लिए महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना आदि योजनाएँ संचालित की हैं। इन कार्यक्रमों के मिलेजुले परिणाम प्राप्त हुए हैं। कुछ योजनाओं के लाभ पात्र लोगों को नहीं मिल पाये हैं। हालाँकि भारत में इन कार्यक्रमों से निर्धनता में तो कमी हुई है परन्तु अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं।

प्रश्न 7. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए—

(क) कार्य के बदले अनाज, (ख) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, (ग) प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना।

उत्तर—(क) भारत में कार्य के बदले अनाज योजना का आरम्भ किया गया था। इस योजना में ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमिकों द्वारा कार्य करने पर उनको मजदूरी के रूप में अनाज दिया जाता था। ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्यान्न की समस्या के कारण सरकार द्वारा इस योजना का संचालन किया गया।

(ख) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना—IRDP और MWS योजनाओं को समाप्त कर संयुक्त रूप से अप्रैल 1999 में एक स्वरोजगार योजना का आरम्भ किया गया जिसे स्वर्णजंयती ग्राम स्वरोजगार योजना नाम दिया गया। यह योजना

ग्रामीण क्षेत्र में लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए संचालित की गई। इसमें निर्धन ग्रामीणों को स्वयं सहायता समूह द्वारा के माध्यम से सरकार द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना पर केन्द्र सरकार द्वारा 75% तथा राज्य सरकार द्वारा 25% धन व्यय किया गया। इस योजना में निर्धनता रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को सरकारी सहायता प्रदान की गई।

प्रश्न 8. प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (PMGY) का क्या उद्देश्य है?

उत्तर—इस योजना का आरम्भ सन् 2000-2001 में किया गया। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र में पाँच बिन्दुओं पर फोकस किया गया—स्वास्थ्य प्राथमिक शिक्षा, पेयजल, आवास और ग्रामीण सड़कों का विकास कर ग्रामीणों के जीवन स्तर में वृद्धि करना इसका उद्देश्य था।

प्रश्न 9. भारत में निर्धनता कम करने के कोई दो तरीके बताइए।

उत्तर—(1) विकास की गति को तेज किया जाय। इससे रोजगार के अधिक अवसर सृजित होंगे और निर्धनता में कमी आयेगी।

(2) जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपाय किए जायें। इस संबंध में परिवार कल्याण कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए भरसक प्रयास किए जाये। इससे निर्धनता में कमी आयेगी।

प्रश्न 10. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार सुरक्षा अधिनियम, 2005 की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार सुरक्षा अधिनियम सितम्बर 2005 में पास हुआ था। इसमें यह निर्धारित किया गया था कि 1/3 रोजगार महिलाओं के लिए आरक्षित किए जायें। इसे पूरा करने के लिए केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारें रोजगार गारन्टी निधि का निर्माण करें। इसमें यह भी विधान था कि यदि कोई अभ्यर्थी आवेदन करता है, यदि उसे 15 दिन तक रोजगार नहीं मिलता है तो उसे बेरोजगार भत्ता प्रदान किया जाय।

प्रश्न 11. निर्धनों में निर्धनतम कौन है?

उत्तर—निर्धनों में सबसे निर्धन अनुसूचित जनजातियाँ, नगरीय अनियमित मजदूर, ग्रामीण खेतिहर मजदूर तथा अनुसूचित जाति के लोग आदि हैं। ये निर्धनता के दुष्चक्र में फंसे हुए हैं। यह चक्र टूट नहीं पाता है।

प्रश्न 12. मानव निर्धनता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—मानव निर्धनता से अभिप्राय मनुष्य का जीवन, स्वास्थ्य और कुशलता के लिए न्यूनतम आवश्यकताओं की आपूर्ति न कर पाना है। परन्तु आधुनिक समय में निर्धनता को निरक्षरता स्तर-कुपोषण के कारण रोग-प्रतिरोधी की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, रोजगार के अवसरों की कमी, सुरक्षित पेयजल एवं स्वच्छता तक न पहुँच पाने के सन्दर्भ में माना जाता है।

प्रश्न 13. उन सामाजिक व आर्थिक समूहों को पहचानिए जो भारत में निर्धनता की दृष्टि से अत्यधिक असुरक्षित हैं।

उत्तर—निर्धनता अनुपात भारत के सभी सामाजिक समूहों और आर्थिक वर्गों में एक समान नहीं है। जो सामाजिक समूह निर्धनता के प्रति सर्वाधिक असुरक्षित हैं, वे (1) अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के परिवार हैं। इसी प्रकार आर्थिक समूहों में सर्वाधिक असुरक्षित समूह, (2) ग्रामीण कृषि श्रमिक पविार और (3) नगरीय अनियमित श्रमिक परिवार हैं। भारत में अनुसूचित जनजातियों में 51 प्रतिशत, नगरीय क्षेत्र के अनियमित मजदूरों में 50 प्रतिशत, भूमिहीन कृषि श्रमिकों में 50 प्रतिशत तथा अनुसूचित जातियों में 43 प्रतिशत निर्धन हैं।

प्रश्न 14. निर्धनता उन्मूलन के विभिन्न कार्यक्रमों के बावजूद भारत में निर्धनता अभी भी व्याप्त है।

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 6 का उत्तर।

प्रश्न 15. भारत के विभिन्न राज्यों में निर्धनता सम्बन्धी अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देश के प्रत्येक राज्य में निर्धन लोगों का अनुपात एक समान नहीं है। आँकड़े बताते हैं कि 20 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में निर्धनता अनुपात राष्ट्रीय औसत से कम है। दूसरी ओर निर्धनता अब भी ओडिशा, बिहार, असम, त्रिपुरा और उत्तर प्रदेश में एक गम्भीर समस्या है। ओडिशा और बिहार में क्रमश: 47 और 43 प्रतिशत निर्धनता औसत के साथ दो सर्वाधिक निर्धन राज्य बने हुए हैं। ओडिशा, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश में ग्रामीण निर्धनता के साथ नगरीय निर्धनता भी अधिक है। इसके अतिरिक्त गोवा, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, केरल आदि में निर्धनता का प्रतिशत औसत से भी काफी कम है।

प्रश्न 16. वर्तमान में सरकार द्वारा निर्धनता-उन्मूलन हेतु अपनायी जाने वाली रणनीति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—निर्धनता उन्मूलन भारत की विकास रणनीति का प्रमुख उद्देश्य रहा है। सरकार की वर्तमान रणनीति मुख्यत: दो घटकों पर आधारित है—

(1) आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहन तथा (2) लक्षित निर्धनता विरोधी कार्यक्रम।

1. आर्थिक संवृद्धि—1950 से 1980 तक देश में प्रति व्यक्ति आय बहुत धीमी गति से बढ़ी (3.5 प्रतिशत)। किन्तु 1980-90 के दशक में यह 6 प्रतिशत तक पहुँच गई। दसवीं योजना में विकास लक्ष्य 8 प्रतिशत रखा गया। 11वीं पंचवर्षीय योजना 2007-12 में औसतन 9 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है। आर्थिक संवृद्धि की ऊँची दर ने निर्धनता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. लक्षित निर्धनता विरोधी कार्यक्रम—इनमें मुख्य कार्यक्रम निम्नलिखित प्रकार हैं—राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम, 2005; राष्ट्रीय काम के बदले अनाज कार्यक्रम, 2004; प्रधानमंत्री रोजगार योजना, 1993; ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम, 1995; स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, 1999; प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना, 2000; अन्त्योदय अन्न योजना।

हाल के वर्षों में इन कार्यक्रमों के उचित पर्यवेक्षण पर बल दिया गया है।

प्रश्न 17. "दोनों स्तरों पर असफलता : 'आर्थिक विकास में प्रगति एवं जनसंख्या नियन्त्रण' ने निर्धनता के दुष्चक्र को बढ़ावा दिया है।" इस कथन पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—यद्यपि भारत में आर्थिक विकास में प्रगति हुई है तथा जनसंख्या पर नियंत्रण के कार्यक्रम भी संचालित हुए हैं फिर भी भारत में निर्धनता दुष्चक्र यथावत् बना हुआ है। इसका मुख्य कारण विकास कार्यक्रमों का निर्धन लोगों तक लाभ नहीं पहुँचाना है। बिचौलिए सरकार द्वारा प्राप्त आर्थिक सहायता को बीच में ही हड़प जाते हैं। मनरेगा कार्य के घोटालों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि—सरकारी पैसा आम ग्रामीण तक नहीं पहुँच रहा है। जनसंख्या नियंत्रण के बावजूद निर्धनों की संख्या में कमी नहीं हो रही है। क्योंकि वे निर्धनता के दुष्चक्र को तोड़ नहीं पा रहे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निर्धनता को परिभाषित कीजिए तथा इसके दो प्रमुख रूपों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—निर्धनता का अर्थ एवं परिभाषा—निर्धनता का अर्थ उस स्थिति से है जिसमें समाज का एक भाग अपने जीवन की आधारभूत/न्यूनतम आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में असमर्थ रहता है। इन आधारभूत/न्यूनतम आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी मानवीय आवश्यकताएँ शामिल रहतीं हैं। इन न्यूनतम आवश्यकताओं के पूरा न होने पर मनुष्य को कष्ट होता है। स्वास्थ्य का स्तर गिरता है। कार्यकुशलता का ह्रास होता है। उत्पादन की हानि होती है, आय कम होती है। इस प्रकार निर्धनता और उत्पादन के निम्न स्तर का दुष्चक्र बन जाता है।

परिभाषा—निर्धनता से अभिप्राय है—जीवन, स्वास्थ्य तथा कार्यकुशलता के लिए न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं की प्राप्ति की अयोग्यता।

निर्धनता के स्वरूप—निर्धनता की दो रूपों में विवेचना की जा सकती है—(1) सापेक्ष निर्धनता, (2) निरपेक्ष निर्धनता।

1. सापेक्ष निर्धनता—सापेक्ष निर्धनता से आशय विभिन्न वर्गों, प्रदेशों या दूसरे देशों की तुलना में पायी जाने वाली निर्धनता से है। जिस देश या वर्ग के लोगों का जीवन निर्वाह स्तर नीचा होता है वे सापेक्ष रूप से निर्धन होते हैं।

उदाहरण—माना अमेरिका की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 34870 डालर और भारत की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 330 डालर है तो भारत में सापेक्षिक रूप से निर्धनता है।

2. निरपेक्ष निर्धनता—निरपेक्ष निर्धनता से आशय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्धनता की माप से है। भारत में निरपेक्ष निर्धनता का अनुमान लगाने के लिए 'निर्धनता रेखा' की अवधारणा का प्रयोग किया जाता है।

निर्धनता रेखा—निर्धनता रेखा वह रेखा है जो उस प्रति व्यक्ति औसत मासिक आय को प्रकट करता है जिसके द्वारा लोग अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की संतुष्टि कर सकते हैं।

भारत में निर्धनता रेखा—भारत में 1999-2000 की कीमतों पर ग्रामीण क्षेत्र में 328 तथा शहरी क्षेत्र में ₹ 454 प्रति माह उपभोग को निर्धनता रेखा माना गया है। भारत में उन व्यक्तियों को निरपेक्ष रूप से निर्धन माना गया है जिनका मासिक उपभोग व्यय इस रेखा से नीचे है।

प्रश्न 2. भारत में निर्धनता की समस्या के विस्तार का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में निर्धनता की समस्या व्यापक एवं गम्भीर है। ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन के दौरान आर्थिक विकास का निम्न स्तर होना इसका मुख्य कारण है। औपनिवेशिक सरकार की नीतियों ने पारम्परिक हस्तशिल्पकारी को नष्ट कर दिया और वस्त्र जैसे उद्योगों के विकास को हतोत्साहित किया। विकास की धीमी दर 1980 के दशक तक जारी रही। इसके परिणामस्वरूप रोजगार के अवसर घटे और आय की वृद्धि दर गिरी। इसके साथ-साथ जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। इन दोनों ने प्रतिव्यक्ति आय की संवृद्धि दर को बहुत कम कर दिया। आर्थिक प्रगति को बढ़ावा और जनसंख्या नियंत्रण, दोनों निर्धनता के कारण बने।

सिंचाई और हरित क्रांति के प्रसार से कृषि क्षेत्रक में रोजगार के अनेक अवसर सृजित हुए, लेकिन इनका प्रभाव भारत

के कुछ भागों तक ही सीमित रहा। इससे सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रकों ने कुछ रोजगार उपलब्ध हुए, लेकिन ये रोजगार तलाश करने वाले सभी लोगों के लिए पर्याप्त नहीं हो सके। शहरों में उपयुक्त नौकरी पाने में असफल अनेक लोग रिक्शा चालक, विक्रेता, गृह-निर्माण श्रमिक, घरेलू नौकर आदि के रूप में कार्य करने लगे। अनियमित और कम आय के कारण ये लोग महँगे मकानों में नहीं रह सकते थे। अत: वे शहरों से बाहर झुग्गियों में रहने लगे और निर्धनता की समस्याएँ जो मुख्य रूप से एक ग्रामीण परिघटना थी, नगरीय क्षेत्र में भी व्याप्त हो गई।

इसके अतिरिक्त उच्च निर्धनता दर की एक और विशेषता आय असमानता रही है। इसका एक प्रमुख कारण भूमि और अन्य संसाधनों का असमान वितरण है। अनेक नीतियों के परिणामस्वरूप भी भारत सार्थक ढंग से इस मुद्दे से नहीं निपट सका। ग्रामीण क्षेत्रों में परिसम्पत्तियों के पुनर्वितरण पर लक्षित भूमि सुधार जैसी प्रमुख नीति-पहल को ज्यादातर राज्य सरकारों ने प्रभावी ढंग से कार्यान्वित नहीं किया। चूँकि भारत में भूमि-संसाधनों की कमी निर्धनता का एक प्रमुख कारण रही है इसीलिए इस नीति का उचित कार्यान्वयन करोड़ों ग्रामीण निर्धनों का जीवन सुधार सकता था। इसके अलावा अनेक अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक कारक भी निर्धनता के लिए उत्तरदायी हैं। जिसके अन्तर्गत अतिनिर्धनों सहित भारत में अनेक लोग सामाजिक दायित्वों और धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन में भी बहुत पैसा खर्च करते हैं। छोटे किसानों को बीज, उर्वरक, कीटनाशकों जैसे कृषि आगतों की खरीदारी के लिए धनराशि की जरूरत होती है। चूँकि निर्धन कठिनाई से ही कोई बचत कर पाते हैं, इसलिए वे इनके लिए कर्ज लेते हैं। निर्धनता के चलते पुन: भुगतान करने में असमर्थता के कारण वे ऋणग्रस्त हो जाते हैं; अत: अत्यधिक ऋणग्रस्तता निर्धनता का कारण और परिणाम दोनों हैं। लिंग, जाति-विभेद, भूस्वामित्व, परिवार का आकार आदि अन्य तत्वों ने भी भारत में निर्धनता की समस्या को और अधिक गम्भीर बना दिया है।

प्रश्न 3. भारत में निर्धनता के दुष्चक्र को एक चित्र की सहायता से समझाइए।

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 5 का उत्तर।

प्रश्न 4. भारत में निर्धनता के क्या कारण हैं? संक्षेप में समझाइए।

उत्तर—भारत में निर्धनता के कारण—भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की भाँति भारतीय अर्थव्यवस्था भी गरीबी के दुष्चक्र में फँसी है। भारत में निर्धनता के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

1. राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर—भारत का कुल राष्ट्रीय उत्पादन जनसंख्या की तुलना में कम है। अत: प्रति व्यक्ति आय भी कम ही है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार भारत निर्धन देशों की श्रेणी में आता है।

2. विकास की धीमी दर—बीते दौर में भारत की विकास की दर धीमी रही थी। विकास की धीमी दर के कारण प्रति व्यक्ति आय का स्तर भी निम्न रहा।

3. जनसंख्या में तीव्र वृद्धि—भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इस वृद्धि का मुख्य कारण गत वर्षों में मृत्यु-दर में तेजी से कमी और जन्म-दर का लगभग स्थिर बना रहना है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक ओर उत्पादन में होने वाली वृद्धि को निष्प्रभावी कर देती है तो दूसरी ओर निर्धनता दर को बढ़ा देती है। फलस्वरूप निर्धनता की समस्या और भयंकर हो जाती है।

4. मूल्यों में वृद्धि—भारत में कीमतों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि विशेष रूप से कृषि सम्बन्धित पदार्थों में हुई है। निर्धन लोग कीमतों में वृद्धि से बुरी तरह प्रभावित होते हैं। वे और अधिक निर्धन होते चले जाते हैं।

5. बेरोजगारी की व्यापकता—बेरोजगारी निर्धनता का मुख्य कारण है और भारत में अदृश्य व शिक्षित बेरोजगारी व्यापक रूप में पायी जाती है। अब तो बेरोजगारी एक स्थायी समस्या बन गई है।

6. पूँजी एवं उद्यमीय क्षमता की कमी—भारत में पूँजी की कमी है, पूँजी संचय की दर निम्न है और उद्यमीय क्षमता का अभाव है। अत: उत्पादन क्षमता भी कम है। फलस्वरूप निर्धनता कर स्तर उच्च है।

7. आधारिक संरचना का अभाव—भारत में ऊर्जा, परिवहन व संचार, शिक्षा, चिकित्सा व आवास सुविधाएँ बुरी दशा में हैं जबकि आधारिक संरचना ही विकास का आधार होती है। इनके अभाव में विकास की गति धीमी रह गई है।

8. सामाजिक संस्थाएँ, रीति-रिवाज एवं रूढ़ियाँ—भारत की पुरातन सामाजिक संस्थाओं (जाति प्रथा, संयुक्त परिवार प्रथा एवं उत्तराधिकारी के नियमों), रूढ़ियों एवं परम्पराओं ने भारत के तीव्र आर्थिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न की हैं जिसका परिणाम निर्धनता है।

9. धन का असमान वितरण—भारत में आय और धन का वितरण असमान है। आय का असमान वितरण निर्धनता की व्यापकता एवं गहनता को बढ़ाता है।

प्रश्न 5. भारत में निर्धनता की घटना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2 का उत्तर।

प्रश्न 6. भारत की सरकार के द्वारा निर्धनता उन्मूलन हेतु चलाये गये कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम—निर्धनता उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम लागू किए गए हैं—

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम—ग्रामीण विकास मन्त्रालय द्वारा महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम लागू किया गया। यह अधिकार पर आधारित वेतन रोजगार कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों की आजीविका सम्बन्धी सुरक्षा बढ़ाना है। इसके अन्तर्गत वैसे हर परिवार को वित्तीय वर्ष में कम-से-कम सौ दिन निश्चित वेतन सहित रोजगार उपलब्ध कराया जाता है, जिसके वयस्क सदस्य हाथ से किए जाने वाले अकुशल कार्य करने को तैयार होते हैं।

अधिनियम के मूल उद्देश्य हैं—

(1) निर्धारित गुणवत्ता और स्थायित्व की उत्पादक आस्तियों के सृजन में परिणामस्वरूप माँग के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक गृहस्थी के लिए वित्त वर्ष में व्यक्तियों के रोजगार के रूप में अकुशल शारीरिक कार्य के लिए कम-से-कम सौ दिन प्रदान करना;

(2) निर्धन जीविका संसाधन के आधार को सुदृढ़ करना;

(3) सामाजिक समावेशन को अतिसक्रिय रूप से सुनिश्चित करना; और

(4) पंचायती राज संस्थाओं को सुदृढ़ करना।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन—राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मन्त्रालय का अग्रणी कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य 2021-22 तक 8-10 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवारों को स्वयं सहायता समूह और संघों के रूप में संगठित करना है। ऐसा करने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन भागीदारी मूलक प्रक्रिया के जरिए चिह्नित और ग्राम सभा द्वारा स्वीकृत समाज के सभी कमजोर वर्गों का कवरेज सुनिश्चित करना है।

जनवरी 2015 तक 316 जिलों के 2,125 सघन ब्लॉकों में 20.95 लाख स्वयं सहायता समूह प्रोत्साहित किए गए हैं।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना—सरकार ने गरीबी कम करने की रणनीति के अन्तर्गत दिसम्बर 2000 को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आरम्भ की। यह केन्द्र प्रायोजित योजना है। कार्यक्रम के अन्तर्गत मैदानी क्षेत्रों में 500 व इससे अधिक की जनसंख्या वाली तथा पहाड़ी जनजातीय एवं मरुस्थल क्षेत्रों में 250 व इससे अधिक की जनसंख्या वाली सभी बसावटों को सम्पर्क प्रदान करने का विचार किया गया है। विशेष श्रेणी के राज्यों (पूर्वोत्तर, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर तथा उत्तराखण्ड), रेगिस्तानी क्षेत्रों, जनजातीय (अनुसूची-V) क्षेत्रों तथा गृह मन्त्रालय/योजना आयोग द्वारा चिह्नित 88 चुनिन्दा जनजातीय एवं पिछड़े जिलों के मामले में इसका उद्देश्य पात्रता वाले 250 से अधिक जनसंख्या के साथ कोर नेटवर्क के अन्तर्गत सम्पर्क विहीन बसावटों को जोड़ना है। कार्यक्रम में बारहमासी एकल सम्पर्क की परिकल्पना की गई है।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना—दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना ग्रामीण विकास मन्त्रालय के अन्तर्गत प्लेसमेण्ट से जुड़ा कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम है। इसकी योजना 25 सितम्बर, 2014 को की गई। यह राष्ट्रीय कौशल विकास नीति का महत्वपूर्ण भाग है और इसका महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम वैश्विक मानकों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप वेतन प्लेसमेण्ट सम्बन्धित कौशल कार्यक्रमों का मानक निर्धारित करना है। इसका अन्तिम उद्देश्य ग्रामीण भारत को कुशल श्रम के वैश्विक प्राथमिक स्रोत के रूप में विकसित कर भारत की जनसांख्यिकी आधिक्य को जनसांख्यिकी लाभ में बदलना है। परिणाम के रूप में योजना वैसे 55 मिलियन गरीब ग्रामीण युवकों को लाभ देगा, जिन्हें सतत रोजगार देकर कुशलता के लिए तैयार करना है। इस तरह यह योजना पीढ़ी के गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। यह कार्यक्रम इस तरह बनाया गया है कि वह प्रधानमंत्री के 'मेक इन इण्डिया' अभियान में प्रमुख योगदान करे।

प्रश्न 7. निर्धनता मापन के कौन से तरीके हैं? समझाइए।

उत्तर—निर्धनता के अनेक पहलू होने के कारण सामाजिक वैज्ञानिक इसे अनेक सूचकों के माध्यम से देखते हैं। ये सूचक प्रायः आय व उपयोग के स्तर से सम्बन्धित हैं, किन्तु अब निर्धनता को निरक्षरता का स्तर, कुपोषण, रोजगार के अवसरों की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, स्वच्छ पेयजल व स्वच्छता का अभाव आदि सामाजिक सूचकों के माध्यम से भी प्रदर्शित किया जाता है। सामाजिक असुरक्षा व अपवर्जन पर आधारित निर्धनता का विश्लेषण वर्तमान समय में बहुत ही सामान्य होता जा रहा है।

निर्धनता रेखा—निर्धनता पर चर्चा या आकलन 'निर्धनता रेखा' की अवधारणा से होता है। निर्धनता के आकलन की विधि आय या उपभोग के स्तरों पर आधारित है। किसी व्यक्ति को निर्धन तब माना जाता है, जब उनकी आय अथवा उपभोग स्तर किसी ऐसे 'न्यूनतम स्तर' से नीचे गिर जाए जो मूल आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु आवश्यक है। मूल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जरूरी वस्तुएँ विभिन्न देशों से अलग-अलग हैं। काल व स्थान के अनुसार, निर्धनता

रेखा भिन्न हो सकती है। विश्व के सभी देशों द्वारा एक काल्पनिक रेखा का प्रयोग किया जाता है, जिसको विकास तथा स्वीकृत न्यूनतम सामाजिक मानदण्डों के वर्तमान स्तर के अनुरूप माना जाता है। उदाहरणतया—अमेरिका में उस व्यक्ति को निर्धन समझा जाता है, जिसके पास कार नहीं है, जबकि भारत में कार रखना विलासिता मानी जाती है।

भारत जैसे देश में निर्धनता का निर्धारण करने से पूर्व जीवन व्यतीत करने हेतु, खाद्य आवश्यकता, ईंधन, कपड़ों, जूतों, ऊर्जा, शैक्षिक व चिकित्सा से सम्बन्धित आवश्यकताओं पर विचार किया जाता है। इन सभी भौतिक मात्राओं की रुपये में उनकी कीमतों से गुणा कर दी जाती है। निर्धनता रेखा का आकलन करने के लिए खाद्य आवश्यकता हेतु वर्तमान सूत्र अथवा फॉर्मूला कैलोरी की आवश्यकता पर आधारित होता है। विभिन्न खाद्य वस्तुएँ; जैसे—अनाज, सब्जियाँ, दालें, तेल, दूध, चीनी आदि द्वारा इस आवश्यक कैलोरी की पूर्ति होती है। इसके विपरीत, आयु, लिंग तथा कार्य करने की प्रकृति के आधार पर कैलोरी की आवश्यकता परिवर्तित होती रहती है। हमारे देश में कैलोरी की आवश्यकता नगरीय क्षेत्रों में प्रतिदिन 2100 कैलोरी प्रति व्यक्ति तथा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिदिन 2400 कैलोरी प्रति व्यक्ति है। इसका कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अत्यधिक शारीरिक श्रम करते हैं, अतः ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की कैलोरी आवश्यकता शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होती है।

प्रश्न 8. सन् 1973 के बाद से भारत में निर्धनता की क्या प्रवृत्तियाँ रही हैं?

उत्तर—देखिए लघु उत्तरीय प्रश्न 2 का उत्तर।

प्रश्न 9. वैश्विक निर्धनता की प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—वैश्विक निर्धनता परिदृश्य—विश्व बैंक के अनुसार, विकासशील देशों में प्रतिदिन $1.9 से कम आर्थिक निर्धनता में रहने वाले लोगों का अनुपात सन् 1990 के 35% से गिरकर सन् 2013 में 10.68% हो गया। इस प्रकार वैश्विक निर्धनता में गिरावट आई है, लेकिन इसमें वृहद् क्षेत्रीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं। चीन और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में तीव्र आर्थिक प्रगति तथा मानव संसाधन विकास में वृहद् निवेश के कारण निर्धनता में विशेष रूप से कमी आई है।

चीन में निर्धनों की संख्या सन् 1981 के 88.3% से घटकर सन् 2008 में 14.7% और सन् 2013 में 1.9% रह गई। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश व भूटान में निर्धनों की संख्या में गिरावट 54% से गिरकर 15% हो गई।

सब-सहारा अफ्रीका सन् 1991 के 54% से घटकर निर्धनता सन् 2013 में 41% हो गई, जबकि लैटिन अमेरिका में निर्धनता का अनुपात वही रहा है। यहाँ पर निर्धनता रेखा सन् 1990 के 16% से कम होकर सन् 2013 में 5.4% रह गई। रूस जैसे देशों में निर्धनता पुनः देखने को मिली है, जहाँ पहले कभी कोई निर्धनता नहीं थी। नीचे दी हुई सारणी अन्तर्राष्ट्रीय निर्धनता रेखा ($ 1.9 प्रतिशत से नीचे की जनसंख्या) की परिभाषा के अनुसार, विभिन्न देशों में निर्धनता से नीचे जीवन निर्वाह करने वालों के अनुपात को प्रदर्शित करती है। संयुक्त राष्ट्र (UN) के नवीनतम सतत विकास लक्ष्य का उद्देश्य सन् 2030 तक सभी प्रकार की गरीबी को समाप्त करना है।

निर्धनता : कुछ चुनिंदा देशों के बीच तुलना

क्रमांक	देश	प्रतिदिन $ 1.9 से कम पाने वालों की संख्या
1.	नाइजीरिया	53.5 (2009)
2.	बांग्लादेश	18.5 (2010)
3.	भारत	21.2 (2011)
4.	पाकिस्तान	6.1 (2013)
5.	चीन	1.9 (2013)
6.	ब्राजील	3.7 (2014)
7.	इंडोनेशिया	8.3 (2014)
8.	श्रीलंका	1.9 (2012)

प्रश्न 10. भारत में निर्धनता उन्मूलन से सम्बन्धित किसी पाँच कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 6 का उत्तर।

●●

4 भारत में खाद्य सुरक्षा

(क) एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में खाद्य सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाती है?

उत्तर—भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मुख्यत: निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे हैं—

(i) बफर स्टॉक—(क) बफर स्टॉक का निर्माण कमी वाले क्षेत्रों में एवं समाज के गरीब वर्गों में बाजार कीमत से कम कीमत पर अनाज के वितरण के लिए किया जाता है।

(ख) यह खराब मौसम में अथवा फिर आपदा काल में अनाज की कमी की समस्या हल करने में भी सहायता करता है।

(ii) सार्वजनिक वितरण प्रणाली—बफर स्टॉक में संगृहित अनाज को सरकार राशन की दुकानों के माध्यम से समाज के गरीब वर्गों में वितरित करती है। इसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली कहते हैं। इन राशन की दुकानों में चीनी, खाद्यान्न, मिट्‌टी के तेल आदि बाजार कीमत से कम कीमत पर लोगों को बेचे जाते हैं।

(iii) अन्य कार्यक्रम—साथ ही, एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (1975), काम के बदले अनाज (1977-78), दोपहर का भोजन जैसे कार्यक्रमों के अलावा अनेक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम आय में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा बढ़ाते हैं।

प्रश्न 2. कौन लोग खाद्य असुरक्षा से अधिक ग्रस्त हो सकते हैं?

उत्तर—**आर्थिक दृष्टिकोण**—(i) विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जिन लोगों के खाद्य असुरक्षित होने की सम्भावना अधिक होती है, वे हैं भूमिहीन कृषि श्रमिक, परम्परागत कारीगर, परम्परागत सेवाओं को प्रदान करने वाले श्रमिक, छोटे-मोटे अपने काम करने वाले कामगार, भिखमंगे, असहाय आदि।

(ii) जबकि शहरी क्षेत्रों में दैनिक मजदूरी पाने वाले अनियमित श्रमिकों एवं कम-आमदनी वाले व्यवसायों में लगे श्रमिकों के परिवारों के खाद्य असुरक्षित होने की सम्भावना अधिक होती है। ये श्रमिक अधिकांशत: मौसमी क्रियाओं में लगे होते हैं। उन्हें बहुत कम मजदूरी प्राप्त होती है।

सामाजिक दृष्टिकोण—(i) इस दृष्टि से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन-जातियों एवं अन्य पिछड़ी जातियों से निचली जातियों के, जिनके पास कम जमीन-जायदाद अथवा बहुत कम भूमि उत्पादकता होती है, खाद्य असुरक्षित होने की संभावना अधिक होती है।

(ii) इसके अतिरिक्त वृद्ध लोगों, महिलाओं एवं बालिकाओं के भी खाद्य असुरिक्षत होने की सम्भावना अधिक होती है। गर्भस्थ शिशुओं को भी कुपोषण का खतरा अधिक होता है। भारत में गर्भवती तथा दूध पिलाने वाली माताओं तथा 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों का एक महत्वपूर्ण भाग खाद्य असुरक्षित है।

प्रश्न 3. भारत में कौन-से राज्य खाद्य असुरक्षा से अधिक ग्रस्त हैं?

उत्तर—भारत में कुछ राज्य खाद्य असुरक्षा से अधिक ग्रस्त हैं। इनमें आर्थिक रूप से पिछड़े राज्य, आदिवासी तथा सुदूर क्षेत्र, प्राकृतिक आपदाओं से बार-बार प्रभावित होने वाले क्षेत्र सम्मिलित हैं। वास्तव में, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश विशेषकर पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी हिस्से, झारखंड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र के कुछ भागों में खाद्य की दृष्टि से असुरक्षित लोगों की सर्वाधिक संख्या है। 1999-2000 में उड़ीसा एवं बिहार की लगभग आधी आबादी गरीबी रेखा के नीचे और खाद्य असुरक्षा से अधिक ग्रस्त थी। इस प्रकार, देश के कुछ राज्यों में खाद्य असुरक्षित लोग बड़ी संख्या में हैं।

प्रश्न 4. क्या आप मानते हैं कि हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न में आत्म-निर्भर बना दिया है? कैसे?

उत्तर—हाँ, मैं यह अवश्य मानता हूँ कि हरित क्रान्ति ने भारत को खाद्यान्न में आत्म-निर्भर बना दिया है।

खाद्यान्न में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के लिए भारत ने कृषि में एक नई रणनीति अपनाई जिससे 1960 के दशक में हरित क्रान्ति हुई। यह क्रान्ति विशेषकर गेहूँ एवं चावल के उत्पादन में हुई। पंजाब एवं हरियाणा में सर्वाधिक वृद्धि दर दर्ज की गई। इन राज्यों में खाद्यान्नों का उत्पादन तेजी से बढ़कर 1964-65 के 72.3 लाख टन की तुलना में 1995-96 में 303.03 लाख टन पर पहुँच गया। जबकि बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्पादन धीमी गति से बढ़ा। दूसरी ओर, तमिलनाडु तथा आंध्र प्रदेश में चावल के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

(i) हरित क्रान्ति के आने के पश्चात् उत्पादन बढ़ने से हमें दूसरे देशों से खाद्यान्नों का आयात नहीं करना पड़ता है।

(ii) उसके बाद से भारत में कभी अकाल नहीं पड़ा है तथा वह खाद्यान्न में आत्म-निर्भर हो गया है।

(iii) देश भर में विविध प्रकार की फसलें उपजाई जाने लगी हैं।

(iv) मौसम की विपरीत दशाओं में भी देश में खाद्यान्न की उपलब्धता पर्याप्त होती है।

प्रश्न 5. 'भारत में लोगों का एक वर्ग अब भी खाद्य से वंचित है।' व्याख्या कीजिए।

उत्तर—खाद्य सुरक्षा समाज के गरीब वर्गों के लिए ही आवश्यक नहीं है। वरन् यह गरीबी रेखा के ऊपर रह रहे लोगों के लिए भी आवश्यक होती है। वे भी खाद्य असुरक्षित हो जाते हैं, जब देश भूकम्प, बाढ़, सूखा, सुनामी, फसलों की उपज में व्यापक गिरावट के कारण उत्पन्न हुए अकाल जैसी आपदाओं का सामना करता है।

भारत में होने वाला सर्वाधिक विनाशकारी अकाल 1943 में बंगाल का अकाल था जिससे तत्कालीन बंगाल प्रान्त में लगभग 30,00,000 लोगों की जानें गईं। यद्यपि ऐसा विनाशकारी अकाल पुनः नहीं हुआ है। लेकिन आज भी भारत में उड़ीसा का कालाहांडी एवं काशीपुर, राजस्थान का बारां जिला, झारखंड का पलामू जिला एवं कई अन्य ऐसे सुदूर क्षेत्र हैं, जहाँ कई वर्षों से अकाल जैसी स्थितियाँ विद्यमान हैं। जनसंख्या का एक वर्ग अब भी खाद्य से वंचित है। इन स्थानों में कुछ भुखमरी की घटनाएँ भी हुई हैं। इसलिए सभी लोगों एवं समयों में खाद्य सुनिश्चित करने के लिए देश में खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता है।

प्रश्न 6. जब कोई आपदा आती है तो खाद्य की आपूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर—निस्संदेह भूकम्प, बाढ़, सूखा, सुनामी, फसलों की व्यापक बर्बादी आदि के कारण हुए अकाल जैसी आपदा के दौरान खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है—

(i) यदि कोई आपदा, जैसे—बाढ़ आती है तो खाद्यान्नों का कुल उत्पादन एवं आपूर्ति कम हो जाती है। इससे प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य की कमी उत्पन्न हो जाती है।

(ii) खाद्य की कमी से खाद्यान्नों की कीमतें बढ़ जाती हैं। कुछ लोग ऊँची कीमतों पर खाद्य नहीं खरीद पाते हैं।

(iii) स्थिति तब और भी गंभीर हो जाती है, जब ऐसी आपदा अति व्यापक क्षेत्र और लम्बी अवधि के लिए आती है। इससे भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(iv) यदि यह भुखमरी व्यापक स्तर पर होती है तो यह अकाल का रूप धारण कर लेती है। अकाल के दौरान भुखमरी से बड़ी संख्या में लोगों की जानें जाती हैं।

(v) प्रभावित क्षेत्रों में दूषित जल एवं सड़े हुए खाद्य के प्रयोग तथा खाद्य के अभाव में होने वाली कमजोरी के कारण शारीरिक प्रतिरोधी क्षमता में कमी होने से विनाशकारी महामारी फैल जाती है।

प्रश्न 7. मौसमी भुखमरी और दीर्घकालिक भुखमरी में भेद कीजिए।

उत्तर—भुखमरी खाद्य असुरक्षा को व्यक्त करती है। इस प्रकार, खाद्य सुरक्षा की प्राप्ति का अर्थ है—वर्तमान भुखमरी की समाप्ति तथा भविष्य में भुखमरी के खतरे में कमी। भुखमरी मौसमी अथवा दीर्घकालिक दो प्रकार की हो सकती है, जिनकी चर्चा नीचे की गई है—

(i) मौसमी भुखमरी—मौसमी भुखमरी मुख्यतः फसल उपजाने एवं काटने के चक्र से सम्बद्ध है। इस प्रकार की भुखमरी ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य रूप से कृषि कार्यों की मौसमी प्रकृति के कारण उत्पन्न होती है। यह नगरीय क्षेत्रों में अनियमित श्रम के कारण होती है। जैसे—बरसात के मौसम में अनियमित निर्माण श्रमिक को कम काम मिलता है। इस प्रकार की भुखमरी तब होती है जब कोई व्यक्ति पूरे वर्ष काम पाने में अक्षम रहता है।

(ii) दीर्घकालिक भुखमरी—दीर्घकालिक भुखमरी निरन्तर अपर्याप्त, असुरक्षित और अपौष्टिक आहारों के कारण होती है। गरीब लोग अपनी अत्यंत निम्न तथा अनियमित आय के कारण दीर्घकालिक भुखमरी से पीड़ित होते हैं। वे जीवित रहने के लिए भी खाद्य पदार्थ खरीदने में सदैव अक्षम होते हैं।

प्रश्न 8. गरीबों को खाद्य सुरक्षा देने के लिए सरकार ने क्या किया? सरकार की ओर से शुरू की गई किन्हीं दो योजनाओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर—गरीबों को खाद्य सुरक्षा देने के लिए हमारी सरकार अपनी खाद्य सुरक्षा प्रणाली को सावधानीपूर्वक तैयार करती है। इसके निम्नलिखित दो घटक हैं—

(क) बफर स्टॉक—यह अनाजों का सरकारी भंडार है।

(ख) सार्वजनिक वितरण प्रणाली—यह गरीबों में सरकार विनियमित राशन की दुकानों के माध्यम से संचित अनाजों को वितरित करने की प्रणाली है।

1970 के दशक में खाद्य सम्बन्धी तीन महत्वपूर्ण अन्तःक्षेप कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए—

(क) सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक प्रभावशाली बनाया गया।

(ख) एकीकृत बाल्य विकास सेवाएँ वर्ष 1975 में प्रारम्भ की गईं, और

(ग) 'काम के बदले अनाज' योजना वर्ष 1977-78 से प्रारम्भ की गई।

वर्ष 2000 में **'गरीबों में भी सर्वाधिक गरीब'** और **'दीन वरिष्ठ नागरिक'** समूहों पर लक्षित निम्नलिखित दो विशेष योजनाएँ शुरू की गईं—

(i) अंत्योदय अन्न योजना—इस योजना के अन्तर्गत अब 35 किलोग्राम अनाज प्रत्येक पात्र परिवार को ₹ 2 प्रति किलोग्राम गेहूँ तथा ₹ 3 प्रति किलोग्राम चावल की दर से उपलब्ध कराया जाता है।

(ii) अन्नपूर्णा योजना—इस योजना के अन्तर्गत दीन वरिष्ठ नागरिकों को 10 किलोग्राम अनाज मुफ्त दिया जाता है।

प्रश्न 9. सरकार बफर स्टॉक क्यों बनाती है?

उत्तर—बफर स्टॉक खाद्यान्नों का सरकारी भंडार होता है। वास्तव में, बफर स्टॉक कमी वाले क्षेत्रों में एवं समाज के गरीब वर्गों में बाजार कीमत से कम कीमत पर अनाज के वितरण के लिए बनाया जाता है। बफर स्टॉक खराब मौसम में अथवा फिर आपदा काल में अनाज की कमी की समस्या हल करने में भी सहायता करता है।

प्रश्न 10. टिप्पणी लिखें—

(क) न्यूनतम समर्थित कीमत

(ख) बफर स्टॉक

(ग) निर्गम कीमत

(घ) उचित दर की दुकान।

उत्तर—(क) न्यूनतम समर्थित कीमत—यह वह कीमत है जिस पर सरकार भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से उन राज्यों के किसानों से अनाज खरीदती है, जहाँ अधिशेष उत्पादन होता है।

(ख) बफर स्टॉक—यह सरकार द्वारा अधिप्राप्त अनाज का भंडार है। उदाहरण के लिए, गेहूँ एवं चावल का अधिशेष उत्पादन भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से सरकार द्वारा खरीदकर भंडारित होता है।

(ग) निर्गम कीमत—यह वह कीमत है जिस पर सरकार अपनी खरीदे हुए एवं संचित अनाज को कमी वाले क्षेत्रों में और समाज के गरीब वर्गों में वितरित करती है। यह कीमत बाजार कीमत से कम होती है।

(घ) उचित दर की दुकान—भारतीय खाद्य निगम द्वारा अधिप्राप्त अर्थात् संचित अनाज को सरकार द्वारा विनियमित राशन दुकानों के माध्यम से समाज के गरीब वर्गों में वितरित किया जाता है। इन राशन की दुकानों को उचित दर वाली दुकानें भी कहा जाता है। कोई भी परिवार अपने राशन कार्ड से अनाज, मिट्टी का तेल, चीनी आदि की एक निश्चित मात्रा प्रतिमाह उचित दर वाली दुकानों से खरीद सकता है।

प्रश्न 11. राशन की दुकानों के संचालन में क्या समस्याएँ हैं?

उत्तर—राशन की दुकानों के संचालन में निम्नलिखित समस्याएँ हैं—

(i) राशन दुकानों के डीलर प्रायः अधिक लाभ कमाने के लिए अनाज को खुले बाजारों में बेचने जैसे कदाचार करते हैं।

(ii) डीलर राशन दुकानों में घटिया अनाज बेचते हैं।

(iii) राशन दुकानों के डीलर राशन की दुकानें कभी-कभार खोलते हैं।

(iv) जब राशन की दुकानें घटिया अनाज नहीं बेच पाती हैं तो भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में अनाज का विशाल स्टॉक जमा हो जाता है।

(v) कई डीलर वजन कम देते हैं और अशिक्षित ग्राहकों को धोखा देते हैं।

(vi) पहले प्रत्येक परिवार के पास चाहे वह निर्धन हो अथवा गैर-निर्धन, एक राशन कार्ड था परन्तु अब तीन प्रकार के कार्ड और भिन्न कीमतें हैं। निर्धनता रेखा से ऊपर वाले किसी भी परिवार को राशन दुकान पर बहुत कम छूट मिलती है। इसीलिए राशन की दुकान से इन वस्तुओं की खरीदारी के लिए उनको बहुत कम प्रोत्साहन प्राप्त है।

प्रश्न 12. खाद्य और सम्बन्धित वस्तुओं को उपलब्ध कराने में सहकारी समितियों की भूमिका पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर—सहकारी समितियाँ खाद्य और सम्बन्धित वस्तुएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे विशेषकर भारत के दक्षिणी एवं पश्चिमी भागों में अधिक प्रभावी हैं। वे गरीबों के लिए कम कीमतों पर वस्तुएँ बेचने के लिए अपनी दुकान खोलते हैं। उदाहरण के लिए—

(i) तमिलनाडु में कुल राशन दुकानों का लगभग 94 प्रतिशत भाग सहकारी समितियों द्वारा चलाया जाता है।

(ii) दिल्ली में 'मदर डेयरी' कम कीमत पर उपभोक्ताओं को दूध एवं सब्जियाँ उपलब्ध कराने में प्रमुख भूमिका निभाती है। इसकी कीमतें दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित की जाती हैं।

(iii) गुजरात अमूल दूध और दुग्ध-उत्पाद उपलब्ध कराने में प्रमुख स्थान रखता है।

(iv) इसके अलावा, उत्तर प्रदेश में पारस, बिहार में सुधा-सहकारी समितियों के और अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कराई है।

(v) महाराष्ट्र में एकेडमी ऑफ डेवलपमेंट साइंस ने विभिन्न क्षेत्रों में अनाज बैंकों की स्थापना के लिए गैर-सरकारी संगठनों के नेटवर्क में सहायता की है। एकेडमी ऑफ डेवलमेंट साइंस अनाज बैंक कार्यक्रम को एक सफल और नए प्रकार के खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के रूप में मान्यता है।

(ख) अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. खाद्य असुरक्षा की दृष्टि से निम्न में कौन-सा समूह सर्वाधिक प्रभावित है?
(क) परम्परागत कारीगर (ख) परम्परागत सेवाएँ प्रदान करने वाले
(ग) छोटे स्वरोजगार वाले श्रमिक (घ) उक्त सभी।

2. सामाजिक संरचना के अनुसार खाद्य की दृष्टि से सर्वाधिक असुरक्षित हैं—
(क) प्राकृतिक जाति व अनुसूचित जनजाति
(ख) अन्य पिछड़े वर्गों में निम्न जातियाँ
(ग) प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोग जो कार्य की खोज में अन्य स्थानों पर चले गये।
(घ) उक्त सभी।

3. बंगाल का अकाल अत्यन्त विनाशकारी था और इसने लगभग .... लोगों की जाने लीं।
(क) 90 लाख (ख) 60 लाख (ग) 80 लाख (घ) 30 लाख।

4. निम्न स्थान पर अकाल जैसी समस्यायें आज भी हैं—
(क) राजस्थान का कालाहांडी व काशीपुर (ख) झारखण्ड का पलामू जिला
(ग) ओडिशा का कालाहांडी व काशीपुर (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. निम्नलिखित में से कौन से राज्य आज भी निर्धन हैं?
(क) पंजाब व हरियाणा (ख) केरल व तमिलनाडु
(ग) उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड (घ) ओडिशा व बिहार।

6. भारत की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल कौन सी है?
(क) गेहूँ (ख) चावल (ग) मक्का (घ) बाजरा।

7. भारत की दूसरे नम्बर की सबसे प्रसिद्ध खाद्य फसल कौन सी है?
(क) चावल (ख) मक्का (ग) गेहूँ (घ) दालें।
8. केन्द्रीय वसूली में योगदान देने वाले प्रमुख राज्य हैं—
(क) बिहार, असम, प. बंगाल, तमिलनाडु (ख) पंजाब, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश व उत्तर प्रदेश
(ग) केरल, कर्नाटक, ओडिशा व गुजरात (घ) इनमें से कोई नहीं।
9. सन् 1950 में भारत का खाद्यान्न उत्पादन कुल 50 मिलियन टन था जो आज बढ़कर हो गया है—
(क) 300 मिलियन टन से अधिक (ख) 200 मिलियन टन से अधिक
(ग) 150 मिलियन टन से अधिक (घ) 500 मिलियन टन।
10. पिछले दो दशकों में सरकारी एजेन्सियों के द्वारा की जाने वाली खाद्यान्न वसूली 4 मिलियन टन वार्षिकी से बढ़कर अब हो गई है—
(क) 35 मिलियन टन (ख) 15 मिलियटन टन
(ग) 25 मिलियन टन (घ) 20 मिलियन टन।
11. सार्वजनिक वितरण व्यवस्था में आवश्यक वस्तुओं के वितरण की गारण्टी होती है, ये वस्तुएँ हैं—
(क) गेहूँ, चावल, चीनी, खाद्य तेल, कैरोसीन (ख) गेहूँ, दालें, पैट्रोल, दूध, चीनी
(ग) चावल, चीनी, चाय, बिस्किट्स (घ) उपर्युक्त सभी।
12. राशन की दुकानें किस रूप में जानी जाती हैं?
(क) खुदरा दुकानें (ख) सरकारी दुकानें
(ग) केन्द्रीय भण्डार (घ) उचित मूल्य दुकानें।
13. अन्त्योदय अन्न योजना कब आरम्भ की गई?
(क) दिसम्बर 2000 (ख) सितम्बर 2002 (ग) दिसम्बर 2001 (घ) दिसम्बर 2005
14. बिहार व ओड़िशा में प्रतिमाह प्रति व्यक्ति पी. डी. एस. खाद्यान्न की औसत खपत है—
(क) 500 ग्राम (ख) 750 ग्राम (ग) 150 ग्राम (घ) 1 किलो।

[उत्तर—1. (घ), **2.** (घ), **3.** (घ), **4.** (ग), **5.** (घ), **6.** (ख), **7.** (ग), **8.** (ख), **9.** (ख), **10.** (घ), **11.** (क), **12.** (घ), **13.** (क), **14.** (क)। **]**

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हमें भोजन की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर—हमें अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए एवं जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2. भोजन के स्रोत कौन से हैं?

उत्तर—हम पौधों व जीवों से भोजन प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 3. हमारा वार्षिक खाद्य उत्पादन क्या है?

उत्तर—हम अपने भोजन की आवश्यकता पूर्ति हेतु पौधों से 360 मिलियन टन तथा जीवों से 88 मिलियन टन उत्पाद प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 4. टिकाऊ कृषि क्या है?

उत्तर—यह कृषि का वह रूप है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता पूर्ति हेतु पर्याप्त खाद्य उत्पादन करने के साथ-साथ पर्यावरणीय सम्पदा एवं उत्पादकता को भावी पीढ़ी के लिए भी सुरक्षित रखा जाता है।

प्रश्न 5. खाद्यान्न के स्रोत क्या हैं?

उत्तर—चावल, गेहूँ, बाजरा, मक्का एवं दालें।

प्रश्न 6. चावल का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष क्या है?

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 2004 को चावल का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया।

प्रश्न 7. 'अन्तर्राष्ट्रीय चावल वर्ष' की थीम क्या थी?

उत्तर—'चावल जीवन' है।

प्रश्न 8. देश की खाद्य अर्थव्यवस्था के प्रबन्ध को कौन-सा विभाग देखता है?

उत्तर—'सार्वजनिक वितरण का विभाग'।

प्रश्न 9. खाद्यान्न की वसूली के लिए केन्द्रीय सरकार की नोडल एजेन्सी कौन सी है?

उत्तर—भारत का खाद्य निगम।

प्रश्न 10. जनसंख्या वृद्धि की वार्षिक दर क्या है?

उत्तर—2.8%।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में सन् 1951 से खाद्यान्न उत्पादन की क्या प्रगति रही है? संक्षेप में समझाइए।

उत्तर—15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय नीति-निर्माताओं ने खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लगभग सभी उपाय किए।

इसके लिए कृषि में एक नई रणनीति को अपनाया, जिसकी परिणति विशेषकर गेहूँ और चावल के उत्पादन में हरित क्रांति से हुई। उस दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा जुलाई, 1968 में 'गेहूँ क्रांति' शीर्षक से एक विशेष डाक टिकट भी जारी किया गया और कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति की प्रगति को आधिकारिक रूप से दर्ज किया गया। इस प्रकार गेहूँ की सफलता के उपरान्त चावल के क्षेत्र में भी अत्यधिक उत्पादन से सफलता प्राप्त हुई। इसके बावजूद, अनाज की उपज में समानुपातिक वृद्धि नहीं थी। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में वर्ष 2015-16 में सबसे अधिक वृद्धि हुई, जो क्रमशः 44.01 व 30.21 करोड़ टन थी।

भारत में सन् 2015-16 में कुल अनाज उत्पादन 252.22 करोड़ टन रहा। सन् 2015-16 में उ० प्र० में गेहूँ का उत्पादन 26.87 करोड़ टन और मध्य प्रदेश में 17.69 करोड़ टन रहा। सन् 2015-16 में पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में चावल के उत्पादन में क्रमशः 15-75 एवं 12.51 करोड़ टन वृद्धि रही।

प्रश्न 2. मनुष्यों के लिए भोजन का क्या महत्व है?

उत्तर—भोजन जीवन के लिए अति आवश्यक अवयव है। भोजन से शरीर को ऊर्जा प्राप्त होती है। इस ऊर्जा से मनुष्य अपनी दैहिक क्रियाएँ सम्पन्न करता है तथा अपने स्वास्थ्य को ठीक रख पाता है। भोजन के द्वारा ही वह शारीरिक श्रम करता है।

प्रश्न 3. मनुष्य अपनी भोजन की आवश्यकताओं का प्रबन्ध किस प्रकार कर रहे हैं?

उत्तर—भोजन के रूप में मनुष्य खाद्यान्न एवं फलों का प्रयोग करता है। इसके लिए वह भूमि पर फसलें उगाकर खाद्यान्न उत्पन्न करता है तथा अपनी साल भर की आवश्यकतानुसार भण्डारण कर खाद्यान्नों को सुरक्षित रख देता है तथा अवशेष को बाजार में बेच कर धन प्राप्त कर लेता है। फसलों के साथ वह बागवानी भी करता है जिससे उसे मौसमी फल जैसे—आम, अमरूद, केला, संतरा आदि प्राप्त होते हैं तथा खेतों में सब्जियाँ उगाकर उनका उपभोग करता है।

प्रश्न 4. हम जीवों से अपना भोजन किस प्रकार प्राप्त करते हैं?

उत्तर—जीवों में हरे पौधे ही स्वयंपोषी होते हैं जो अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। अन्य सभी जीवधारी परपोषी होते हैं तथा वे पौधों द्वारा बनाए गये भोजन का प्रयोग पोषण के लिए करते हैं। मनुष्य भी हरे पौधों द्वारा बनाए गये भोजन को ही ग्रहण करता है। इसके लिए मनुष्य फसल बोता है जिससे उसे खाद्यान्न प्राप्त होता है। कुछ चीजों जैसे—मक्खन, दूध, घी तथा पनीर के लिए यह जानवरों पर निर्भर होता है। कुछ मांसाहारी मनुष्य मछलियों को भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 5. खाद्य सुरक्षा क्या है?

उत्तर—सभी के जीवन के लिए भोजन उतना ही आवश्यक है जितना साँस लेने के लिए शुद्ध वायु की आवश्यकता है। इसके विपरीत खाद्य सुरक्षा केवल दो समय की रोटी प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा जरूरी पोषक तत्वों की प्राप्ति है। खाद्य सुरक्षा के निम्नलिखित आयाम हैं—

(क) खाद्य उपलब्धता का अर्थ किसी भी देश में खाद्य उत्पादन, खाद्य का आयात (Import) तथा सरकार के अनाज-भण्डारों में संचित किए गए गत वर्षों के भण्डार से है।

(ख) खाद्य पहुँच का अर्थ है कि खाद्य सभी व्यक्तियों को समयानुसार प्राप्त होता रहे।

(ग) सामर्थ्य का अर्थ है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति के पास अपनी भोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु पर्याप्त व पौष्टिक आहार या भोजन खरीदने के लिए धन उचित मात्रा में उपलब्ध हो।

किसी भी देश में खाद्य सुरक्षा तभी सुनिश्चित होती है, जब (1) देश के प्रत्येक व्यक्ति के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य उपलब्ध हो। (2) खाद्य की उपलब्धता में किसी भी प्रकार की कोई बाधा न हो। (3) सभी के पास स्वीकृत रूप से गुणवत्ता से परिपूर्ण खाद्य-पदार्थ खरीदने की पर्याप्त क्षमता हो।

प्रश्न 6. हमें खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर—समाज का गरीब वर्ग किसी भी समय खाद्य असुरक्षा से ग्रस्त हो सकता है। ऐसा सामान्यत: काम न मिलने पर होता है परन्तु जब देश राष्ट्रीय आपदा से गुजर रहा हो जैसे भूकम्प, सूखा, बाढ़, सुनामी व अकाल हो तो निर्धन रेखा से ऊपर के लोग भी खाद्य असुरक्षा से ग्रस्त हो सकते हैं। अत: उनके लिए खाद्य सुरक्षा आवश्यक है।

प्रश्न 7. अकाल से सर्वाधिक प्रभावित कौन है?

उत्तर—अकाल की स्थिति में खाद्यान्नों की कमी हो जाती है जो खेतों के मालिक हैं उनके लिए आपातकाल के लिए खाद्याान्न सुरक्षित होता है परन्तु अकाल की स्थिति में खेतिहार मजदूर तथा शहरों में रहने वाले दैनिक वेतन भोगी श्रमिक सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। इनकी ही संख्या गरीबी रेखा से नीचे जीने वालों में सर्वाधिक होती है। अत: गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोग अकाल से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं।

प्रश्न 8. सरकार ने सुरक्षित भण्डार का प्रबन्ध क्यों किया है?

उत्तर—समाज के सभी वर्गों के लिए खाद्य की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार सुरक्षित भण्डार का प्रबन्ध करती है। बफर स्टॉक भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से सरकार द्वारा अधिप्राप्त अनाज गेहूँ और चावल का भण्डारण है। इससे भविष्य में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो गई है। अकाल एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय भण्डारण से समुचित मात्रा में जनता को खाद्य वितरित किया जा सकता है।

प्रश्न 9. राशन की दुकानों की कार्यप्रणाली में कौन-सी समस्याएँ हैं?

उत्तर—राशन की दुकानों के संचालन में आने वाली मुख्य समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(1) राशन की दुकानों के विक्रेता अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से अनाज को खुले बाजार में बेच देते हैं। इससे इन दुकानों पर अनाज की कमी हो जाती है और सभी लोगों को अनाज समय पर नहीं मिल पाता।

(2) राशन की दुकानों में उपलब्ध अनाज की किस्म घटिया होती है। यह माल बिक नहीं पाता और दुकानों में पड़ा रहता है।

(3) समय पर उठान न होने से, खाद्य निगम के गोदामों में अनाज का स्टॉक पड़ा रहता है। यह धीरे-धीरे सड़कर खराब हो जाता है।

(4) अब तीन भिन्न राशन कार्डों की व्यवस्था है। कीमतों की भी अनेक श्रृंखलाएँ हैं। इससे कार्य अव्यवस्थित हो जाता है।

(5) राशन विक्रेता उचित व्यावसायिक व्यवहार नहीं अपनाते हैं जैसे घटिया स्तर का माल बेचना, माल कम तोलना/मापना, दुकानें समय पर न खोलना, मिलावट करना आदि।

प्रश्न 10. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए—

(क) न्यूनतम समर्थन मूल्य, (ख) सुरक्षित भण्डारण, (ग) उचित मूल्य दुकान।

उत्तर—(क) न्यूनतम समर्थन मूल्य—भारतीय खाद्य निगम अधिशेष उत्पादन वाले राज्यों में किसान से गेहूँ एवं चावल खरीदता है। किसानों को उनके उत्पादों के लिए पहले से घोषित कीमतें दी जाती हैं। इस कीमत को न्यूनतम समर्थन मूल्य कहा जाता है।

(ख) सुरक्षित भण्डारण—भारत सरकार भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से अनाज गेहूँ व चावल का पर्याप्त भण्डार भण्डारगृहों में रखती है। इन भण्डारों को सुरक्षित भण्डार कहा जाता है। यह सुरक्षित भण्डारण आपदा के समय या खराब मौसम में अनाज की समस्या से निपटने में सहायता करता है।

(ग) उचित मूल्य दुकान—सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत राशन की उन दुकानों को उचित मूल्य की दुकान कहा जाता है। जहाँ चीनी, खाद्यान्न और मिट्टी के तेल का भण्डार होता है तथा ये सभी वस्तुएँ बाजार कीमत से कम कीमत पर लोगों को बेची जाती हैं।

प्रश्न 11. खाद्य असुरक्षा के प्रति कौन अधिक प्रवृत्त हैं?

उत्तर—निम्नलिखित लोग भारत में खाद्य असुरक्षा से अधिक ग्रस्त हो सकते हैं—भूमिहीन अथवा नगण्य भूमि पर निर्भर लोग, पारम्परिक दस्तकार, पारम्परिक सेवा प्रदाता, अपना छोटा मोटा कार्य करने वाले कामगार, निराश्रित एवं भिखारी, कम आमदनी वाले व्यवसायी और अनियमित श्रम बाजारों में लगे लोग, मौसमी कार्यों में लगे लोग आदि।

प्रश्न 12. भारत के कौन से राज्य खाद्य की दृष्टि से अधिक असुरक्षित हैं?

उत्तर—भारत में खाद्य असुरक्षा से ग्रसित राज्य निम्नलिखित हैं—उत्तर प्रदेश (पूर्वी और दक्षिण पूर्वी हिस्से), बिहार, झारखण्ड, ओडिशा, पश्चिम-बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ भाग।

प्रश्न 13. क्या आप विश्वास करते हैं कि हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न में आत्म-निर्भर बनाया है?

उत्तर—हमारा निश्चित विश्वास है कि हरित क्रान्ति ने ही भारतवर्ष को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाया था। हरित क्रांति

के समय नवीन बीजों एवं नवीन तकनीकों के विकास के परिणामस्वरूप खाद्यान्नों के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई जिससे निरन्तर भारत खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर होता गया।

प्रश्न 14. प्राणी स्रोतों से खाद्य उत्पादन की क्या प्रवृत्तियाँ रही हैं?

उत्तर—माँसाहारी लोग विभिन्न प्राणियों के माँस का भक्षण कर उदरपूर्ति करते हैं। भारत के ज्यादातर लोग मछलियों को भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं। मछलियों को चावल के साथ खाद्यान्न के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसके लिए मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मुर्गी पालन द्वारा भी खाद्यान्न का उत्पादन किया जाता है। सूअर पालन आदि खाद्यान्न के प्रमुख उत्पादक हैं।

प्रश्न 15. भारत में चावल उत्पादन के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—गेहूँ क्रान्ति के बाद देश में चावल की उपज में भी भारी वृद्धि होने लगी। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि राज्यों में उन्नत किस्म के चावलों के बीजों के कारण उत्पादन में काफी वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप भारत खाद्यान्न के मामले में आत्म-निर्भर हो गया।

प्रश्न 16. भारत में गेहूँ उत्पादन के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—भारत में गेहूँ का उत्पादन भी हरित क्रान्ति के बाद तेजी से हुआ है। हरित-क्रान्ति के बाद पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश तथा राजिस्थान के कुछ भागों में तेजी से वृद्धि हुई है। भारत गेहूँ उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ है। पिछले 35 वर्षों से निरंतर गेहूँ की पैदावार अच्छी हो रही है। मगर दालों के उत्पादन में कमी आयी है।

प्रश्न 17. केन्द्र के द्वारा गेहूँ व चावल की वसूली की वर्तमान स्थिति क्या है?

उत्तर—FCI के पास सन् 2014 में गेहूँ एवं चावल का भण्डार लगभग 65.2 करोड़ टन था। जो न्यूनतम बफर प्रतिमान से बहुत अधिक था। बफर स्टॉक का उच्च स्तर बेहद अवांछनीय है। अधिक मात्रा में खाद्य के स्टॉक का भण्डारण बर्वादी व अनाज की गुणवत्ता में ह्रास के अलावा रखरखाव के लिए भी जिम्मेदार है।

प्रश्न 18. उन राज्यों के नाम बताइए जिनका चावल व गेहूँ की वसूली में प्रमुख योगदान है।

उत्तर—गेहूँ और चावल की वसूली में प्रमुख योगदान पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि राज्यों ने दिया है। इन राज्यों से बफर स्टॉक में वृद्धि हुई है।

प्रश्न 19. खाद्य भण्डारण का क्या महत्व है? भण्डारण की वर्तमान स्थिति क्या है?

उत्तर—खाद्य भण्डारण द्वारा आपातकाल में देश के लोगों को समुचित मात्रा में खाद्यान्न की पूर्ति की जा सकती है। अकाल, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय खाद्यान्न उत्पादन में कमी हो सकती है अत: अतिरिक्त खाद्यान्न का वितरण सुरक्षित भण्डारण से किया जा सकता है। वर्तमान में भारत में खाद्यान्न भण्डारण की स्थिति संतोषजनक है। खाद्यान्न उत्पादन में भारत आत्म-निर्भरता की स्थिति में है। अत: खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से भारत में भण्डारण समुचित मात्रा में है।

प्रश्न 20. सार्वजनिक वितरण व्यवस्था क्या है? इसका लक्ष्य क्या है?

उत्तर—सार्वजनिक वितरण प्रणाली का अर्थ—सार्वजनिक वितरण प्रणाली से आशय उस प्रणाली से है जिसमें आवश्यक एवं उपभोक्ता वस्तुओं को सार्वजनिक रूप से इस प्रकार वितरित किया जाता है कि ये वस्तुएँ सभी उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर और उचित मात्रा में प्राप्त हो सकें। इस प्रणाली में वितरण व्यवस्था पर सरकारी नियमन एवं नियन्त्रण रहता है।

इसमें भारतीय खाद्य निगम द्वारा खाद्यान्नों को क्रय किया जाता है और सरकार द्वारा विनियमित राशन दुकानों के माध्यम से इसे वितरित किया जाता है। ये मध्यस्थ कहलाते हैं। इसमें मध्यस्थों के लाभ की मात्रा और वस्तुओं के विक्रय मूल्य सरकार द्वारा निश्चित किए जाते हैं। इससे कम या अधिक मूल्य पर वस्तुओं की बिक्री नहीं की जा सकती। इस व्यवस्था के अन्तर्गत उपभोक्ताओं को राशन कार्ड वितरित किए जाते हैं और इन राशन कार्डों के आधार पर गेहूँ, चावल, कपड़े, चीनी व तेल का निश्चित आधार पर वितरण किया जाता है। यह वितरण निम्नलिखित माध्यमों द्वारा होता है—

(1) उचित मूल्य पर राशन की दुकानें—इन दुकानों से गेहूँ, गेहूँ से बनी वस्तुएँ (आटा, सूजी, मैदा), चावल, चीनी, वनस्पति घी व तेल सरकार द्वारा निर्धारित मूल्यों पर राशन कार्डों के आधार पर बेचा जाता है।

(2) सहकारी उपभोक्ता भण्डार—इन भण्डारों में उपभोक्ताओं की आवश्यकता की वस्तुओं के साथ-साथ नियन्त्रित वस्तुओं की बिक्री का भी प्रबन्ध होता है।

(3) सुपर बाजार—देश के बड़े-बड़े नगरों में सुपर बाजार खोले गए हैं जिनमें साधारण उपयोग की सभी वस्तुएँ उपलब्ध रहती हैं।

(4) नियन्त्रित कपड़े की दुकानें—इन दुकानों पर निर्मित कपड़ा राशन कार्डों के आधार पर उपभोक्ताओं को बेचा जाता है।

(5) सोफ्ट कोक डिपो—इन दुकानों पर उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर सोफ्ट कोक बेचा जाता है।

(6) मिट्टी के तेल के विक्रेता—ये विक्रेता सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर विक्रेताओं को तेल उपलब्ध कराते हैं।

प्रश्न 21. कटाई के बाद नुकसान कैसे होता है?

उत्तर—फसल की कटाई के बाद उसे सुखाया जाता है तो फसल के दाने खेतों में बिखर जाते हैं। कटने के कुछ समय बाद ही खेतों में रहने वाले चूहे तथा अन्य पक्षी फसल के दानों को खाना आरम्भ कर देते हैं, जिससे फसल को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। कुछ खाद्यान्न चूहे अपने बिलों में इकट्ठा कर लेते हैं। अत: कटाई के बाद फसलों को लगभग 4-5% की हानि होती है।

प्रश्न 22. "भारत में लोगों के एक वर्ग को आज भी भरपेट भोजन प्राप्त नहीं है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत के नगरीय क्षेत्रों में अनियमित श्रम के कारण तथा ग्रामीण क्षेत्रों की मौसमी प्रकृति के कारण मौसमी भुखमरी आज भी विद्यमान है। ग्रामीण क्षेत्र में खेतीहीन मजदूरों की आय इतनी कम है कि उन्हें भरपेट भोजन नहीं मिल पाता है। शहरी क्षेत्र में भी अनियमित श्रमिक भी इसी समस्या से जूझ रहे हैं। यह वर्ग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है।

मूल्य आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निरन्तर बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं व इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से कृषि का क्या महत्व है?

उत्तर—भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि द्वारा ही खाद्यान्न उत्पादन होता है। इतनी बड़ी जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करना खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि के द्वारा ही संभव है। यदि देश में उचित मात्रा में खाद्यान्नों का भण्डारण होगा तो आपातकाल में लोगों को भोजन प्रदान किया जा सकता है अत: कृषि का विकास खाद्य सुरक्षा को मजबूती प्रदान करता है।

प्रश्न 2. देश में कृषि अनुसंधानों एवं विकास कार्यों का क्या योगदान रहा है?

उत्तर—भारत में कृषि अनुसंधानों द्वारा हरित क्रान्ति को जन्म दिया गया जिससे खाद्यान्नों के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। नई किस्मों के बीजों का विकास, नये कृषि उपकरणों के निर्माण एवं रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाओं के विकास ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दी। पिछले 35 वर्षों से खाद्यान्नों के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। भारत वर्तमान में खाद्यान्नों के लिए आत्म-निर्भर है।

प्रश्न 3. भूख क्या है? विस्तार से समझाइए।

उत्तर—भोजन की कमी को भूख कहते हैं। भूख गरीबी का कारण और प्रभाव है। सामान्यत: श्रमिक अपने श्रम को जीविका के लिए प्रयोग करता है परन्तु जब श्रम उसकी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता तो यही भूख और गरीबी को जन्म देता है। भूख वह है जो किसी व्यक्ति को उचित मात्रा में आवश्यक पोषक तत्व न मिलने से उत्पन्न होती है। स्थाई भूख वह है जिसमें व्यक्ति गरीबी के कारण आवश्यक पोषक तत्वों को खरीद नहीं पाता है अत: उसे भोजन से पर्याप्त ऊर्जा प्राप्त नहीं होती है। वह शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है। कुछ किसान इन्हीं कारणों से आत्महत्या कर लेते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सीजनल भुखमरी पायी जाती है। इसमें मजदूरों को वर्ष के कुछ दिनों में काम नहीं मिलता है जिससे वे उन दिनों में भूखमरी के कगार पर पहुँच जाते हैं।

प्रश्न 4. प्राकृतिक आपदा होने पर खाद्य आपूर्ति का क्या होता है?

उत्तर—प्राकृतिक आपदा होने पर कुछ घटनाओं; जैसे—सूखा, बाढ़ आदि में खाद्यान्न उत्पादनों में कमी हो जाती है जिससे खाद्य संकट उत्पन्न हो जाता है तब सरकार अपने आरक्षित भण्डार से लोगों के लिए खाद्यान्न की व्यवस्था करती है तथा प्रत्येक नागरिक को इसकी आपूर्ति निश्चित की जाती है। निर्धन वर्ग के लोगों को सरकार रियायती दर या बहुत कम मूल्य पर या बिना मूल्य लिए खाद्यान्नों की आपूर्ति करती है।

प्रश्न 5. "एक प्राकृतिक आपदा जैसे सूखा खाद्य सुरक्षा पर खतरनाक प्रभाव छोड़ती है।" उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देश में सूखा पड़ने का मतलब है बहुत कम मात्रा में वर्षा का होना। वर्षा कम होने के कारण फसलों को सिंचाई के लिए कम मात्रा में पानी उपलब्ध हो पाता है जिससे उत्पादन में भारी गिरावट आ जाती है जिससे देश में खाद्य संकट उत्पन्न हो जाता है। जिससे खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। खाद्यान्नों की कमी से देश के नागरिकों को आवश्यक मात्रा में खाद्यान्न प्रदान नहीं किया जा सकता है। सूखे के प्रभाव से देश की अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा को गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाता है।

प्रश्न 6. खाद्य उत्पादन को लेकर भविष्य की क्या सम्भावनाएँ हैं?

उत्तर—भारत में हरित क्रान्ति के बाद खाद्यान्न उत्पादनों में काफी वृद्धि हुई है तथा निरंतर 35 वर्ष से यह वृद्धि बनी हुई है। खेती में अनेक नये अनुसंधानों से भविष्य में भी उत्पादन में वृद्धि की संभावनाएँ बरकरार हैं। उन्नत किस्मों के बीजों के विकास एवं खेती के विभिन्न तरीकों के अनुसंधान से यह आशा की जाती है कि देश में भविष्य में उत्पादन में वृद्धि होती रहेगी यद्यपि रासायनिक उर्वरकों के निरंतर प्रयोग से धीरे-धीरे भूमि की उर्वरता शक्ति समाप्त होती जा रही है। इसके निदान के लिए अब जैविक खादों का उत्पादन शुरु हो गया है तथा किसान अब रासायनिक खादों के साथ-साथ जैविक खादों का प्रयोग करने लगे हैं जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति को स्थिर रखने में सहायता मिल रही है।

प्रश्न 7. अपेक्षित व्यक्तियों एवं अत्यधिक भण्डारण के सहअस्तित्व से उत्पन्न विरोधाभास पूर्ण स्थिति क्या है?

उत्तर—भारत में प्रतिवर्ष लगभग 62 करोड़ टन खाद्यान्न का भण्डारण होता है जिसमें 200 लाख टन अनाज खाद्य सुरक्षा के लिए सुरक्षित रखा जाता है। भारत में लगभग 2 करोड़ लोग कुपोषण के शिकार है जिनके लिए सरकार अपने भण्डारण को सुरक्षित रखती है। हरित क्रान्ति के बाद देश में भण्डारण की क्षमता में अत्यधिक वृद्धि हुई है परन्तु बढ़ती हुई जनसंख्या की दर 2.8 है अर्थात् प्रति वर्ष 2.8 करोड़ लोगों की वृद्धि हो जाती है तथा खाद्यान्न उत्पादन में 2.2% की वृद्धि होती है। ये आँकड़े एक-दूसरे के प्रति विरोधाभास पूर्ण स्थिति उत्पन्न कर देते हैं।

प्रश्न 8. चावल किस प्रकार हमारे लिए जीवन है?

उत्तर—चावल आधी दुनिया का भोज्य पदार्थ है। एशिया में लगभग 2 अरब लोग चावल को खाते हैं। यह अत्यधिक तीव्रता से उत्पादित होने वाला खाद्यान्न है। यह अफ्रीका के कई देशों में कम आय वाले निर्धन लोगों की खाद्य सुरक्षा का एक मात्र साधन है। विकासशील देशों के एक अरब लोग चावल एवं चावल से उत्पादित अन्य उत्पादों के उत्पादन में लगे हुए हैं। लगभग चावल का 4/5 भाग कम आय वाले देशों के किसानों द्वारा उगाया जाता है। चावल किसी देश की अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक खाद्यान्न है अतः हम कह सकते हैं कि चावल हमारे लिए जीवन है जो हमें खाद्य सुरक्षा प्रदान करता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में खाद्य सुरक्षा की क्या स्थिति है? क्या इसे सुधारा जा सकता है?

उत्तर—भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति—भारत में सन् 1970 के दशक की शुरुआत में हरित क्रांति के बाद कभी अकाल की स्थिति नहीं आई है। सम्पूर्ण देश में उगाई जाने वाली विभिन्न फसलों के कारण भारत लगभग गत 35 वर्षों के दौरान खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर बन गया है। प्रतिकूल मौसम स्थितियों के बावजूद भारत सरकार द्वारा तैयार की गई खाद्य सुरक्षा व्यवस्था के कारण भारत में अनाज की उपलब्धता और भी सुनिश्चित हो गई है। खाद्य सुरक्षा व्यवस्था के दो घटक हैं—(1) बफर स्टॉक तथा (2) सार्वजनिक वितरण प्रणाली।

आरेख : भारत में अनाज की उपज (करोड़ टन में)

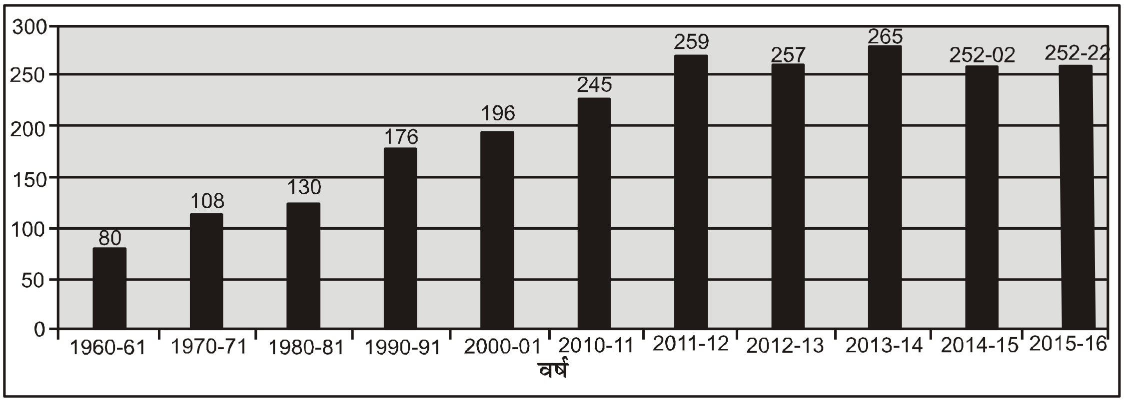

स्रोत: पॉकेट बुक आफ एग्रीकल्चर स्टैटिस्टिक्स 2016 (भारत सरकार)।

बफर स्टॉक—भारतीय खाद्य निगम (FCI) के माध्यम से केन्द्र सरकार द्वारा प्राप्त अनाज, गेहूँ व चावल का पर्याप्त भण्डार 'बफर स्टॉक' कहलाता है। प्रायः FCI अधिशेष उत्पादन वाले राज्यों के किसानों से गेहूँ व चावल खरीदता है तथा इसके बदले उनको फसलों के लिए पूर्व घोषित कीमतें दी जाती हैं तथा इस मूल्य को **न्यूनतम समर्थित मूल्य** अथवा **MSP** कहा जाता है।

सरकार इन फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बुआई के मौसम से पूर्व न्यूनतम समर्थित मूल्य की

घोषणा करती है और खरीदे गए अनाजों को खाद्य भण्डारों में रखा जाता है। सरकार बफर स्टॉक क्यों बनाती है? सरकार द्वारा कमी वाले क्षेत्रों में तथा समाज के निर्धन वर्गों में बाजार मूल्य से कम मूल्य पर अनाज के वितरण हेतु ऐसा किया जाता है। इस मूल्य को **निर्गम मूल्य** भी कहा जाता है। बफर स्टॉक आपदा के समय या खराब मौसम में अनाज की समस्या से निपटने में सहायता करता है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली—सार्वजनिक वितरण प्रणाली का अर्थ सस्ती कीमतों पर खाद्य और खाद्यान्न वितरण के प्रबन्ध की व्यवस्था करना है। भारतीय खाद्य निगम की सहायता से सरकार प्राप्त अनाज को राशन की दुकानों के माध्यम से समाज के निर्धन वर्गों को वितरित करती है। इसे ही 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)' कहते हैं। देश के अधिकांश क्षेत्रों, गाँवों, कस्बों व शहरों में कुल मिलाकर 5.5 लाख राशन की दुकानें हैं।

राशन की दुकानों में (जिन्हें **उचित मूल्य वाली दुकानें** भी कहते हैं) चीनी, खाद्यान्न तथा खाना पकाने हेतु मिट्टी के तेल का पर्याप्त भण्डार रहता है। इन दुकानों पर बाजार कीमत से कम कीमत पर इन सामानों को बेचा जाता है। राशन कार्ड प्राप्तकर्त्ता कोई भी परिवार प्रतिमाह इन खाद्यान्नों को अनुबंधित मात्रा (35 किग्रा अनाज, 5 किग्रा चीनी, 5 लीटर मिट्टी का तेल) के अनुसार अपने पास में स्थित राशन की दुकान से खरीद सकता है।

बंगाल के अकाल के कारण सन् 1940 के दशक में भारत में राशन-व्यवस्था की शुरुआत हुई। 1960 के दशक के समय हरित क्रांति से पूर्व खाद्य संकट के कारण राशन प्रणाली को पुनर्जीवित किया गया। NSSO की रिपोर्ट के अनुसार, 1970 के दशक के मध्य निर्धनता के उच्च स्तरों को ध्यान में रखने हुए खाद्य सम्बन्धी तीन महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आरम्भ किए गए—(1) **सार्वजनिक वितरण-प्रणाली**, (2) **एकीकृत बाल विकास सेवाएँ** (ICDS), वर्ष 1975 में आरंभ किया गया) तथा (3) **काम के बदले अनाज** (FFW, वर्ष 1977-78 में आरम्भ किया गया)। वर्तमान में भी अनेक **निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम** (PAP) चलाए जा रहे हैं, जो अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। इन कार्यक्रमों में स्पष्टत: घटक खाद्य भी है, जहाँ मध्याह्न भोजन तथा सार्वजनिक वितरण-प्रणाली खाद्य की सुरक्षा की दृष्टि से विस्तारित कार्यक्रम हैं। निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम भी खाद्य सुरक्षा को बढ़ाते हैं, जबकि रोजगार कार्यक्रम निर्धनों की आय में वृद्धि करके भारत में खाद्य सुरक्षा में सर्वाधिक योगदान देते हैं।

सार्वजनिक वितरण-प्रणाली की वर्तमान स्थिति—भारत सरकार का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कदम खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक वितरण-प्रणाली है। आरम्भ में यह प्रणाली सभी वर्गों के लिए थी तथा निर्धनों व गैर-निर्धनों में कोई भेदभाव नहीं था। लेकिन बाद में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अत्यधिक कुशल व लक्षित बनाने हेतु संशोधित किया गया। सन् 1992 में भारत के 1700 ब्लॉकों में सार्वजनिक वितरण-प्रणाली को संशोधित करके पुन: आरंभ किया गया। इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य देश के दूरदराज व पिछड़े क्षेत्रों में लाभ पहुँचाना था। 'सभी क्षेत्रों में गरीबों' को लक्षित करने के सिद्धान्त को अपनाने हेतु जून, 1997 में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS) का शुभारम्भ किया गया। यह पहला अवसर था जब निर्धनी व गैर-निर्धनों हेतु अलग-अलग मूल्यों को अपनाया गया। इसके अतिरिक्त, सन् 2000 में भारत सरकार द्वारा दो योजनाएँ—**अंत्योदय अन्न योजना** व **अन्नपूर्णा योजना** शुरू की गईं। ये दोनों योजनाएँ 'गरीबों में भी सर्वाधिक गरीब' और 'दीन वरिष्ठ नागरिक' समूहों पर लक्षित हैं। इन दोनों योजनाओं को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के वर्तमान स्वरूप से जोड़ दिया गया है।

सामान्यतया निर्धन परिवारों के पक्ष में कीमतों का संशोधन होता रहा है। खाद्यान्नों के उत्पादन की वृद्धि में न्यूनतम समर्थन मूल्य व अधि प्राप्ति ने योगदान दिया है एवं कुछ क्षेत्रों में किसानों को आम सुरक्षा प्रदान की है।

फिर भी सार्वजनिक वितरण प्रणाली की आलोचना होती रही है। भारत में भण्डार अनाजों से भरे होने के बावजूद भी भुखमरी की घटनाएँ होती रही हैं। भारतीय खाद्य निगम के भण्डार अनाज से परिपूर्ण हैं। किन्तु कहीं अनाज सड़ जाता है तो कहीं पर चूहे अनाज को खा जाते हैं।

सुधार के उपाय—(1) भण्डारित अनाजों की गरीब जनता की पहुँच को सुनिश्चित किया जाय जिससे कोई भारतवासी भूखा नहीं सोये।

(2) भण्डारित अनाज के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दिया जाय जिससे अनाज को सड़ने से बचाया जा सके तथा चूहों से उसकी सुरक्षा हो सके।

(3) मोटे अनाजों जैसे चना, मटर एवं अन्य दालों के उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रयास किए जाने चाहिए जिससे इनकी आपूर्ति को सुनिश्चित किया जा सके।

(4) सार्वजनिक वितरण प्रणाली को चुस्त दुरुस्त किया जाय जिससे आवश्यकता वाले लोगों को खाद्यान्न प्रदान किया जा सके।

प्रश्न 2. बाजरा, मक्का व दालों का क्या महत्व है?

उत्तर—बाजरा एवं मक्का का प्रयोग कई राज्यों में खाद्यान्न के रूप में किया जाता है। राजस्थान के कई इलाकों में बाजरा लोगों का मुख्य भोजन है। यह कम सिंचाई वाली फसल है जो कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाई जाती है। इसी प्रकार मक्का भी एक खाद्यान्न है जिसका उत्पादन कई राज्यों में किया जाता है। यह भी कम वर्षा वाली फसल है।

दालें प्रोटीन युक्त खाद्यान्न है। यह भारतीयों का मुख्य खाद्यान्न है। दालें लगभग सभी राज्यों में खाद्य के रूप में प्रयोग की जाती हैं। हरित क्रान्ति में गेहूँ तथा चावल के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई परन्तु मोटे अनाजों जैसे मक्का, दालों व बाजरा के उत्पादन में कमी हुई। इसका परिणाम ये हुआ कि इनकी कीमतें बढ़ गईं। ये आम जनता की पहुँच से दूर हो गईं अतः सरकार को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये इन खाद्यान्नों के उत्पादन पर विशेष जोर देना चाहिए।

प्रश्न 3. खाद्य सुरक्षा में सरकार की क्या भूमिका है?

उत्तर—समाज के सभी वर्गों के लिए खाद्य की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार सावधानीपूर्वक खाद्य प्रणाली तैयार करती है। इसके दो घटक हैं—(1) बफर स्टॉक, (2) सार्वजनिक वितरण प्रणाली। बफर स्टॉक भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से सरकार द्वारा अधिप्राप्त अनाज गेहूँ और चावल का भण्डार है। इससे भविष्य में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो गई है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में भारत सरकार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कदम है। इस प्रणाली के अन्तर्गत सरकार भारतीय खाद्य निगम द्वारा अधिप्राप्त अनाज को विनियमित राशन दुकानों के माध्यम से समाज के गरीब वर्गों में वितरित करती है।

यह प्रणाली मूल्यों को स्थिर बनाए रखने और सामर्थ्य के अनुसार कीमतों पर उपभोक्ताओं को खाद्यान्न उपलब्ध कराने की सरकार की नीति में सर्वाधिक प्रभावी साधन सिद्ध हुई हैं।

प्रश्न 4. खाद्यान्न की वसूली में भारत खाद्य निगम की क्या भूमिका है?

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर।

प्रश्न 5. खाद्य की कमी को दूर करने के लिए क्या प्रयास किये जाते हैं?

उत्तर—देखिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर।

प्रश्न 6. खाद्य सुरक्षा की प्राप्ति में खाद्यान्न के संरक्षण व भण्डारण की क्या भूमिका है?

उत्तर—आपातकाल में जैसे—अकाल, सूखा, अतिवृष्टि आदि के समय अनाजों का उत्पादन बहुत कम हो जाता है, ऐसे समय में देश के प्रत्येक व्यक्ति को राशन उपलब्ध कराना बहुत कठिन होता है परन्तु खाद्यान्नों के भण्डारण से इस काल में आसानी से अनाज उपलब्ध कराया जा सकता है यदि देश में अनाज के सुरक्षित भण्डार होते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को खाद्य सुरक्षा देना आसान हो जाता है। हमारे देश में हरित-क्रांति के बाद गेहूँ तथा चावल के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। भारत सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य पर किसानों से अधिप्राप्त आज खरीदती है। यह कार्य भारतीय खाद्य निगम द्वारा संपादित किया जाता है जिसके बड़े-बड़े भण्डार गृह हैं। यहाँ से यह सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा समाज के गरीब वर्गों में वितरित किया जाता है। ये भण्डार खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से भारत सरकार द्वारा उठाये गये महत्वपूर्ण कदम हैं। इनसे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

प्रश्न 7. हम अपनी खाद्य सुरक्षा को कैसे सुधार सकते हैं?

उत्तर—हम अपनी खाद्य सुरक्षा को निम्न उपायों द्वारा सुधार सकते हैं—

(1) सभी लोगों के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध कराकर।

(2) सभी लोगों के पास स्वीकार्य गुणवत्ता के खाद्य पदार्थ खरीदने की क्षमता द्वारा।

(3) खाद्य की उपलब्धता में उत्पन्न बाधाओं को हटाकर।

(4) प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में खाद्य रहे।

प्रश्न 8. भोजन व अन्य सम्बन्धित वस्तुएँ प्रदान करने में सहकारी समितियों की भूमिका पर एक नोट लिखिए।

उत्तर—सामान्य नागरिकों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने में गैर-सरकारी संगठन भी बहुत सहायक हो सकते हैं। इस दृष्टि से देश में सहकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण है। उपभोक्ता सहकारी समितियों को हमारे देश के दक्षिणी और पश्चिमी भागों में विशेष सफलता मिली है। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु की लगभग 94 प्रतिशत राशन दुकानों का संचालन सहकारी समितियों द्वारा किया जाता है। खाद्य सुरक्षा एवं खाद्य वस्तुओं की आपूर्ति में सहकारिता की सफलता के कई अन्य उदाहरण भी हैं; जैसे—दिल्ली में पिछले कई वर्षों से उपभोक्ताओं को सरकार द्वारा निर्धारित दरों पर दूध और सब्जी की आपूर्ति **मदर डेयरी** (Mother Dairy) द्वारा की जाती हे। गुजरात में सहकारिता के क्षेत्र में दूध और दुग्ध उत्पादों के उत्पादन की दृष्टि से अमूल (Amul) की सफलता अभूतपूर्व कही जा सकती है। हमारे देश में श्वेत क्रान्ति (White Revolution) का आगमन इस सहकारी संस्था के प्रयासों का ही परिणाम है। इस प्रकार, देश के विभिन्न भागों में विभिन्न भागों में उपभोक्ताओं को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए कई सहकारी संस्थाएँ कार्यरत हैं।

इसी प्रकार, महाराष्ट्र में विकास विज्ञान संस्थान (Academy of Development Science, ADS) की सहायता से कई गैर-सरकारी संगठनों (Non-Government Organisations, NGos) द्वारा राज्य के कई क्षेत्रों में 'अनाज बैंकों' (Grain Banks) की स्थापना की गई है। ये संस्थान गैर-सरकारी संगठनों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने तथा इनके लिए क्षमता निर्माण का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। पिछले कई वर्षों में महाराष्ट्र में अनाज बैंकों का क्रमशः विस्तार होता जा रहा है तथा खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से इसके वांछित परिणाम भी मिल रहे हैं।

प्रश्न 9. भारत में खाद्य वितरण में उचित मूल्य की दुकानें कैसे सहायता करती हैं?

उत्तर—20वीं शताब्दी के मध्य का काल अकालों का काल था। 1943 में बंगाल अकाल के दौरान देश में राशनिंग व्यवस्था आरम्भ की गई। 1954-55 में राशनिंग और नियन्त्रण व्यवस्था को बड़े पैमाने पर लागू किया गया। **द्वितीय** योजना में इस प्रणाली में खाद्यान्न वितरण के अतिरिक्त दैनिक उपभोग की कुछ आय वस्तुओं को भी शामिल किया गया। **तृतीय** योजना में 'उपभोक्ता सहकारी प्रणाली' के विस्तार पर बल दिया गया। **चतुर्थ** योजना में इसके क्षेत्र को विस्तृत किया गया। **पाँचवी** योजना में इसके प्रभाव को बढ़ाने पर बल दिया गया और इसे मूल्य, आय एवं मजदूरी नीतियों के साथ सम्बद्ध कर दिया गया। **छठी** योजना में यह स्वीकार किया गया कि व्यक्तियों, विशेष रूप से कमजोर वर्ग, के सामान्य उपभोग की वस्तुओं की उचित मूल्यों पर उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। **सातवीं** योजना में 'मूल्यों को नियन्त्रित करने, उनके उच्चावचनों को घटाने तथा आवश्यक वस्तुओं के समान वितरण की दृष्टि से सार्वजनिक वितरण प्रणाली को स्थायी प्रणाली के रूप में स्वीकार किया गया।

इस समय तक यह प्रणाली सबके लिए थी और निर्धनों व गैर-निर्धनों के बीच कोई भेद नहीं किया गया। 1992 में सरकार ने समाज के गरीब वर्ग के लिए 'संशोधित सार्वजनिक वितरण' प्रणाली लागू की। वर्ष 1997 में 'लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली' को अपनाया गया। वर्ष **2001** से गरीबी की रेखा से ऊपर रहने वाले व्यक्तियों को इस प्रणाली से बाहर कर दिया गया। इनके अतिरिक्त 2000 में दो विशेष योजनाएँ—'अन्त्योदय अन्न योजना' व 'अन्नपूर्णा योजना' आरम्भ कीं। ये योजनाएँ क्रमशः 'गरीबों में भी सर्वाधिक गरीब' और 'दीन वरिष्ठ नागरिक' समूहों पर लक्षित हैं। इन दोनों योजनाओं का संचालन सार्वजनिक वितरण प्रणाली के नेटवर्क से जोड़ दिया गया है। **दसवीं** योजना के सार्वजनिक वितरण प्रणाली के पुनर्गठन पर जोर दिया गया।

प्रश्न 10. खाद्य सुरक्षा के विभिन्न आयामों से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—खाद्य सुरक्षा का अर्थ—खाद्य सुरक्षा से आशय सभी लोगों के लिए भोजन की सदैव उपलब्धता, पहुँच और उसे प्राप्त करने की सामर्थ्य से है।

खाद्य सुरक्षा के विभिन्न आयाम—खाद्य सुरक्षा के विभिन्न आयाम निम्नलिखित हैं—

(1) खाद्य उपलब्धता—खाद्य उपलब्धता से आशय देश में खाद्य एत्पादन, खाद्य आयात और सरकारी खाद्यान्न भण्डारों में संचित पिछले वर्षों के स्टॉक से है।

(2) खाद्य पदार्थों तक पहुँच—इससे आशय यह है कि खाद्य पदार्थ प्रत्येक व्यक्ति को मिलता रहे।

(3) सामर्थ्य—सामर्थ्य से आशय है कि लोगों के पास अपनी भोजन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए और पौष्टिक भोजन खरीदने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध हो।

प्रश्न 11. भारत में अकाल से आप क्या समझते हैं?

उत्तर—अकाल वह भयावह प्राकृतिक स्थिति है जब अनावृष्टि या अतिवृष्टि से अनाज का उत्पादन बहुत कम हो जाता है जिससे देश की जनता को खाद्यान्न उपलब्ध नहीं हो पाता है, ऐसी स्थिति को अकाल कहते हैं। अकाल काल में देश में खाद्यान्न की बहुत कमी हो जाती है, लोग भूखों मरने लगते हैं। पूर्व में भारत में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा था जिसमें लाखों लोग काल के गाल में समा गये। अकाल की स्थिति में लोगों के पास पैसा तो होता है परन्तु अनाज नहीं मिलता है। भारत में हरित-क्रान्ति के बाद कभी अकाल नहीं पड़ा है। भारत सरकार ने FCI के माध्यम से खाद्यान्नों के विशाल भण्डार कर रखे हैं जिससे किसी भी खाद्य असुरक्षा की स्थिति को रोका जा सकता है। भारत सरकार खाद्य सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयासरत है।

●●